



# Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries  
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

<http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks>



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-  
ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



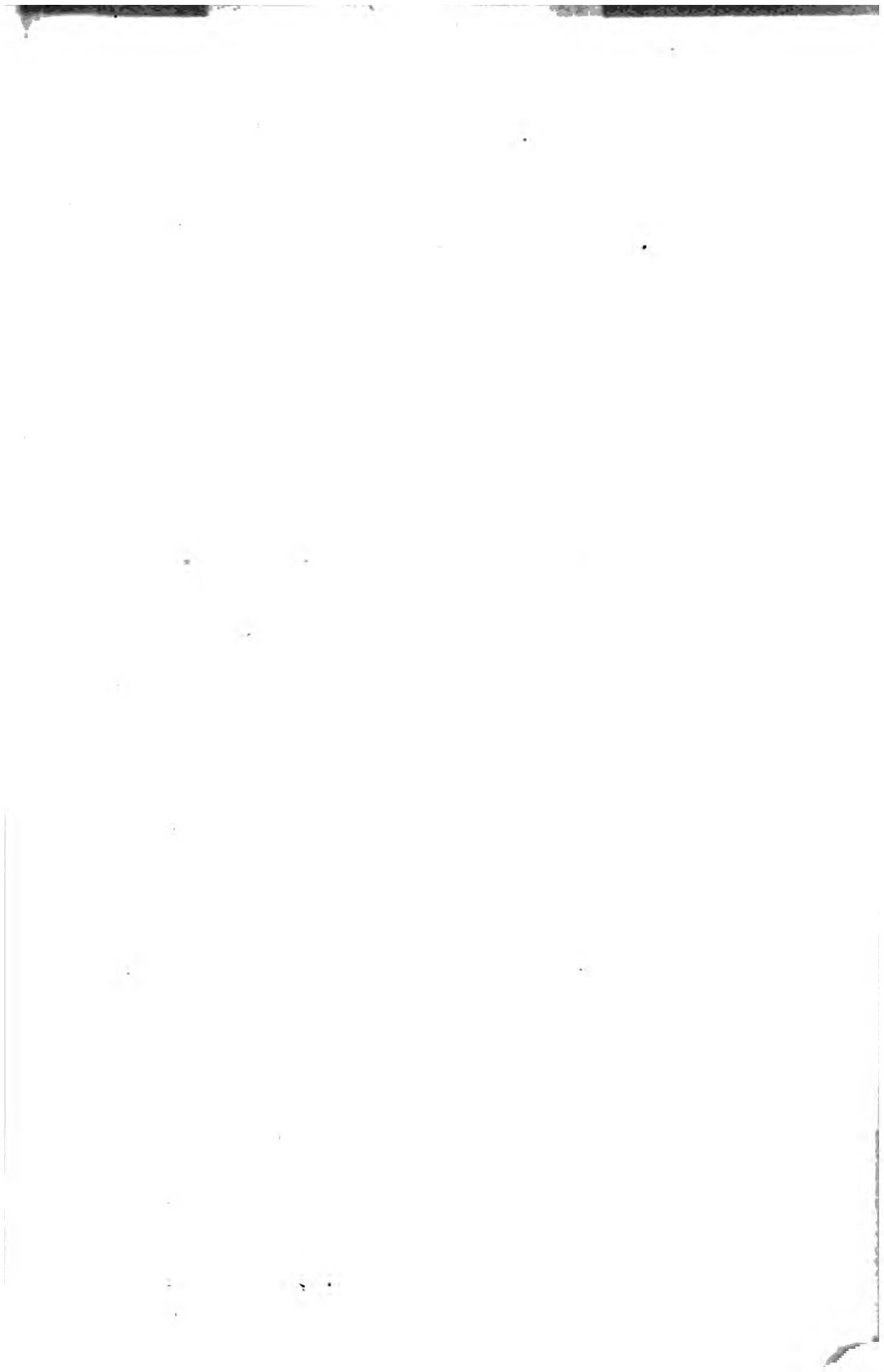


Hindi Card 4

13 . B . 56 .

Indian Institute, Oxford.

*Purchased.*











THE  
PRITHIRĀJ RĀSAU

AN  
OLD HINDĪ EPIC

COMMONLY ASCRIBED TO

CHAND BARDĀĪ

EDITED BY

A. F. RUDOLF HOERNLE,

PH. D., TÜBINGEN,  
FELLOW OF THE CALCUTTA UNIVERSITY, HONORARY  
PHILOLOGICAL SECRETARY TO THE ASIATIC  
SOCIETY OF BENGAL, ETC.

PART II.

VOLUME I.

CANTOS 26—34.

---

*PUBLISHED FOR THE BIBLIOTHECA INDICA.*

---

CALCUTTA :

PRINTED BY J. W. THOMAS, BAPTIST MISSION PRESS.

1886.





॥ २६ ॥ अथ देवगिरि सम्यो लिख्यते ॥ २६ ॥

दूहा ॥

नां चलै कमधज्ज ग्रह  
गढ घेरगौ फिरि भांन ।  
मांनहु चंद सरह दिन  
गिरि नछिच पर जांन ॥ १ ॥

कुंडलिया ॥

गढ घेरगौ फिरि भांन कै  
दूत सु दिखिय मुक्कि ।  
ग्रह अजाग संजाग करि  
अदिन कज्ज हम रुक्कि ॥  
अदिन कज्ज हम रुक्कि  
प्रांन इन कै दुष मुक्कै ।  
इन समांन भर सत्त  
जीव जावंतै धुकै ॥  
प्रथम पुंज लच्छिमन\*

---

\* Conjectural ; A, B, T read प्रथम पुंज लच्छिम कुंचार ॥ कुंचरो  
etc. c. m.; repetition of कुंचार probably error of copyist.

कुअरि ससीवत सुधीरह ।

धन भर लज्ज सुबंध

राज गढ घेरि सबीरह\* ॥ २ ॥

दूहा ॥

इन कागद चहुआन पै

उन मुक्कलि† कमधज्ज ।

दुहं बीर कविचंद इह

कै बज्जै कै बज्ज ॥ ३ ॥

कवित्त ॥

सुवर बीर कागदह

पंग कर अप्पि सु जंपिय ।

बहु दुचित्त संजुत्त

लज्जआ जुत्त प्रकंपिय ॥

सुर सुकीय कर पंग

नेन नीचें नृप दिट्ठौ ।

तब पहुपंग नरिंद

कुसल जानी नगरिट्ठौ‡ ॥

पुच्छी सु बात इह करिय तम

जांनि सोक कह उप्पनिय ।

\* A. बीर. † A. मुक्कलि. ‡ B. नगरिट्ठौ ।



संग्राम तें ज\* भंजन भिरन  
मरन कहौ मारन पुनिय ॥ ४ ॥

दूहा ॥

दुज्जन दवने पीर के  
बज्जे पै बर केक ।  
भर भीरी रहि अंक के  
मरन सरन के केक ॥ ५ ॥

कुंडलिया ॥

तब पहुपंग नरिंद प्रति  
दूत सु उत्तर जप्पु ।  
इह अपूब्ब कथ सुनि नृपति  
जीतेहार सु अप्पु ॥  
जीतेहार सु अप्पु†  
देसि कळ्यौ चहुआनं ।  
दिस्सीवै अध कोसु  
वीर मुक्यौ तिहि थानं ॥  
आइ सेन घन घाइ  
अधब्भर‡ पारि असुर जब ।

---

\* A.. तेज. † A. T. जीते हार..... । जीते हारि..... ॥

‡ A. अधप्भर पारि ।

दिषि निडुर कमधज्ज

बग्ग सेना चंपोय् तब\* ॥ ६ ॥

दूहा ॥

देवगिरि गढ घेरि फिरि

हें मुक्यो नृप काज ।

मतौ मंडि रा पंग पै

वे पुक्करि प्रथिराज ॥ ७ ॥

चौपाई ॥

इह कहंत नृप पंग सु अष्ठी ।

बियौ दूत नृप अंघन दिष्ठी ॥

दुचित चित्त मुक्की बर बांनी ।

कुसल बीर कमधज्ज न जांनी ॥ ८ ॥

दूहा ॥

भयौ खेद सुर भंग भौ

नेन झलक्यौ पांनि ।

कै फिरि दंद सु उप्पनौ

कै बर बंधव हांनि ॥ ९ ॥

कवित्त ॥

\*कही कुसल तन दूत  
 कित्त कुसलत्तन भगिय ।  
 जे निरेह कमधज्ज  
 रेह सो जंमह लगिय ॥  
 जे§ निकलंक ग्रह आदि  
 कलंक कालंक सु कप्पै ।  
 देवि धानं निमांन  
 को न मेटे को थप्पै ॥  
 भष जोइ† सिंघ जंबुक हरै  
 काक लंब पप्पोल गहि ।  
 ज दिनह भईय‡ भावी बिगत  
 जिम रघ्वै तिम तिम सु रहि ॥ १० ॥  
 इहं कहंत पहुपंग  
 दूत तीय् आनि संपतो ।

\* A. reads this kavitta thus : कही सलतनदूतः । कित कुसलत्तिन भगिय ॥ जे निरेह कमधज्ज । The remainder is wanting, till तेन तनि सज्ज नवारौ ॥ from where it agrees with B and T to the end of the verse, except the penultimate line of the 10th stanza, which it reads : तो काज राज सन्धै सुमित ॥ Mark, however, that both B and T number the 10th stanza twice over, which perhaps indicates an interpolation. §. read ê † T. जाई. ‡ B. भई । A. T भई ।



वाचा सीतल जंपि  
 अंग आरंभ न ततो ॥  
 चढ़ि नरिंद कमधज्ज  
 तोन तनि सज्जि नवारौ ।  
 मिलि जहें चहुआंन  
 बीर परिहै ससि भारौ ॥  
 दाहिंम्भ राव चावंड सें  
 सब्ब साथ नृप थप्पयौ ।  
 ते काज राज संग्है सुमति  
 लिषि कगद मुहि अप्पयौ ॥ १० ॥  
 क्रोध भरिय कमधज्ज  
 काक बर बोल उचारै ।  
 जो भज्जै ग्रह अपन\*  
 कौन अप्पनौ बिचारै ॥  
 अरे सुनहु भर सुभर  
 झुजझ भग्गौ पति छंडै ।  
 बेचि बीर गजराज  
 बाद अंकुस को मंडै ॥

चहुआन सेन कितीक है  
 एक मीर बंदा वधै ।  
 लबभयौ राज अप अप्पुनह  
 लोह धार मो सम सधै ॥ ११ ॥

कुंडलिया ॥

सुनि सुमंत मंचिय समत  
 कुमत मंत क्यौं मंत ।  
 वचन भेद जिहि हम कही  
 सोइ गही बल तंत\* ॥  
 सोइ गही बल तंत  
 बल न अप्पन पहिचान्यौ ।  
 उदोराग उच्चर्यौ†  
 संच ते ता करि मान्यौ ॥  
 उनांनै कुंवरि वरि‡  
 §तिन कुं करै तिंन गुनी ।  
 सुवरनि एक बुल्लै  
 दुवांन सो तो सह सुनी ॥

\* B here and in the following line साइ गही बलवंत । A. T. वरी  
 c. m., ‡ A. B. T. read तिन कुं करै तिन गुनी ॥ सुवरनि एक बुल्लै दुवांन ॥  
 सो तो सह सुनी ॥ which does not scan. § read short aũ, i.  
 e.,=ũ.

कवित्त ॥

वर अथवंत सु दीह  
 आइ चतुरंग सपन्नौ ।  
 \*मज्झ महल नृप बोल  
 बंछि कागद कर लिन्नौ ॥  
 निसा मंत उप्पाइ  
 सहस नव लिषि वर पट्टे ।  
 इष्ट भूत सगपन सु भूत  
 दिसन बहु फट्टत फट्टे ॥  
 बजित निघोष अरि घोष पर  
 छोरि पंग दिष्से सु हय ।  
 रवि रय्य तय्य आवहि जु सम  
 गात गिरवरं नाग सय ॥ १४ ॥

छंदभुजंगी ॥

तियं फेरियं अश्व दीसे तिपंगा ।  
 तिनं देषते छांह कपंत अंगा ॥  
 तिनं आपमा चंद वरदाइ कैसी ।  
 दिषै तीर मांनो छुटै अंग तैसी ॥  
 पयं मज्झ मंडैति मंचित्त इष्णं ।

पयं पातुरं चातुरं ता विसिषं\* ॥  
 † पुरं बज्जते भूमि धूजै धसकै ।  
 फनं फेलि सेसं मुहं फूंक सकै ॥  
 दुमं सीस दीसे सु केकी पुछंगी ।  
 मनो मंडियं नीलकंठं उछंगी ॥  
 तिनं भाल‡ संमेलयं घाट झुज्झै§ ।  
 छिलै॥ पूर त्रैसें सरित्तान सुज्झै ॥  
 डुलै॥ कंन नांही छुरिका सग्रीवं ।  
 मनो देषियं सीष निर्वीत दीवं ॥  
 दिषै कव्वि चंदं सुरंगं सु सेसी ।  
 दुहं पष्ष नांही तिनं पोरि कैसी ॥  
 सुभै सालिग्रामं समानं त अंघी ।  
 तिनं पुज्जिवै चित्त चिचंत नंघी ॥  
 पियै अंजुली नीर दीसैं उपंगा ।  
 फिरै कच्च रच्चो\*\* नमै रत्त गंगा ॥  
 दिसानं दिसानं सबै जाति राकी ।  
 कही चंद कव्वी उपमा सु ताकी ॥ १५ ॥

\* A. B. T. विसिषं । † T. पुरं बज्जते (?) भूमि धूसकै । ‡ B. नाल ।  
 § A. B. भुम्भै । ¶ B. मिलै । ॥ B. भुलै । \*\* B. नच्चो ।

कवित ॥

चतिय नयन रुद्र कै  
 उडि घन अग्नि तिनंगा ।  
 तास मध्य तें प्रगटि  
 तेजवंता\* सु तुरंगा ॥  
 भुअपत्ती संग्रहै  
 पीठ मंडे पल्यानं† ।  
 अंबर करत बिहार  
 देषि कोण्यौ मघवानं ॥  
 पर कट्टि‡ नंषि दिय बज्र सेां  
 गयन गवन तव मिडि गय ।  
 कहि चंद मनहु पहुपंग तें  
 फेरि आज पष्परत हय ॥ १६ ॥  
 चढत पंग हय सज्जि  
 सज्जि गजराज सज्जि वर ।  
 योां जानी सुर असुर  
 करै कमधज्ज बिया पुर ॥  
 बजि निघोष चिय सहस

---

\* B. जेजवन्ता । † B. A. T. पल्यानं । ‡ B. प्ररकटि A. प्रकटि ।

मीर बंदा दस लषिय ।  
तीस लष्य पाइक्क  
सुबर पारंक विअषिय\* ॥  
जू सन विराग बल बीर† सजि  
दल सज्यौ गंजन अरिन ।  
पहुपंग बीर परतषि लै  
किरन सु सम सज्जी किरन ॥ १७ ॥

दूहा ॥

इह प्रतंग पहुपंग लिय  
बधि जइव चहुआन ।  
जग्य अरंभ जु मंडिहें  
ता पच्छै परवान ॥ १८ ॥

कवित ॥

चढत पंग मिलि सेन  
पूर‡ जिम नदिय मिलत चिन ।  
बज्जि बीर बातूल  
जय्य कय्यह उड्डे षिन ॥  
एकट्ठां फुनि जम्म  
तूटि जू जू फल लड्यौ ।

---

\* B. किअषिय । † T. om. ‡ A. पूरि ।

दैव क्रमं करि जोग  
 आइ एकद्व अरुद्धौ ॥  
 बंधेत काल डोरी तनै  
 छूटि धार घन मिलहि जिम ।  
 आवृत्त क्रम लिष्ये बिना  
 मिलै न पंचो पंच तिम ॥ १९ ॥

दूहा ॥

इह अवस्थ पहुपंग की  
 बाल अवस्था कोन ।  
 जियन आस नहि सास तन  
 डरहि देषि अति जोह\* ॥ २० ॥

गाथा ॥

बाले मलयं चंप†  
 दै दै चंपंत उरह उरही ति ।  
 तिन बिपरीतं वामं  
 काम‡ रस जगयौ घनयौ ॥ २१ ॥

---

\* B. अलि जोन T. अति जोत । † A. चंपे । ‡ B. कामस ।

## छंदधमरावली\* ॥

बढि बाल बियोग सिंगार छुब्यौ ।  
 सुष कौ अभिराम कि कांम लुब्यौ ॥  
 घनसार सुगंध सु घौरि† घनं ।  
 बनि जांनि प्रकीन कृपान वनं ॥  
 तलप त्ति तजे तलपत्ति मनें ।  
 बहु वाढि हे‡ अंग अनंग घनें ॥  
 नव चंदन अंग अनंग जरै ।  
 दिय दीपक भेन मे‡ भान बरै ॥  
 लगि मोदक सें अनमोदकयं ।  
 दिसि प्राचिय दिषि परी धुकयं ॥  
 प्रतिवृत्ति सरत्तिय पी पयनं ।  
 उमगे तहँ§ असुअ द्वै नयनं ॥

---

\* This is an error; the metre is तोटक, having four anapaests (७ ७—); the छंदधमरावली consists of five anapaests. The last superfluous syllable of line 29 must be carried over, in reading, to the next line, and so on in the following lines till line 41; and again in the 3 last lines. Otherwise there would be a break in the metre at line 30; where, as it stands now, the metre is मैत्रिकदाम, consisting of four amphibrachs (७—७).  
 † A. घोर। ‡ with short ॐ. § read *taham*; m. c.



घन ज्योतन छंडि\* न उत्तर देइ ।  
 लगि कांनन नांम पिया अलि लेइ† ॥  
 ‡ न कछू बर भोइ सु उत्तर देत् ।  
 मनो§ दस्स अवस्थन दंग अचेत् ॥  
 चषयं सुभि चंचल रंजनयं ।  
 सु मनो गहि मुत्तिय षंजनयं ॥  
 बिय भाव सु अंसुअ नंदिलता ।  
 हर नंषिय रष्यति गो पतिता ॥  
 तिन अंग अचेत किता अमयं ।  
 दुष दूषन भूषन से तनयं ॥  
 दिषि दिषि अली अलि केज करै ।  
 लय सास उसासन तांनि परै ॥  
 पन प्रांन प्रिया न प्रयांन पुटं ।  
 लगि साहस एक घटी न घटं ॥  
 सुध नं सब तें विमनं मन तें ।  
 निज निश्चल रेंन॥ गई गिनतें ॥  
 चलि सीत सुगंध सुमंदय बात ।

---

\* A. B. छंडि । † Pronounce दे, लै । ‡ Conjectural ; A. B. T.  
 read कछू बर भोइ न उत्तर देत; c. m. § with short ॐ; read as  
 मनु । ¶ A. नेंनि ।

मनों लागि पावक अंभन जात ॥  
 डुलावत अंचल सोतल काज ।  
 लगे मनु तोर तरुन्निय जाज ॥  
 भुअंगम भोजन अंग म नारि ।  
 करै करुना रस की उनिहारि ॥  
 सबै सु सषी मिलि पुच्छत ताहि ।  
 मनों जड श्रोत सुनै रस जाहि ॥  
 चढ्यौ कुटिलं रथ चित्तह धाड ।  
 सु जेम रविंद समाद कलाड ॥  
 इनं रिति नारिन मुकह नाह ।  
 लगे बिह जांनि कुमुदिन राह ॥  
 न दीय निवांन अपी न सयं ।  
 नव पंथय सुजझय बुजझ कयं ॥  
 बजि मारुत तत्त समीत प्रकार ।  
 उडै घन घंम\* वहै अनिवार ॥  
 झरै तरु तुंग गई सुधि धांम ।  
 तजौ पहुपंग नरिंद सु बांम ॥ २२ ॥

छंदपद्धरी ॥

चढि चल्यौ पंग कमधज्ज राइ† ।

सो छिन्न भिन्न डंमरित छाड़ ॥  
 पड्डरिय\* छंद बरनों सु रंग ।  
 लहु बरन बोच† बिचि अति सुरंग ॥  
 ढलकंत ढाल तरवर प्रमांन ।  
 हलके हलंत गज नग समांन ॥  
 अपसुकन सुकन चिंतहि न चित ।  
 निंमांन‡ वत्त गुन धरत तत्त ॥  
 कदवति सलिल जहां सलिल पंक ।  
 चित चित उवंक§ जे करे कंक ॥  
 चल्ले नरिंद अरि पुब्ब गाव ।  
 भुमियां ससंक सब लगत पाव ॥  
 गढ घेरि पंग किअ अप्रमांन ।  
 मांनों कि मेर पारस्स भांन ॥  
 पंगह सुबीर गढ करि गिरह ।  
 जनु सर्वरि परस चंदा सरह ॥  
 चढि अमरसीय चढि अमरसिंघ॥ ।  
 गहिलौतस नरवर लहु सु बंध ॥  
 पगुरा सुभरं लगि ऊच॥ गत्त ।  
 जाने कि लंक लंगूर यत्त ॥ २३ ॥

\* T. A. B. पड्ढरी c. m. † T. B. बोचि । ‡ B. निमान c. m.  
 § B. चितनवंक । ॥ A. अमसिंघ । ॥ T. B. ऊच

कवित ॥

दिसि दषिण को बलिय  
 गयौ कमधज्ज चित्त\* करि ।  
 यो† फिरंत तहां खर  
 भित्त आगस्ति पांन फिरि ॥  
 पंच तत्त विय विरह  
 छुट्टि लागे सु पंच पथ ।  
 तोइ काज हम करै  
 चरन सेवकह जंपि तथ ॥  
 तो अंब प्रथी अव जीन बस  
 जस क्रीडाधर उगह‡ नह ।  
 कच्छू§ सु॥ जाति बसि जाति तन  
 हवि अरक सु भेदै मनह॥ ॥ २४ ॥  
 गज्जनेस कमधज्ज  
 दांन वरषंत बीर सजि ।  
 नव अंगुर इक बिहथ  
 खरतनए\*\* क प्रवाह लजि ॥  
 सिरो†† सत सोभै‡‡ विसाल

\* A. चित्त । † read ॐ, or else तहं, m. c. ‡ A. उगाहन, B. उगाहनह,  
 o. m. § A. B. T. कहु, c. m. ¶ om. A. ॥ B. मनड? \*\* read  
 ॐ, m. c. †† read i; m. c. ‡‡ Read short ai.

मद्धि सिंदूर बिराजै ।  
 मनु\* कज्जलगिर सिषर  
 स्वर मंगल तन साजै ॥  
 सज्जिय अनेक नृप पंग ने  
 गांमी तर गोडन बियौ ।  
 जानै कि अकासह मान दिन  
 अैवसह गिरि† पर दियौ ॥ २५ ॥

दूहा ॥

रंभजन तट पंषरी‡  
 लगि वधू सित माल ।  
 अंग सु ताकी पंति तै  
 बढी विरह बनमाल ॥ २६ ॥  
 बांन पंग पहुपंग परि  
 मिली क्रान की कांनि ।  
 इह अपुव्व बर भांन सजि  
 दै कागद चहुआंन ॥ २७ ॥  
 रतिपति पत्त अलुजिझ घन  
 तिहि कागद मुकि दूत ।

---

\* A. मनुं c. m. A. B. गिरपय । ‡ A. पंषरी ।

तजि सिंगार भौ\* बीर रस  
जिम आयौ बर धूत† ॥ २८ ॥  
बाल कमोदनि पीय ढिग  
ससि समान रस पांन ।  
बर बिलोकि‡ जो देषियै  
तौ चहुआनह§ भांन ॥ २९ ॥

कवित ॥

लाज सरस चहुआन  
जाग उज्जे जुधमुत्तम¶ ।  
चियन॥ पाइ दिषि कांम  
बेर\*\* दिष्ये जु बीर सम ॥  
घरि इक पंग नरिंद  
कलंक उननि करि देषै ।  
दूत सु जहब राइ††  
सजन अप्पनौ सु लेषै‡‡ ॥  
सुरतंत स्वांमि अभिलाष रिन  
ग्रब्ब राजमहह नृपति ।

\* read short aũ, 'or else सिंगार, m. c. † conj; A. घत्त,  
B. T. घत्त, c. s. et r. ‡ B. विलोक । § B. चौहानह । ¶ sandhi  
of युधं and उत्तम । ॥ om B. \*\* B. बेददिष्ये । †† A. रा । ‡‡ A.  
B. T. लषै c. m. et s. et r.

मार सु नरिंद संकर\* भयौ  
अति निकलंक चितह दिपति ॥ ३० ॥

दूहा ॥

घरी एक बंधी† सुनी  
पै मुक्कलि प्रथिराज ।  
बोय सोम‡ अप्पन चढन§  
लै दीनी रस पांज¶ ॥ ३१ ॥  
चढत राज प्रथिराज कों  
बढि अवाज सुरतांन ।  
समरसिंघ रावर दिसा॥  
दै कग्गद चहुआंन ॥ ३२ ॥

कवित ॥

दिलोधर\*\* गोरो नरिंद  
बंध पाल्हन†† प्रपत्तौ ।  
षां हुसेन कै बैर  
अनगपालं सु मिलत्तौ ॥  
तिर भर जल गंभीर  
हसम है गै कमधज्जी ।

\* A. संकर । † बंधी । ‡ B. सोम । § A. अप्पडन । ¶ A. B. पांज । ॥ T. दिसा । \*\* read short i here and in गोरी ; m. o. †† T. पाडन ।

देवगिरि दिसि भांन  
 बीर पावस जिम सज्जी ॥  
 धर लई सब्ब साहिब जुरत  
 भांन न उप्पर मुक्कही ।  
 चिचंग राज रावर समर  
 इह अवसांन न चुक्कही ॥ ३३ ॥  
 बंचिय कागद समर  
 समर साहस उचारिय ।  
 तब\* सुमंत वर नृपति  
 मंत जानै न बिचारिय† ॥  
 हम सु मंत जो करें  
 राज दिल्ली‡ मति छंडौ ।  
 इह गोरी सुरतांन  
 अनगपालह फिर मंडौ ॥  
 सांमंत देहि हम संग वर  
 रन रुंध पहुपंग नर ।  
 आरंभ मह न रंभह मतौ  
 इह§ सु मंत कुसलंत घर ॥ ३४ ॥

\* A. om. this and the following line. † B. विचारिय । ‡ T.  
 दिल्ली c. m. § A. इसमंत etc.



कुंडलिया ॥

सुमुद रूप गोरिय सुबर  
 पंग ग्रेह भय कोन ।  
 चाहुआंन तिन बिच धकै  
 सो आपम कवि लीन ॥  
 सो आपम कवि लीन  
 समर कागद लिय हृथं ।  
 भिरन पुछि बट\* सुरंग  
 बंधि चतुरंग र† जथं ॥  
 तहाँ‡ समर मुकलि§ सार  
 लोह फुल्यौ जस कमुदं ।  
 रा चावंड जैतसी  
 राव बडगुज्जर॥ समुदं ॥ ३५ ॥

दूहा ॥

अमर सिंघ बंधव समर  
 समर समो कलि दीन ।  
 ते सामंतन संग लै  
 देवगिरि॥ मग लीन ॥ ३६ ॥

\* B. विवट । † A. B. रा c. m. ; T. रा with the ā crossed through. ‡ read short ā. T. मुकलि c. m. B. बज c. s. ॥ B. देवगिरि, T. देवगौरि ।

हम सु राज चहुआंन नै

राषे घेरी राइ\* ।

पंग आट बर कोट छै

देवगिरि गढ जाइ† ॥ ३७ ॥

कवित ॥

देवगिरि गढ घेरि

ढोह मंड्यौ बर पंगं ।

रन नृघोष प्रमान

बीर बाजे रन जंगं ॥

चिहुं दिसा‡ उडि चक्र

उने झीझं झर लगा ।

द्वादस दिन रन मंडि

राव चामंड भिरि भग्ना ॥

सामंत पंग वित्ते नृपति

छल सज्जे बल॥ हारिया ।

दाहिंम राव दाहिर तनय

रत्तिवाह विचारिया॥ ॥ ३८ ॥

मिलि जहव चामंड

रत्तिवाहं संपन्नौ\*\* ।

\* B. T. राई c. m. † B. जाई c. m. ‡ A. दिसान c. m.  
॥ B. बलि । ॥ A. विचारिया । \*\* T. सपन्नौ ।

जोड़जै साथ टारि

जो\* साथ टारि जै अपनौ† ॥

अंत साथ सो साथ

चौर सब साथ सुपनौ ।

कै भर तरकस बंध

‡ थांन आकष्टं मनौ ॥

जीवत§ दान भोगह समर

मरन तिथ रंभ भिरन गति ।

ए करै बात उपभैत नर

तास राज मंडल मिलति ॥ ३६ ॥

हृथ्य हृथ्य सुज्झै न

मेघ डंमरि॥ मँडि रज्जी ।

निसि निसीथ॥ अंतरो

भांन उत्तरि साथ सज्जी ॥

बिज्ज\*\* बीर झलकंत

पवन पच्छिम दिसि बज्जै ।

मेर मेर पणीह

अवनि सक्रित†† घन गज्जै ॥

\* read ō and ai, m. c. † B. अपनौ c. m. ‡ conj. line; A. B. T. थांन मानं आकष्टं c. s. et r. § A. जीव दान, B. T. जीवत दान । ¶ B. डंमरि । ॥ T. निसीथ । \*\* B. बिज्ज । †† संक्रित ?

बंटी\* जु सिलह निसि सत्त मिलि  
 सधिय पंग दरबार दिसि ।  
 चामंड राइ दाहर तनै  
 लरन लोह कढ्ढे† तिरसि ॥ ४० ॥  
 धसि‡ नरिंद चामंड  
 कूह बज्जी रन जंगं ।  
 §भर भग्गी चौकी समूह  
 जूह लगा रन जंगं ॥  
 §रन नरिंद बाहन¶ कुआर  
 सार धारह हसि झिल्लै ।  
 पंग टटी बौछार  
 जितें भिज्जें॥ तित मिल्लै ॥  
 आरिष्ट काल बज्जत घरी  
 उघरि मेह घन सार जल ।  
 जगयौ जेध कमधज्ज अब  
 मनें सिंघ जुयौ सु छल ॥ ४१ ॥  
 तब राजन\*\* उच्चरै  
 राज जेरी बर पंगं ।

\* B. T. वटी । † A. कढे c. m. ‡ T. B. धनि । § redundant  
 lines, 14 instants for 11. ¶ T. वारन । ॥ A. भिजें c. m. \*\* B. रावन ।

जिन चंपै बल\* पुच्छ  
 रोस जग्यौ नृप दंगं† ॥  
 कै नागपति‡ को पति  
 अप्प बर कन्ह जगायौ ।  
 कै राह सुमन वितए§  
 ॥कै जंम जुग राज झुकायौ ॥  
 उच्चरे बीर कुरवार॥ रिन  
 रन रूंध्या अपडिंभरू ।  
 संभरे बीर कमधज्ज कौ  
 भए रोम गति बिभरू\*\* ॥ ४२ ॥  
 अमरसिंध†† आहुड  
 नाग मुषी बर कट्ठी ।  
 सीस सोभि गजराज  
 ॥कै नाग मुष नागिनि चट्ठी ॥  
 हाड हटक्को हथिय  
 बीर पंचौ कर सहे ।

---

\* B. बर। † A. दंसं। ‡ A. गपति। § read ६, m. c.,  
 ¶ Redundant lines, 15 instants for 13. ॥ B. T. कुटवार ।  
 \*\* B. बिभरू। †† B. सिंध here and elsewhere.

कै हथनापुर चंद  
 बीर षंचे बलिभद्रे ॥  
 दंती सु भग्नि\* धर पर परगौ  
 इल षुच्यौ दंत अड्ड कवि ।  
 सिंघ हति भूमि वर सुभभई  
 कै मिलत भूमि हथ† रवि ॥ ४३ ॥  
 हस्ति काल जम जाल  
 काल रुंध्यौ चामंडह ।  
 सुनत पंग रस भंग  
 सीस लग्यौ ब्रह्मंडह ॥  
 रन रुंध्यौ बच्छरू‡  
 मीन गति नीर प्रमानं ।  
 जग्गि बीर पहुपंग  
 तोन पारथ्य प्रमानं ॥  
 जग लोह कोह कढिढय सु असि  
 भिरत न अपु अरि तकर ।  
 रहि जाम एक निसि पच्छली  
 चढि बिस्तर हय नष्यए ॥ ४४ ॥

\* B. भग्गो c. m. † conj., A. B. T. हथ्यह तिरव c. m. et r.  
 ‡ for बच्छरू, m. c.

## छंदरसावला ॥

पंग जंगं पुलं ।  
 कूह मची हुलं ॥  
 सार\* तुट्टे पलं ।  
 षग मच्चे षलं ॥  
 हाल हालाहलं ।  
 सोड वित्थौ तलं ॥  
 गिड कोलाहलं ।  
 अंत दंती रुलं ॥  
 उड पीयं छलं ।  
 चर्म अस्तिं तलं ॥  
 बोर निड्डी चलं ।  
 †सिड ठट्टे रुलं ॥  
 संभु मालं गलं ।  
 ब्रह्म चिंता चलं ॥  
 भूत वित्ता तलं ।  
 पथ्य पारथ्य लं ॥  
 देव देवान लं ।  
 फट्टि फारकलं ॥

घाय बज्जे घलं ।  
सूर घुम्मै रुलं ॥  
तार चौसट्ठि\* लं ।  
बाइ भूतं तलं ॥  
रीति पच्छी षिनं ।  
तार आयासनं ॥  
सूर उग्यौ ननं ।  
कोट चढ्ढे फनं ॥ ४४ ॥

दूहा ॥

रन मुक्के गो भांन चढि  
सब सामंतन सथ्य ।  
भत्त बोर पहुपंग ने  
षेत सु ढुंळ्यौ तथ्य ॥ ४५ ॥

कवित्त ॥

परगौ बंध गोइंद  
नाम हरचंद प्रमानं ।  
परगौ बंध नरसिंघ  
रेह रष्यन चहुआनं ॥



परगौ कंहर पुंडीर  
 बीर जैचंद सु जायौ ।  
 परगौ खर वाघेल  
 हकि कपि जिम बल धायौ ॥  
 चतुरंग सब्ब मिल्लिय वही  
 असिन ढार बडगुजरै ।  
 सामंत हथ्य वर वज्र सम  
 षेत सु ढुंढहि पंगुरै ॥ ४६ ॥  
 रिस लुख्यौ कमधज्ज  
 बोल बंका बर बोलै ।  
 ज्यौं बावन बलरूप  
 कुहर थांनह बल मेह्लै ॥  
 \*कै रावन पव्वय समांन  
 काज कैलास झुलावै ।  
 कै बलि बंधन पाज  
 द्रान हनमंत जु ल्यावै ॥  
 गिरि राज काज साइर मथन  
 कै† अस रस्सि‡ मिल्लिय नही ।

---

\* redt. line ; 14 inst. for 11. † read aĩ, m. c. ‡ A. B. रस्स ।

इम नंषयौ अश्व कमधज्ज नै  
सो उप्पम कवि बांनही ॥ ४७ ॥  
मापि पंग गढ देषि  
कोस द्वादस बर जंचै ।  
दह ति कोस बिस्तार  
कोट मर हथ्य चिप्रुंचै ॥  
नारि गोरि सावत्ति  
राज मंडी चावहिसि ।  
ढोह\* मंडि पाषांन  
तीर बरषंत मंच असि ॥  
पावस्स मास वीतौ उभय  
जुरि कमधज्ज सु छंडयौ ।  
मंची सुमंच परधांन ने  
फेरि मंच तब मंडयौ ॥ ४८ ॥  
बल वंध्यौ कमधज्ज  
किल्ह भंज्यौ भं भानं ।  
लग्गि चरन पहुपंग†  
बंदि लीनौ फुरमानं ॥

---

\* B. ढोह । † B. om. पड ।

दूत भेदयौ मंडि  
 द्रव्य नंघै चावहिसि ।  
 कछु सलोभ कछु मोह  
 मेह्लि परधांन पल्ल निसि ॥  
 अप्पनै साथ लै सिंघ तब  
 जियन मरन ते उट्टुए\* ।  
 जम जीव जार पंजर परै  
 कोइ न कलि महि छुट्टुए ॥ ४६ ॥  
 संवत ग्यार संजुत  
 अदिस उन लग्गिय पंचं ।  
 मरन अग्ग जांनिय न  
 गोऊ पल्लन जे पंचं ॥  
 दिन नच्छिच रोहिनि†  
 समै च्यालीस विअगल ।  
 ‡मत्त बीर जहव नरिंद  
 चंद भंगी§ ग्रह भगल ॥  
 जगयौ धार धारह धनी  
 भोज कुअर रन मंडिकै ।

---

\* T. उट्टये । † A. B. T. रोहिनी c. m. ‡ redt. line. § A. भग्गो ।

साध्रंम ध्रंम छंडै नही  
 गौ अध्रंम छिति छंडिकै ॥ ५० ॥  
 बज्जि कूह संमूह\*  
 अमर उट्टे समरं भिरि ।  
 षंड मुष्प भौ कोट  
 समर बंधं सुद्धे जुरि ॥  
 रा चावँड जैतसी†  
 राम बडगुज्जर धार ।  
 आहुट्टं कमधज्ज  
 सार बज्जै सुरझार ॥  
 बर पंग जंग भज्जी सह्र  
 लुथ्थि लुथ्थि‡ लुथ्थी परी ।  
 चढ्ढने अरिय संग्राम भिरि  
 षट् सहस सेना गिरी ॥ ५१ ॥  
 परत पंग आरोहि  
 सुरंग दोनौ सु भांन गढ ।  
 नाग समुह धड्वरी§  
 ढाहि देवल सुरंग मढ ॥

\* T. संडह । † जैतसिंह ?, c. m. ‡ A. लुथ्थिअलुथ्थि । § for षडरिय comp. script.

थान थान नर उडै\*

चंद तस उप्पम पाइय† ।

कालबूत‡ कागह

पंग इह काज उडाइय ॥

अज्जै न सषि दिय सेन को

दच्छ§ देव बर बोलही ।

सामंत सूर संग्राम कल

ताप तुरंग न डोलही ॥ ५२ ॥

चौपाई ॥

बहु परपंच किये पहुपंगं ।

गढ तूटंत मग मन अंगं ॥

इक गिरि समुह बंके भर ठट्टं ।

मतौ मंडि मुक्यौ बर भट्टं ॥ ५३ ॥

कवित ॥

किन्तिपाल बर भट्ट

बंधि फुरमानं पंग रन ।

जहाँ॥ जहव चामंड

द्रुग दीय छत्र जुरन घन ॥

\* for उडइ, comp. script. † A. B. T, पाईय c. m. et r.  
‡ A. बुत। § T. इच्छ। ¶ B. om. this line. ॥ read short  
अ, m. c.

चोज\* चक्क चहुआन  
परगौ सगपन मिस अंटौ ।  
उह मारन इन मरन  
बज्जि वाहं विन घंटौ ॥  
आ तुच्छ मिलौ बंधौ जियन  
जुद्ध मोहि कौं पूजिहौ ।  
शृंगार भोग आनंद रस  
सबै बीर रस चुकिहौ ॥ ५४ ॥  
तब बसीठ नृप पंग  
भांन एकांत मंत करि ।  
मिलौ पंग कमधज्ज  
जंम संसार जंम डर ॥  
तमस भेद नृप एह  
बाल उत्तर गढ भेदं ।  
†अरि अमंत जहव नरिंद  
अप्य कीनौ घर छेदं ॥  
लगि कांन बात मंची कही  
आहुड़ां वल गढिठयां ।

---

\* B. चोक । † redt. line.

तीय पुत्र हती\* पुत्री लियै  
दुज्जन जनम सु बढिढयां ॥ ५५ ॥

दूहा ॥

बिषधर दुज्जन सिंघ फुनि  
अग्गि अनंग अनेह ।  
ए अप्पना† न लेषियै  
ए परि अप्पै छेह ॥ ५६ ॥

कवित ॥

हसि जहेां चावंड  
पमार हथ्ये‡ दिय तारी ।  
सुनि बडगुज्जर§ रांम  
मतैा अप्पौ मो भारी ॥  
¶सामि एक बंदी सचंग  
प्रोति जलजंतं तन॥ की ।  
लियैा अधर सम रस्स  
बात सादेाहं मन की ॥

---

\* A. B. T. हति c. m. † A. एप्पना । ‡ read ६, m. c.  
§ A. बगुज्जर । ¶ redt. line. ॥ conj. तनकी m. et r. c.; A. T.  
तकी; B. की, om. तन ।

क्यों जामन मंत रहंत इत  
केह कंत जो मंगयौ ।  
सो मंत पंग कमधज्ज नें  
अप्य हेत\* सो उगयौ ॥ ५७ ॥

दूहा ॥

इह उत्तर नृप पंग सेां  
कहै सु जहव राइ ।  
दूत विनडौ सुइ हिय  
किन अप्पन मुष पाइ† ॥ ५८ ॥

चौपाई ॥

उठे भट्ट तिहि ठौर बिचारी ।  
ज्यो उठि जागी कंथा जारी‡ ॥  
मन की मनैं रही मन माया ।  
ज्यौ तरंग जल जलें समाया ॥ ६० ॥

कवित ॥

मतौ मंडि नृप पंग  
गढ्ढ मुक्के धर लीनी ।

---

\* T. हेत । ‡ T. पाई । † B. भारी ।



\*बर पट्टन पाटन† नरिंद  
 थांन थांनं रचि दीनी ॥  
 \*उभै बीर जोजन प्रमान  
 भूमि भारह रचि गाढी ।  
 अप्पन गौ कमधज्ज  
 हामरा जसु मन बाढी ॥  
 कनवज नरिंद अज्जू समन  
 जोगी मिसि कर कढ्ठयौ ।  
 §दिसि विदिसि पंग जीयन सु बल  
 रचि चतुरंगी चढ्ठयौ ॥ ६१ ॥

दूहा ॥

को न हीन को नीर विन  
 को तप भांन नरिंद ।  
 सह धन धर मुक्की मिलै  
 लज्ज एह जयचंद ॥ ६२ ॥  
 दै जस तिलक ग्रह भांन कौ  
 जोगिनपुर भर चिह्न ।

---

\* redt. lines. † A. B. पाटनरिंद । ‡ B. om. these two last lines.

मेकलि जै आहुट्टपति

षग पंगं करि हीन\* ॥ ६३ ॥

गयै पंग कनवज्ज दिसि

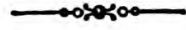
घन रष्ये धन मास ।

नव नवमो नव सरद निसि

तिन मुक्की अरि चास ॥ ६४ ॥

इति श्री कबिचंद विरचिते प्रथिराज रासा के  
देबगिरि जुद्ध वर्णनं नाम प्रस्ताव संपूर्णं ॥०॥  
प्रस्ताव ॥ २६ ॥ संपूर्णं ॥ \* ॥०॥ \* ॥

॥ २७ ॥ अथ रेवातट सम्यौ लिख्यते ॥ २७ ॥



दूहा ॥

देवगिरि जीते सुभट

आयै चामंड राइ ।

जय जय नृप कौरति सकल

कही कव्विजन आइ ॥ १ ॥

मिलत राज प्रथिराज सेां

कही राव चामंड ।

रेवातट जेा मन करौ

तै\* बन अपुव्व गज झुंड ॥ २ ॥

कवित्त ॥

बिंद ललाट† प्रसेद

करगै संकर गज राजं ।

अैरापति धरि नांम

दियै चढनै सुरराजं ॥

दांनव दल तिहि गंज‡

रंजि उमया उर अंदर ।

---

\* superfluous ; m. c. † B. लिलाट । ‡ A. गुंज ।

होइ कपाल हस्तिनी  
 संग बगसी रचि सुंदर ॥  
 \*अलादि तास तनु आय कै  
 रेवातट वन बिस्तरिय ।  
 सामन्तनाथ सेां मिलत इह  
 दाहिम्मै कथ उच्चरिय ॥ ३ ॥

अरिस्त ॥

चारि प्रकार पिष्वि वन बारन† ।  
 भद्र मंद मृग जाति सधारन ॥  
 पुच्छि चंद कवि कोां नरपत्तिय ।  
 सुर वाहन किम आइ धरत्तिय ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

हेमाचल उपकंठ  
 एक वट वृष्य उत्तंगं ।  
 सौ जोजन परिमाण  
 साष तस भंजि मतंगं ॥  
 बहुरि‡ दुरद मद अंध  
 ढाहि मुनिवर आरामं ।

\* T. om. this and the following two lines. † A. B. T.  
 वाचन c. s. et r. ‡ A. चडरि ।

दीर्घतपारी दैषि

आप दीनो कुपि तामं ॥

अंबर बिहार गति मंद हुअ

नर आरूढन संग्रहिय\* ।

संभरि नरिंद कवि चंद कहि

सुर गइंद इम भुवि रहिय ॥ ५ ॥

अंगदेस पूरव्व

मडि बन षंड गहव्वर ।

उज्जल जल† दल कमल

बिपुल लुहिताक्ष सरव्वर ॥

आपित गज कौ जूथ

करत क्रोडा निसि वासर‡ ।

पालकाव्य लघुवेस

रहत एक तहा§ रुषेसर ॥

तिन प्रीति बंधि अति परसपर

रोमपाद नृप संभरिय ।

आषेट जाइ फंदनि पकरि

दुरद आनि चंपापुरिय ॥ ६ ॥

\* A. B. T. संग्रहीय c. m. et r. † T. जलदकमल । ‡ A. B. T. वासर c. r. et s. § read short ã.

दूहा ॥

पालकाव्य कैँ बिरह करि  
अंग भए अति घीन ।  
मुनिबर तव तहाँ\* आय कैँ  
गज चिगा छगुन कीन ॥ ७ ॥

गाथा ॥

कोंपर पराग पचं ।  
† छालं डालं फुलं फलं कंदं ॥  
फलि‡ कली दैँ जरियं ।  
कुंजर करि थूलयं तनयं ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

ब्रह्मरिष्य तप§ करत  
देषि कंषौ मघवानं ।  
छलन काज पहु पठय  
रंभ॥ रुचिरा करि मानं ॥  
आप दिथौ तापसह  
अवनि करिनी सु अवत्तरि ।  
क्रमबंधि इक जती॥  
लषित हूँचौ सुपनंतरि ॥

\* read short ă. † A. B. T. छालं डाल फूल फल कंदं c. m. ‡ A. T, फली, B. फलं, c. m. § B. तप । ॥ B. रंभ, T. रंभे । ॥ comp. ser. for जतिय ।

तिहि ठांम आइ उहि हस्तिनी  
 बोर लियै पोगर सु नमि ।  
 उर शुक्र अंस धरि चंद कहि  
 पालकाव्य मुनिबर जनमि ॥ ९ ॥

दूहा ॥

तार्थ तिन मुनि करिन सैं  
 बांधि प्रीत अत्यंत ।  
 चंद कह्यौ नृप पिथ्य सम  
 सकल\* मंडि बिरतंत ॥ १० ॥

कवित्त ॥

सुनहि राज प्रथिराज  
 बिपन रवनीय करिय जुथ† ।  
 ‡रेवतट सुंदर समूह  
 बीर गज दंत चवन रथ ॥  
 आषेटक आचंभ  
 पंथ पावर रुकि षिल्लौ ।  
 ‡सिंघवट्ट दिस्सौ समूह  
 राज षिलत दोइ चस्सौ ॥

---

\* A. सकमंडि । † read जय r. c. ‡ redt. lines ; 14 for 11 inst.

जल जूह कूह\* कसतूरि मृग  
पह पंघी अरु पर्वतह ।  
चहुआंन मांन देखे नृपति  
कहि न बनत दच्छिन सुरह ॥ ११ ॥

दूहा ॥

एक ताप पहुपंग कै  
अरु रवनीक जु थान ।  
चावँड राव† बचन सुनि  
चढि चल्थौ चहुवांन ॥ १२ ॥

कवित्त ॥

चढत राज प्रथिराज  
बीर अग्निनेव दिसा कसि ।  
सव्व भूमि नृप नृपति  
चरन चहुवांन लगि धसि ॥  
मिल्यौ भांन बिस्तरी  
मिल्यौ षट्दल‡ गढी नृप ।  
मिल्यौ नदिपुर§ राउ¶  
मिल्यौ नरिंद रेवा अपु ॥

---

\* A. कूहसतूरि । † read rau, c. m. ‡ A. B. षट्दलगढी c. m.  
§ T. नदिपुर । ¶ B. राव ।



वन जूथ मृगा सिंघह रु गज  
 नृप आषेटक पिल्लई ।  
 लाहैर थांन सुरतांन तप  
 बर कग्गद लिषि मिल्सई ॥ १३ ॥

दूहा ॥

षां ततार मारूफ षां  
 लिए पांन कर\* साहि ।  
 धर चहुआंनी उप्परै  
 †बज्जा बज्जन बाइ ॥ १४ ॥

साटक ॥

ओतं भूपय गोरियं वरभरं वज्जाइ सज्जाइ ने  
 सा सेना चतुरंग बंधि उललं ततार मारूफयं ।  
 ‡तुज्जी सारस उप्पराव सरसी पल्लानयं§ षानयं  
 एकं जीव सहाव साहि न नयं बीयं स्तयं¶ सेनयं ॥१५॥

दूहा ॥

अहिबेली॥ फल हय्य लै  
 तौ ऊपर ततार ।

---

\* T. करि । † B. T. बजा c. m. ‡ B. तुज्जी । § B. पल्लालयं ।  
 ¶ A. सयं । ॥ T. अहिबेली ।

मेच्छ मसूरति सत्ति कै  
 बंच कुरानीबार ॥ १६ ॥  
 कुंडलिया ॥

वर मुसाफ\* तत्तार षां  
 मरन कित्ति तन बांन ।  
 में भंजे लाहैर धर  
 लैहं सु निमु बिहांन ॥  
 लैहं सु निमु बिहांन  
 सुनै ढीली सुरतांनं ।  
 लुथ्थि पार पुंडीर  
 भीर परिहै† चौहांनं ॥  
 दुचित चित्त जिन करहु  
 राज आषेट उथापं‡ ।  
 गज्जनेस आयस भ§  
 चले सव छूय मुसाफं॥ ॥ १७ ॥

दूहा ॥

षट मुर कोस मुकांम करि  
 चढि चल्ल्यौ चहुआंन ।

\* A. मुसाफर । † A. om. है । ‡ A. उथांनं । § conj. A. B. T.  
 असंभ c. m. et s. ¶ A. B. T. मुसाफ c. m. et r.

चंद वीर पुंडीर कै

कगद करि परिवान ॥ १८ ॥

गौरी वै दल समुहौ\*

गौ पंजाब प्रमान ।

पुव्व रु पच्छिम दुहुँ दिसा

मिलि चुहान सुरतान ॥ १९ ॥

दूत गये कनबज्ज दिसि

ते आये तिन थान ।

कथा मंड चहुआन की

कहि कमधज्ज प्रमान ॥ २० ॥

रेवा तट आयौ सुन्यौ

बर गोरी चहुआन ।

बर अवाज सब मिट्टि कै

सजे सेन सुरतान ॥ २१ ॥

दूत बचन संभलि न्वपति

बर आषेटक पिल्ल ।

रेवा तट पाधर धरा

जूह मृगन बर मिल्लि ॥ २२ ॥

---

\* A. समुहौ ।

कवित्त ॥

मिले सव्व सामंत  
 मत्त मंड्यौ सु नरेसुर ।  
 दह गूना दल साहि  
 सज्जि चतुरंग सजी उर ॥  
 मवन मंत चुक्कौ\* न  
 सोइ बर मंत बिचारौ ।  
 वल घब्धौ अण्णनौ†  
 सोच पच्छिलौ निहारौ ॥  
 तन सट सट्टै लीजे मुगति  
 जुगति बंध गौरी दलह ।  
 संग्राम भीर प्रथिराज बल  
 अण्ण मत्ति किज्जै कलह ॥ २३ ॥  
 सुनिय बत्त पज्जून  
 राव परसंग मुसक्कौ ।  
 देव राव बागरी  
 सैन दे पाव कसक्कौ ॥  
 तन सट्टै सटि‡ मुकति  
 §बोल भारय्यो बोलै ।

\* T. orig. चुक्कौ, corrected into चुक्कौ; A. चक्कौ । † A. B. T.  
 अण्णनौ, read aṇṇu. ‡ conj., A. B. T. सदि; cf. v. 23. l. 9.  
 § B. T. add चर ।

लोह अंच उडुंत

पत्त तरवर जिम डोलैं ॥

सुरतांन चंपि मुष्पां लग्यौ

दीली\* नृप दल वानिवौ ।

भर भीर धीर सांमंत पुन

अवै पटंतर जानिवौ ॥ २४ ॥

कहै राव पज्जून

मै† तारि कळ्यौ तत्तारिय ।

मैं दष्यिन वै देश

भीर जहव परि पारिय ॥

मैं बंध्यौ जंगलू

राव चामंड सु सथ्यं ।

मे‡ बंभन बास बिरास

बोर बडगुज्जर तथ्ये ॥

भर बिभर सेन चहुवांन दल

गोरी दल कित्तक गिनौ ।

जानै कि भीम कौरू सुबर

जर समूह तरवर किनौ ॥ २५ ॥

---

\* B. दिली । † B. मैं तारि, A. मैं तार, T. सं तारि, read ai.  
‡ read ě; A. repeats this and the following line twice.

तब कहै\* जैत पवार  
 सुनहु प्रथिराज राज मत ।  
 जुध साहि गौरी† नरिंद  
 गहै लाहैर कोट गत ॥  
 सबै‡ सेन अप्पनौ§  
 राज एकठ सु किज्जै ।  
 इष्ट भृत्य सग पन सुहित॥  
 बीर कागद लिपि दिज्जै ॥  
 सामंत सामि इह मंत है  
 अरु जु मंत चिंतै नृपति ।  
 धन रहै भ्रम॥ जस जाग है  
 \*\*अरु दीप दिपति दिवलोक पति ॥ २६ ॥  
 बह बह कहि रघुवंस  
 रांम हकारिस उद्यौ ।  
 सुनौ सब सामंत  
 साहि आयें बल छुद्यौ ॥  
 गज रु सिंघ सा पुरिष  
 जहों रुंधै तहाँ†† झुज्यै ।

\* read ai, m. c. † read सा गौरि, m. c. ‡ B. गहै । § read au = u.  
 m. c. ¶ A. om. सुहित । ॥ A. adds रहै after भ्रम, c. m. । \*\* अरु  
 superfluous; c. m. †† read ă = तहाँ, m. c.

समौ\* असमौ जानहि न  
 लज्ज पंकै आलुज्जै ॥  
 सामंत† मंत जानै नही  
 मत्त गहैं इक मरन कै ।  
 सुरतांन सेन पहिले वँध्यौ  
 फिरि बंधौ तौ करन कै ॥ २७ ॥  
 रे गुज्जर गांवार  
 राज लै मंत न होई ।  
 अण्ण मरै छिज्जै नृपति  
 कौन कारज यह जोई ॥  
 सब सेवक चहुआंन  
 देस भगौ धर पिल्लै ।  
 पच्छि कांम कहं करै‡  
 स्वामि संग्राम दूकल्लै ॥  
 पंडित भट्ट कवि गाइनां  
 नृप सोदागिर बारहुअ§ ।  
 गजराज सीस सोभा भवर  
 क्रन उडाइ वह सोभ लह ॥ २८ ॥

\* read aũ, m. c. † B. T. add हम superfluous; c. m. ‡ read  
 aĩ. § perhaps laps. scr. for बारअड्ड । =Skr. वारवधू ।

दूहा ॥

परी घोर तन दंग गम  
 अग जुझ सुरतांन ।  
 अब इह मंत बिचारियै  
 लरन मरन परवांन ॥ २६ ॥  
 गजन सिंग प्रथिराज कै  
 है दिषिय परवांन ।  
 बज्जो पष्पर घंडरै  
 चाहवांन सुरतांन ॥ ३० ॥  
 ग्यारह अष्पर पंच घट\*  
 लहु गुरु होइ समान ।  
 कंठसोभ बर छंद कै  
 नाम कह्यौ परवान ॥ ३१ ॥

छंद कंठसोभा ॥

†फिरे हय बष्पर पष्पर से ।  
 मनें फिरि इंदुज पंष कसे ॥  
 सो‡ ई उपमा कबिचंद कथे ।  
 सजे मनें§ प्यान पवंग रथे ॥

---

\* B. षट् । † B. T. फिरि । ‡ B. सोइ; read ॐ; m. c.  
 § read ॐ, m. c.



उरप्पर पुट्टिय दिट्टिय ता ।  
 बिप्परीय पलंग तता धरिता ॥  
 लग्गे उडि छित्तिय चैन लयं ।  
 सुने पुर के हअ बत्तनयं ॥  
 अग् वंधि सु हेम हमेल घनं ।  
 तव् चामर जाति पवंन रुनं ॥  
 ग्रह् अट्ट सतारक पीत पगे ।  
 मनो सु त के उर भांन उगे ॥  
 पय् मंडि हिअं\* सु धरै उलटा ।  
 मनो विट देषि चलै कुलटा ॥  
 मुष्† कट्टिन घूंघट अस्सु बली ।  
 ‡मनो घूंघट§ दै कुल बहु चली ॥  
 तिनं उपमा बरनी॥ न घनं ।  
 पुजै न न वग्ग पवंन मनं ॥ ३२ ॥

कुंडलिया ॥

नव॥ बज्जी घरियार\*\* घर  
 राज महल उठि जाइ ।

\* A. B. T. हिअ c. m. † read मुह् m. c. ‡ This line does not scan, one syllable being too many; perhaps omit दै and read घूंघटै । § B. घूंघट । ¶ T. बरभीन । ॥ B. नवज्जी । \*\* B. घरिया ।

निसा अइ बर उत्तरे

दूत संपते आइ\* ॥

†दूत संपते आइ

धाइ चहुआन सु जगिय ।

सिंघ बिहय्ये मुक्कि

साहि साही उर तगिय ॥

अइ सहस गजराज

लष्य अठार सु राजिय ।

उभै सत्त बर कोस

साहि गोरी नव बाजिय ॥ ३३ ॥

दूहा ॥

वँचि कागद चहुआन नै

फिर न चंद सर‡ थांन ।

मनो§ वीरन॥ तन अंकुरै

मुगति भोग बनि॥ प्रांन ३४ ॥

मची कूह दल हिंदु कै

करै सनाह सनाह ।

बर चिराक दस दस भई

बजि निसांन अरि दाह ॥ ३५ ॥

\* B. T. आई c. m. † A. om. this line. ‡ A. सह ।  
§ read ö=u. ॥ A. वीर । ॥ A. वति ।

वावस्त्र नृप मुक्क ते  
 दूत आइ तिहि वार ।  
 सजी सेन गौरी सुबर  
 उत्तरयौ नदि पार ॥ ३६ ॥  
 पंचा सज गौरी नृपति  
 बंधि उतरि नदि पार ।  
 चंद बीर पुंडीर ने  
 थटि मुक्के दरबार ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥

षां मारूप ततार  
 षांन षिलची वर गढे ।  
 चामर छत्र मुजक\*  
 गोल सेना रचि गढे ॥  
 नारि गौरी† जंबूर  
 सुबर कीना गज सारं ।  
 नूरी षां हुज्जाब‡  
 नूर महमुद सिर भारं ॥  
 बज्जीर षांन गौरी सुभर  
 षांन षांन हजरति षां ।

\* A. मुजक । † read गौरि; m. c. ‡ A adds वां c. m.

बिय सेन सज्जि हरबल करिय  
 तहां\* उभौ सजरत्ति षां ॥ ३८ ॥  
 रचि हलबल† सुरतांन  
 साहिजादा सुरतांन ।  
 षां पैदा महमूंद‡  
 बीर बंध्यौ सु बिहानं ॥  
 षां मंगोल§ ललरी॥  
 बीसं टंकी बर षंचै ।  
 चौतेगी सब्बाज  
 बांन अरि प्रांन सु अंचै ॥  
 जहगीर षांन जहगीर बर  
 षां हिंदूबर॥ बर बिहर ।  
 पच्छिमी षांन पढान सह  
 रचि उपभै हरबल गहर ॥ ३९ ॥  
 रचि हरबल पढान  
 षांन इसमान रु गष्यर ।  
 केली षां कुंजरी॥  
 साह सारी दल पष्यर ॥

\* A. ताहां । † A. हरबल । ‡ B. महमूंद । § B. T. मंगोल c. m.  
 ॥ comp. script. for ललरिअ and कुंजरिअ । ॥ A. B. हिंदूबर c. m.

षां सट्टी महनंग\*  
 षांन पुरसांनी बब्बर ।  
 †हवस षांन हवसी हुजाब  
 ग्रब्ब आलम जास बर ॥  
 तिन अग्ग अट्ट गजराज बर  
 मद सरक्क पट्टेतिनां ।  
 पंच बिन पिंड जो उप्पजै  
 तो‡ जुद्ध होइ लज्जी बिनां ॥ ४० ॥  
 करि तमा इतौ§ साहि  
 तीस तहाँ ¶ रषि फिरस्ते ।  
 †आलम षां आलम गुमांन  
 षांन उजबक्क निरस्ते ॥  
 लहु मारूफ गुमस्त  
 षांन दुस्तम बजरंगी ।  
 हिंदु॥ सेन उप्परे\*\*  
 साहि बज्जै रन जंगी ॥  
 सह सेन टारि सोरा रच्यौ  
 साहि चिन्हाव सु उत्तरयौ ।

\* A. सदनंग c. m. † redt. line ; 14 for 11 inst. ‡ B. जो ;  
 superfluous, m. c ; cf. XXVII, i. § A. T. चौसाहि । ¶ read ã,  
 m. c. ॥ B. T. हिंदू c. m. \*\* cp. scr. for उप्परइ ।

संभले स्वर सांमत नृप  
रोस बीर बीरं दुरगै\* ॥ ४१ ॥

दुहा ॥

तमसि तमसि सामंत सब  
रोस भरि ग प्रथिराज ।  
तब लगि रुपि पुँडीर ने  
रोक्यौ गेरी साज† ॥ ४२ ॥

छंद भुजंगी ॥

जहां उत्तरगौ साहि चिह्नाव मीरं ।  
तहां नेज गद्यौ ढढुके‡ पुँडीरं ॥  
करी आनि साहाब सा बंधि गेरी ।  
धकें धोंग धिंगं धकावै सजेरी ॥  
देज§ दीन दीनं कढी बंकि अस्सिं ।  
किधौं मेघ में वीज कोटिं निकस्सिं¶ ॥  
किर॥ सिप्परं केर ता सेल\*\* अग्गी ।  
किधौं बहरं केर नागिन नग्गी ॥  
हबके जु मेछं भ्रमंतं†† ज छुट्टै ।

\* A. टरैगै । † A. साहि B. सादि । ‡ T. ढढुके । § read ॐ.  
¶ B. नकस्सि । ॥ B. करे । \*\* A. लेस । †† T. भ्रमंतज ।

मनें घेरनी घुंमि पारेव तुटै ॥  
 उरं फुट्टि बरछी बरं छब्बि नासी ।  
 मनें जाल में मीन अड्डी निकासी\* ॥  
 लटक्के जु रंनं उडै हंस हल्लै ।  
 रसं भीजि खूरं चवग्गान पिह्लै ॥  
 लगे सीस नेजा भ्रमैं भेजि तथ्यें ।  
 भषे बाइसं भात दीपत्ति सथ्यें ॥  
 करै मार मारं महावीर धीरं ।  
 भए मेघ धारा वरष्पंत तीरं ॥  
 परे पंच पुंडीर सा चंद कळ्यौ ।  
 तबै साहि गोरी सचह्राव चळ्यौ ॥ ४३ ॥

कवित्त ॥

उतरि साहि चिह्राव  
 घाय पुंडीर लुथ्यिपर ।  
 उप्पारगौ† बर चंद  
 पंच बंधव सु पथ्य धर‡ ॥  
 दिष्णि दूत बर चरित  
 पास आयै चहुआनं ।

---

\* A. T. नीकासी । † उपारैगा c. m. ‡ B. पर ।

\*तौ उप्पर गोरी नरिंद  
 हाम† बढी सुरतांनं ॥  
 बर मोर धीर मारूफ टुरि‡  
 §पंच अनी एकठ जुरी ।  
 मुर पंच कोस लाहौर ते  
 मेछ॥ मिलानह सो करी ॥ ४४ ॥

दूहा ॥

बीर रोस बर बैर बर  
 झुकि लग्गौ असमांन ।  
 तौ नंदन सोमेस कै  
 फिरि बंधौ सुरतांन ॥ ४५ ॥  
 चंद्रब्यूह नटप बंधि दल  
 धनि प्रथिराज नरिंद ।  
 साहि बंधि सुरतांन सां  
 सेना बिन विधि कंद ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥

\*बर मंगल पंचमि सजुइ  
 दिन सु दीना प्रथिराजं ।

\* redt. line ; 14 inst. for 11. † A. चास । ‡ A. B. टुरि ।  
 § A. adds अर, c. m. ¶ B. T. मिछ ।



राह केत जप दीन  
 दुष्ट टारे सुभ काजं ॥  
 अष्टचक्र जोगिनी\*  
 भोग भरनी सुधि रारी† ।  
 गुरु पंचमि रवि पंचम‡  
 अष्ट मंगल न्वप भारी ॥  
 कै इन्द्र§ बुद्ध भारथ्य भल  
 कर चिश्मल चक्राबलिय ।  
 सुभ घरिय राज बर लीन बर  
 चळ्यौ उदै क्रूरह बलिय ॥ ४७ ॥

दूहा ॥

सो रचि उद्ध अवद्ध अध  
 उगि ॥ महंबधि मंद ।  
 बरनि षेद न्वप बंद्यौ  
 कोन॥ भाइ कवि चंद ॥ ४८ ॥

कवित्त ॥

यों प्रात खूर बंछइ  
 \*\*ज्यौं चक्र चक्रिय रवि बंछै ।

\* comp. scr. for जोगिनिय । † T. रानी । ‡ B. पंचमें । § conj. -  
 इंदु । ¶ A. महवविधि मंडि । ॥ A. कोन । \*\* redt line, 15 inst.  
 for 13.

येां प्रात सूर बंछई

\*ज्यौं सुरह बुद्धि बल सो इछै ॥

येां प्रात सूर बंछई

\*ज्यौं प्रात बर बंछि वियोगी ।

येां प्रात सूर बंछई

ज्यौं सु बंछै बर रोगी ॥

बंछ्यौ प्रात ज्यौं त्यो उनन†

\*ज्यौं बंछै रंक‡ करन बर ।

येां बंछ्यौ प्रात प्रथिराज नै

\*ज्यौं सती सत्त बंछै ति उर ॥ ४६ ॥

छंद दंडमाली§ ॥

भय प्रात रतिय जु रत्त दीसय

चंद मंदय चंद्यौ ।

भर तमस तामस सूर बर भरि

रास तामस छंद्यौ ॥

बर बज्जियं नीसांन¶ धुनि घन

बीर बरनि अकूरयं ।

---

\* redt. line, 15 for 13 inst. † A. उनन । ‡ T. रक, B. क ।  
§ commonly called harigítá ; also sometimes mahísharí. ¶ B.  
निसान ।

धर धरकि धाड़र करषि काड़र\*  
 रस मिस्र रस कूरयं ॥  
 गज घंट घनकिय रुद्र भनकिय  
 षनकि संकर उह्यौ ।  
 रननंकि भेरिय कन्ह हेरिय  
 दंति दांन धनंद्यौ† ॥  
 सुनि बीर सहइ सबद पढुइ  
 सह‡ सहइ§ छंड्यौ ।  
 तिह ठौर अदभुत होत न्रप दल  
 बंधि दुज्जन षंड्यौ ॥  
 सन्नाह सूरज सज्जि घाटं  
 चंद आपम राजई ।  
 कै मुकुर में प्रतिव्यंव राजय  
 कै॥ सत धन ससि साजई ॥  
 बर फूलि बंबर टोप आपत॥  
 रीस सीस त आइए ।  
 नष्विच\*\* हस्त कि भांन चंपक  
 कमल सूर हि सायए ॥

---

\* B. कायर । † A. धनंजयौ । ‡ A. om. § B. असदइ ।  
 ¶ read short ai,=i. ॥ B. आपत । \*\* A. नबित ।

बर बीर\* धार जागिंद† पंतिय  
कव्वि आपम‡ पाइयं ।

तजि मोह माया छोह कल बर  
धार तिथ्यह धाइयं§ ॥

संसार संकर बंधि गज जिम  
अप्प बंधन हथ्ययं ।

उनमत्त गज जिम नंषि दीनी  
मोह माया सथ्ययं ॥

सो प्रबल मह जुग वंधि जागी  
मूनि आरम देवयौ ।

सामंत धनि जिति षित्ति कीनी  
पत तरू जिम भेवयौ ॥ ५० ॥

दूहा ॥

क्रम गाह इक॥ मुगत को  
कौं करिजै बाषांन ।

॥मन अनंष सामंत नै  
ज्यौं कच करवति पाषांन ॥ ५१ ॥

वाइ वीष धुंधरि परिय  
बहर छाए भांन ।

\* A. बीरधा । † read short ö. ‡ B. आपमाइयं । § A. B. धाईयं c. m.  
॥ A. इकत्तकी । ॥ B. om. this and the three following lines.

कुन घर मंगल बज्जही  
 कै चढि मंगल आन ॥ ५२ ॥  
 दिष्ट देषि सुरतांन दल  
 लोहा चकत वांन ।  
 षह कि फेरि उडगन चले  
 निस\* आगम फिरि जान ॥ ५३ ॥  
 धजा बाइ बंकुर उडति  
 छवि कविंद इह आइ† ।  
 उडगन चंद नरिंद बिय  
 लगी मनें अइ‡ पाइ ॥ ५४ ॥  
 सेस निसंकहि बज्जतहि  
 बाजे कुहक सुरंग ।  
 मेटै सह निसांन के  
 सुने न अवन ति§ अंग ॥ ५५ ॥  
 अनी दोउ घन घोर ज्यों  
 घाइ मिले कर॥ थाट ।  
 चिचंगी रावर बिना  
 करै कोन दह बाट ॥ ५६ ॥

---

\* B. निसि । † B. आई c. m. ‡ B. अरपाई c. m. § B. अवननि ।  
 ¶ A. कथाट ।

कवित्त ॥

षवन रूप परचंड  
 घालि असु असि बर झारै ।  
 मार मार सुर बज्जि  
 पत्त तरु अरि सिर पार ॥  
 फहकि सह फोफरा  
 हुडु कंकर उप्पारै ।  
 कटि भसुंड परि मुंड  
 भीड कंटक\* उप्पारै ॥  
 वज्जयौ विषम मेवार पति  
 रज उडाइ सुरतांन दल  
 समरथ्य समर मनमथ मिली  
 अनी मुष्य पिष्ठा सबल ॥ ५७ ॥  
 इह रावर† उपर‡ धाइ  
 परगौ पांवार जैत षिझि ।  
 तिहि उप्पर चामंड  
 करगौ हुस्सेन षांन सजि ॥  
 धक्काई धक्काइ  
 दोइ हरबल वर मंझे ।

\* T. कंदक । † read रौर m. c. ‡ A उप्पर ।

पच्छ सेन आहुडि\*  
 अनी बंधी आलुउन्ने ॥  
 गजराज बिय सु सुरतांन दल  
 दह् चतुरंग बर बीर बर ।  
 धनि धार धार धारह धनी  
 बर भट्टी उप्पारि कर ॥ ५८ ॥  
 छत्र मुजीक सु अप्पि  
 जैत दीनौ सिर छत्रं ।  
 चंद्रव्यूह अंकुरिय  
 राज ह्वंअ तहां इकचं ॥  
 एक अग्र हुस्सेन  
 वीय अग्रह पंडीरं ।  
 मडि भाग रघुवंस  
 राम उप्पै बर बीरं ॥  
 सांषलौ स्वर सारंग दे  
 उररि षांन गोरीय मुष ।  
 हथनारि जार जंबूर घन  
 दुहं वांह उप्पेति रुष† ॥ ५९ ॥

---

\* T. आहुडि । † B. T. सष ।

छट्टि अड्ड बर घटिय  
 चळ्यौ मध्यांन भांन सिरि ।  
 स्वर कंध बर कट्टि  
 मिले काडूर कुरंग बर ।  
 घरी अड्ड बर अड्ड  
 लोह सों लोह हरुके ।  
 मन आगौ अरि मिले  
 चित्त में कंक\* घरके ॥  
 पुंडीर भीर भंजन भिरन  
 लरन तिरच्छौ लगयौ ।  
 नव बधू जेम संका सुवर  
 उदौ† जांनि जिम भगयौ ॥ ६० ॥

छंद भुजंगी ॥

मिले चाडू ‡चहुआंन सा चंपि गेरी ।  
 स्वयं पंच कोरी निसांनं अहेरी ॥  
 बजे आवधं संभरे अड्ड कोसं ।  
 तिनं अग्न नीसांन मिलि‡ अड्ड कोसं ॥

\* A. कक । † B. उदौ c. m. । ‡ In lines 1. चडू, 4. मिलि,  
 18. अर, 23. घर, there are two shorts (७७) for one long(—);  
 a licence unknown to modern prosody, in regard to this  
 metre.



वरं बंबरं चारं माही ति साई ।  
 हले छत्र पोतं बले यार घाई  
 बुलै स्वर हक्के दहक्के पचारं ।  
 घले वय्य दोऊ धरं जा अघारं ॥  
 उतमंग तुट्टै परै श्रोन धारी ।  
 मनो दंड सुक्की अगी\* वाइ वारी† ॥  
 नचै कंधबंधं हकै सीस भारी ।  
 तहां जागमाया जकी सी बिचारी ॥  
 ‡वढी सांग लग्गी बजी धार धारं ।  
 तहां सेन दून्नुं करै मार मारं ॥  
 नचै रंग भैरुं गहै ताल बीरं ।  
 सुरं अच्छरी बंधि नारद तीरं ॥  
 इसी जुद्धबंधं उबड्डेउ भानं ।  
 भिरै गोरियं सेन अरु§ चाहुवानं ॥  
 करै कुंडली तेग बगी प्रमानं ।  
 मनो मंडली रास तं कन्ह ठानं ॥  
 फुटी॥ आवधं माहि सामंत स्वरं ।  
 बजै गोर आरं॥ मनो बज्ज झूरं ॥

\* T. अगी c. m. † B. वाई । ‡ A. चढी सांग । § T. चर ।  
 ¶ A. B. फुट्टी c. m. ॥ A. रुं ।

लगै धार धारं तिनै धरह तुटै ।  
 दुहं कुंभ भगो करंकं अहुटै ॥  
 फुटो ओन भोमं अपी बिंब राजं ।  
 मनें मेघ वुटें प्रथम्मी समाजं ॥  
 पराक्रम राजं प्रथीपत्ति रुखौ ।  
 रनं रुंधि गोरी समं जंग जुखौ ॥ ६१ ॥

दूहा ॥

तेज छुट्टि गोरी सुबर  
 दिय धीरज तत्तार ।  
 मो उपमै सुरतांन केां  
 भीर परो इन वार ॥ ६२ ॥

छंद मोतीदाम\* ॥

रतिराज रु जावन राजत जेार ।  
 चँप्यौ ससिरं उर सैसव केार ॥  
 उनी मधि मझि मधू धुनि होइ ।  
 तिनं उपमा बरनी कवि कोइ ॥

---

\* The metre is somewhat irregular; in some of the lines the initial syllable is superfluous, as in lines 1, 9, 16, and the following.

सुनी बर आगम\* जुव्वन वैन ।  
 नच्यौ कबहू न सु उहिम मेंन ॥  
 कबहूँ दुरि कंन न पुच्छत नेंन ।  
 कहौ किन अव्व दुरी दुरि वेंन ॥  
 ससि रोरन सैसव दुंदुभि बज्जि ।  
 उभै रतिराज सजोवन सज्जि ॥  
 कही बर ओन सुरंगिय रज्जि ।  
 चपे† नर दोउ बनं बन भज्जि ॥  
 इय् मीन नलीन भये रत रज्जि ।  
 भय् विभ्रम भाइ परी न हि नंजि ॥  
 मूर् मारुत फौज प्रथंम चहाइ ।  
 गति लज्जि सँकुच्चि कछे‡ मिलि आइ§ ॥  
 दहि सीत मधूपन कंदहि जीव ।  
 प्रगटै उर तुच्छ सोऊ॥ उर भीव ॥  
 बिन पल्लव कोरहि तारहि संभ ।  
 गहना विन बाल बिराजत अंभ ॥  
 कलि कंठन कंठ ॥सज्यौ अलि पंष ।  
 न उडिय अंगन बेलिय अंष ॥

\* B. T. अगम c. m.    † B. T. चपे c. m.    ‡ B. केले ।  
 § T. आई c. m.    ॥ read short ö.    ॥ B. सज्यो ।

सजो चतुरंग सज्यौ बनराइ ।  
 बजी इन उप्पर सैसब जाइ\* ॥  
 कवि मत्तिय जूह तिनं बहु घोर ।  
 ब्रनंत वैसंधय† चंद कठोर ॥ ६३ ॥

छंद रसाबला‡ ॥

बोल पुचै घनं ।  
 स्वामि जंपे मनं ॥  
 रोस लगो तनं ।  
 सिंध महं मनं ॥  
 छेह मोहं घिनं ।  
 दांन छुट्टे ननं ।  
 नाम राजं घनं ।  
 भ्रम सातुक्कनं ॥  
 मेछ बाहं बिनं ।  
 रत्त कंधं ननं ॥  
 ठल्ल जाढा हनं ।  
 जीव ता साहनं ॥  
 बान जा संधनं ।  
 पंघि जा बंधनं ॥

\* B. जार्द c. m. † Read short ai. ‡ Also called विभेदा ।

स्याम सेतं अनी ।

पीत रत्तं घनी ॥

कूह मची घरी ।

रोस दंती फिरी ॥

फौज फट्टी\* पुनं ।

खर उपमे घनं ॥

लेहु लेहु करी ।

लोह काढे अरी ॥

कह जा संभरी ।

पाइ मंडै फिरी ॥

बीर हकें करो ।

नेन रत्तं बरी ॥

षंड जा† षोलियं ।

बीर सा बोलियं ॥

वीर बज्जे घुरं ।

दंति पट्टे‡ छुरं ॥

झार संकोरियं ।

फौज विष्फौरियं ॥

---

\* A. फुडि । † A. ज । ‡ A. पट्टे ।

दंति रुद्धी परे ।  
 अग फूलं झरे ॥  
 हेम पंनारियं ।  
 जावकं ठारियं ॥  
 आननं हंकयं ।  
 अंग जा \*नंचयं ॥  
 सत्त सामंतयं ।  
 बान सा पथ्ययं ॥  
 फौज दोऊ पटी ।  
 जानि जूनी टटी ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥

† सोलंकी माधव नरिंद  
 षांन षिलची मुष लग्गा ।  
 सबर बीररस बीर  
 बीर बीरा रस पग्गा ॥  
 दुअन वुद्ध जुध तेग  
 दुहुं हथ्यन उपभारिय ।  
 तेग तुट्टि चालुक्क  
 बथ्य परिकट्टि कटारिय ॥

\* B. T. नचय c. m. † redt. line; 14 for 11 inst.

अग अग रुक्मि ठिस्से बलन  
 अधम जुझ लगो लरन ।  
 सारंग बंध घन घाव परि  
 गौरी वै दीनौ मरन ॥ ६५ ॥  
 थग्ग हटकि जु टिक  
 जमन सेना समंद गजि ।  
 हय गय बर हिल्लोर  
 गरुअ गोइंद दिष्पि सजि ॥  
 \*अगम अठेल अभंग†  
 नोर असि मीर समाहिय ।  
 अति दल बल आहुट्टि  
 पच्छ लज्जी पर ‡वाहिय ॥  
 रज तज्ज रज्ज मुक्कि न रह्यौ  
 रजन लगि रज रज भयौ ।  
 उच्छंगन अच्छर सो§ लयौ  
 देव ¶बिमानन चढि गयौ ॥ ६६ ॥  
 परि पतंग जैसिंघ  
 ॥ पै\*\* पतंग अप्पुन तन दज्जै ।

\* A. अनम । † T. अभंग । ‡ A. B. T. वाहीय c. m. et r.  
 § A. सोल्यौ । ¶ A. वियांन । ॥ redt. line; 15 for 13 inst. \*\* read  
 short ai.

\*इन नव† पत्तंग गति लीन  
 करे अरि अरि धज धज्जै ॥  
 ‡उह तेल ठांम बाति  
 अगनि एकल§ विरुज्झाइय ।  
 ¶इह पँच अप अरि पंच  
 पंच अरि पँथ लग्गाइय ॥  
 आरंनि कूआरी बरगौ  
 दैइ दाहन दुज्जन दबन ।  
 जीतेब असुर महि मंडलह  
 और ताहि पुज्जै कवन ॥ ६७ ॥  
 ॥रुप्यौ बीर पुंडीर  
 फिरो\*\* पारस ††सुरतांनो ।  
 सस्त्र बीर चमकंत  
 तेज आरुहि सिर ठांनो‡‡ ॥  
 टाप और तुटि किरच  
 सार सारह जरि भारे ।  
 मिलि नच्छिच रोहिनी§§  
 सीस ससि उडगन¶¶ चारे ॥

\* redt. line; 14 for 11 inst. † A. adds वन before नव ।  
 ‡ A. B. T. make the pause thus, उह तेल ठांम बाती अगनि ।  
 एकल विरुज्झाइय ॥ c. m. § read short ẽ. ¶ A reads this and  
 the following line इह पंच अप पंच अरि पंथ लग्गाइय । ॥ Read  
 short au; m. c. \*\* A. फिरी । †† T. सुरतांनो । ‡‡ A. नांनो ।  
 §§ cp. scr. for रोहिनिच; m. c. ¶¶ A. B. T. उडगन ।



उठि परत भिरत भंजत अरिन  
 जै जै जै सुरलोक हुआ ।  
 उद्यो कमंध पल पंच चव  
 कौन भाद्र कण्ठो जु धुअ ॥ ६८ ॥  
 दुज्जन सल कूरंभ  
 बंध पल्लन हकारिय ।  
 सन्हे षां घुरसांन  
 तेग लंवी उपभारिय ॥  
 टोप टुट्टि बर \*करिय  
 सीस पर तुट्टि कमंध ।  
 मार मार उच्चार  
 †तार तं नंचि कमंध ॥  
 ‡तहाँ देषि रुद्र रुद्र हहरगौ  
 हय हय हय नंदी§ कछौ ।  
 कविचंद सयल पुत्री चकित  
 पिष्षि॥ बीर भारथ नयौ ॥ ६९ ॥  
 सोलंकी सारंग  
 षांन षिलची मुख लगा ।

\* A. B. T. करो, c. m. † A. तारतिनंच । ‡ read short ã.  
 § B. om. ¶ A. B. T. पिष्षि ।

वह पंगा नै भूत्त  
 इतें चहुआंन बिलग्गा ॥  
 है कंधन दिय पाइ  
 कह उत्तरि बिय\* बाजिय ।  
 † गज गुंजार हुंकार  
 धरा गिर कंदर गाजिय ॥  
 जय जय ति देव जै जै करहि  
 पहुपंजलि पूजत रिनह ।  
 इक परगौ घेत सोधै सकल  
 इक रछौ बंधे धुनह‡ ॥ ७० ॥  
 करो मुष्प आहुट्ट  
 बीर गोइंद सु § अष्यै ।  
 कविलपोल जनु कन्ह  
 दंत दारुन गहि नष्यै ¶ ॥  
 सुंडदंड ॥ भये षंड  
 पोलवानं गज मुक्यौ ।  
 गिद्धि सिद्धि बेताल  
 आइ अंघिन पल रुक्यौ ॥

---

\* T. बिया । † T. गन । ‡ B. सुनह । § A. अष्यै । ¶ A. नष्यै ।  
 ॥ read short ě.

बर बीर परगौ भारथ्य बर  
 लोह लहरि लगगत झुल्यौ ।  
 तत्तार षांन संम्हौ\* सुक्रत  
 सिंघ हकि अम्बर डुल्यौ ॥ ७१ ॥  
 षोलि षग नरसिंघ  
 षीझि† षल सीसह झारी‡ ।  
 तुटि धर धरनि§ परंत  
 परत संभरि कट्टारिय ॥  
 चरन अंत उरझंत  
 बीर कूरंभ करारौ ।  
 तेग घाइ चूकंत  
 झरी झर लोह सँभारौ ॥  
 चलिगयौ न क्रमन क्रम न॥ चलै  
 डुल्यौ न डुलत न हथ्य बर ।  
 तिन परत बीर दाहर तनौ  
 चामंडां बज्जी लहर ॥ ७२ ॥  
 छंद भुजंगी ॥  
 छुटी छंद निच्छंद सीमा प्रमानं ।  
 मिली ढालनी माल राही समानं ॥

\* T. संम्हा । † T. A. षिक्ति, c. m. ‡ A. भारीय ।  
 § B. धरनी । ¶ B. नन, c. m.

निसा मांन नीसांन नीसांन धूअं ।  
 धूअं धूरिनं मूरिनं पूर कूअं ॥  
 सुरत्तांन फौजं तिने\* पंति फेरी ।  
 मुषं लग्गि चहुआंन† पारस्स घेरी ॥  
 भये प्रात सुज्जात संग्राम षालं ।  
 चहुव्वांन उट्ठाय सालो पिथांलं ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥

जैतबंध ढहि परगौ‡  
 सुलषलष्पन§ कौ जायौ ।  
 †तहां॥ अंगरि महामाया॥  
 देबि हुंकारो\*\* पायौ ॥  
 हुंकारै हुंकार  
 जूह गिद्धनि उट्ठायौ ।  
 गिद्धिन तें अपछरा  
 लियौ चाहतौ न पायौ ॥  
 अवतरन सोइ उत पति गयौ  
 देवथांन विभ्रंम वियौ ।

\* B. तिनं । † two ॐ for one — ‡ read short aũ § A. लष्ष ।  
 ¶ A. om. this and the following lines. ॥ read short ॐ.  
 \*\* T. ऊंकारो ।

जमलोक न सिवपुर\* ब्रह्मपुर  
 भान थांन भानै भयौ ॥ ७४ ॥  
 तन झंझरि पांवार  
 परगौ धर मुच्छि घटिय बिय† ।  
 वर अछर बिटयौ‡  
 सुरग मुक्के न§ सुर गहिय ॥  
 तिहित बाल ततकाल  
 सलष बंधव ढिग आइय ।  
 लिषिय अंग बिह्य॥ हथ्य  
 सोइ बर बंछि दिषाइय ॥  
 जंमन मरंन सह दुहसु गति  
 न न मिट्टै भिंट॥ हन तुअ ।  
 ए बार सुबर बंट\*\* हु नही  
 बंधि लेहु सुको बधुअ ॥ ७५ ॥

दूहा ॥

रांमबंध†† कौ सीस बर  
 ईस गह्यौ कर चाइ‡‡ ।

---

\* A. om. पुर । † A. om. ‡ conj. बिटयौ m. c. § A. om.  
 ॥ T. A. बिय । ॥ A. भिड । \*\* A. नंड । †† A. वध ।  
 ‡‡ T. चार ।

अथि दरिद्रौ ज्यौं भयौ  
 देषि देषि ललचाइ ॥ ७६ ॥  
 जांम एक दिन चढत बर  
 जंघारौ झुकि बीर ।  
 तीर जेम तत्तौ परगौ  
 धर अष्यारे मोर ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥

\*जंघारौ जागी जु-  
 गिंद कट्टौ† कट्टारौ ।  
 फरस पांनि तुंगी चि-  
 स्तूल पष्यर अधिकारौ ॥  
 जटत बांन सिंगी बि-  
 भूत हर बर हरसारौ ।  
 सबर सह बहयौ  
 विषम दगं धन झारौ ॥  
 आसन सदिद्ध‡ निज पत्ति में  
 लिय सिर चंद अम्रित§ अमर ।

\* The first three lines omit the usual pause at the eleventh instant. † B. कट्टै। ‡ T. सदिद्ध। § A. B. T. अम्रित, c. m.

मंडली क रांम रावत\* भिरत  
 न भौ वीर इत्तौ समर ॥ ७८ ॥  
 सिलह सज्जि सुरतांन  
 झुक्कि बज्जे रन जंगं ।  
 सुने अवन लंगरी  
 बीर लग्गा अनभंगं ॥  
 बीर धीर सत मध्य  
 बीर हुंकरि रन धायौ ।  
 सामंतां सत्त मद्धि  
 मरन दीनं भय सायौ ॥  
 पारंत धक्क हाकंत रिन  
 षग प्रवाह षग† षुल्लयौ ।  
 बिब्भूति‡ चंद अंगन तिलक  
 बहसि बीर हकि बुल्लयौ ॥ ७९ ॥  
 लंगा लोह उचाइ  
 परगौ घुंमर घन मज्झै ।  
 जुरत तेग सम तेग  
 कोर बहर कलु सुज्झै ॥

---

\* conj. रावन, Rám fighting with Rávan. Read रौन, m. c.  
 † A. B. T. षग, c. m. ‡ T. विभूत ।

यौ लग्गौ\* सुरतांन  
 ज्यौं† अनल दावानल दंगं ।  
 ज्यौं लंगूर लगाया  
 अगनि अगौ आलंगं ॥  
 इक मार उझार अषार मल  
 एक‡ उझार सज्झारयौ ।  
 इक वार तरौ दुस्तर रूपे  
 दूजै§ तेग उभारयौ ॥ ८० ॥

कुंडलिया ॥

तेग झारि उज्झारि बर  
 फेरि उपम कवि कथ्य ।  
 नैन बान अंकुरि बहुरि  
 तन तुट्टै बहि हथ्य ॥  
 तन तुट्टै बहि हथ्य  
 फेरि बर बीर सवीरह ।  
 मरन चिंत सिंचयौ  
 जन्म तिन तजी जंजीरह ॥  
 हथ्य बथ्य आहित्त  
 फिर तक्के उर बहु॥ बेगा ।

\* A. लग्गौ । † redt. line ; 15 inst. for 13 ; ज्यौं superfluous.  
 ‡ read short ॐ, = इक, m. c. § A. दूते । ¶ A. om.



लंगा लंगरि\* राइ†  
बीर उच्चाइ सुतेगा ॥ ८१ ॥

कवित्त ॥

‡तब लोहानै महसुंद§  
बांन मुक्के बहु भारी ।  
‡फुट्टि सु ठट्टर वहि जु बान  
पिड्ड ऊरड्ढ॥ निकारो ॥  
मनें किवारी लागि  
पुट्टि घिरकी उघघारिय ।  
वट्टारी॥ बर कट्टि  
बीर अवसान संभारिय ॥  
एक झर मोर उजझारि झर  
करि सुमेर परिअरि सु फिरि ।  
चवसट्टि षांन गेरी परे  
तीन राइ इक राजपरि ॥ ८२ ॥  
मंनि लोह मारूफ  
रोस विडुर गां हक्के ।

\* B. T. लंगरि c. m. † A. B. T. राई c. m. ‡ redt lines, 14  
inst. for 11. § B. महुमं । ¶ B. ऊरड्ढ, c. m. ॥ B. वट्टारी ।

\*मनो<sup>१</sup> † पंचानन वाहि बांन  
 सह सिरसह हहके ॥  
 दुहं मीर बर तेज  
 सीस इक सिंघह बाही ।  
 टोप टुटि बरकरी †  
 चंद उष्पमा सु पाई ॥  
 मनो<sup>१</sup> † सीस बीय शृंग बिज्जुलह  
 रही हेत तुटि भांन हति ॥  
 उतमंग ‡ सुहै विव टूक ह्वै  
 मनु § उडगन न्वप तेजमति ॥ ८३ ॥  
 छंद भुजंगी ॥  
 परे षांन चौसट्ठि गोरौ नरिंदं ।  
 परे सुभर ¶ तेरह ॥ कहै नांम चंदं ॥  
 परे लुथ्यि लुथ्यी\*\* जु सेना अलुजझै ।  
 लिषे कंक अंकं बिना कौन †† बुजझै ॥  
 परगौ गोर जैत ‡‡ मधिं सेस ढारो ।  
 जिनं राषियं रेह अजमेर सारी ॥

\* redt. lines, 14 inst. for 11. † read short ö and i, m. c.  
 ‡ Sandhi of उतम+अंग । § B. मानें । ¶ Two shorts (uu) for one  
 long(—)here, and in line 6, अज ; 7, कन ; 15, नर ; 23, चड ; 29,  
 पर and लड । ॥ A. तेरहै । \*\* B. लुथ्यि । †† A. कोनु । ‡‡ B. जैति ।

परगौ कनक आहुट्ट गोबिंद बंध ।  
 जिनें मेह की पारसं सब्ब षडं ॥  
 परगौ प्रथ्य बीरं रघुब्बंश राई ।  
 जिनें संधि षंधार गोरी गिराई ॥  
 परगौ जैतबंधं सुपावार भानं ।  
 जिनें भेजियं मीर बांने ति बांनं ॥  
 परगौ जाध संग्राम सोहं कमोरी ।  
 जिनें कट्टियं वैर गौ दंत गोरी ॥  
 परगौ दाहिमै देव नरसिंघ अंसी ।  
 जिनें साहि गोरी गिल्यौ षानं गंसी ॥  
 परगौ बीर बांनेंत नादंत नादं ।  
 जिने साहि गोरी गिल्यौ\* साहिजादं ॥  
 परगौ जाबलौ जह्ल ते सेन भष्यं ।  
 हए सार मुष्यं निसंकंत नष्यं† ॥  
 परगौ पह्लनं बंध माह्लन राजी ।  
 जिनें अगग गोरी क्रमं सत्त भाजी ॥  
 परगौ बीर चहुआन सारंग सारं ।  
 बजे दोइ ग्रेहं ज आकास तोरं ॥  
 परगौ राव भट्टी बरं पंच पंचं ।

जिने मुक्ति के पंथ चह्लाइ संचं ॥  
 परगौ भांन पुंडीर ते सोम कांमं\* ।  
 जिनें जुंझते† बज्जयौ पंच जामं‡ ॥  
 परगौ राउ परसंग लहु बंध भाई ।  
 तिनं मुक्ति अंसं छिनं मंझ पाई ॥  
 परगौ साहि गोरी भिरै चाहुआनं ।  
 कुसादे कुसादे चवै§ मुष्य षानं ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥

दस हथ्यी सु बिहानं  
 साहि गोरी मुष किनौ ।  
 ॥कर अकास वादी ततार  
 सोर चव को दस दिनौ॥ ॥  
 नारि गोरि\*\* जंबूर  
 कुहक बरबांन अघातं†† ।  
 गज्जि भग्ग प्रथिराज  
 चित्त करयो‡‡ अकुलातं ॥  
 सो मोह कौह बर बज्जिके\*  
 ब्रज उन धार धमंसि कै ।

\* A. कंसं । † A. जभुते । ‡ A. जंसं । § T. चंपै । ¶ redd.  
 line ; 14 for 11 inst. ॥ B. T. दिनौ । \*\* B. T. गोरी, c. m. †† B.  
 T. अघातं । ‡‡ B. करियौ । §§ B. कै, A. कै ।

सामंत खर बर बीर बर  
 उठे बीर बर हमसि कै ॥ ८५ ॥  
 अड अड जाजनह  
 मोर उडि संगी फेरी ।  
 तब गेरी सुरतांन  
 रोस सामंतह घेरी ॥  
 चक्र अवन चौडाल  
 अग सेशन पंचासौ ।  
 खर कोट द्वै जोट  
 सार मरनह हुल्लासौ ॥  
 बर अगनि बगी हल्ल्यौ नही  
 पहर कोट सु जोट हुअ ।  
 बर बार रास समरह परिय  
 सार धीर बर कोट हुअ\* ॥ ८६ ॥  
 छंद रसाबला ॥  
 मेलि साहं भरं ॥  
 षग† षोले रुं‡ ।  
 हिंदु मेछं जुरं ॥  
 मंत जाजं भरं ।

---

\* T. दुअ; B. नअ । † B. सग । ‡ B. रुं ।

दंत कट्ठे करं ॥  
 उष्णमा उष्णं ।  
 कंद भीलं जरं ॥  
 कोपि कट्ठे करं ।  
 कंध ननं धरं ॥  
 पंष जष्णं फिरं ।  
 तीर नषे करं\* ॥  
 मेघ बुट्ठे बरं ।  
 आवधं संझरं ॥  
 बंक तेगं करं† ।  
 चंद बीजं बरं ॥  
 अह्व अह्वं धरं ।  
 बीय बंधं‡ धरं ॥  
 कित्ति जंपै सरं§ ।  
 अस्सु ढुंढै फिरं ॥  
 रंभ बंछै बरं ।  
 थांन थांनं नरं ॥  
 धार धारं तुटं ।

\* conj. किरं । † B. कते । ‡ B. बीय बबंधं । § conj. सिरं ।

अंम बासं छुटं ॥  
 साह गेरी बरं ।  
 घग्ग घेले करं ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥

षां पुरसांन ततार  
 षिज्जि\* दुज्जन दल भण्यै ।  
 बचन स्वांमि उर षटकि  
 छटकि तसबी कर नण्यै ॥  
 कजल पंति गज विथुरि  
 मध्य सेना चहुआंनी ।  
 अजै मांनिजै रारि  
 बिय स तेरह† चँपि प्रांनी ॥  
 धामंत फिरस्तन कट्ठि अस‡  
 दहति पिंड सामंत भजि ।  
 बर बीर भीम वाहन करह  
 परे धाद चतुरंग सजि ॥ ८८ ॥

छंद भुजंगी ॥

परगौ रघुवंसी अरी सेन जाडी ।  
 हुतौ बालवेसं मुषं लज्ज डाढी ॥

\* B. षिज्जि । † A. तेरह । ‡ A. असौ ।

बिना लज्ज पष्यै सची ढुंढि पिष्यौ\* ।  
 मनें डिंभरू जांनि कै मीन क्रष्यौ ॥  
 परगौ रूकरिनबट्ट† अरि‡ सेन गाही ।  
 मनें एक तेगं झरी नीर‡ दाही ॥  
 फिरै अडुबट्टै उपमान बट्टै ।  
 बिश्वक्रंम बंसी कि दारुन्न गट्टै ॥  
 परे हिंदु मेछं उलथ्ये पलथ्यौ ।  
 करें रंभ भैसं§ ततथ्ये ततथ्यौ ॥  
 गहैं अंत गिडं बरं जे कराली ।  
 मनें नाल कट्टैं कि सोमै म्रनाली¶ ॥  
 तुटे एक टंगा टिके घग्ग धायौ ।  
 मनें बिक्रमं राइ गोइंद पायौ ॥  
 गहै हिंदु हथ्यं मलेछं अमायौ ।  
 जनो भीम हथ्यो न उप्पंम पायौ ॥  
 ननं मानवं जुइ दानब्ब अिसौ ।  
 ननं इंद तारक भारथ्य कैसौ ॥  
 झकं बज्जि झंकारयं झपि उडै ।  
 बरं लोह पंचं बधं पंच छुट्टै ॥

\* B. पिष्यौ । † two shorts for one long. ‡ A. नीरै । § T. भैसं ।  
 ¶ B. सोमैमनाली ।



मनों सिंघ उज्झै अरुज्झंत छुट्टै ।  
 रनं देवसाई\* सए आव घुट्टै ॥  
 घनं घोर ढुंढत्त† उत‡ कंठ फेरी ।  
 §लगे झगारै हंस जह॥ जार एरी ॥  
 तुटै रुंड मुंडं बरं॥ जे करेरो ।  
 बरहाइ रिगझें दुहं दीन भेरी ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥

पच्छै भौ संग्राम  
 अगा अपछर बिचारिय ।  
 पुछै रंभ मेनिका  
 अज्ज चित्तं किम भारिय ॥  
 तव उत्तर दिय फेरि  
 अज्ज पहुनाई आइय\*\* ।  
 रथ्य बैठि औ थान  
 सोझ तह कंत न पाइय ॥  
 भर सुभर परे भारथ्य भिरि  
 ठांम ठांम चुप जीत सधि ।

\* A. साई । † A. B. ढुंढत्त, c. m. ‡ T. om. उत । § B. लगे  
 भरै सजाइ सार राती । ¶ T. om. ॥ T. बर । \*\* A. आइय, c. m.  
 B. T. आई, c. r.

उथकीय पंथ हल्लै चलयौ

सुथिर संभौ\* देषीय नथ† ॥ ६० ॥

कुंडलीया ॥

कहै रंभ सुनि मेंनका‡

एरहु जिन मत जुथ्य ।

अरिय अनं मति जांनि करि

जाति आवै§ ग्रह रथ्य ॥

जाति॥ आवै ग्रह रथ्य

ब्रह्म सिव लोकह छंडी ।

कै बिअ लोक ग्रह करै

॥कै भांन तन सो\*\* तन मंडी ॥

रोमंचि तिलकं बसि बरी

इंद्र बधू पूजन जहीं ।

आपंम जाग नन हुअ बहुरि

अवतारन बर है कहों ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥

षां हुसेन ठरि परगौ††

अख फुनि परगौ सार बहि ।

\* B. यंभौ । † A. नथ । ‡ A. मेंनकनि । § read short ai. ¶ A. जेति । ॥ redt. line ; 15 for 13 inst. \*\* A. सें । †† B. यंभौ ।

झुज्झ फेरि सति सीव  
 षांन उजबक्क घेत रहि ॥  
 षां ततार मारूप  
 षांन षांनं घट घुंमै ।  
 तब गोरी सु बिहान  
 आइ दुज्जन मुष झुंमै ॥  
 कर तेग झल्लि\* मुडिय सुबर  
 नहि सुरतानह पन करी ।  
 अदि हार दीह पलटे सुबर  
 तबहि साहि फिरि पुकरी ॥ ६२ ॥  
 तब साहिब† गोरी नरिंद  
 सत्त वानं जु समाही‡ ।  
 पहलवान§ बर बीर  
 हने रघुवंस गुरांई ॥  
 दूजै बांन तकांत  
 भीम भट्टी बर भंजिय ।  
 चाहुआंन तिय बांन  
 षांन अहं घर॥ रंजिय ॥

\* B. जल्लि । † B. साहि गोरि; T. A. साहिव गोरि । ‡ A. समार्ई ।  
 § A. B. पहिल । ॥ A. घर ।

चहुआंन कमांन सुसंधि करि  
 तीय वांन हथह थरहिय ।  
 तब लगि चंपि प्रथिराज नें  
 (१) गेरी वै गुज्जर गहिय ॥ ६३ ॥  
 गहि गेरी सुरतांन  
 षांन हुस्सेन उपारगौ ।  
 षां तत्तार निसुरति  
 साहि गेरी करि डारगौ ॥  
 चामर छच रषत्त  
 बषत लुट्टे<sup>(२)</sup> सुलतानी ।  
 जै जै जै चहुआंन  
 बजी रन जुग जुग वानी ॥  
 गज बंधि बंधि सुरतांन को<sup>(३)</sup>  
 गय ढिखी ढिखी नृपति ।  
 नर नाग देव अस्तुति करै  
 दिपति दीप दिवलोच पति ॥ ६४ ॥

दूहा ॥

समै एक बत्ती<sup>(४)</sup> नृपति  
 बर छंड्यौ<sup>(५)</sup> सुरतांन ।

(१) A. om. गो । (२) A. लुट्टे । (३) T. को । (४) T. वत्ती c. m.  
 (५) A. छंड्यौ ।

तपै राज चहुआन येां<sup>(१)</sup>

ज्योां ग्रीषम मध्यांन ॥ ६५ ॥

कवित्त ॥

मास एक दिन तीन

साह संकट में रुंधौ ।

करिय अरज उमराउ

दंड हय मंगिय सुझौ ॥

हय अमोल नव सहस

सत्त सेां दोन अैराकी<sup>(१)</sup> ।

उज्जल दंतिय अड्ड

वीस मुरु ढाल सु जकी ॥

<sup>(३)</sup>नग मोतिय मानिक नवल

करि सलाह संमेल करि ।

पहिराड राज मनुहार<sup>(४)</sup> करि

गज्जन वै पठयौ सुघर ॥ ६६ ॥

इति श्री कविचंद बिरचिते प्रथिराज रासा के  
रेवातट पातिसाह ग्रहनं नाम सतावीसमो प्रस्ताव  
संपूर्ण ॥ २७ ॥ रेवातट सम्यो समाप्तं ॥ • ॥

(१) B. येां । (२) read short aī. (३) def. line ; 13 for 15 inst.  
(४) B. मनुहारि ।

॥ २८ ॥ अथ अनंगपाल सम्यौ लिख्यते ॥ २८ ॥



दूहा ॥

दिय दिल्ली चहुआन कों<sup>(१)</sup>

तूअर<sup>(२)</sup> बट्टी जाइ<sup>(३)</sup> ।

कहौं<sup>(४)</sup> दंद<sup>(५)</sup> कौं<sup>(६)</sup> पुकरिय<sup>(७)</sup>

फिरि दिल्लीपुर आइ<sup>(८)</sup> ॥ १ ॥

रषि बीर प्रथिराज<sup>(९)</sup> कों

गौ तीरथ्यह राज ।

ब्यास बचन आनंद सजि

तिहु पुर बज्जन बाज<sup>(१०)</sup> ॥ २ ॥

जुगनिपुर<sup>(११)</sup> प्रथिराज लिय

बज्जि निघोष<sup>(१२)</sup> सु दंद ।

अनंगपाल<sup>(१३)</sup> तूअर<sup>(१४)</sup> बरन

किय तीरथ्य<sup>(१५)</sup> अनंद<sup>(१६)</sup> ॥ ३ ॥

---

(१) C. चहुआन कौ । (२) A. तूअर, C. अर om. तू । (३) C. जय ।  
(४) A. कहौ, C. कहौ । (५) C. दंदव । (६) A. कौ । (७) A. पुकरिय ।  
(८) C. आय । (९) C. प्रथीराज c. m. (१०) A. B. T. बाजु which, being  
sing., does not agree with the 3. plur. बज्जन । (११) C. जुगनिपुर ।  
(१२) C. निघोष । (१३) A. B. T. अनंगपाल c. m. (१४) C. तोअर ।  
(१५) C. तीरथ c. m. (१६) C. आनंद c. m.

छंद पद्धरी ॥

तूंअर<sup>(१)</sup> नरिंद<sup>(२)</sup> तप तेज जांनि  
 प्रथिराज<sup>(३)</sup> व्यास वचनह प्रमांनि<sup>(४)</sup> ।  
 (५)निमांन ग्यांन मेटै न कोइ  
 इन्द्रादि अंत कलपंत होइ ॥  
 दस दिसा अमिट धरती अकास  
 चंद्रमा सूर दिन<sup>(६)</sup> दिन प्रकास ।  
 ब्रह्मा टरंत टारंत काल  
 राहंत पंच भूतें<sup>(७)</sup> बिचाल ॥  
 (८)बिष्णात बात दस दिसि<sup>(९)</sup> कहंत  
 बिथ्यरी<sup>(१०)</sup> देस<sup>(११)</sup> देसन<sup>(१२)</sup> तुरंत ।  
 अप अण्य आंनि दीजै निवास<sup>(१३)</sup>  
 तूंअर<sup>(१४)</sup> नरिंद परजा निकास<sup>(१५)</sup> ॥  
 निरदै<sup>(१६)</sup> नरिंद इन बिधि विसास  
 आनंग<sup>(१७)</sup> लोक हिरदै निरास ।

(१) A. T. तुअर e. m., C. तौअर, B. तुअ om. र । (२) C. नरिंदनप ।  
 (३) C. प्रथीराज । (४) A. B. T. प्रमांन, C. प्रमानि । (५) C. निमान ग्यान  
 मैटे नेक होइ । इन्द्रादि अंत कलपंतह सोय ॥ (६) C. दिन मदि प्रकास ।  
 (७) C. भूतं । (८) C. बिष्वाद्वाह । (९) C. दिस । (१०) B. बिथ्यरी ।  
 (११) C. om. (१२) C. देशम । (१३) C. निवीस o. r. (१४) A. तुअर,  
 T. तुअर, C. तौअर । (१५) A. निवास, B. परजांनिकास । (१६) C. निर-  
 दें । (१७) B. अनंग o. m.

उपगार<sup>(१)</sup> कौन मांनै विवेक  
संसार मांहि<sup>(२)</sup> ऐसे अनेक ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

तसकर चेलक बिष्प<sup>(३)</sup>  
वैद दुरजन अति लोभी ।  
प्रांहुन<sup>(४)</sup> अहि जल ज्वाल<sup>(५)</sup>  
काल निप इन में<sup>(६)</sup> मो भी ॥  
इन पर चिंत्ता नांहि  
बहुत करि<sup>(७)</sup> जो पै कहियै<sup>(८)</sup> ।  
आप सहज चालंत  
चित्त की बात न लहियै ॥  
प्रथिराज<sup>(९)</sup> लोक तूंअर<sup>(१०)</sup> घरह  
अरुचि दिष्ट मंडै तनह<sup>(११)</sup> ।  
भोगवै<sup>(१२)</sup> धरा जीवत<sup>(१३)</sup> धनिय  
संक<sup>(१४)</sup> न कोइ<sup>(१५)</sup> मांनै मनह ॥ ५ ॥

---

(१) C. उपगारं o. m. (२) C. मांहि। (३) C. बिप्र। (४) C. पाऊन।  
(५) C. दाल। (६) C. इमै। (७) C. कर। (८) C. जोपे कहियै।  
(९) C. प्रिथीराज। (१०) C. तुंअर। (११) C. मण्डे तिनह। (१२) C.  
भोगव; read vai, m. c. (१३) C. जीवन। (१४) read sāk, m. c.  
(१५) C. कोय।



दूहा ॥

संभरि वै सोमेस न्वप<sup>(१)</sup>

अति उत्तंग आचार<sup>(२)</sup> ।

ढिल्ली<sup>(३)</sup> प्रिय<sup>(४)</sup> तूंअर<sup>(५)</sup> दइय<sup>(६)</sup>

<sup>(७)</sup>सुन्यौ षिज्यौ महिपार ॥ ई ॥

कवित्त ॥

चंदेरी चतुरंग

सेन हय गय पल्लानं<sup>(८)</sup> ।

ठौर ठौर<sup>(९)</sup> कगदह<sup>(१०)</sup>

दए<sup>(११)</sup> मालवधरवानं ॥

<sup>(१२)</sup>गषड गुंड भदौड

सोरपुर<sup>(१३)</sup> खर<sup>(१४)</sup> समाहे<sup>(१५)</sup> ।

मिलि आए<sup>(१६)</sup> महिपाल

अण्य बल सेन उमाहे ॥

एकंत<sup>(१७)</sup> मत्त<sup>(१८)</sup> सोमेस पर

धुर संभरि<sup>(१९)</sup> वै लिज्जियै<sup>(२०)</sup> ।

(१) T. न्वप । (२) B. चाचार । (३) C. ढिल्ली । (४) T. प्रिय । (५) A. C. तुंअर c. m. (६) C. दई । (७) C. यस्तु षीज्यौ, i. e., "he was wrath at this"; C has no marks of division and reads...दईयस्तुषीज्यौ... (८) A. B. T. पल्लानं c. m. (९) B. ठौर ठौर । (१०) A. T. कगदह and C. कगदह c. m. (११) C. दरे । (१२) C. गषड गुण्ड भदौड । (१३) B. पर । (१४) C. ख om. र । (१५) C. समासे । (१६) C. आये । (१७) C. ऐकन्त । (१८) C. मत्त । (१९) A. सें भरि वै । (२०) A. B. T. लिज्जियै c. m.

प्रथिराज<sup>(१)</sup> तुंअर<sup>(२)</sup> ढिल्ली<sup>(३)</sup> दिसा<sup>(४)</sup>  
फिरि कलहंतर<sup>(५)</sup> किज्जियै<sup>(६)</sup> ॥ ७ ॥

बर मालव महिपाल  
चळ्यौ चहुआन<sup>(७)</sup> जु<sup>(८)</sup> उप्पर ।  
सेन सजी चतुरंग  
दियौ मेलानह सो पुर ॥

(९)हय गय थट्ट अघट्ट<sup>(१०)</sup>  
घाट चंबिल पर आइय<sup>(११)</sup> ।

(१२)घुरि निसांन घमसांन  
थान थानह हल्लाइय ॥

(१३)जादव नरिंद हरिबंस कुल  
अति<sup>(१४)</sup> आतुर अजमेर पर<sup>(१५)</sup> ।

उतरगौ सरित्त<sup>(१६)</sup> संमित<sup>(१७)</sup> सकल  
धुंस<sup>(१८)</sup> धरा रावत्त धर ॥ ८ ॥

(१) C. प्रथिराज । (२) B. तुंअर, C. तोअर । (३) C. ढिल्ली ।  
(४) C. दिसां । (५) C. कलहतर c. m. (६) B. T. किज्जियै c. m.  
(७) B. C. चहुआन । (८) B. C. जु । (९) C. हय गय घट्ट omitting the  
rest. (१०) A. अघट्ट c. m. (११) C. आइय । (१२) this and the  
following hemistich are in C thus : घुरि निसांन ॥ घुरि निसीन  
घमसीन थान हल्लाइय । (१३) C. जादव नरिंद l. c. (१४) C. om.  
(१५) B. पुर । (१६) B. C. T. सरित्त c. m. (१७) C. संमि om. त, l. c.  
(१८) C. धुंसि ।

सुनि सोमेसर<sup>(१)</sup> खुर<sup>(२)</sup>

चिंति मन मंत<sup>(३)</sup> उपाइय ।

बर प्रथिराज<sup>(४)</sup> नरिंद

अनंगपालह<sup>(५)</sup> बुझाइय ॥

रज रजवट<sup>(६)</sup> रषियै<sup>(७)</sup>

राव रावत्तन कीजै<sup>(८)</sup> ।

रहै गल्ह संसार<sup>(९)</sup>

आव जल अंजुल छिज्जै<sup>(१०)</sup> ॥

मेा वंस<sup>(११)</sup> अस आनल अटल

कोइ<sup>(१२)</sup> न कहै<sup>(१३)</sup> काइर कहिय ।

अप्पांन सुभर<sup>(१४)</sup> संबोधि नृप

जुइ घात<sup>(१५)</sup> पुस्तक<sup>(१६)</sup> लहिय<sup>(१७)</sup> ॥ ६ ॥

सिंघ<sup>(१८)</sup> पमार<sup>(१९)</sup> बर सिंघ<sup>(२०)</sup>

गौड संजम चहुआनं ।

(१) C. सोमेसर । (२) C. सुर l. c. (३) C. मन्त, T. संत । (४) C. प्रथी-  
राज c. m. (५) C. अनंगपालह; A. B. T. read अनंग०; in that case बुझा  
is not long by position. (६) C. राजवट । (७) C. रषियै, कीजै, विजै;  
read *rakhhkhiyai*, *kijai*, *chhijjai*, m. c. (८) C. वस । (९) C. कोय ।  
(१०) A. कहै, C. कजं, T. कहो । (११) A. सुभ om. र । (१२) C. घात ।  
(१३) C. पूछन । (१४) A. लहय, B. T. लहीय । (१५) read *sāsār*,  
*sigh*, m. c. (१६) B. यमार l. c. (१७) C. सिद्ध पर बर सिद्ध ।

वाहन बीर सधीर

राज गुर<sup>(१)</sup> रांम सुजान<sup>(२)</sup> ॥

मंत मंति भर अवर

करे सम चित्त अनेकं ।

तुम लज्जा धर धीर

बीर बीराधिवि मेकं ॥

संभरिय सोम पुच्छत बयन

कहिय बत्त सम तत्त<sup>(३)</sup> कल ।

छल<sup>(४)</sup> बल अनेक छत्रिय करन<sup>(५)</sup>

तुच्छ सथ्य पुज्जै न पल<sup>(६)</sup> ॥ १० ॥

दूहा ॥

चंद चंदनिसि दंद मति<sup>(७)</sup>

रति सरह<sup>(८)</sup> गुरवार ।

तेरसि तकि<sup>(९)</sup> सज्ज्यौ सयन

रचि रतिवाह<sup>(१०)</sup> विचार ॥ ११ ॥

कवित्त ॥

रतिवाह छल<sup>(११)</sup> जुझ

अध्रम<sup>(१२)</sup> छची परिमानं ।

(१) C. गुर । (२) T. सज्जानं । (३) C. नक्त । (४) C. बल । (५) C. करत । (६) T. B. पल । (७) C. मनति । (८) C. रति सरह । (९) C. तेरस तक । (१०) B. रचिवाह । (११) C. रतिवाहछल । (१२) B. अधम ।

कूड<sup>(१)</sup> कपट मारियै<sup>(२)</sup>  
 अधूम<sup>(३)</sup> निद्रागत जानं ॥  
 मलमोचन रतिरवन<sup>(४)</sup>  
 सेव पूजन जल न्हांनं ।  
 मंच जाप जप्यंत  
 करै नह घात<sup>(५)</sup> सुजानं ॥  
 तुम मंत तंत<sup>(६)</sup> सच्चौ कहिय  
 इह<sup>(७)</sup> अधूम<sup>(८)</sup> धूम हारियै ।  
 जो<sup>(९)</sup> गिनइ न पुरुष निंदा<sup>(१०)</sup> अपर  
 तौ<sup>(११)</sup> लछ<sup>(१२)</sup> रतिवाह<sup>(१३)</sup> विचारियै ॥ १२ ॥  
 छल<sup>(१४)</sup> तक्यौ<sup>(१५)</sup> ओरांम  
 सेत साइर तव बंध्यौ ।  
 छल तक्यौ<sup>(१६)</sup> सुग्रीव  
 बालि जिउ<sup>(१७)</sup> ताडह<sup>(१८)</sup> संध्यौ ॥  
 छल तक्यौ लछिमना  
 खरमंडल अलि<sup>(१९)</sup> बेध्यौ<sup>(२०)</sup> ।

(१) C. चर । (२) read *yai*, m. c. (३) B. अधम । (४) C. रमन ।  
 (५) C. घत । (६) C. मंच तंच । (७) C. इह । (८) A. अधूम । (९) read  
*jō*, m. c. (१०) C. पुरुष निंदा । (११) C. om. ; it is really in excess  
 of the metre. (१२) So A. B. T. ; but C. लल । (१३) B. रतिवाह ।  
 (१४) T. लल । (१५) A. B. तक्यौ । (१६) A. T. तक्यौ । (१७) C.  
 जीव । (१८) C. तरह । (१९) C. अलि, A. अलि । (२०) A. बेध्यौ, C. बेधौ ।

छल<sup>(१)</sup> तक्कौ<sup>(२)</sup> नरसिंघ  
 मगकस<sup>(३)</sup> नष उर छेद्यौ<sup>(४)</sup> ॥  
 छल बल करंत<sup>(५)</sup> दूषन न कोइ<sup>(६)</sup>  
 किल्ल<sup>(७)</sup> कलह कंसह करिय ।  
 सोमेस राज तकि अप्प बिधि  
 रत्तिवाह<sup>(८)</sup> छल<sup>(९)</sup> मन धरिय<sup>(१०)</sup> ॥ १३ ॥

दूहा ॥

ससि निमल<sup>(११)</sup> ससि खर अप  
 दिय अस अस्त्र उतांन ।  
 प्रथुक जाग<sup>(१२)</sup> जिन सालधर<sup>(१३)</sup>  
 संजाजन सव्वांन<sup>(१४)</sup> ॥ १४ ॥

हंद भुजंगी ।

ग्रहे खर सोमेस रा<sup>(१५)</sup> आयुधेसं ।  
 इकं सो भई राज जागिंद भेसं ॥  
 तजे मोह माया ग्रहनी कहनी<sup>(१६)</sup> ।  
 तजे बंध<sup>(१७)</sup> पुत्तं हरो<sup>(१८)</sup> चिंतमंनो<sup>(१९)</sup> ॥

(१) A. छल । (२) C. तक्कौ । (३) C. मग्यकस । (४) C. छेद्यौ । (५) A. करत c. m. C. करज, c. m. (६) B. कोई c. m.; read kōi m. c. (७) C. किल्ल । (८) B. रति बाल, C. रत्तिवाह । (९) C. बल । (१०) C. धरिय । (११) C. निर्मल । (१२) B. रोग । (१३) C. सालजर । (१४) C. संधान । (१५) So B. T. = राज; but A. C. सा = साह । (१६) C. कहना । (१७) C. बंधु । (१८) B. T. हरी, C. हरि । (१९) So A., but B. T. चितमंनी, C. चिंतमना ।

इकं सामिभ्रमं<sup>(१)</sup> ग्रहे अंग लाजं<sup>(२)</sup> ।  
 न काया न कामं धरे रामराजं<sup>(३)</sup> ॥  
 पचं<sup>(४)</sup> विस्तुकांता<sup>(५)</sup> जलं जाह्नवीयं ।  
 वपुं<sup>(६)</sup> उद्धरे कोटि<sup>(७)</sup> सौ पाप<sup>(८)</sup> कीयं ॥  
 वरै<sup>(९)</sup> रंभ वामं दुती<sup>(१०)</sup> साम कामं ।  
 मनो दाहिनावृत्त घोरंभ रामं ॥  
 तिनं सस्त्र झुल्लै<sup>(११)</sup> जुधं कित्य काजं ।  
 हुवै<sup>(१२)</sup> हाक<sup>(१३)</sup> स्वरं कपै<sup>(१४)</sup> काइराजं ॥  
 सुरं द्वादसं आयुधं दंड धारै ।  
 तिनं नाम चंदं<sup>(१५)</sup> सुखंदं उचारै<sup>(१६)</sup> ॥  
 न<sup>(१७)</sup> सीतं न चंसं<sup>(१८)</sup> ग्रहे स्त्रल पासं<sup>(१९)</sup> ।  
 परस्सं असन्नी सकत्ती बिकासं ॥  
 ग्रहे तून तोमार<sup>(२०)</sup> भल्ली<sup>(२१)</sup> कपानं ।  
 जुधं काज नालीक<sup>(२२)</sup> नाराज जानं<sup>(२३)</sup> ॥

(१) C. सामधर्मं । (२) after this line A inserts : तिनं सस्त्र भल्लै  
 जुधं कित्य काजं । see 7th line. (३) after this line A inserts :  
 हुवै हाक स्त्रल कपै काय राजं ॥ see line 8. (४) C. पतं । (५) B. विस्तु,  
 C. T. विष्णु० । (६) A. B. C. वपुं । (७) B. कौटि । (८) C. सा पाप ।  
 (९) C. वरं । (१०) A. दुति, c. m. (११) A. झल्लै, C. डल्लै । (१२) C. डुवै ।  
 (१३) C. हाक । (१४) So C, but A. B. T. कपै, c. m. (१५) C. चन्द्रं ।  
 (१६) B. उचारै, o. m. (१७) C. नि । (१८) C. चांसं । (१९) C. पासं ।  
 (२०) C. तोमार, c. m. (२१) C. भल्लीली । (२२) A. नीलीक । (२३)  
 A. राजं ।



सरं चक्र सारंग बज्रं गदायं ।  
 दंड<sup>(१)</sup> मुद्गरं<sup>(२)</sup> भिंडिमालं<sup>(३)</sup> सघायं ॥  
 हलं मूसलं सेल सावल्ल<sup>(४)</sup> षडगं<sup>(५)</sup> ।  
 ग्रहे स्वरता अण्ण<sup>(६)</sup> अण्णं बगं ॥  
 छुरिका कती<sup>(७)</sup> कनय<sup>(८)</sup> वक्री कुतायं<sup>(९)</sup> ।  
 पलकं<sup>(१०)</sup> कनीका भुसुंडी बतायं ॥  
 लियं संक<sup>(११)</sup> दुस्फोटकं<sup>(१२)</sup> पारिष्पादं<sup>(१३)</sup> ।  
 पटीसं छतीसं ग्रहे आयुधायं ॥ १५ ॥

दूहा ॥

पट्टन जादव आय नप<sup>(१४)</sup>  
 किय डेरा वरवांन ।

(१) So C ; but A. B. T. दंड, c. m. (२) So A ; C. has मुद्गर ; B. T. मुद्गरं । (३) B. T. भिंडिमालं, c. m., C. भिंदपालं । (४) So T ; C has सावल, A. B. सावल । (५) A. B. T. षडगं, C. षडगं ; the reading of A. B. सावल षडगं does not scan ; those of T. सावल षडगं and of C. सावल षडगं do scan, but anomalously substitute two short syllables instead of one long (the metre consisting of four bacchics ∪ — —) ; besides षडगं of T does not rhyme with बगं, which difficulty probably caused the emendation षडगं of C ; all difficulties disappear, if the prakritic form षगं (for Skr. खड्ग) be read, as below in the 1st line of the 19th stanza. (६) C. अण्णं and om. rest of the line. (७) C. छुरीक काती, c. m. (८) C. कनय, T. कलय ; here anomalously two shorts for one long. (९) A. B. कुतायं, c. m. (१०) C. फलकं । (११) C. संक c. m. (१२) B. T. दुस्फोटकं । (१३) So A ; C. B. पारिष्पादं ; but T. पारिष्पादं । (१४) B. नप ।



सुनि सोमसर<sup>(१)</sup> दौरि<sup>(२)</sup> करि<sup>(३)</sup>

ज्यौं निधि<sup>(४)</sup> रंक प्रमान ॥ १६ ॥

अति आतुर अजमेर पहु

आइ<sup>(५)</sup> कुलिंगन बाज ।

येां रसरत्ता सूर<sup>(६)</sup> भर

मुक्ति<sup>(७)</sup> चिया<sup>(८)</sup> धरि साज ॥ १७ ॥

कवित्त ॥

अप्य अप्य मुष<sup>(९)</sup> अरिन

सूर संमुह झलारिय ।

हाइ हाइ<sup>(१०)</sup> उच्चार<sup>(११)</sup>

धरनि अंबर तुटि<sup>(१२)</sup> डारिय ॥

चमकि चित्त त्रिपुरारि<sup>(१३)</sup>

अष्ट गन नारद<sup>(१४)</sup> नचिय ।

सेस सटप्पटि<sup>(१५)</sup> सलकि

दिसा दंतिन तन अंचिय ॥

मानों कि जलद तुटिय तडित

वर पट्टन<sup>(१६)</sup> आहुट्ट<sup>(१७)</sup> भर ।

---

(१) C. सोमसर । (२) B. दौरि । (३) C. कर । (४) C. ज्यौ निधि ।  
 (५) C. आय । (६) C. सूर । (७) C. मुक्ति । (८) T. चियां । (९) T.  
 मुष । (१०) C. हाय हाय । (११) B. उच्चारि । (१२) A. तुटि, C. वुटि ।  
 (१३) A. त्रिपुरारी, c. m. (१४) C. नरद, l. c. (१५) C. सटपट, B.  
 सटप्पटि । (१६) B. पल्लन । (१७) B. आहुट्ट, C. आहुट्ट ।

रतिवाह प्रात ह्रन्ते<sup>(१)</sup> दिवौ

अगनिसार<sup>(२)</sup> बुद्धौ<sup>(३)</sup> कहर ॥ १८ ॥

छंद रसावला ॥

कट्टि<sup>(४)</sup> षगं लगं<sup>(५)</sup> ।

आइ<sup>(६)</sup> जुट्टै अगं ॥

जांनि<sup>(७)</sup> सूरं उगं<sup>(८)</sup> ।

लग्गि षगं बगं<sup>(९)</sup> ॥

जांनि<sup>(१०)</sup> प्रल्लै<sup>(११)</sup> जगं ।

सांमि ध्रंमं<sup>(१२)</sup> मगं ॥

षंड षंडं अगं ।

ओन बुट्टे<sup>(१३)</sup> रगं ॥

पांनि वाहै<sup>(१४)</sup> षगं ।

सूर साधे<sup>(१५)</sup> सगं ॥

देवि<sup>(१६)</sup> लागी<sup>(१७)</sup> टगं ।

ठांम ठांमं ठगं<sup>(१८)</sup> ॥

(१) A. ह्रन्ते, T. ह्रन्ते, C. जन्ते । (२) C. अगिनि । (३) A. बुद्धौ, T. वद्धौ । (४) A. कट्टि, B. कट्टि । (५) C. कट्टि षगं लगं, and so throughout this stanza C has generally an anapaest (— — —) in the 2nd foot instead of a cretic (— — —); sometimes also in the 1st foot. (६) C. आय । (७) C. जानु । (८) B. अगं । (९) T. बजं । (१०) C. जानु । (११) C. प्रल्लै । (१२) C. समिधम्मं, B. ध्रंमं । (१३) So. A ; C. बुट्टे ; B. बुट्टे ; T. बुट्टे । (१४) C. वाह । (१५) C. साध । (१६) B. देव । (१७) C. तालि । (१८) T. टमं ।

डक्कनीयं<sup>(१)</sup> डगं ।  
 एक एकं दिगं ॥  
 स्वर रौपे<sup>(२)</sup> पगं ।  
 नग्ग मानेनां नगं ॥  
 सारधारं तगं ।  
 जांनि जकं<sup>(३)</sup> अगं ॥  
 बंस जालं दगं ।  
 फुट्टि<sup>(४)</sup> षोपं षगं ॥  
 दद्धि मट्टं<sup>(५)</sup> भगं<sup>(६)</sup> ।  
 हंस उड्डै मगं ॥  
 मार मारं रगं<sup>(७)</sup> ।  
 मुष्प वेाले<sup>(८)</sup> लगं<sup>(९)</sup> ॥  
 लट्ट चट्टं परं ।  
 लथ्थ बथ्थं भरं ॥  
 अंत<sup>(१०)</sup> ओनं झरं ।  
 जांनि<sup>(११)</sup> पब्बै सरं ॥  
 कट्टि षंडं<sup>(१२)</sup> गुरं ।  
 हथ्थ जंगं जुरं ॥

(१) C. डक्कनीय । (२) C. रोप । (३) C. जकं, c. m. (४) A. फुट्टि,  
 C. फुट । (५) B. मट्टी, C. मुट्ट । (६) T. भनं । (७) C. रमगं । (८) C.  
 वेाल । (९) T. तगं, A. रगं । (१०) C. अत । (११) C. जनु पवस्सर ।  
 (१२) C. प्पराड ।

जांनि षित्ती<sup>(१)</sup> षलं ।  
 चंच गिद्धी पलं ॥  
 ईस<sup>(२)</sup> सीसं झलं ।  
<sup>(३)</sup>माल मध्ये घलं ॥  
 खर जहो<sup>(४)</sup> बलं ।  
 अप्भ<sup>(५)</sup> तुब्धौ<sup>(६)</sup> कलं<sup>(७)</sup> ॥  
<sup>(८)</sup>भूप भूपं मिलं ।  
 आयुधं अतुलं ॥ १९ ॥

दूहा ॥

सार मार मच्ची कहर  
 दोउ<sup>(९)</sup> दलनि सिर<sup>(१०)</sup> मंधि<sup>(११)</sup> ।  
 प्रौठा<sup>(१२)</sup> नायक छयल<sup>(१३)</sup> रमि  
 प्रात न बंछय<sup>(१४)</sup> संधि ॥ २० ॥

कवित्त ॥

सोमेसर<sup>(१५)</sup> भजि<sup>(१६)</sup> खर<sup>(१७)</sup>  
 खर उज्झारि<sup>(१८)</sup> ग झरि<sup>(१९)</sup> झरि ।

(१) C षती । (२) T C इस । (३) C मुल मड गलं । (४) A B जहो, C जाहो । (५) B अप्भ, C अभ । (६) C तुष्ट । (७) B पलं ।  
 (८) B C भूप । (९) A दो, B T दोऊ c. m. (१०) C स । (११) A मंधि, B मंधे । (१२) C प्रौठा । (१३) C छैल । (१४) B C बंछिय ।  
 (१५) A सोमेसर । (१६) A B T भजि, read *bhāji*. (१७) C सर ।  
 (१८) B उझारि । (१९) C झगर ।

सार कुटे<sup>(१)</sup> चहुआनि<sup>(२)</sup>  
 भीरि<sup>(३)</sup> जहौ भरि लरि लरि ॥  
 घरी एक तिन रत्त  
 सार मे गल सिर बुद्धिय<sup>(४)</sup> ।  
<sup>(५)</sup>संभर बैर सु आनि  
 सार भगि जु सिर तुद्धिय ॥  
 भगइय<sup>(६)</sup> स्वरमा<sup>(७)</sup> दुहु<sup>(८)</sup> सयन  
 किहि न कोइ<sup>(९)</sup> बर चंपयौ ।  
 उप्पारि<sup>(१०)</sup> लियौ अजमेर पहु<sup>(११)</sup>  
 दाग न किहु<sup>(१२)</sup> दीयौ<sup>(१३)</sup> गयौ ॥ २१ ॥  
 हथिय ढाल ढलकि  
<sup>(१४)</sup>घालि लीनौ अजमेरी<sup>(१५)</sup> ।  
 परि लंगा<sup>(१६)</sup> लंगरी  
<sup>(१७)</sup>सेन दुजन दल फेरी<sup>(१८)</sup> ॥  
 भाग बीर प्रथिराज  
 अरिन उप्पारि स<sup>(१९)</sup> लीनौ ।

(१) C कुटिल । (२) C चङ्गवान । (३) A B T भिरि, c. m., C भरिय जादौ भर लरि लर ॥ (४) T बुद्धिय । (५) C संभरिबैरिसआनि, T संभर बर । (६) C भगइ c. m. (७) C स्वरिमा । (८) A दुहुं c. m., B दू । (९) C कोस । (१०) C उप्पार । (११) C पङ्ग c. m. (१२) A किङ्ग, C किन । (१३) C दीनौ । (१४) A घालि, C घालि लीनौ । (१५) C अजमेरिय । (१६) C लिंगा, T नंगा । (१७) So C; but A B T add जिहि before सेन, c. m. (१८) C फेरिय । (१९) C सु ।

इन सोमेश्वर राव

सत्त हथिन<sup>(१)</sup> बर कोनौ ॥

जिम तिमर स्वर भंजै सुभर

गुरु<sup>(२)</sup> गल्हां मन कबि ठरै ।

जब<sup>(३)</sup> लगौ<sup>(४)</sup> भूमि साइर सुमित्र

तब लगि कवित सु उब्बरै<sup>(५)</sup> ॥ २२ ॥

दूहा ॥

रछौ न को रवि मंडलह<sup>(६)</sup>

रहि कबि मुष्य सुभलह<sup>(७)</sup> ।

जीरन जुग पाषाण ज्यौं

<sup>(८)</sup>पूर रहंदी गल्ह ॥ २३ ॥

फिरि जहव<sup>(९)</sup> भर देस दिसि<sup>(१०)</sup>

समर घाइ<sup>(११)</sup> लै सेन ।

अवर चित्त<sup>(१२)</sup> तें अवर<sup>(१३)</sup> परि

कट्ठि<sup>(१४)</sup> न सकौ<sup>(१५)</sup> वैन<sup>(१६)</sup> ॥ २४ ॥

(१) C चथां । (२) So T; A गळान c. m.; B C गळानन । (३) A जब । (४) C लगि; read *laggaĩ*, m. c. (५) B उब्बरै, C वि-  
सारै । (६) T संहलह । (७) C शुभल । (८) C पूरवहीद्रगपाल । (९)  
C जादव । (१०) C दिस । (११) C घाय । (१२) A चिंत । (१३) C  
अवरि । (१४) A T कठि, B कठि c. m., C काठि । (१५) B सकैं ।  
(१६) C वैन ।

ग्रिह<sup>(१)</sup> सोमेसर आनि तिन  
 मास एक दिन बीस ।  
 रषि जतन<sup>(२)</sup> किय ज्ञान जब  
 दियै<sup>(३)</sup> दांन सु<sup>(४)</sup> जगोस<sup>(५)</sup> ॥ २५ ॥  
 सुनिय बत्त<sup>(६)</sup> प्रथिराज न्वप<sup>(७)</sup>  
 चिंत्ति<sup>(८)</sup> भविष्यत बत्त ।  
 अरियन तौ आहोडियै<sup>(९)</sup>  
 जै लब्भीजै<sup>(१०)</sup> घत्त ॥ २६ ॥

कवित्त ॥

अनगपाल<sup>(११)</sup> प्रज लोक  
 जाइ<sup>(१२)</sup> बट्टी पुकारिय<sup>(१३)</sup> ।  
 हम तुम सेवक सांमि  
 छंडि ग्रह राज निकारिय<sup>(१४)</sup> ॥  
 नहि अदब्ब<sup>(१५)</sup> मन्नयौ<sup>(१६)</sup>  
 क्रूर<sup>(१७)</sup> मच्चौ<sup>(१८)</sup> चहुवांनं<sup>(१९)</sup> ।

(१) C ग्रहं c. m. (२) T जतन । (३) C दियै । (४) C om. सु ।  
 (५) C जगोस । (६) C खवर i. e. arab. خبر (७) A T न्वप । (८)  
 C चिंत । (९) C अहोभित्तिये । (१०) C लब्भीजै । (११) C अनंगपाल  
 c. m., B अमनपाल । (१२) C जाय । (१३) C पुकारे । (१४) A  
 B T निकारीय c. m. C निकारे । (१५) C अदब; arab. فاجر  
 (१६) C मण्यौ । (१७) C क्रूर । (१८) A मच्चौ, C मच्चौ । (१९) C  
 चहुवांनं ।

हो अनगेस<sup>(१)</sup> नरेस  
 गई ढिल्ली धर जानं ॥  
 जा जियत राज धर पर बसिय  
 नीति न्याय न प्रकासियै ।  
 नर नाग देव निंदै सकल  
<sup>(२)</sup>निष्प करंतह बासियै ॥ २७ ॥  
 सुनिय तेज<sup>(३)</sup> जाजुल्य  
 दूत परधान पठाइय<sup>(४)</sup> ।  
 हम भडार<sup>(५)</sup> धन धान  
 द्रव्य<sup>(६)</sup> सब्बह<sup>(७)</sup> भरि लाइय ॥  
 व्यास बचन संभारि<sup>(८)</sup>  
 कहै तब मंची पुब्बह ।  
<sup>(९)</sup>देस कषिय<sup>(१०)</sup> धनबादि<sup>(११)</sup>  
 राज ग्रहयौ गढ सब्बह<sup>(१२)</sup> ॥  
 निप<sup>(१३)</sup> सेव<sup>(१४)</sup> देव दुज्जन उरग<sup>(१५)</sup>  
 इन ढिल्लै<sup>(१६)</sup> न न मुक्कियै<sup>(१७)</sup> ।

(१) A अनगेस c. m. (२) C नकंपरंतह । (३) C ते, om. ज ।  
 (४) B पठाइयै । (५) A B T भंडार, read *bhāḍār*. (६) C द्रव्य ।  
 (७) A सब्बह, B सब्बह, C सर्वह । (८) C संभारि c. m. (९) C om.  
 this and the following lines. (१०) A छपी । (११) A गढादि ।  
 (१२) A सब । (१३) C नप । (१४) T सेव । (१५) B दुरग, C तुरग ।  
 (१६) B ढिल्ल c. m. (१७) T मुक्कियै ।



बर बंध<sup>(१)</sup> पुच अरु<sup>(२)</sup> तात नृप<sup>(३)</sup>

इन विसास धर<sup>(४)</sup> चुक्कियै<sup>(५)</sup> ॥ २८ ॥

धर काजै कौरवन

पंड जानिय न बंधगति ।

धर काजै दसग्रीव

बंध बंध्यौ भभिषन<sup>(६)</sup> मति ॥

धर काजै<sup>(७)</sup> नल राइ<sup>(८)</sup>

<sup>(९)</sup>बंधवन घेत न अय्यौ ।

धर <sup>(१०)</sup>काजै वलि राइ<sup>(११)</sup>

देव देवाधि उय्यौ<sup>(१२)</sup> ॥

धर काज मुंज त्रिय के कहै<sup>(१३)</sup>

भोज प्रहारन मत<sup>(१४)</sup> कियौ ।

धर काज कन्ह तूंअर<sup>(१५)</sup> अंध्रम<sup>(१६)</sup>

पुत्तह सै<sup>(१७)</sup> मुष विष<sup>(१८)</sup> दियौ ॥ २९ ॥

दूहा ॥

तुम<sup>(१९)</sup> तूंअर<sup>(२०)</sup> मति चुक<sup>(२१)</sup> नां

करि किल्लो<sup>(२२)</sup> ठिल्लिय ।

(१) C वधु । (२) C अरु c. m. (३) A नृप । (४) C धनु । (५) T चुक्कियै । (६) A भभिषन्न, T भभिषन्न, B भभीषन्न, C भभीषन । (७) B T काजै । (८) C राय, T नलाराइ । (९) C om. वंध । (१०) T काजै । (११) C राय । (१२) C अय्यौ । (१३) A C कहै । (१४) A मत । (१५) C तूंअर । (१६) C अंध्रम । (१७) C सै । (१८) C वस । (१९) B तुम, C तम । (२०) C तूंअर । (२१) C चुक । (२२) T कील्ली ।

फुनि<sup>(१)</sup> मति अण्ण<sup>(२)</sup> नही करिय

प्रथीराज धर दीय ॥ ३० ॥

राज दान गज तुरिय<sup>(३)</sup> द्रव<sup>(४)</sup>

देत न लगौ वार ।

धरतिय<sup>(५)</sup> रष्यन यौं सुदढ<sup>(६)</sup>

ज्यौं<sup>(७)</sup> अहि मनि<sup>(८)</sup> रष्यनहार<sup>(९)</sup> ॥ ३१ ॥

मन्त्रि<sup>(१०)</sup> सुमंतह<sup>(११)</sup> सीष लै

चलि<sup>(१२)</sup> दिक्षिय<sup>(१३)</sup> चहुआन ।

आइ<sup>(१४)</sup> सकैं जोइ<sup>(१५)</sup> स काहा<sup>(१६)</sup>

इह<sup>(१७)</sup> अत भ्रम प्रमान ॥ ३२ ॥

चद्रायना ॥

मिल्यौ<sup>(१८)</sup> (१९) न्वपह<sup>(२०)</sup> सो मंत<sup>(२१)</sup> वसीठ जु मुक्कल्यौ<sup>(२२)</sup> ।

सा<sup>(२३)</sup> चहुवांनह पास नरिंद सु इक्कलौ<sup>(२४)</sup> ॥

षिज्यौ<sup>(२५)</sup> अनंग<sup>(२६)</sup> नरिंद<sup>(२७)</sup> भूमि<sup>(२८)</sup> हमही<sup>(२९)</sup> तजौ ।

कै<sup>(३०)</sup> मिलौ<sup>(३१)</sup> आइ<sup>(३२)</sup> चहुआन सुबुद्धिय मंत जौ<sup>(३३)</sup>

॥ ३३ ॥

(१) C मुन । (२) C अप नाही । (३) C तुरीय । (४) C वर । (५) C धरत्रिय । (६) B C सुदढ । (७) C om. (८) A नि, om. म । (९) C ० हीर । (१०) T मन्त्रे, C मन्त्र । (११) C सुमन्त्रह । (१२) A वलि । (१३) C om. दिक्षिय । (१४) C आय । (१५) read jōi, m. c. (१६) C कहा । (१७) C तत सुधर्म । (१८) C मिलौ । (१९) A om. न्वपह सो । (२०) T न्वपह, C न्वपति । (२१) B T मत । (२२) A मुक्कल्यौ । (२३) C सो । (२४) C इक्कलौ । (२५) C षिज्यौ । (२६) C अनंग । (२७) C नरिंदे । (२८) C भूम । (२९) B हमहीं । (३०) C om. (३१) C मिलौ । (३२) C आय । (३३) C जौ ।

बोल्यौ हंकि<sup>(१)</sup> नरिंद वसीठ जु दब्बरगै<sup>(२)</sup> ।  
 तब कमधज्ज<sup>(३)</sup> नरिंद न उत्तर संभरगै ॥  
 बात अनंक्रन कीन<sup>(४)</sup> हीन हुइ<sup>(५)</sup> उठ्ठयौ<sup>(६)</sup> ।  
 (७) चंपि लो हट्ठिय<sup>(८)</sup> हथ्य बीर बर टुट्टयौ<sup>(९)</sup> ॥ ३४ ॥  
 दूहा ॥

उयौ बीर बसीठ<sup>(१०)</sup> बल<sup>(११)</sup>  
 करि जुहार<sup>(१२)</sup> चहुआन ।  
 धनी<sup>(१३)</sup> उभै धर<sup>(१४)</sup> लुट्टियै  
 इह अचिज्ज<sup>(१५)</sup> परिमान<sup>(१६)</sup> ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥

रे बसीठ मति ठोठ<sup>(१७)</sup>  
 बोल बोलै मतिहीनां<sup>(१८)</sup> ।  
 सनेपात<sup>(१९)</sup> उप्पनै<sup>(२०)</sup>  
 किनै<sup>(२१)</sup> सकर पय<sup>(२२)</sup> दिनां<sup>(२३)</sup> ॥  
 धर कर छुट्टी संगि<sup>(२४)</sup>  
 हथ्य चट्ठे<sup>(२५)</sup> मरदांनां ।

(१) C हांकि । (२) A दुब्बरगै । (३) C कमधुज । (४) C कौन । (५) C ऊय । (६) A T उट्टयौ । (७) C चंपि लु । (८) A हट्टिय, B हट्टिय । (९) C तुट्टयौ । (१०) T बसीठ । (११) C om. बल, and reads सुवीर तब । (१२) C जुहार, om. र । (१३) T धनी । (१४) C धरं । (१५) C अचिरज । (१६) C परमान । (१७) C मति धीठ । (१८) C मनहीनां । (१९) T संन्यप त । (२०) C उप्पनै । (२१) C किनै B किने । (२२) A B T यय । (२३) C दीना । (२४) C संगी छुट्टि । (२५) A चट्ठे ।

फिरि बंछै जो मूढ  
 होइ ताही<sup>(१)</sup> जिय ज्यांनां<sup>(२)</sup> ॥  
 सट्ठोय बुद्धि नट्ठिय<sup>(३)</sup> नृपति<sup>(४)</sup>  
 तुम विपत्ति दिन लहि कहिय ।  
 उगमै सूर पच्छिम<sup>(५)</sup> परक  
 तौ<sup>(६)</sup> दिल्लीधर तुम नहिय<sup>(७)</sup> ॥ ३६ ॥

दूहा ॥

सुनिय वत्त सो दूत चलि  
 बिन आदर<sup>(८)</sup> मन मंद<sup>(९)</sup> ।  
 हीन दीन<sup>(१०)</sup> दिष्यत इसै  
 मनै कि वासुर<sup>(११)</sup> चंद ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥

तूंअर<sup>(१२)</sup> बीर बसीठ<sup>(१३)</sup>  
 सामि<sup>(१४)</sup> संदेस सु अषिय ।  
 तुम दृढतन कुसल<sup>(१५)</sup>  
 वत्त पहिलैं हम<sup>(१६)</sup> भषिय<sup>(१७)</sup> ॥

(१) C होय ताहि । (२) A जानां, C जाना । (३) A नट्ठिय, C नटिय, T य, om. नट्ठि । (४) A C वपति । (५) C पश्चिम । (६) C om. (७) T नहियं, C तुंमरजाहिय । (८) T adds स after आदर । (९) C मंदा c. m. (१०) C om. (११) C वासर । (१२) C तौंअर । (१३) B T वसीठ । (१४) C सामि । (१५) C कुसल । (१६) T हम । (१७) C भषिय ।

वह वलिष्ट देवान

दैत्य वंसी चहुआनं ।

सूज अग्र उप्परै<sup>(१)</sup>

देय नह तास प्रमानं<sup>(२)</sup> ॥

तुम दर्ई भूमि निज हथ्य करि

अव अथ्य<sup>(३)</sup> मित<sup>(४)</sup> न<sup>(५)</sup> षोड्यै ।

संभरहि<sup>(६)</sup> देस<sup>(७)</sup> देसन नृपति

तौ वृद्धत्त बिगोड्यै<sup>(८)</sup> ॥ ३८ ॥

अनगपाल<sup>(९)</sup> न न मांनि

कूच<sup>(१०)</sup> किनौ<sup>(११)</sup> दिस्त्रिय<sup>(१२)</sup> दिसि<sup>(१३)</sup> ।

भूत भवष<sup>(१४)</sup> जानी न

किये<sup>(१५)</sup> रगेतत नयन रिस ॥

अप्य सेन सजि जूह

आइ<sup>(१६)</sup> ढिल्लीधर<sup>(१७)</sup> वानं ।

मात पिता मरजाद

<sup>(१८)</sup>चिंत लग्यौ चहुवानं ॥

(१) read *upparai*, m. c. (२) T प्रमानं c. m. (३) C अथ । (४) C मीत । (५) A B T repeat न । (६) C संभरहि । (७) T om. (८) C बिगोड्यै, T बिगोड्यै । (९) T अनगपाल c. m. (१०) C कूच । (११) C कीनौ । (१२) A B T दिस्त्रिय c. m. (१३) C दिस । (१४) C भविष । (१५) C किये । (१६) C आय । (१७) C दिस्त्री० । (१८) C चित लग्यौ ।

कैवास मंत पुछ्यौ नृपति

कहौ कहा<sup>(१)</sup> अब किज्जियै<sup>(२)</sup> ।

अहि ग्रहिय<sup>(३)</sup> छछुंदरि<sup>(४)</sup> जौ तजै

नैन<sup>(५)</sup> जठर<sup>(६)</sup> भषि छिज्जियै<sup>(७)</sup> ॥ ३९ ॥

दूहा ॥

जौ मारौ<sup>(८)</sup> तौ मात पित

छंडौ<sup>(९)</sup> तौ बल हानि<sup>(१०)</sup> ।

कहि मंची मंचं गपति

<sup>(११)</sup>न्याइ रीति बिधि जानि ॥ ४० ॥

कवित्त ॥

सुनौ नृपति<sup>(१२)</sup> चहुआन

न्याय तौ कलह<sup>(१३)</sup> न किज्जै<sup>(१४)</sup> ।

इन दीनी धर अण्य

अण्य तौ इनह<sup>(१५)</sup> न दिज्जै<sup>(१६)</sup> ॥

जो निमांन<sup>(१७)</sup> प्रमांन

होइहै<sup>(१८)</sup> सोइ<sup>(१९)</sup> नियांनं<sup>(२०)</sup> ।

(१) read *kahā*, m. c. (२) C किज्जियै । (३) C ग्रही । (४) C छछुंदर । (५) C नैन । (६) T जठर, c. m. (७) C छिज्जियै । (८) A C T मारौ । (९) B C T छंडौ । (१०) A हानि । (११) C न्याय रात । (१२) C अपति । (१३) C कल, om. ह । (१४) C कीजै । (१५) C इनहि । (१६) C दीजै । (१७) C नृप मांनि । (१८) T होइहै, B होइये, C होयहै । (१९) C सोई । (२०) C नयानं ।

जव लगौ<sup>(१)</sup> गढ आइ  
 जाइ तव जुइ जुरानं ॥  
 सजि कोट<sup>(२)</sup> ओट सामंत सथ  
 नारि गौर<sup>(३)</sup> जंबूर वहि ।  
 लगौ न जार छिजै सुभर  
 इत सामंत लगंत नहि ॥ ४१ ॥  
 अनगपाल<sup>(४)</sup> बल मंडि  
 सुभर ठिल्लो गढ लगा ।  
 लेहु लेहु करि दैरि<sup>(५)</sup>  
 अप्प बर अप्प बिलागा<sup>(६)</sup> ॥  
 नारि गोरि<sup>(७)</sup> आतस्स  
 कोट पारस<sup>(८)</sup> भर घाइय<sup>(९)</sup> ।  
 जे भर मंडे आइ  
 (१०) सौर<sup>(११)</sup> करि मेर उडाइय<sup>(१२)</sup> ॥  
 लागे न<sup>(१३)</sup> घात तूंअर नृपति  
 दिवस चार<sup>(१४)</sup> मंडिय ररिय ।

---

(१) C लगौं । (२) C कोटि । (३) B गोरि । (४) A B C T  
 अनंगपाल, o. m. (५) A दैरि । (६) C बिलागा । (७) C गोर ।  
 (८) B पार om. स, C परस । (९) C घाइय । (१०) A B T add ने  
 before सौर, o. m. (११) T सौर । (१२) B उडाइयै । (१३) C घात  
 तूंअर नृपति । (१४) B चारि ।

पुज्जगौ न प्रांन पांनप घटत

दिल्लीधर<sup>(१)</sup> ढिल्लिय करिय ॥ ४२ ॥

चौपाई<sup>(२)</sup> ॥

दीह च्यारि<sup>(३)</sup> ढिल्ली नृप<sup>(४)</sup> भारी<sup>(५)</sup> ।

वर चहुआंन संमुहै हारी<sup>(६)</sup> ॥

गातं चर फिर<sup>(७)</sup> रावर छंडिय<sup>(८)</sup> ।

वद्री छोरि<sup>(९)</sup> सरन ग्रह मंडिय ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

अनगपाल पंडिय गयौ

सेन सु बंधिय थट्ट ।

अड्ड<sup>(१०)</sup> सेन अजमेर पर

टारे ह्य्य सु भट्ट ॥ ४४ ॥

वीर बसीठ सुमंत<sup>(११)</sup> मिलि

स्वामि बचन समझाई<sup>(१२)</sup> ।

मत्तौ मंडि चहुआंन कौ

<sup>(१३)</sup>माधौ भट्ट चलाइ<sup>(१४)</sup> ॥ ४५ ॥

(१) C दिल्ली० । (२) C चौपही । (३) C चारि । (४) C नृप । (५) C भारिय । (६) C हारिय । (७) C फिरि । (८) C पंडिय । (९) B छोरि । (१०) C adds न after अड्ड । (११) C सुमन्त । (१२) C समझाय, B समझाई, T समझाई, c. m. (१३) A om. this line. (१४) B चलाई c. m., C चलाय ।



माधौ भट्ट सु मुक्कल्यौ<sup>(१)</sup>

वर गज्जनै<sup>(२)</sup> नरिंद ।

तूंअर<sup>(३)</sup> अरु चहुआंन कै

धर बज्जगौ बहु<sup>(४)</sup> दंद ॥ ४६<sup>(५)</sup> ॥

माधौ भट्ट सु मुक्कल्यौ<sup>(१)</sup>

मिल्यौ<sup>(६)</sup> जाय<sup>(७)</sup> सुलतांन ।

चढ्यौ साहि<sup>(८)</sup> गोरी सुबर

मिलि बंधन चहुआंन ॥ ४७ ॥

नीत राव षिची सुबर

तूंअर<sup>(९)</sup> तिहि परधान<sup>(१०)</sup> ।

गोरी दिसि नटप<sup>(११)</sup> अप्प दिसि<sup>(१२)</sup>

भेद दियौ चहुआंन ॥ ४८ ॥

अनगपाल मांन्यौ<sup>(१३)</sup> नही<sup>(१४)</sup>

वरजिय पंडि नरिंद ।

<sup>(१५)</sup>तूंअर अरु चहुआंन कै

रहै न एकै<sup>(१६)</sup> बंध ॥ ४९ ॥

(१) C मुक्कल्यौ । (२) C गजनेस, B गजनै । (३) C तुंअर । (४) B चतु । (५) A and C place this stanza after the following, counting it as the 47th. (६) C मिट्यौ । (७) A B जाइ । (८) C साइ । (९) C तुंअर । (१०) B परधान । (११) C नटप । (१२) C दिस । (१३) C मानौ । (१४) C नहीं । (१५) C reads तुम सष्टम मेव्ह मिलन । (१६) C एको ।

कवित्त ॥

दर्ई भूमि मापित्त<sup>(१)</sup>

लई हम हथ्य पसारह ।

सो पात्रौ फिरि किम सु

बोल बोलहु अविचारह ॥

तुम विरद्ध तप जाग

राज चाहै सु करन अब ।

दयौ राज तुम हमह<sup>(२)</sup>

कहा उपजी चित्तह तब ॥

मंगौ जु आइ<sup>(३)</sup> फिरि भूमि<sup>(४)</sup> तुम

सो ब<sup>(५)</sup> राज पात्रौ<sup>(६)</sup> नही ।

जा गयौ जंत चलि गेह जम

कहै सु फिरि आवै<sup>(७)</sup> कही<sup>(८)</sup> ॥ ५० ॥

जलद बूंद परि धरनि

कवहु जात्रै<sup>(९)</sup> न अप्भ<sup>(१०)</sup> फिरि<sup>(११)</sup> ।

पवन तुटि तरु पत्र

तरु न लगै सु आइ<sup>(१२)</sup> थिर ॥

---

(१) C मो पित्त । (२) C हमहि । (३) T आई o. m. (४) C भूमि ।  
 (५) C अब, T ब्र । (६) C पाहै । (७) B T आ om. वै । (८) A नही,  
 B कहि, T केहि, C कही । (९) C आवै । (१०) C नभ । (११) A B  
 फिर । (१२) C आय थिर ।

तुटि<sup>(१)</sup> तारक आकास  
 बहुरि आकास न जात्रै ।  
 सिंध उलघि<sup>(२)</sup> सावजह  
 सोइ<sup>(३)</sup> फुनि हनि नह षायै<sup>(४)</sup> ॥  
 अप्पिय<sup>(५)</sup> सु पहुमि<sup>(६)</sup> तुम उदक सह<sup>(७)</sup>  
 सो पावौ<sup>(८)</sup> दूजै<sup>(९)</sup> जनम ।  
 तप्पौ सु जाइ<sup>(१०)</sup> बट्टी तपह  
 मत विचार राज समन म ॥ ५१ ॥  
 तुम गोरी पतिसाह  
 कहै<sup>(११)</sup> जिन मन<sup>(१२)</sup> भरमावहु ।  
 सत्त भ्रम्म साहस्स  
 कांड<sup>(१३)</sup> पर कहै<sup>(१४)</sup> गमावहु ॥  
 सामंतनि<sup>(१५)</sup> सुलतांन  
 बार वहु गहि गहि<sup>(१६)</sup> छंड्यौ ।  
 उन अपत्ति कै सथ्य  
 सपति तुम मत्त सु मंड्यौ ॥

---

(१) B C T तुटि c. m. (२) C उलघ, B T उलघि । (३) C सोय  
 पुनि । (४) A B C षायै । (५) A B T अप्पिय for अप्पी, C अप्पिय ।  
 (६) C पुहुमि । (७) C सह, B समह c. m. (८) A B पावौ, C  
 पाहौ । (९) T दुजै । (१०) C जाय । (११) C कहै । (१२) C मति ।  
 (१३) T कायि, C कोइ कहा । (१४) C कहै । (१५) C T सामंतन ।  
 (१६) C नहि ।

जिम<sup>(१)</sup> लगि जम्है<sup>(२)</sup> विधवा चरन

अप<sup>(३)</sup> समांन होवन<sup>(४)</sup> कहै ।

मंगौ सु द्रव्य कारन सधम<sup>(५)</sup>

कछु<sup>(६)</sup> अप्प चित्तह चहै ॥ ५२ ॥

अरिस्त ॥

सुनि सु दूत आयौ हरद्वारह<sup>(७)</sup> ।

कथि अलग सम सकल विचारह ॥

मुनत अवन अति रोस झुकत<sup>(८)</sup> मनु<sup>(९)</sup> ।

जिम सुसिंघ<sup>(१०)</sup> चुकत कुलिंग<sup>(११)</sup> जनु ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

अनगपाल<sup>(१२)</sup> झुकि आप

दूत ढिग हुतें साह जेय<sup>(१३)</sup> ।

तिनहि कछ्यौ<sup>(१४)</sup> तुम जाइ<sup>(१५)</sup>

कहै साहाब<sup>(१६)</sup> लिख्यौ तेय<sup>(१७)</sup> ॥

दिए पच फुनि<sup>(१८)</sup> हथ्य

धरा देत न चहुआंनह ।

(१) B जब । (२) C जम्है । (३) T अप्प । (४) C होवन । (५) A सधम, C सधम । (६) T कछु c. m., C adds जु before कछु । (७) C हरिद्वारह । (८) C झुकित । (९) B C T मन । (१०) C सुसिंघ । (११) B कलिंग । (१२) C om. पाल । (१३) C तै साहज्जे. om. ड । (१४) C कहै । (१५) C जाय, B जाई c. m. । (१६) C सहाब । (१७) C जे । (१८) C पुनि ।

तुम आवहु चढि अतुर<sup>(१)</sup>  
 कुंच पर कुंच मिलांनह ॥  
 मिलि अण्ण<sup>(२)</sup> एक एकह सुमति  
 लरि सु लेहिं दिखिय धरा ।  
 तुम मत्त<sup>(३)</sup> छंडि तप बद्रि बर  
 अब सु पाइ<sup>(४)</sup> रूपे<sup>(५)</sup> षरा ॥ ५४ ॥  
 गए दूत गज्जनै  
 साहि सम बत्त<sup>(६)</sup> वदै बर ।  
 तप सु छंडि<sup>(७)</sup> तौवरह  
 आइ<sup>(८)</sup> हरद्वार लियन धर ॥  
 पहुमि<sup>(९)</sup> मंगि<sup>(१०)</sup> प्रथिराज<sup>(११)</sup>  
 राज अण्णै न इक्क तिल ।  
 दै चादर<sup>(१२)</sup> चढि साहि<sup>(१३)</sup>  
 भूमि<sup>(१४)</sup> लिज्जै सु उभय<sup>(१५)</sup> मिलि ॥  
 सुनि साह घाव नीसांन किय  
 चढ्यौ सेन चतुरंग सजि ।

(१) A आतुर c. m. । (२) B om. अण्ण । (३) B मति । (४) C पाय ।  
 (५) C रूपे । (६) C वात । (७) C छंड । (८) C आय हरद्वार । (९)  
 C वहुमि । (१०) C मंगि । (११) C प्रथीराज । (१२) B T वादर ।  
 (१३) C साह । (१४) C भूम । (१५) A भय ।

हय गय समूह साकति सकल  
अनगपाल<sup>(१)</sup> साहस्र कज<sup>(२)</sup> ॥ ५५ ॥  
चढत साहि साहाब  
चढ्यौ तत्तार षांन बर ।  
षांन षांन पुरसेम  
षांन मारूफ महाभर ॥  
कालिम षांन कमांम<sup>(३)</sup>  
मीर नासेन अभंगह ।  
अलू षांन आलील  
चढे हय गय चतुरंगह ॥  
सथ सयन सकल<sup>(४)</sup> सारइ लष  
उभै सहस मदमत्त<sup>(५)</sup> इभ<sup>(६)</sup> ।  
नीसांन<sup>(७)</sup> बज्जि<sup>(८)</sup> नौवति निहसि<sup>(९)</sup>  
रहे गज्जि धर पुर सु नभ ॥ ५६ ॥

छंद लघु नराज ॥

चढ्यौ सहाब सज्जियं ।

निसांन जार बज्जियं ॥

---

(१) C अनंग० c. m. (२) C कजि । (३) B कमांन । (४) B repeats  
सयन for सकल । (५) A मतमत । (६) C इभ । (७) B निसांब ।  
(८) C वाज्जि । (९) C नहसि ।

मिले जु<sup>(१)</sup> साह उमरं ।  
 सजै<sup>(२)</sup> अनूप संमरं ॥  
 गयंद मह गंधयं ।  
 सुझै न राह अंधयं ॥  
 पगं<sup>(३)</sup> ढिले पहारयं ।  
 नगं परं निहारयं ॥  
 सकाज बाज साजयं ।  
 कुरंग देषि<sup>(४)</sup> लाजयं ॥  
 अनूप चाल उज्जवै<sup>(५)</sup> ।  
<sup>(६)</sup>सखर चित्त रिज्जवै<sup>(७)</sup> ॥  
 रजा दमोद उष्पली ।  
 सपूर खर पष्पली ॥  
 रिघे<sup>(८)</sup> सु साहि आतुरं ।  
 कपै<sup>(९)</sup> सु अंग कातरं ॥  
 लगं न छोन उल्लहं ।  
 षडे<sup>(१०)</sup> ज्यौं<sup>(११)</sup> दूरि<sup>(१२)</sup> दुल्लहं ॥

---

(१) C जु । (२) C सजै । (३) C पयं । (४) C देष । (५) B उज्जवै ।  
 (६) B om. this line. (७) C रिज्जवै । (८) T रिंघे *rīghe*. (९) A कपै  
*kāpai*. (१०) B T षडे *khāḍe*, A बडे । (११) read *jyō*, m. c., C ज ।  
 (१२) C दूर ।

न आंन पांन जानयं ।

(१) उडांन(२) ज्यौं सिचानयं ॥

करंत इल्ल गारयं ।

सु आय सिंधु पारयं ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥

सिंधु उत्तरि(३) सुरतांन

कच्चौ सम षांन ततारह ।

तुम अनगेसह लेन

जाहु(४) जह तह हरिद्वारह ॥

सहस बोस लै सेन

(५) अनंग सम मिलियौ सोनपुर ।

विलब(६) करहु जिन बहुत

अभग(७) सजि आवहु आतुर ॥

करि नवनि षांन ततार चलि

पहुच्यौ(८) हरद्वारह सहर ।

करि षवरि तब्ब अति(९) प्रीततन

मिल्यौ राज अनगेस वर ॥ ५८ ॥

(१) B om. this line. (२) C उडांन । (३) C उत्तर सुरितान ।  
 (४) C जाहु । (५) redt line; 15 for 13 inst.; perhaps read अनग  
 स मिलियौ; C reads अनग सम मिले सो० । (६) C विलम, B A  
 विलंब *vilāb*, T विलब । (७) A B T अभंग *abhāg*; C अभग । (८) B  
 पड़्या, C पड़्यौ । (९) C अत ।



दूहा ॥

तहां<sup>(१)</sup> तोंअर अनगेस नृप  
 लए मोल बहु बाज ।  
 उभै सहस सेना सजित  
 रषि सुभर किय साज ॥ ५९ ॥  
 सत्त तीन भर सुभर जे  
 निज बैराग सरूप ।  
 तिन बंधी तरवार फिरि  
 बदलि भेष बहुरूप ॥ ६० ॥

कवित्त ॥

मिलत्त षांन ततार  
 (२) बत्त मत्त तत रत्त वर ।  
 दै निसांन पहु फटत  
 चले पुर सोन उभै<sup>(३)</sup> भर ॥  
 भए साह दल निकट  
 रषि जोजन जुग अंतर ।  
 दई<sup>(४)</sup> षवरि<sup>(५)</sup> सुलतांन<sup>(६)</sup>  
 चळ्यौ साहाब समंतर ॥

(१) read *tahā*, C तह । (२) C reads मत कर सब तत वर । (३) T  
 उनै । (४) B दई c. m. (५) C षवर । (६) A सुरतांन, C सुरितान ।

दस कोस अग<sup>(१)</sup> अनगेस कछु<sup>(२)</sup>  
 मिल्यौ जाइ साहिब<sup>(३)</sup> सुहित<sup>(४)</sup> ।  
 बैठै सु उतरि अति प्रीति पर  
 मनहु उभै जन इक चित ॥ ६१ ॥

छंद पञ्चरी ॥

सुरतांन स<sup>(५)</sup> मिलि नृप अनगेस ।  
 किय अनग समह पतिसाह पेस<sup>(६)</sup> ॥  
 गज पंच मत्त पंचास<sup>(७)</sup> वाज ।  
 साकत्ति<sup>(८)</sup> सज्जि दिय अनग<sup>(९)</sup> राज ॥  
 किरवांन तोन कंमांन एक ।  
 (१०) सिरपाव स्वातसुत<sup>(११)</sup> मालमेक ॥  
 दै प्रीत<sup>(१२)</sup> चढे नीसांन घाव<sup>(१३)</sup> ।  
 आए सु सोनपुर उभै ठाव<sup>(१४)</sup> ॥  
 मिलि साह अनग बैठै सुमत्त<sup>(१५)</sup> ।  
 तत्तार षांन षांनां सुचित ॥

(१) C अंग । (२) A B कजं, C कज ; read *kachhũ* or *kahũ*, m. c.  
 (३) C साहाब । (४) A सुहित c. m., C हित om. सु । (५) C सु ।  
 (६) C प्रेस । (७) C पचीस । (८) C साकत्त । (९) B T अनंग read  
*anāg*. (१०) So A C; B reads सि० स्वांतसुमाच मा०, and T  
 स्वांतसुत माच माल केम । (११) C स्वातिसुत । (१२) A B प्रीति ।  
 (१३) C घाय । (१४) C ढाय, B ढाव । (१५) C सुपत्त ।

कहि अनगपाल नृप पुब्ब कथ्थ ।  
 चहुआंन मन न<sup>(१)</sup> मांनै समथ्थ ॥  
 जंपै<sup>(२)</sup> सु साह चढि चल्थौ<sup>(३)</sup> प्रात ।  
 भंजै सु जुगानिय पुरह जात ॥  
 जा मिलिहि<sup>(४)</sup> अप्प चहुआंन आंनि ।  
 दीजै तौ उभय मिलि प्रांन दांन ॥  
 मंणी सु राज अनगेस मंन<sup>(५)</sup> ।  
 उच्चरौ ताम तत्तार घंन<sup>(६)</sup> ॥  
 देषो सु अप्प दूतह पठाइ<sup>(७)</sup> ।  
 लिष्णौ सु वत्त सम विषम दाइ<sup>(८)</sup> ॥  
 चर चारु चाहि हकारि<sup>(९)</sup> लीन ।  
 लिषि तत्त पत्त तिन हथ्थ दीन ॥  
 अनगेस पुत्ति<sup>(१०)</sup> सुत तुंम्म<sup>(११)</sup> अप्प ।  
 तुम समपि राज गय बद्रि तप्प ॥  
 करि तप्प आइ<sup>(१२)</sup> फिरि अंनगेस ।  
 दिज्जै<sup>(१३)</sup> सु इनहि हय गय सुदेस ॥

(१) B C T om., c. m., (२) C B जंपै c. m. (३) C T चल्थौ ।  
 (४) B C T मिलिहि । (५) C मान । (६) C T घांन । (७) C पठाथ, T  
 पठाई । (८) C दाय । (९) C चंकारि । (१०) B पुत्ती c. m. (११) C  
 तुम सु । (१२) C आय । (१३) C दीजै, T दिजै c. m.

आनौ न चित्त चहुआन चौर ।  
 (१) जगें सु सांमि न विरिसै चौर ॥  
 भुगई न जाइ<sup>(२)</sup> पर लई<sup>(३)</sup> बस्त ।  
 समपौ सु राइ<sup>(४)</sup> आनग समस्त ॥  
 गोचार परह<sup>(५)</sup> चारै सु गोइ<sup>(६)</sup> ।  
 कबहूँ न धेन वर धनी होइ<sup>(७)</sup> ॥  
 थनवार अश्व सैंपै सुराज ।  
 (८) नां होइ आय पति तास बाज ॥  
 करसनी कृषि रषी<sup>(९)</sup> सुभाय ।  
 तिन भोग सुभर रावर सु भाइ<sup>(१०)</sup> ॥  
 अप्पौ सुदेस अनगेस रस्त ।  
 जिन करौ अप्प मेज्झह<sup>(११)</sup> विरस्त ॥  
 भये<sup>(१२)</sup> विरस सुष्य पावै न कोइ<sup>(१३)</sup> ।  
 हम देत सीष तुम<sup>(१४)</sup> हितू होइ ॥  
 भये<sup>(१५)</sup> विरस सुष्य कह भयौ पंड ।  
 कुल सकल<sup>(१६)</sup> नास भौ बप्प षंड ॥

(१) C reads जगो सु साह भगो सु चौर । (२) C जाय । (३) B T लई  
 o. m. (४) C राय । (५) B C T पहर । (६) B गोई o. m., C गोय ।  
 (७) B होई o. m., C होय । (८) C reads ना होय पति ता होइ बाज ।  
 (९) C रषै । (१०) B भाई o. m., C जाइ । (११) B मज्झह । (१२)  
 read bhayē m. o. (१३) C कोय । (१४) So T; A has तु हितू om.  
 म; B तुम हितु म; C तुम हितु । (१५) C नास ।

अण्णा न भूम<sup>(१)</sup> जो जीय सुद्ध ।  
 तौ<sup>(२)</sup> सजहु आंन यन समहि जुद्ध ॥  
 दिय पत्र दूत प्रथिराज जाइ<sup>(३)</sup> ।  
 सुनि अवन अण्ण बहु दुष्ण पाइ<sup>(४)</sup> ॥  
 अनगेस<sup>(५)</sup> राज सुलतांन<sup>(६)</sup> जोर ।  
 चैसै जु सजै<sup>(७)</sup> कोटिक<sup>(८)</sup> और ॥  
 पावै न तज<sup>(९)</sup> दिस्सी सुथांन<sup>(१०)</sup> ।  
 झुकि राव घाव कीनै<sup>(११)</sup> निसांन ॥ ६२ ॥

गाथा ॥

झुकि किय घाइ<sup>(१२)</sup> निसांन  
 चढि प्रथिराज बाज साजेयं ।  
 सब सामंत समेतं  
 दिय<sup>(१३)</sup> डेरा सु दोइ<sup>(१४)</sup> जोजनयं<sup>(१५)</sup> ॥ ६३ ॥

दूहा ॥

देषि दूत गर<sup>(१६)</sup> साहि ढिग  
 कहौ षवरि<sup>(१७)</sup> प्रथिराज ।

---

(१) C भूमि जै । (२) C सजौ सु आनि इन समह जुद्ध । (३) C प्रथीराज जाय । (४) B पाई, C पाय । (५) C अनगेस c. m. (६) C सुरतांन । (७) C सजै । (८) C कोटिक । (९) B नत्तज । (१०) A सुं थांन । (११) C कीयौ । (१२) C घाय । (१३) A T दीय । (१४) C दोय । (१५) B जोजनई । (१६) C गये साह । (१७) C षवर ।

चढ्यौ खर संभर<sup>(१)</sup> धनी

हय गय दल बल<sup>(२)</sup> साज ॥ ६४ ॥

सामंत खर समस्त<sup>(३)</sup> वर

<sup>(४)</sup>भये संसार बिरत्त ।

स्वामि भ्रम<sup>(५)</sup> साधन सुबर

मरन लरन मन रत्त ॥ ६५ ॥

अरिस्त ॥

संभलि बत्त चरं सुलतांनह<sup>(६)</sup> ।

निहसे वज्जि<sup>(७)</sup> सुबीर निसांनह<sup>(८)</sup> ॥

भयौ हुकम साहाब अमांनह<sup>(९)</sup> ।

सज्जहु मीर उंमरा षांनह<sup>(१०)</sup> ॥ ६६ ॥

दूहा ॥

चर सु दिष्पि<sup>(११)</sup> चहुआंन कै<sup>(१२)</sup>

साह षवरि<sup>(१३)</sup> कहि राज ।

सुनत राज प्रथिराज<sup>(१४)</sup> बर

चल्यौ<sup>(१५)</sup> जुझ कज<sup>(१६)</sup> साज ॥ ६७ ॥

(१) Conj.; A B T सेभर, C संवर। (२) C om. (३) So C; A B T have सम सख। (४) read *bhayē*, or else *sāsār*, m. c. (५) C धर्म। (६) C सुलतानं। (७) C वजे। (८) C निसानं। (९) C अमानं। (१०) C षानं। (११) C दिषे। (१२) C कै। (१३) C षवर। (१४) C प्रथीराज। (१५) C चल्यौ। (१६) C कन।

छंद चोटक ॥

सजि साज चल्थौ प्रथिराज<sup>(१)</sup> बरं ।  
 सथ सामत<sup>(२)</sup> स्वर सपूर भरं<sup>(३)</sup> ॥  
 बिरदैत महावर बीर बली ।  
 तिन सेां किन जात न<sup>(४)</sup> रारि कली ॥  
 परसें<sup>(५)</sup> भिरि भारथ पारथ से<sup>(६)</sup> ।  
 न वदे<sup>(७)</sup> अप ऊपर<sup>(८)</sup> आंनन से<sup>(९)</sup> ॥  
 जुध केां तिन कै मुष केांन जुरे<sup>(१०)</sup> ।  
 न सुरे<sup>(११)</sup> मुष धार अनी सु मुरे ॥  
 सजि सांइन<sup>(१२)</sup> सेन हजार दसं ।  
 रहसे रस बांन सुबीर रसं ॥  
<sup>(१३)</sup>गज सत्त मुरं मदमत्त गजं ।  
 तिन देषि बंध्याचल<sup>(१४)</sup> पव्व लजं<sup>(१५)</sup> ॥  
 घमकें घन घुघर<sup>(१६)</sup> घंट बनं ।  
 भननंकत<sup>(१७)</sup> भोरनि झार भनं<sup>(१८)</sup> ॥  
 गति देषि तुरंग कुरंग दुरै<sup>(१९)</sup> ।  
 तिनकें उर अंठुन<sup>(२०)</sup> कोट परै<sup>(२१)</sup> ॥

(१) C प्रथीराज । (२) A B T सामंत *sāmāt*. (३) C नरं । (४) C जानत । (५) C प्रकटे । (६) A से । (७) C वदे । (८) C ऊपर । (९) C B से । (१०) C जुरे । (११) B C मुरे । (१२) A C साइन । (१३) C गज सप्त दशं मुर मत्त गजे । (१४) read *vāḍhyāchal*, m. c. (१५) A C लजे । (१६) C घुघर । (१७) C भवनंकत । (१८) C वनं । (१९) T डरै, A B C दुरे । (२०) T अंठुन । (२१) A B C परे ।

(१) चहुआन चढ्यौ चतुरंग दलं ।  
 सजि भैरव भूत बिताल बलं ॥  
 चर चौसठि जुगिनि<sup>(२)</sup> सथ्य चली ।  
 किलकी करे<sup>(३)</sup> भारथ बैर रली ॥  
 चमकंत सनाह सु जाति इसी ।  
 मुकरं<sup>(४)</sup> मधि मूरति विंब जिसी ॥  
 (५) सजि टोप रंगावलि थलथहां ।  
 बनि<sup>(६)</sup> राग<sup>(७)</sup> सु पुष्पर<sup>(८)</sup> सा बलय<sup>(९)</sup> ॥  
 दोइ<sup>(१०)</sup> कोस रछौ बिच<sup>(११)</sup> साहि<sup>(१२)</sup> दलं ।  
 चहुआन<sup>(१३)</sup> निसांन बजे<sup>(१४)</sup> सबलं ॥ ई८ ॥

दूहा ॥

सजि<sup>(१५)</sup> आयौ चहुआन जुध  
 सुन्यौ अवन पतिसाहि<sup>(१६)</sup> ।  
 हुकम<sup>(१७)</sup> घांन उमरांन हुअ  
 सजौ<sup>(१८)</sup> अंग संनाह<sup>(१९)</sup> ॥ ई९ ॥

(१) C चढ्यौ चहुआन । (२) C जुगिन । (३) C भरे । (४) C मुकरं ।  
 (५) C स० ट० कमान सु हाथ०, । (६) विन । (७) T राज । (८) C T  
 पुष्पर । (९) C वनियं । (१०) C दोइ, dōi m. c. (११) A बिय । (१२) C  
 साह । (१३) C चहुआनि । (१४) C बजे । (१५) B चढि, C सज । (१६)  
 C० साह । (१७) C हुकम । (१८) A सज्जो, B सज्यौ, C जसु । (१९) A  
 सनाह ।



गाथा ॥

मुष्य सु रषि तत्तारं

(१) बाई दिसा षांन मारूपं ।

दाहिन षां पुरसांनं

मद्धि अनंगेस पुद्धि साहाबं ॥ ७० ॥

सजि ठठ्ठौ सुलतांनं

सुनि चहुआंन अप्पव्यूहानं ।

मुष कीनौ कैमासं

चावंड<sup>(२)</sup> राइ<sup>(३)</sup> पच्छ<sup>(४)</sup> सज्जायं<sup>(५)</sup> ॥ ७१ ॥

दूहा ॥

मद्धि फौज प्रथिराज रचि

(६) कच्चौ सु कर करि जंच ।

अनगराज<sup>(७)</sup> जीवत गहै<sup>(८)</sup>

इह सु रचौ परपंच ॥ ७२ ॥

जिन सु हनौ<sup>(९)</sup> अनगेस जिय

(१०) गहौ सु जीयत सास ।

---

(१) B बाई । (२) B चावंड । (३) C राय । (४) C पुंढ । (५) C करि जायं । (६) C कच्चौ सु करि करि जंच । (७) So C ; A B T अनंगं anāg. (८) A B गहै, C गहौ । (९) C हन्यौ । (१०) C reads instead of this line : साहि करौ जिन नास ।

इतें दुदल<sup>(१)</sup> दिठाल<sup>(२)</sup> भय  
 लई<sup>(३)</sup> बग्ग कैमास ॥ ७३ ॥  
 बिहु<sup>(४)</sup> दल बल सिंधू बजै  
 उपजत सूर उहास ।  
 षोहनि पर नंषो<sup>(५)</sup> षयग<sup>(६)</sup>  
 करि किलकी कैमास ॥ ७४ ॥

छंद भुजंगी ॥

लई बग्ग कैमास बीरं अमानं ।  
 धमके<sup>(७)</sup> धरा गोम गज्जे गुमानं ॥  
 उतें<sup>(८)</sup> उप्परी बाग तत्तार षानं ।  
 मिले हिंदु मीरं दोऊ<sup>(९)</sup> दीन मानं<sup>(१०)</sup> ॥  
 बजे राग सिंधू<sup>(११)</sup> सु मारूअ बज्जै<sup>(१२)</sup> ।  
 गजे सूर सूरं असूरं<sup>(१३)</sup> सु भज्जै<sup>(१४)</sup> ॥  
 चढे व्योम विम्मानं<sup>(१५)</sup> देषंत देवं ।  
 बढे स्वामि कज्जै<sup>(१६)</sup> सु सज्जै<sup>(१७)</sup> उभेवं ॥  
 छुटे नाल गोला हवाई उछंगं ।

(१) B दुलह । (२) C दीठाल । (३) C लई वय । (४) C बिडं । (५)  
 C B नंषो + (६) So C ; A B T षयंग *khayāg*, m. c. (७) B धमवें  
 c. m. (८) C उतें । (९) C दोऊ । (१०) C दिनमानं । (११) C सिंधु c. m.  
 (१२) बग्गे । (१३) A असुरं, B T असुर c. m. ; C असूरं । (१४) C सुभग्गे ।  
 (१५) C बीमान । (१६) C कज्जें । (१७) C सज्जें ।

(१)नक्षत्रं<sup>(२)</sup> मनें जांनि तुट्टे<sup>(३)</sup> निहंगं ॥  
 (४)करष्ये चले बांन बानं कमानं ।  
 भई अंध धुंधं न सुज्झै<sup>(५)</sup> सु<sup>(६)</sup> भांनं ॥  
 मिले सेल भेलं समेलं अपारं ।  
 सनाहं<sup>(७)</sup> फटै हीय होवंत<sup>(८)</sup> पारं<sup>(९)</sup> ॥  
 मंद मत्त<sup>(१०)</sup> दंतं उषारै मसंदं ।  
 (११)मनें भिल्लिया पब्ब उष्पालि कंदं ॥  
 लगै नाग नागं मुषी सूर अँचै<sup>(१२)</sup> ।  
 हयन्नापुरं<sup>(१३)</sup> जानि वलिभद्र पैचै<sup>(१४)</sup> ॥  
 झरं ओझरं झारझारं झनकै<sup>(१५)</sup> ।  
 करै<sup>(१६)</sup> गज्ज चिक्कार ताजी किनकै<sup>(१७)</sup> ॥  
 हुअं<sup>(१८)</sup> पूरनं जांम मध्यांन जंची<sup>(१९)</sup> ।  
 (२०)मिले दिड्ड तत्तार आनंग मंची ॥  
 चल्यौ<sup>(२१)</sup> मातुलं और हकै<sup>(२२)</sup> कैमासं<sup>(२३)</sup> ।  
 (२४)हन्यौ घांन घगं पळ्ळंचे वृहासं<sup>(२५)</sup> ॥

(१) B om. this line. (२) C नषत्रं । (३) A तुट्टे, C कुट्टे, T तुट्टै । (४) C करष्ये चले । (५) B सुज्झै । (६) C न । (७) B सनाहं । (८) C होअन । (९) C परं c. m. (१०) A मंत । (११) C मनौ भिल्लि पवं उषारित्त कंदं । (१२) A अँचै, C अँचै, B T अँचै । (१३) C हयन्नापुरं c. m. (१४) A पैचै, C पैचै, B T पैचै । (१५) A झनकै c. m., C झनकै । (१६) C गरे । (१७) C किनकै । (१८) C हुअं, A B T ह्रअं c. m. (१९) A तंची । (२०) C मिले अनग दिड्ड तत्तार मंची । (२१) C चल्यौ । (२२) C हंके । (२३) read *kāimāsam*. (२४) C पळ्ळंचे हन्यौ घांन घगं वृहासं । (२५) A वृहासं ।

तकै तूवरं<sup>(१)</sup> पेलयौ गज्जराजं<sup>(२)</sup> ।  
<sup>(३)</sup>धपे दाहिमा पागरा छंडि बाजं ॥  
 जरी सेल गाढी<sup>(४)</sup> बिचं पीतवानं ।  
 बियो घाव कीयौ सुकट्ठे<sup>(५)</sup> क्रपानं ॥  
 कटी<sup>(६)</sup> दंत लो<sup>(७)</sup> सुंड<sup>(८)</sup> लोही<sup>(९)</sup> भभकै ।  
 मनें सारदा कंदरा थो उबकै ॥  
 परगौ कज्जलं कूट ज्यो<sup>(१०)</sup> तूटि<sup>(१०)</sup> हथ्यी ।  
 तजें<sup>(११)</sup> तूअरं<sup>(१२)</sup> भज्जिगे सब्ब सथ्यी ॥  
<sup>(१३)</sup>भगं दंतवालौ किधो<sup>(१३)</sup> सुप्रतीकं ।  
 महादिघ<sup>(१४)</sup> कायं अरजुन झीकं ॥  
 दबी दादसं कोस भूघंट मडे ।  
 पढें<sup>(१५)</sup> वेदवांनी पुरानं प्रसिडे ॥  
 परगौ दाहिमा भीम ज्यो<sup>(१५)</sup> गोलकूंडे ।  
 घटोकल्ल पथ्यं न सथ्यं उमंडे ॥  
 अलुअगौ पगं अग<sup>(१६)</sup> में इप्भराजं<sup>(१७)</sup> ।  
 हरी जेम कूटे करी मथ्य गाजं ॥

(१) C तौवरं, B तूवरं । (२) C गज्जराजं । (३) C कटे (or कडे ?) पागरा  
 धापि धपि दाहिम रालं । (४) B गाढी । (५) A कटें । (६) A कटी । (७)  
 A लो C om. (८) A सुंड C om. (९) A C लोही । (१०) C तटि । (११)  
 A तजें । (१२) C तौअरं । (१३) C om. the lines from भगं etc. to  
 हरी जेम etc., both incl. (१४) A B T महादिघ c. m. (१५) A पडे ।  
 (१६) B T अंग । (१७) B इभराजं ।

किलावा रछौ<sup>(१)</sup> पग मँ<sup>(२)</sup> लगि पासी ।  
 ग्रहौ<sup>(३)</sup> जीवतौ बद्रिकाश्रम बासी ॥  
 सनट<sup>(४)</sup> रही कट्ठियं<sup>(५)</sup> अड बिड्डी ।  
 चढी हथ्य दिखी न कारज सिड्डी ॥  
 उमै मीत माने<sup>(६)</sup> रहै<sup>(६)</sup> लगि छत्ती ।  
 पछं भीर सांमंत की आइ<sup>(७)</sup> पत्ती ॥  
<sup>(८)</sup>पुरासांन मारुफ तत्तार जोरी ।  
<sup>(९)</sup>करे एक फौजं धप्यौ साहि गोरी ॥  
 इतें चाहअनं भुजा के<sup>(१०)</sup> भरोमै<sup>(११)</sup> ।  
 मनो लंघलो<sup>(१२)</sup> सिंघ तुट्टा सरोसै ॥  
<sup>(१३)</sup>गढं इंदपथ्यं सहायं सुकज्जै<sup>(१४)</sup> ।  
 उमै दीन जुट्टे करे घग्ग धज्जै ॥  
 रसं रुक लगै हुए टूकटूकं ।  
 रिनं षत्त फट्टे<sup>(१५)</sup> पुराने<sup>(१६)</sup> अचूकं<sup>(१७)</sup> ॥  
 थटे जाइ<sup>(१८)</sup> आघाट बैकुंठ<sup>(१९)</sup> थानं<sup>(२०)</sup> ।  
 मिथ्यौ नट्ट गोटा जिसै आव जानं ॥

(१) C रहनौ । (२) C मँ । (३) C ग्रहनौ । (४) A B T सनटं, o. m.  
 (५) A B T कट्ठियं, o. m. (६) A B रहै, C रहै । (७) C जाय । (८)  
 C पुरासान तत्तार मारुफ जोरी । (९) C om. this line. (१०) B के ।  
 (११) C भरसं । (१२) So A ; B लंघनि, C लंघनौ, T घलंनि । (१३) C  
 इकं एक एकं सहायं सुकज्जै । (१४) B T सुकज्जै । (१५) C फट्टे । (१६) B  
 पुराने । (१७) C सचीके । (१८) C जाय । (१९) A बैकुंठ । (२०) C थानं ।

वरं चंग चंगे परी हूर खूरं ।  
 रचेरुंडमालं<sup>(१)</sup> महेसं गरूरं ॥  
 सिवा ओन पीनै<sup>(२)</sup> सु कीनै डकारं<sup>(३)</sup> ।  
 करे<sup>(४)</sup> घेचरा<sup>(५)</sup> भूचरा किल्लकारं ॥  
 उडै रंन गेनं भयै अंधकारं ।  
 पराए न अप्पं न सुज्झै लगारं ॥  
 इसी भंति<sup>(६)</sup> भारथ्य मंतै<sup>(७)</sup> करूरं ।  
 घरी च्यार<sup>(८)</sup> घंचै<sup>(९)</sup> रछौ रथ्य खूरं ॥  
<sup>(१०)</sup>हरद्वार खों जाइ लायै सु भगौ ।  
 सबे सेन भगौ तिनं खार लगौ ॥  
 रछौ<sup>(११)</sup> पातिसाहं भुजं<sup>(१२)</sup> लाज झल्लै ।  
 घरं<sup>(१३)</sup> घंचि<sup>(१४)</sup> साइक छंडै<sup>(१५)</sup> सुभल्लै ॥  
 गनें<sup>(१६)</sup> कोन नामं अनेकं फवज्जं ।  
 लग्यौ दाहिमा कै तुरंगंम कज्जं<sup>(१७)</sup> ॥  
 बडगुज्जरं<sup>(१८)</sup> कमधज्जं पुडोरं<sup>(१९)</sup> ।  
 छलं पारि दौरगौ करे नांहि सीरं ॥

(१) C रुंडमालं । (२) C धपी । (३) C भकारं । (४) C T करै । (५) B घंचरा । (६) B भंति, C भंति । (७) C मंतै । (८) C च्यारि । (९) C घंचै । (१०) C चंखौ जाय लायै सु भगौ । (११) C रछौ । (१२) C भुजा । (१३) B C करं । (१४) C घंचि । (१५) B adds सु before छंडै । (१६) C गनें । (१७) C तुरंगं सकज्जं । (१८) C वंडगुज्जरं । (१९) A B C पुंडीरं *pūḍīram*.

धरे सिप्परं अडु ह्वै<sup>(१)</sup> कालभेसं ।  
 लियौ<sup>(२)</sup> संग्रहै चोडरा गज्जनेसं ॥  
 कटे पारसं सत्त साहंस<sup>(३)</sup> मीरं ।  
 परे पंच सें घेत हिंदू सुवीरं ॥  
 उभै पांहुने कीन चंदं प्रकासे ।  
 ठले मुष्य मंगे प्रथीपत्ति<sup>(४)</sup> पासे ॥ ७५ ॥

कवित्त ॥

बंधि<sup>(५)</sup> साहि<sup>(६)</sup> साहाब  
 लियौ<sup>(२)</sup> चावंडराय<sup>(७)</sup> बर ।  
 हय कंध हल्लै डारि  
 गयौ निज सथ्य सेन नर<sup>(८)</sup> ॥  
 नीर उतरि<sup>(९)</sup> पति असुर  
 घेत दुब्ब्यौ प्रथिराजं<sup>(१०)</sup> ।  
 मुसलमांन सत सहस  
 परे सामथ करि काजं ॥  
 पंच सें<sup>(११)</sup> सुभर हिंदू<sup>(१२)</sup> सु परि  
 उभै सत्त झोरी<sup>(१३)</sup> सु जगि<sup>(१४)</sup> ।

(१) A कै । (२) A B T लीयौ c. m. (३) A C साहस c. m. (४) C प्रथीपत्ति । (५) C बांधि । (६) C साह । (७) B चामंडराइ । (८) C भर । (९) A उतरि c. m. (१०) C प्रथीराजं c. m. (११) T से, C सै । (१२) C हिंदु c. m. (१३) C डोरी । (१४) C जगि ।



जित्यौ<sup>(१)</sup> सु राज सोमेस सुअ  
 बजे<sup>(२)</sup> जैत बज्जै बजि ग ॥ ७६ ॥  
 मुसलमांन धर<sup>(३)</sup> गड्डि<sup>(४)</sup>  
 दाग निज सुभर<sup>(५)</sup> दिवायै<sup>(६)</sup> ।  
 लिये<sup>(७)</sup> जीति प्रथिराज<sup>(८)</sup>  
 समह सामंत<sup>(९)</sup> घर<sup>(१०)</sup> आयै ॥  
 सभा बैठ<sup>(११)</sup> भर<sup>(१२)</sup> सुभर  
 कछ्यौ कैमास राइ गुर ।  
 अनगेसह लैआउ<sup>(१३)</sup>  
 चल्थौ<sup>(१४)</sup> मंची सु लैन<sup>(१५)</sup> घर<sup>(१६)</sup> ॥  
 आंन्यौ<sup>(१७)</sup> सु राज अनगेस तह  
 प्रथीराज लगौ सु पय ।  
 सनमांन प्रांन अति प्रीति<sup>(१८)</sup> सों<sup>(१९)</sup>  
 भाव भगत<sup>(२०)</sup> राजन करय ॥ ७७ ॥  
 दियौ हुकम दाहिंम  
 ल्याउ<sup>(२१)</sup> दीवांन साह कहु<sup>(२२)</sup> ।

(१) C जितौ । (२) C घनै । (३) C धरि । (४) C गड्डि । (५) C  
 सुभर, T सुभरे । (६) B C दिवायै । (७) A B T लीयें c. m., C लिखें ।  
 (८) C प्रथीराज । (९) read *sāmāt*. (१०) T वर । (११) C बैठि । (१२)  
 C भर । (१३) T लैआन, C लेआउ । (१४) C चले । (१५) A लैन, B लेन ।  
 (१६) T वर । (१७) B आंन्यों, C आन्यो । (१८) C प्रीत । (१९) C सो ।  
 (२०) C भगति । (२१) C ल्याव । (२२) C कहूँ ।



सब देषे<sup>(१)</sup> सामंत

सुक्कि आनन अपत्ति बहु ॥

आन्यौ<sup>(२)</sup> साहि<sup>(३)</sup> हजूर

मिल्यौ प्रथिराज राज वर ।

बैठि साह<sup>(४)</sup> साहाब<sup>(५)</sup>

मुष्ण देषे<sup>(६)</sup> जु<sup>(७)</sup> सुभर<sup>(८)</sup> भर ॥

बोल्हौ जु<sup>(९)</sup> राज प्रथिराज<sup>(१०)</sup> वर<sup>(११)</sup>

अनग<sup>(१२)</sup> राइ तुम अति<sup>(१३)</sup> सुमति ।

भरमो<sup>(१४)</sup> सु केम कहें<sup>(१५)</sup> साहि के<sup>(१६)</sup>

इह तौ पांनि<sup>(१७)</sup> उतरि<sup>(१८)</sup> अपत्ति ॥ ७८ ॥

दूहा ॥

कहै राज प्रथिराज<sup>(१९)</sup> गुर

सुभर बोलि वर अग ।

अनग सीस<sup>(२०)</sup> उंच<sup>(२१)</sup> न करै<sup>(२२)</sup>

नाग दमन<sup>(२३)</sup> सिर नगा ॥ ७९ ॥

---

(१) B देषे, C देषैं । (२) B आन्यो, C आनौ । (३) B साह । (४) A सा o. m. (५) A साहब o. m. (६) A B देषे, C देषैं । (७) C जु । (८) C भर । (९) C सु । (१०) C प्रथीराज । (११) C वर । (१२) A B अनग anāg, C अनग । (१३) C अति । (१४) C भरमो । (१५) A read kahē, C कहैं kahaĩ. (१६) A C के । (१७) C पानि । (१८) A उतरि, B उतीर । (१९) C प्रथीराज । (२०) B सीस । (२१) C उंच । (२२) B करे । (२३) C दमनि ।

कवित्त ॥

कहै गाजि<sup>(१)</sup> गहिलौत

कहुं<sup>(२)</sup> सामंत सुनौ सह ।

अप्य अनी एकंत<sup>(३)</sup>

असुर सुर नां निवही<sup>(४)</sup> कहुं<sup>(५)</sup> ॥

समुद<sup>(६)</sup> सजल जल<sup>(७)</sup> पार

ससी लगौ सु कलंकह ।

खर गिलै रस राह

<sup>(८)</sup>पंथ<sup>(९)</sup> लुट्टी इ गोप बहु ॥

दसरथ्य आप काक सु बिक्रम

दइ<sup>(१०)</sup> दिवांन<sup>(११)</sup> विपरीत गति ।

पतिसाह<sup>(१२)</sup> कही सुनते<sup>(१३)</sup> सकल

अनगपाल नट्ठी सुमति ॥ ८० ॥

दूहा ॥

बदै राइ चामंड<sup>(१४)</sup> बर

इह अवस्थ होइ<sup>(१५)</sup> अंग ।

(१) C गज्जि । (२) A B कऊ, C कहैं । (३) C एकंग । (४) C नवही ।  
(५) read *kahā*, C कह, T कहं । (६) C समुद्र । (७) C om. (८) C  
पथ्य लुट्टाय गोप वह । (९) A B T पथ c. m., C पथ्य । (१०) A B C  
T दई c. m. (११) C दिवांन । (१२) B पतिसाहि । (१३) A B सुनतें, C  
सुनतैं । (१४) C चाचंड । (१५) C होय ।

जव सुमांन<sup>(१)</sup> सर<sup>(२)</sup> तजि करै  
 हंस काग को<sup>(३)</sup> संग ॥ ८१ ॥  
 जिते बचन सामंत<sup>(४)</sup> कहै  
 तिते सहे अनगीस ।  
 षील चील्ह<sup>(५)</sup> सम सुनि रह्यौ  
 उद्यौ<sup>(६)</sup> न जरध<sup>(७)</sup> सीस ॥ ८२ ॥  
 भाव भगत<sup>(८)</sup> प्रथिराज<sup>(९)</sup> नै<sup>(१०)</sup>  
 कीनी अति महिमांन ।  
 इक्क बाज सिरपाव दै  
 छंडि दियौ सुरतांन ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥

छंडि<sup>(११)</sup> दियौ सुरतांन  
<sup>(१२)</sup>डंड कब्बूल कियौ सिर ।  
 बीस हस्ति सत बाज  
<sup>(१३)</sup>उंच जाति सुगातह<sup>(१४)</sup> गिर ॥  
 उभै लष्य बर द्रब्ब<sup>(१५)</sup>  
 दियौ साहाब सुदंड ।

(१) B सुमांनान । (२) C om. सर and the rest, up to कहै in the following stanza. (३) A कौ । (४) read *sāmāt*. (५) B षीलचिह्न । (६) B ऊद्यौ, C उद्यौ । (७) B जरध । (८) C भगति । (९) C प्रथीराज । (१०) T नै, C नै । (११) B T छंडियौ, om. दियौ ; C छंडिदियौ । (१२) C डंड कब्बुलै कियौ सिर । (१३) C ऊंच जातिय सुगात गिर । (१४) A सुतह । (१५) C द्रव्य ।

सो प्रथिराज<sup>(१)</sup> नरिंद

अड्द दीनौ चामंडं ॥

(२)अध<sup>(२)</sup> दंड सब्ब<sup>(४)</sup> सामंत कछु<sup>(५)</sup>

बंठि दियौ चहुवांन बर ।

दै दंड घत्त नर वर सुभर

प्रथीराज छीवै<sup>(६)</sup> न कर ॥ ८४ ॥

दूहा ॥

मेछ बंध चहुवांन नै<sup>(७)</sup>

(८)लिए हयगाय मारि ।

फिरि प्रसन्न प्रथिराज<sup>(९)</sup> किय

ढिल्ली कोटह वार<sup>(१०)</sup> ॥ ८५ ॥

बरष एक पच्छै न्वपति

तब लागि भर सबलांन ।

समी हयगाय<sup>(११)</sup> दल सजे<sup>(१२)</sup>

चतुरंगी चहुवांन ॥ ८६ ॥

(१) C प्रथीराज । (२) C सब अध दंड सामंत कछ । (३) T अड्द c. m. (४) A B T सब, read *sabb*, m. c. (५) A B कछं, C कछ । (६) C छीवै । (७) T नै । (८) C लीये हय गय म०, T लिए हय गय म० । (९) A प्रथिराज, C प्रथीराज । (१०) C वारि । (११) C हय गय, c. m. (१२) A से for सजे ।

कवित्त ॥

मिल्यौ राव<sup>(१)</sup> पज्जून<sup>(२)</sup>  
 मिल्यौ<sup>(३)</sup> भोरी<sup>(४)</sup> महनंसिय ।  
 मिले राव पुंडीर  
 गए दुज्जन<sup>(५)</sup> बल नंसिय ॥  
 मिले निडुर<sup>(६)</sup> रथौर<sup>(७)</sup>  
 मिले गोइद<sup>(८)</sup> गहिलौतं<sup>(९)</sup> ।  
 मिलि घीची<sup>(१०)</sup> पज्जून<sup>(११)</sup>  
 जाम जहों<sup>(१२)</sup> पहिलौतं ॥  
 आरंभ राव कनकू<sup>(१३)</sup> मिल्यौ<sup>(३)</sup>  
 रघुवंसी हयजार ही ।  
 कविचंद मिल्यौ<sup>(३)</sup> जैचंद कौ<sup>(१४)</sup>  
 नांम सु भट्टां भार ही ॥ ८७ ॥

अरिल्ल ॥

तब सुमंत परधानह पुच्छिय ।  
 कहौ मंत<sup>(१५)</sup> मंची मति अच्छिय ॥

(१) C राज । (२) B T पज्जून, C वज्जून । (३) C मिलौ । (४) C भोरी ।  
 (५) C जन बल । (६) B T निडुर C. m. (७) C निडुराठौर । (८) C  
 गोइद, A B T गोइंद *gold*. (९) C गहिलौतं । (१०) B घीची । (११) B  
 T पज्जून, C परसंग । (१२) C जहौ । (१३) B कलकू । (१४) T कौ ।  
 (१५) C मंच ।

किहि विधि<sup>(१)</sup> क्रमं भ्रमं<sup>(२)</sup> जस रष्यै ।

सुनि<sup>(३)</sup> परधानं एह<sup>(४)</sup> विधि अष्यै<sup>(५)</sup> ॥ ८८ ॥

दूहा ॥

(६) अनगपाल नि नि पावि ग्रह

अरु बर बंधव साल<sup>(७)</sup> ।

बृद्ध जोग बपु जोग धरि

चंपि<sup>(८)</sup> जरा<sup>(९)</sup> अरि काल ॥ ८९ ॥

जोगनिपुर<sup>(१०)</sup> प्रथिराज<sup>(११)</sup> कै

दैव दियौ दिन वित्त<sup>(१२)</sup> ।

मोह बंध बंधन तजै

(१३) भ्रमं क्रमं<sup>(१४)</sup> कीजै चित्त ॥ ९० ॥

कवित्त ॥

न रहै सर वापीय<sup>(१५)</sup>

अनुप गढ मंडप बहुज्जं ।

न रहै धन बन<sup>(१६)</sup> तरुनि

प्रवत न<sup>(१७)</sup> रहै<sup>(१८)</sup> कूफिरि छज्जं<sup>(१९)</sup> ॥

(१) C विधि । (२) C धर्म कर्म । (३) C सुर । (४) C एहि । (५) C  
ष्यै । (६) C अ० न न पावि गहि । (७) B T बंधवा साल । (८) C चंपि ।  
(९) C राज । (१०) C जोगनिपुर । (११) C प्रथीराज । (१२) B T वित्त ।  
(१३) C धर्म कर्म की चित्त । (१४) read *dhram kram*, m. c. (१५) B  
T वापीयं c. m. (१६) T om. (१७) T भ ? (१८) read *rahaĩ*, m. c ;  
C रह । (१९) C कफिरज्जं, B T कूफिरिज्जं ।

न रहै ससि रवि भोम  
 जाइ<sup>(१)</sup> थावर अरु जंगम ।  
 न रहै सात समंद  
 धरै भंजै सोइ अंगम ॥  
 जानहु न प्रलै चतुरंग तम  
 प्रलै इहै<sup>(२)</sup> सो दिषियै<sup>(३)</sup> ।  
 राषौ न<sup>(४)</sup> चिंत आचिंत का  
 जाम न मरन बिसिषियै ॥ ८१ ॥  
 (५) फुनि<sup>(६)</sup> वरज्यौ<sup>(७)</sup> नृप चीय  
 जीयतिय तीय उतारिय<sup>(८)</sup> ।  
 तजिय मांन घरवार  
 पुच्छ्यौ<sup>(९)</sup> व्यास हकारिय ॥  
 चाहुआंन<sup>(१०)</sup> अरि भज्जि<sup>(११)</sup>  
 होइ<sup>(१२)</sup> धर अनग नरेसं ।  
 पंच नदी करि अइ  
 बंठि अप्पै अध देसं ॥  
 तुम कहै जाति मम<sup>(१३)</sup> जाति विप  
 इह<sup>(१४)</sup> अपुब्ब कथ मंडि कै<sup>(१५)</sup> ।

(१) C जाय । (२) C यहै । (३) A दिषियै । (४) B ना । (५) C  
 prefixes ॥ कप्य ॥ (६) C पुनि । (७) A वरज्यौं । (८) B उतारी । (९)  
 A पुच्छ्यौं । (१०) C चहुआंन । (११) A भंज्जि । (१२) C होय । (१३)  
 A C जग । (१४) C इहि । (१५) A कै ।

कै<sup>(१)</sup> ग्रहै पंथ बट्टी सरन  
 धरा काम कलि छंडि कै ॥ ६२ ॥  
 कहै<sup>(२)</sup> व्यास अनगेस  
 तपै ढिल्ली चहुवांन ।  
 बहु बर बल छज्जिहै<sup>(३)</sup>  
 बंध मोषन सुलतानं ॥  
 तुम बट्टी तप जाहु  
 धरा संदेस<sup>(४)</sup> न आंनहु ।  
 (५) इह निम्मान प्रमान  
 पुब्ब संबंध न जानहु ॥  
 निम्नलौ<sup>(६)</sup> ध्यान गुर ग्यान करि  
 हरि<sup>(७)</sup> भजि निम्नल<sup>(८)</sup> होइहै<sup>(९)</sup> ।  
 न न करौ चित्त दुविधा न्वपति  
 (१०) अत्तप रत्त न षोइयै ॥ ६३ ॥  
 (११) न<sup>(१२)</sup> लहै मांग्यौ देस  
 वेस पुनि मांग्यौ<sup>(१३)</sup> न लहै<sup>(१४)</sup> ।

(१) C om. (२) C prefixes ॥ कप्पय ॥ (३) A om. क, C कज्जिहैं ।  
 (४) C संदेह । (५) C इह न्वमान परमान । (६) C निर्मलौ । (७) C  
 हर । (८) C निर्मल । (९) C होइयै । (१०) C अंत पर तन षोइयै ।  
 (११) C prefixes ॥ कप्पय ॥ (१२) C ना । (१३) C संग्यौ । (१४) C ना  
 लहि ।



न<sup>(१)</sup> लहै मंग्यौ मांन  
 पांन फुनि मंग्यौ न लहै<sup>(२)</sup> ॥  
 न<sup>(१)</sup> लहै धन मंगत्त  
 गत्त फुनि रूप बिनानं ।  
 पूब्ब निबंध्यौ बंध  
 लहै सोई<sup>(३)</sup> परिमांनं<sup>(४)</sup> ॥  
 तुम<sup>(५)</sup> जांन ग्यान मतिमांन गुर<sup>(६)</sup>  
 नेह न लप्भै<sup>(७)</sup> जोर बर ।  
 आतंमचिंत<sup>(८)</sup> अनचिंत तजि  
 इहै मत्त तुम सत्त करि ॥ ६४ ॥

अरिल्ल ॥

मांनि मंत तुम तूंवर छंडिय<sup>(९)</sup> ।  
 जाइ<sup>(१०)</sup> सरन बट्टी तप मंडिय ॥  
 कंदमूल आहार अचानिय ।  
 कै बन<sup>(११)</sup> फल तन धारन पानिय ॥ ६५ ॥

कवित्त<sup>(१२)</sup> ॥

अनग राइ<sup>(१३)</sup> अतिसेव  
 करै<sup>(१४)</sup> प्रथिराज<sup>(१५)</sup> राज अति ।

(१) C ना । (२) C ना लहि । (३) C सोइ । (४) C परवानं । (५) C तम । (६) C मुर । (७) B लभै, C लभौ । (८) A B आतंमचित्त, C adds न after it. (९) C तुंवर छंडिय । (१०) C जाय । (११) C बन । (१२) C बप्पय । (१३) C राय । (१४) C करौ । (१५) C प्रथीराज ।

मास एक वृष वित्त

बहुरि<sup>(१)</sup> उपजी सुराज मति ॥

(२) कछौ पुची सुत समह<sup>(३)</sup>

मोहि मुक्कलि बद्रा दिस ।

तहां<sup>(४)</sup> वपु साधन करौं<sup>(५)</sup>

धरौं<sup>(६)</sup> हरिध्यान अहोनिमि ॥

बोल्या सुराज चहुआन बर

रहौ इहां साधन करौ ।

तप तुला<sup>(७)</sup> दान धर्मह बिबिध

ध्यान ग्यान हिरदै धरौ ॥ ६६ ॥

(८) कही<sup>(९)</sup> सुत सोमस

राज अनगेस न मांनौ ।

वपु साधन तप काज

बद्रौ<sup>(१०)</sup> दिसि<sup>(११)</sup> मनसा ठानी<sup>(१२)</sup> ॥

तब पुची बर पुच

लष्य दह<sup>(१३)</sup> द्रव्य सु अप्पौ ।

(१) B बहुरी, c. m. (२) C क० प० सम सुतह । (३) A सभह, B समह ।  
 (४) read *tahā*, C तह । (५) A करौ । (६) C हरौ । (७) C तुल ।  
 (८) C prefixes ॥ वप्य ॥ (९) C कही । (१०) C बद्रि । (११) C दिस ।  
 (१२) C ठानी, T ठानी । (१३) C दस ।

सत अनुचर इक जांन

बिप्र दस एक समण्यौ ॥

चल्यौ<sup>(१)</sup> अनग<sup>(२)</sup> बट्टी सर माग<sup>(३)</sup>

पहुचायौ प्रथिराज<sup>(४)</sup> नृप<sup>(५)</sup> ।

तहां<sup>(६)</sup> जाइ<sup>(७)</sup> राज तौवर<sup>(८)</sup> सुवर

तपै राज उग्रह सुतप ॥ ६७ ॥

(९) धनि<sup>(१०)</sup> सुचित्त प्रथिराज<sup>(११)</sup>

करुन रस आप उपनौ ।

द्रव्य<sup>(१२)</sup> दर क सत्त अड्ड

पुन्य कारज<sup>(१३)</sup> भरि<sup>(१४)</sup> दिन्नौ<sup>(१५)</sup> ॥

सबै<sup>(१६)</sup> सुभर अनगान<sup>(१७)</sup>

आनि आदर ग्रह वासिय ।

धनि धनि जंपै<sup>(१८)</sup> लोइ

कित्ति भुमंडल भासिय<sup>(१९)</sup> ॥

---

(१) C चले। (२) A B T C अनंग *anāg*. (३) So B T; A has सराग, C समग, for सर माग; perhaps चल्यौ अनंग वट्टीस मग। (४) C प्रथीराज। (५) B नृप। (६) read *tahā*, C तह। (७) C जाय। (८) C तौवर। (९) C prefixes ॥ क्वप्य ॥ (१०) B धन। (११) C धनि प्रथीराज सुचित्त। (१२) C द्रव्य। (१३) C कारन, B om. ज। (१४) T भर। (१५) C दिणो। (१६) B सबै। (१७) C अनगान। (१८) C जंपै लोय। (१९) A B भाजिय।

आषेठ दुष्ट दुज्जन दलन  
करै केलि सामंत सथ ।  
कवि चंद छंद वंधिय कवित  
पथ्यराज<sup>(१)</sup> भारथ्य कथ ॥ ६८ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासा के  
अनंगपाल दिल्ली आगमन फिरि प्रथिराज जुरन वट्टी  
तप सरन नाम अठाविसमो<sup>(२)</sup> प्रस्ताव संपूरणं<sup>(३)</sup> ॥  
॥ २८ ॥

---

(१) C प्रथीराज । (२) B चौवीसमो । (३) B adds समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ।  
कल्याणमस्तु ॥ the subscription in C is : इति श्री कवि चंद विरचिते  
प्रथीराज रायसे राजा अनंगपाल दिल्ली आगम फेर वट्टी वन तपस्यार्थ गमन  
चावंड राइ पातसाहि दहन वर्ननं नाम प्रथमं प्रस्ताव ॥

॥२६॥ अथ घघर की लराई<sup>(१)</sup> रो प्रस्ताव लिख्यते<sup>(२)</sup> ॥२६॥



कवित्त<sup>(३)</sup> ॥

दिस्त्रिय<sup>(४)</sup> पति प्रथिराज<sup>(५)</sup>

अवनि आषेटक षिस्त्रिय ।

साठ सहस<sup>(६)</sup> असवार<sup>(७)</sup>

जाइ<sup>(८)</sup> लगा धर<sup>(९)</sup> ठिस्त्रिय ॥

धूनि धरा पतिसाह<sup>(१०)</sup>

रहै पेसोर<sup>(११)</sup> धरत्तिय<sup>(१२)</sup> ।

सथ्य लिह<sup>(१३)</sup> सामंत

दिस्त्री कैमास सुमत्तिय<sup>(१४)</sup> ॥

मृगया<sup>(१५)</sup> सु रमय प्रथिराज<sup>(१६)</sup> बर

गज्जन वै धर धूसियै ।

<sup>(१७)</sup> दूसरौ इंद्र<sup>(१८)</sup> दिस्त्रेस<sup>(१९)</sup> बर

सुभर सरस ठिग सुब्भियै<sup>(२०)</sup> ॥ १ ॥

---

(१) T लराइ । (२) the superscription in C is : अथ घघर नदी समय लिख्यते ॥ (३) C कवित्त । (४) C दिस्त्रिय । (५) C प्रथीराज । (६) C साठि सहस । (७) pers. اسوار ॥ (८) C जाइ । (९) C धार । (१०) C पतिसाहि । (११) C पैसौर । (१२) C सुथानै । (१३) C लिहै । (१४) C सुजानै । (१५) A मृगया । (१६) C प्रथीराज । (१७) C reads दश रौद्रं दन दि० व० । (१८) B इंद । (१९) A दिस्त्रेस । (२०) B सुभिय ।

दूहा ॥

गई षवरि<sup>(१)</sup> धंमान<sup>(२)</sup> की  
 उंट<sup>(३)</sup> चढे<sup>(४)</sup> असवार ।  
 दिल्ली धर लिज्जै तषत  
 दिसि<sup>(५)</sup> गज्जनै पुकार ॥ २ ॥  
 प्रथीराज साजत पवग<sup>(६)</sup>  
 है गै<sup>(७)</sup> नर भर भार ।  
 दिल्ली पति आषेट चढि  
 कुहक बांन हथनारि ॥ ३ ॥  
 डेरा करि पेसोर<sup>(८)</sup> नृप  
 सहस सडि सुभ बाज ।  
 सोन पंथ बिच पंथ दोइ<sup>(९)</sup>  
 गल ग्रज्जै<sup>(१०)</sup> अग्राज ॥ ४ ॥

कवित्त<sup>(११)</sup> ॥

गोरी पठए<sup>(१२)</sup> दूत  
 चले चारों<sup>(१३)</sup> चतुरं नर ।

(१) arab. خبر ॥ (२) C षवर धूमान । (३) So B ; C उंट, T उंड;  
 but A उंच । (४) C चढै । (५) C दिस । (६) So C ; A B T पवंग,  
 read *parāg*. (७) C हथ गय । (८) C पैसोर । (९) B दोई, C दोय,  
 read *dōi m. c.* (१०) C गज्जै । (११) हथय । (१२) C पठये, T पतर ।  
 (१३) C चारै ।

लीय षवरि प्रथिराज<sup>(१)</sup>  
 चले पच्छे<sup>(२)</sup> गज्जन धर ॥  
 किय सलांम<sup>(३)</sup> जब दूत  
 तवहि<sup>(४)</sup> तत्तार सु वुज्जिय ।  
 कहा<sup>(५)</sup> करंत दिखेस  
 चढत गिरवर धर धुज्जिय<sup>(६)</sup> ॥  
 संग सित्त<sup>(७)</sup> षट सामंत<sup>(८)</sup> चलि  
 तीन पाव लप्पह तुरी ।  
 अनि स्वर बीर नरवर सकल  
 उडी षेह धर उप्परी ॥ ५ ॥  
 (९) आषेटक दिन रमय<sup>(१०)</sup>  
 संग खानं घन चीते ।  
 नावक<sup>(११)</sup> पावक विपुल  
 जक्कि दिन<sup>(१२)</sup> जामह जीते ॥  
 सहस तुरी बध्धह सु  
 संत<sup>(१३)</sup> मेघा कलिकंठिय<sup>(१४)</sup> ।

(१) C षवर प्रथीराज । (२) C पछें । (३) arab. سلام ॥ (४) C तवहितं  
 तत्तार । (५) read *kahā* m. c. ; C कह । (६) C धूजिय । (७) C सत ।  
 (८) B मासंत । (९) prefixes ॥ कप्पय ॥ (१०) C राज । (११) C नाचक ।  
 (१२) C दिण । (१३) So B T ; C has सु सत ; A सुमंत ; perhaps सु  
 सत ; all the MSS. place the pause after संत ; writing thus ब०  
 सुसंत ॥ मेघा etc. ; similarly in the following distich they write  
 पु० सुलंब सिरषा etc. (१४) C कलिकंठिय ।

सीह गोस<sup>(१)</sup> पुच्छिय सु  
 लंब<sup>(२)</sup> सिरषा<sup>(३)</sup> सिर पुठ्ठिय<sup>(४)</sup> ॥  
<sup>(५)</sup>जुररा जु बाज कूही<sup>(६)</sup> गुहा  
 धानुकी दारू धरा ।  
 बहु<sup>(७)</sup> काल भाल बधकं बिला  
 जम भय तव जित्तिय धरा ॥ ६ ॥  
<sup>(८)</sup>रमै<sup>(९)</sup> राज आषेट  
 सत्त एकल बल<sup>(१०)</sup> भंजै ।  
 पंच पथ्य<sup>(११)</sup> परिगाह  
 रंग अप्पन मन रंजै ॥  
 सहस एक बाजिच<sup>(१२)</sup>  
 स्वर किरनह संपेयै<sup>(१३)</sup> ।  
 सुनि गोरी साहाब<sup>(१४)</sup>  
 दाह<sup>(१५)</sup> दिल<sup>(१६)</sup> मह<sup>(१७)</sup> न बिसेयै ॥  
 जितैं<sup>(१८)</sup> व जब्ब<sup>(१९)</sup> प्रथिराज<sup>(२०)</sup> कैं  
 तब तसबी<sup>(२१)</sup> कर<sup>(२२)</sup> मंडिहें ।

(१) pers. گوش ॥ (२) C लव । (३) pers. سرخا ॥ (४) C पुष्ठिय ।  
 (५) C जुर राव । (६) A B T कूही, C कही, c. m. (७) A धवळ । (८)  
 C prefixes ॥ बप्पय ॥ (९) C रसै । (१०) C बलु । (११) C पंथ । (१२)  
 B बाजिच । (१३) C गंपेयै । (१४) C साहाब c. m. (१५) C दीह । (१६)  
 pers. دل ॥ (१७) B ममह । (१८) C जितो । (१९) C जब c. m. (२०)  
 C प्रथिराज । (२१) arab. تاسبيح ॥ (२२) A लर ।



टामंक<sup>(१)</sup> सह नहह करों<sup>(२)</sup>

जुगति साह तव ठंडिहो<sup>(३)</sup> ॥ ७ ॥

दूहा ॥

देस देस कग्गद<sup>(४)</sup> फटे<sup>(५)</sup>

पेसंगी घुरसांन<sup>(६)</sup> ।

रोम<sup>(७)</sup> हबस<sup>(८)</sup> अरु वलक<sup>(९)</sup> मै<sup>(१०)</sup>

फट्टे<sup>(११)</sup> पहु अण्यांन ॥ ८ ॥

कवित्त<sup>(१२)</sup> ॥

सिलह<sup>(१३)</sup> लोह<sup>(१४)</sup> सज्जंत

लप्प पंचह मिलि पप्पर ।

कूंच कूंच परि घैर<sup>(१५)</sup>

गुरजधारी लष गप्पर ॥

<sup>(१६)</sup>कोस दहं दह कूंच

आइ गिरि<sup>(१७)</sup> बान संपत्तौ<sup>(१८)</sup> ।

दौरि दूत दिखेस

जाम कर चय दिन<sup>(१९)</sup> वित्तौ ॥

(१) C टामक । (२) A कारों । (३) C ठंडिहो । (४) C कग्गर । (५) T फट्टे । (६) pers. خراسان । (७) arab. روم । (८) arab. حبشه । (९) pers. بلخ । (१०) A मै । (११) A पट्टे । (१२) C कण्या । (१३) C सिल om. ह; perhaps arab. سلاح । (१४) B repeats सिलह । (१५) arab. خير । (१६) C कोसह कूंच । (१७) C आय गिर । (१८) C B सपत्तौ । (१९) B adds कर after दिन ।

मुकाम<sup>(१)</sup> कियौ प्रथिराज<sup>(२)</sup> नृप

तहां षवरि कहि दूत सब ।

गोरी नरिंद हय गय सुभर

सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ ६ ॥

(१) चैत मास रवि तीज

सेत पष्यह कल<sup>(४)</sup> चंदह ।

भयौ सुदिन मध्यांन

चळ्यौ प्रथिराज नरिंदह<sup>(५)</sup> ॥

कटक स बर हिस्सोर

भार सेसह<sup>(६)</sup> करि<sup>(७)</sup> भगिाय ।

चढि सामंत सकज्ज

नह सुर अंमर जगिाय ॥

गज रोर सोर बंधे घटा

सिलह बीज सिल काबलिय ।

पष्यीह चीह सह<sup>(८)</sup> नाइ<sup>(९)</sup> सुर

नदि<sup>(१०)</sup> घघघर मैलान दिव ॥ १० ॥

---

(१) arab. مقام । (२) C प्रथीराज । (३) C prefixes ॥ इष्य ॥ (४) C कल । (५) C प्रथीराज नरिंदह । (६) B T prefix से to सेसह । (७) A B C कर । (८) सह । (९) B नाई, C नाय । (१०) A नरिं ।

दूहा<sup>(१)</sup> ॥

आयौ आतुर उप्परह

पैसंगी पतिसाह ।

पच्छांही वादर प्रबल<sup>(२)</sup>

भगो राह विराह<sup>(३)</sup> ॥ ११ ॥

बरन बरन तहां<sup>(४)</sup> देषियै

घंटारव गजराज ।

संनाहां सनाह रजि<sup>(५)</sup>

पप्पर सप्पर राज ॥ १२ ॥

भई<sup>(६)</sup> हलोहल सेन सब

पांन व्यूह वर घेत<sup>(७)</sup> ।

लष्य एक भर अंग<sup>(८)</sup> मै<sup>(९)</sup>

छच धरगौ सिर जैत ॥ १३ ॥

हुअ टामंक सु<sup>(१०)</sup> दिसि विदिसि

हुअ संनाह संनाह ।

हुअ<sup>(११)</sup> हलोहल सुप्भ<sup>(१२)</sup> रन

दोज<sup>(१३)</sup> दीन इक राह ॥ १४ ॥

(१) C दोहा । (२) B A प्रबलं । (३) C विराह । (४) A तहां, read *tahā*. (५) C सजि । (६) B भई c. m. (७) A घेत । (८) C अंग । (९) B मै, C मै । (१०) C सो । (११) C ऊई । (१२) A सुभ । (१३) read *dōū*, m. c. ; C दोउ ।

छंद चोटक ॥

हुअ सह सु सहह नह भरं ।  
 घन घेरिक कीय सु फौज वरं ॥  
 लष लष्य मिले दल संमिलयं ।  
 भर<sup>(१)</sup> भहव बाहल संमिलयं<sup>(२)</sup> ॥  
 सु अगे हयनारि अपार सजं ।  
 तिन देषत काइर<sup>(३)</sup> दूरि भजं ॥  
 तिन पिठु<sup>(४)</sup> हजार उमत्त चले ।  
 छह रिक्त अरंत करी तिहले<sup>(५)</sup> ॥  
 तिन पिठुह<sup>(६)</sup> फौज गहव्वरयं<sup>(७)</sup> ।  
 धरि गोरिय मुठु<sup>(८)</sup> करं धरियं ॥  
 कमनेत अभूल सु लष्य<sup>(९)</sup> लियं ।  
<sup>(१०)</sup>तिन मध्य ततारह छच दियं ॥  
 लष दोइ<sup>(११)</sup> गुरज्ज सु गष्यरियं<sup>(१२)</sup> ।  
 पुरसांन दियं दल पष्यरियं ॥  
 बलकी<sup>(१३)</sup> उमराव सु सत्त सयं ।  
 निसुरत्तह लष्य हुकंम<sup>(१४)</sup> भयं ॥

(१) C B भर । (२) C संभलयं । (३) C काषर । (४) C पिठ । (५) C तहले । (६) C पिठ । (७) C गहवरयं । (८) C मुठ । (९) C लष्य ।  
 (१०) C om. this line. (११) C दोष । (१२) C गव्वरियं । (१३) T बलकी । (१४) A ऊकं, B ऊकम् ।

पुरसांन तनं दल उप्पटयं ।  
 मनुं<sup>(१)</sup> साइर<sup>(२)</sup> सत्त उलट्ट भयं ॥  
 जल वानिय पानिय अइ सरं ।  
<sup>(३)</sup>लोहानिय पांनिय घेत घरं ॥  
 हबसी उजबक्क हमीर भरं ।  
 कल वानिय रुम्मिय अग्ग धरं ॥  
 सर वानि अैराकि<sup>(४)</sup> मुगल्ल कती ।  
 बहु जाति अनेक अनेक भती ॥ १५ ॥

कवित्त<sup>(५)</sup> ॥

फौज वंधि सुरतांन  
 मुष्प अग्गे<sup>(६)</sup> तत्तारिय ।  
 मधि नायक सुरतांन  
 नील पुरसांन सु भारिय ॥  
 मेती निसुरति<sup>(७)</sup> षांन  
 लाल हबसी कौलंजर ।  
 पांचि<sup>(८)</sup> पीठ<sup>(९)</sup> रुस्तंम<sup>(१०)</sup>  
 पना बहु भंति अवर नर ॥

(१) read *manū* m. c., C मनो । (२) C सायर । (३) C लोहानं  
 पठाविय । (४) read *aīrāki* m. c., B अराकि । (५) C कप्पय । (६) A  
 A अग्गे, C अगौ । (७) C निसुरत । (८) A C पाची । (९) B पीठि ।  
 (१०) C रुस्तंम ।

उत्तरिय नहि<sup>(१)</sup> गोरीस<sup>(२)</sup> पहुं<sup>(३)</sup>

बज्जा दस दिसि<sup>(४)</sup> बज्जिया ।

मांनें कि भइ उल्लटि मही

साइर<sup>(५)</sup> अंब<sup>(६)</sup> गरज्जिया ॥ १६ ॥

दूहा<sup>(७)</sup> ॥

दस्ती पति फौजह रची

दियौ जैत सिर छत्र<sup>(८)</sup> ।

चामंडरा<sup>(९)</sup> अगौ भयौ

मनें सु गिरवर गत्त ॥ १७ ॥

कवित्त<sup>(१०)</sup> ॥

फौज रची सामंत

गरुड ब्यूहं रची गड्ढिय<sup>(११)</sup> ।

(१२) पंष भाग प्रथिराज

चंच चावंड सु गड्डिय ॥

गाबरि अत्ताताइ<sup>(१३)</sup>

पाइ<sup>(१४)</sup> गोइंद<sup>(१५)</sup> सु ठट्टिय<sup>(१६)</sup> ।

(१) B om. नहि । (२) A गोस । (३) C पऊ c. m. (४) C दिस ।  
 (५) C सायर । (६) C अम्ब । (७) C दोहा । (८) C छत्र । (९) T  
 चामंडराय । (१०) C कवित्त ॥ (११) B गडिय, C ठट्टिय or ढ० । (१२) C  
 पष भग प्रथीराज । (१३) C अत्ताताय । (१४) C पाय । (१५) C गोइंद ।  
 (१६) B ठट्टिय ।

पुंछ कन्ह चेहांन

पेट पंमार परद्विय<sup>(१)</sup> ॥

सुंडाल काल अगों धरे<sup>(२)</sup>

कठट्ठे<sup>(३)</sup> दोई<sup>(४)</sup> कलह किय ।

चालंत बान गौरै<sup>(५)</sup> प्रवल

मांनहु<sup>(६)</sup> अंधकि<sup>(७)</sup> मार<sup>(८)</sup> दिय ॥ १८ ॥

(९) तत्तारह उप्परह

चित्त चावंड चलायौ ।

(१०) दुहं फौज अगंज

दुह भुज<sup>(११)</sup> भार न लायौ<sup>(१२)</sup> ॥

(१३) मीर वांन वरषंत<sup>(१४)</sup>

धार धारा हर लगौ<sup>(१५)</sup> ।

बाही<sup>(१६)</sup> चामड<sup>(१७)</sup> राइ<sup>(१८)</sup>

भूमि तत्तारह भगौ ॥

(१) A परद्वीय, C परद्विय । (२) B घरे । (३) C करठठे । (४) C दोई ।  
 (५) C गौरी । (६) C मनहुं । (७) B अंधक, C •किम्मार । (८) A मारि ।  
 (९) C prefixes ॥ दप्परह ॥ (१०) C दुहं सु । (११) T भुत । (१२) So  
 A ; B C भार भलायौ ; T भारह भगौ । (१३) The following four  
 lines are omitted in T. (१४) A B वरषंतं o. m., C वरषंत । (१५)  
 A लगौ, o. r. (१६) C बांही । (१७) C चावड, A B चामंड *chāmāḍ*.  
 (१८) C राव ।

उत्तरे मीर<sup>(१)</sup> सें<sup>(२)</sup> पंच दोइ<sup>(३)</sup>  
 दाहिमै किन्नौ दहन ।  
 (४) पहिलै जु झूझु<sup>(५)</sup> दिन पहिल कै  
 मच्यौ<sup>(६)</sup> जुझ जानै महन ॥ १६ ॥  
 (७) भूमि परगौ<sup>(८)</sup> तत्तार  
 मारि कमनेत प्रहारे<sup>(९)</sup> ।  
 एक घाउ<sup>(१०)</sup> दोइ<sup>(११)</sup> टूक<sup>(१२)</sup>  
 परे धारन मुहु<sup>(१३)</sup> धारे ॥  
 पुर वज्जे पुरतार  
 चमकि चामंड चलायौ ।  
 भरे<sup>(१४)</sup> बथ्य सिर हथ्य  
 एक बहु लष्यन धायौ ॥  
 जब परै<sup>(१५)</sup> वूंद तब बीर हुअ  
 सत्त घरी साहस धरै ।  
 तिन मार कटक<sup>(१६)</sup> चिविधी घडा  
 एक एक पग अनुसरै<sup>(१७)</sup> ॥ २० ॥

(१) C भीर । (२) C सैं । (३) read *doi*, m. o. ; B दोई, C दोय ।  
 (४) C पहिलयौ सु भुंड etc. (५) A जूझू, B T जूझू । (६) C मंच्यौ ।  
 (७) C prefixes ॥ बथ्य ॥ (८) A परा । (९) T प्रहारे । (१०) B C  
 घाव । (११) C दोय, read *doi*. (१२) C टंक । (१३) C मुहु । (१४) B  
 C T भरै । (१५) C परें । (१६) C मारि कटक, A माक मध । (१७) C  
 अनुसरि परै ।



(१) षांन षांन आषूद<sup>(२)</sup>

अद्व<sup>(३)</sup> सहसं बहु गष्वर ।

परिय<sup>(४)</sup> पंति अवनेस<sup>(५)</sup>

पारि बहु पष्वर गष्वर<sup>(६)</sup> ॥

ययौ<sup>(७)</sup> नेज चावंड<sup>(८)</sup>

बीर देा सहस लभरै र ।

हस्ति एक विन दंत

तमह<sup>(९)</sup> तिन मथ्यौ<sup>(१०)</sup> सहस कर ॥

दाहिम्म राव मुरब्धौ<sup>(११)</sup> परगौ

दैरगौ जैत महाबलिय<sup>(१२)</sup> ।

मानेां कि अग<sup>(१३)</sup> जज्जर वही

कलि मझे<sup>(१४)</sup> रिन वटक<sup>(१५)</sup> लिय ॥ २१ ॥

(१६) धपी सेन<sup>(१७)</sup> सुरतांन

मुट्टि<sup>(१८)</sup> छुट्टी चावदिसि<sup>(१९)</sup> ।

मनेां किपाट उघरगौ

कूह फुट्टिय दिसि विदिसि<sup>(२०)</sup> ॥

(१) C pref. ॥ कप्यय ॥ (२) C अषूड or ०द?; pers. آخوند ॥ (३) C अद्व । (४) C परि । (५) A अवने । (६) B om. गष्वर, C repeats it. (७) C हयौ । (८) A चामंड । (९) C तमसि । (१०) B मथ्यौ, C मथ्यौ । (११) C मुरब्धौ । (१२) C महाब० । (१३) C अंग । (१४) C मझे । (१५) C विकट, T चटक । (१६) C pref. ॥ कप्यय ॥ (१७) C मुहि । (१८) C मुट्टि । (१९) C चावदिस । (२०) C विदिस ।

मार मार मुष किन्न<sup>(१)</sup>  
 लिन्न<sup>(२)</sup> चावंड उणारे ।  
 परे सेन सुरतांन  
 जांम इक्कह<sup>(३)</sup> परिधारे ॥  
 गल बय्य घत्त<sup>(४)</sup> गाढौ<sup>(५)</sup> ग्रह्यौ  
 जांनि सनेही भिंटयौ<sup>(६)</sup> ।  
 चावंड राइ<sup>(७)</sup> करिवर कहर  
 गोरी दल बल छुट्टय्यौ<sup>(८)</sup> ॥ २२ ॥  
 (९) जैतराइ<sup>(१०)</sup> जड धार  
 लियौ कर दंत मुष्प कर ।  
 परे बज्ज सिर धार  
 मनें सेना सर<sup>(११)</sup> उप्पर ॥  
 घुरसानी बंगाल  
 मनहु<sup>(१२)</sup> दंडूक<sup>(१३)</sup> रमावै ।  
 भरै पच जोगिनी<sup>(१४)</sup>  
 डक्क नारद बजावै<sup>(१५)</sup> ॥

(१) C कित्त, A किन्न । (२) C om. (३) A एक्कह । (४) C घत्ति । (५)  
 C याटैग ? (६) C भिंटियौ । (७) C राय । (८) C कुट्टियौ । (९) C  
 pref. ॥ कय्यै ॥ (१०) C ०राय । (११) C सिर । (१२) A मनड्ड । (१३)  
 A दंडूक, C डंडु । (१४) C जोगनी । (१५) नारद बजावै ।

अपछरा गीत गावतइला<sup>(१)</sup>  
 तुंवर तंत<sup>(२)</sup> बजावही ।  
 सुरतांन सेन दिस्सेस वर  
 मग्ग मग्ग जस गावही ॥ २३ ॥  
<sup>(३)</sup>सिर धूनत पतिसाह<sup>(४)</sup>  
 धाह<sup>(५)</sup> सुनि सेना सथिय ।  
 लुथ्थि लुथ्थि<sup>(६)</sup> मुहधार<sup>(७)</sup>  
 परे बथ्थन सों बथ्थिय<sup>(८)</sup> ॥  
 जम<sup>(९)</sup> सों जम<sup>(९)</sup> आहुरै<sup>(१०)</sup>  
 खर जुट्टै<sup>(११)</sup> दोइ<sup>(१२)</sup> घुट्टै<sup>(१३)</sup> ।  
 नई<sup>(१४)</sup> गंठि<sup>(१५)</sup> तन जाग  
 खर सुंडावलि घुट्टै<sup>(१६)</sup> ॥  
 पुरसांन जैत अब्बू धनिय<sup>(१७)</sup>  
 धार धार मुहु<sup>(१८)</sup> कट्टिया<sup>(१९)</sup> ।  
 त्रैसौ न जुइ दिष्पौ<sup>(२०)</sup> सुन्यौ<sup>(२१)</sup>  
 दारुन मेछ दबट्टिया<sup>(२२)</sup> ॥ २४ ॥

(१) A ०इली । (२) T तत, A तांत । (३) C pref. ॥ छप्पै ॥ (४) C पतिसाहि । (५) B साह । (६) C लोथि लोथि । (७) C मुखधार । (८) B T बथ्थि । (९) C जम । (१०) C आहुरे । (११) C जुट्टे । (१२) read *dōi*, m. c. ; C दोय । (१३) C घुट्टे । (१४) B नई c. m. (१५) A गंठि । (१६) A घुट्टे, C घुट्टे । (१७) C धनी । (१८) C मुह । (१९) A कट्टिया । (२०) B देखौ । (२१) C सुनो । (२२) A दबट्टिया ।

(१) मनु<sup>(२)</sup> द्वादस स्वरज्ज<sup>(३)</sup>

हय्य चंद्रमा महासर<sup>(४)</sup> ।

जिन उप्पर षल मलै

ताहि धर गोरिय सुभर<sup>(५)</sup> ॥

कटक कूह<sup>(६)</sup> किलकार<sup>(७)</sup>

सार परमार वजायै ।

भिरि<sup>(८)</sup> भंज्यौ सुरतांन

एक एकह मुष धायै ॥

सिर सार धार बुयौ<sup>(९)</sup> प्रहर

तव दैरगौ<sup>(१०)</sup> पज्जून भर ।

निसुरत्ति<sup>(११)</sup> षांन लप्पह बली

लप्प एक पाइल<sup>(१२)</sup> सुभर ॥ २५ ॥

छंद भुजंगी ॥

मचे ह्क ह्क<sup>(१३)</sup> वहै सार धारं<sup>(१४)</sup> ।

चमकै चमकै<sup>(१५)</sup> करारं करारं<sup>(१६)</sup> ॥

(१) C pref. ॥ हय्य ॥ (२) A B मनुं, C मानो । (३) A स्वरज्जा, C स्वरिज्ज । (४) C महासर । (५) B सुभर, C सुभर । (६) B कूट । (७) A किलकार । (८) C फिरि । (९) A बुयौ, C ड्यौ । (१०) C वैरैगौ । (११) C निसुरत्ति । (१२) C पायल । (१३) C कूह कूहं । (१४) C सारं । (१५) B चमकै bis; C चमकै bis. (१६) C सुधारं ।

भभकै भभकै<sup>(१)</sup> वहै रत्त धारं ।  
 सनकै<sup>(२)</sup> सनकै<sup>(३)</sup> वहै वान भारं ॥  
 हवकै हवकै<sup>(४)</sup> वहै सेल भेलं<sup>(५)</sup> ।  
<sup>(६)</sup>कुके<sup>(७)</sup> कूक फूटी<sup>(८)</sup> सुरत्तांन ठानं<sup>(९)</sup> ।  
 बकी जोगमाया सुरं अप्प थानं ॥  
 बहै चट्ट पट्टं उघट्टं उलट्टं ।  
 कुलट्टा<sup>(१०)</sup> धरै<sup>(११)</sup> अप्प अप्पं उहट्टं ॥  
<sup>(१२)</sup>दडकं वजै सथ्थ मथ्थं सुदट्टं<sup>(१३)</sup> ।  
 कडकं वजै<sup>(१४)</sup> सेन सेना सुघट्टं ॥  
 वहै हथ्थ परमार सिरदार<sup>(१५)</sup> सारं ।  
 परे सेन गोरी वहै<sup>(१६)</sup> रत्त धारं<sup>(१७)</sup> ॥  
 परगौ षानं<sup>(१८)</sup> निसुरत्ति<sup>(१९)</sup> सेना सहित्तं ।  
 हुचौ<sup>(२०)</sup> खर मथ्थानं दिखेस<sup>(२१)</sup> जित्तं<sup>(२२)</sup> ॥२६॥<sup>(२३)</sup>

(१) C भभकै bis. (२) B सनकै, T सनकै । (३) So C T; B सनकै;  
 A सनकै bis. (४) A B T हवकै bis, C हवकै bis. (५) A भलं । (६)  
 here C adds धमकै धमकै घरा चेल भेलं ॥ (७) C कुकै, A कुके । (८) C  
 फूटी । (९) B C ठानं । (१०) B कुलट्टा, C कुलट्टय । (११) C धरै ।  
 (१२) C उदकं वजै सुमथ्थं सुदट्टं । (१३) B सुदट्टं । (१४) C वजै । (१५)  
 C repeats सिर । (१६) C वहै । (१७) C धारं । (१८) C षानि । (१९)  
 C निसुरत्ति । (२०) A T हचौ, B हचौ, c. m. (२१) B दिखेस । (२२)  
 C जित्तं । (२३) A ॥ २६ ॥

कवित्त<sup>(१)</sup> ॥

कालंजर इक लष्य

सार सिंधुरह गुडावै ।

मार मार मुष चवै

सिंघ सिंघां<sup>(२)</sup> मुष धावै ॥

दौरि कंहर नर नाह<sup>(३)</sup>

पटो<sup>(४)</sup> छुट्टिय अंघनि<sup>(५)</sup> पर ।

हथ्य लई करिवार

रुंड माला किन्निय<sup>(६)</sup> हर ॥

बिहु बाह लष्य लोहै<sup>(७)</sup> परिय<sup>(८)</sup>

जांनि करिब्वर<sup>(९)</sup> दाह किय<sup>(१०)</sup> ।

उच्छारि पारि धर<sup>(११)</sup> उप्परै<sup>(१२)</sup>

कलह कियै<sup>(१३)</sup> कि<sup>(१४)</sup> उद्यांन किय ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥

छुटो<sup>(१५)</sup> अंघि पट्टी मनें उगि सूरं ।

गिरे<sup>(१६)</sup> काहरं सूर बडे सनूरं<sup>(१७)</sup> ॥

लियं हथ्य करिवार भंजै कपारं ।

(१) C इष्य ॥ (२) C सिंघां o. m. (३) U ताह । (४) A पट्टी o. m.  
(५) C अंघनि । (६) A B T किन्निय o. m., C किन्निय । (७) C लोहें ।  
(८) B परियै । (९) C करिवर, B T करिब्वर । (१०) C दाहि किय ।  
(११) T धर । (१२) C उप्परै । (१३) A कलह कियै । (१४) U om. कि ।  
(१५) B T छुट्टी, C छुट्टी, o. m. (१६) C गिरै । (१७) C समूरं ।

पियैं जागिनी<sup>(१)</sup> पत्र कीयै<sup>(२)</sup> डकारं ॥  
 बहै अच्छरी<sup>(३)</sup> रथ्य अनेक सथ्यं ।  
 करं खर संह्रां<sup>(४)</sup> लियै घल्लि<sup>(५)</sup> बथ्यं ॥  
 करै<sup>(६)</sup> कज्ज सांई समप्यै सुघट्टं<sup>(७)</sup> ।  
 लियं<sup>(८)</sup> कंहु गोरीतनं मारि थट्टं ॥ २८ ॥

कवित्त ॥

कालंजर जब परिय  
 भगी सेना पतिसाहिय ।  
 पंच फौज एकट्ट  
 कंहु करवारि<sup>(९)</sup> संह्राहिय<sup>(१०)</sup> ॥  
 धर पारे बहु मीर  
 सथ्य जब<sup>(११)</sup> सेना भगिय ।  
 गर<sup>(१२)</sup> घत्ती कंमानं<sup>(१३)</sup>  
 लियौ गोरी<sup>(१४)</sup> उच्छंगिय<sup>(१५)</sup> ॥  
 उत्तरे<sup>(१६)</sup> मीर पच्छे<sup>(१७)</sup> फिरे  
 हाइ हाइ<sup>(१८)</sup> मुष हुंकरयौ<sup>(१९)</sup> ।

(१) C जागनी । (२) A C कीयौ, B दियै । (३) C अच्छरि । (४) B C संह्रा । (५) B घट्टि । (६) B करे । (७) A सुघट्टं । (८) B लियै ।  
 (९) C करिवारि । (१०) C संह्राहिय । (११) B सब । (१२) C घर ।  
 (१३) A कमानं c. m., C कामान । (१४) C गौरी । (१५) C उद्वंगिय ।  
 (१६) C उत्तरें । (१७) C पच्छै । (१८) C हाय हाय । (१९) C मुष  
 चकरैग, T om. चंकरैग पञ्जून भेलि मुख ।

पञ्जून<sup>(१)</sup> बेलि<sup>(२)</sup> मुष मीर कौ<sup>(३)</sup>  
कन्ह लेइ<sup>(४)</sup> गोरी बरगौ ॥ २६ ॥

(५) जनु उद्यान हलाइ<sup>(६)</sup>

पवन चलै<sup>(७)</sup> ज्यां वांधै<sup>(८)</sup> ।

त्यों पञ्जून<sup>(९)</sup> नरिंद<sup>(१०)</sup>

मीर जमदट्टै<sup>(११)</sup> साधै ॥

परे मीर सें<sup>(१२)</sup> सत्त

बिए रन छंडि बभज्जै<sup>(१३)</sup> ।

चामर छत्र रषत्त

तषत लुट्टै<sup>(१४)</sup> ज्यों सज्जै<sup>(१५)</sup> ॥

बन्हा नरिंद<sup>(१६)</sup> पतिसाह लै

गयौ थांन अप्पन बलिय ।

पंम्मार सिंघ लग्यौ सु पय

चाव भाव कीरति चलिय ॥ ३० ॥

(१७) रहै कन्ह अजमेर

(१८) लिये<sup>(१९)</sup> पतिसाह नरिंद<sup>(२०)</sup> हय ।

(१) B पञ्जून । (२) C भेल । (३) C को । (४) C लेय । (५) C adds ॥ हयै ॥ (६) C हलाय । (७) C B चलै, T चले । (८) C वाधै । (९) A B T पञ्जून c. m. (१०) T नरिंद । (११) A T जमदट्टै, B जमदट्टै c. m., C जमदट्टै । (१२) C सै । (१३) B T बभज्जै । (१४) C लुट्टै । (१५) B सज्जै । (१६) C कन्ह रिंद । (१७) C adds ॥ हयै ॥ (१८) C reads गयौ घडंथांन जैत लिय, see the sixth line of this stanza. (१९) T लियै । (२०) read *narid*, m. c.



धरि अगौ<sup>(१)</sup> गोरी नरिंद<sup>(२)</sup>  
 दैरि प्रथिराज<sup>(३)</sup> सुद्ध<sup>(४)</sup> दिय ॥  
 गयौ अप्प अजमेर  
<sup>(५)</sup>तहां चहुवांन जैत लिह ।  
 दिन किजै महिमांन  
 पास ठट्टा<sup>(६)</sup> रहै वृद्ध<sup>(७)</sup> ॥  
 बैठारि तषत<sup>(८)</sup> सिर<sup>(९)</sup> छत्र दिय  
 सभा विराजै सुपहु<sup>(१०)</sup> भर ।  
 सिर फेरि घैर दिज्जै दुनी<sup>(११)</sup>  
 यों रष्यै<sup>(१२)</sup> पतिसाह दर ॥ ३१ ॥  
 एक<sup>(१३)</sup> लष्य बाजिच<sup>(१४)</sup>  
 सहस तीनह मयमत्तह ।  
 लष्य एक तोषार<sup>(१५)</sup>  
 तेज औराकी तत्तह ॥  
 आरावा हथिनार<sup>(१६)</sup>  
 सत्त सै<sup>(१७)</sup> सत्त सु भारिय ।

(१) C चागें, T चमो । (२) read *narid* m. c. (३) C इथीराज । (४)  
 C सुद्धि । (५) C reads लिखै पतिसाह नरिंद, see the second line  
 of this stanza. (६) A डट्टा । (७) C वृद्ध । (८) C तषत । (९) C  
 सिर । (१०) A B T सुपहुं *supahū*. (११) C दुनिय । (१२) B रष्यै ।  
 (१३) C एक । (१४) B बाजिच । (१५) C तुषार । (१६) A हथिनीर,  
 T B हथिनार c. m., C हथनी । (१७) C सै ।

चामर छत्र रघत्त

साहि<sup>(१)</sup> लिन्निय<sup>(२)</sup> धर<sup>(३)</sup> सारिय ॥

सामंत खर बहु विधि<sup>(४)</sup> भरिग

पट्टे<sup>(५)</sup> घाव सु बंधियै<sup>(६)</sup> ।

रिन<sup>(७)</sup> जीत सोधि<sup>(८)</sup> संभरि धनी

बजे<sup>(९)</sup> अनंत सु वज्जियै<sup>(१०)</sup> ॥ ३२ ॥

करिव<sup>(११)</sup> सभा प्रथिराज<sup>(१२)</sup>

खर सामंत बुलार<sup>(१३)</sup> ।

गोयंद<sup>(१४)</sup> निडर<sup>(१५)</sup> सलष<sup>(१६)</sup>

कन्ह पतिसाह<sup>(१७)</sup> पठार<sup>(१८)</sup> ॥

करौ<sup>(१९)</sup> दंड सिर<sup>(२०)</sup> छत्र

राम<sup>(२१)</sup> प्रोहित<sup>(२२)</sup> पुंडीरह ।

रा पज्जन<sup>(२३)</sup> प्रसंग

राव हाहुलि<sup>(२४)</sup> हंमीरह<sup>(२५)</sup> ॥

---

(१) C साह । (२) C लीनी । (३) C रिध । (४) C विध । (५) B T पटे o. m. (६) C बंधियै । (७) T रिज, C रन जीति । (८) C सोधि । (९) A C बज्जै । (१०) A वज्जियै । (११) C रचिय । (१२) C प्रथीराज । (१३) B बुलार o. m., C बुलार्यै, T बुलार । (१४) B गोइंद । (१५) B T मिडुर । (१६) C सलष । (१७) C पतिसाह । (१८) C पठार्यै । (१९) T करौ । (२०) C सिर । (२१) A B राम । (२२) प्रेहित । (२३) T B पज्जन o. m. (२४) C हाहुलि । (२५) C ऊमीरह ।

इतने<sup>(१)</sup> मत्त मज्झह<sup>(२)</sup> मिले  
 हम मारै<sup>(३)</sup> छोरै<sup>(४)</sup> न अव ।  
 ह्वै<sup>(५)</sup> न हास्य<sup>(६)</sup> अब कै<sup>(७)</sup> हमै<sup>(८)</sup>  
 फिरन<sup>(९)</sup> आइहै इह<sup>(१०)</sup> सु कव ॥ ३३ ॥  
 (११) दिये देस<sup>(१२)</sup> पंधार  
 दिये<sup>(१३)</sup> पछिवांनं सारं ।  
 कासमीर क विलास  
 दिये<sup>(१४)</sup> धर टिला<sup>(१५)</sup> पहारं ॥  
 गज्जन रष्ये<sup>(१६)</sup> देस  
 बियौ<sup>(१७)</sup> समपै<sup>(१८)</sup> प्रथिराजह<sup>(१९)</sup> ।  
 ना तरु<sup>(२०)</sup> छुट्टै<sup>(२१)</sup> नांहि  
 करै<sup>(२२)</sup> हम उप्पर<sup>(२३)</sup> काजह ॥  
 बालयो<sup>(२४)</sup> कन्ह नरनाह सुनि  
 अव कै<sup>(२५)</sup> मारै<sup>(२६)</sup> को इनह<sup>(२७)</sup> ।

(१) B T इतने । (२) B मज्झह, C मंडह ; A T मझह o. m. (३) C मारें । (४) C छंडै । (५) C कैहै । (६) C हास । (७) A B C कै । (८) B T हमें । (९) C फेरण । (१०) C यह । (११) C adds ॥ वृष्य ॥ (१२) C दिये देस । (१३) C B दिये । (१४) C T दिये । (१५) B टिला । (१६) B C रष्ये । (१७) A B T बियौ o. m., C बियो । (१८) A समपै, C समपै । (१९) C प्रथीराजह । (२०) C तर । (२१) C छूटे । (२२) B करै । (२३) C उप्पर । (२४) C वृष्यौ । (२५) C कै । (२६) C मारौ । (२७) C इनहि ।

पंजाव दियै छुट्टै सु अब

इह<sup>(१)</sup> हमीर<sup>(२)</sup> दिज्जै<sup>(३)</sup> हमहि ॥ ३४ ॥

(४) तव बुल्यौ<sup>(५)</sup> प्रथिराज<sup>(६)</sup>

कहै काका त्यों किज्जय ।

जेता रंजक<sup>(७)</sup> होइ<sup>(८)</sup>

तिता<sup>(९)</sup> लाहा<sup>(१०)</sup> भरि<sup>(११)</sup> लिज्जय ॥

जग्य<sup>(१२)</sup> कियौ पंडवन

हेम काचौ तुम<sup>(१३)</sup> आन्यौ<sup>(१४)</sup> ।

त्यों लभौ पतिसाहि<sup>(१५)</sup>

लख्य लोहां<sup>(१६)</sup> हम मान्यौ<sup>(१७)</sup> ॥

करि दंड<sup>(१८)</sup> कंन्ह पतिसाह कौ

लोहानौ<sup>(१९)</sup> सथ्ये<sup>(२०)</sup> दियौ ।

असवार<sup>(२१)</sup> सहस सथ्य<sup>(२२)</sup> चले<sup>(२३)</sup>

कर सिर कंन्ह इतौ कियौ ॥ ३५ ॥

(२४) करि जुहार तब कंन्ह

गयौ अजमेर दुरगाह ।

(१) C इहि । (२) C हमीरे । (३) C दीजै । (४) C adds ॥ वप्यय ॥  
 (५) C बुल्यौ । (६) C प्रथीराज । (७) A रजक । (८) C होय । (९) C  
 जेता । (१०) B लादा, C नाखा । (११) C भर । (१२) B जिग्य । (१३)  
 C उन । (१४) C आन्यौ । (१५) C पतिसाह । (१६) C लोहा । (१७) C  
 आणा । (१८) C दंड । (१९) A लोहानौ C लोहानौ । (२०) C सथ्ये ।  
 (२१) A सवार । (२२) C सथ्ये । (२३) C चले । (२४) C adds ॥ वप्यय ॥

तज्यो<sup>(१)</sup> कंन्ह पतिसाह

वत्त सब जंपी<sup>(२)</sup> अण्णह ॥

च्चै<sup>(३)</sup> पुसाल गजनेस

(४)दई<sup>(५)</sup> इक लाल सहित<sup>(६)</sup> मनि ।

कंन्ह खेइ<sup>(७)</sup> पतिसाह<sup>(८)</sup>

गयौ<sup>(९)</sup> दिख्खी सु तत्त छन ॥

मनुहारि करिय सामंत सब

तेग दई दिख्खेस वर ।

देा अश्व करी<sup>(१०)</sup> देाइ देय<sup>(११)</sup> करि

साहि<sup>(१२)</sup> चलायौ<sup>(१३)</sup> अण्ण घर ॥ ३६ ॥

(१४)करि सलांम गजनेस

करिय नवनिह<sup>(१५)</sup> दिख्खेसर<sup>(१६)</sup> ।

तम<sup>(१७)</sup> रषियो<sup>(१८)</sup> हम प्रीति

वर षमन सत्तह केसर ॥

पेसंगी धर सीम

(१९)बीच पौरांन कुरांन ।

---

(१) T तज्यो, C तज्यौ । (२) C जंपी । (३) C कै । (४) C reads दर, कम्माल लाल मनि । (५) B दई o. m. (६) A सहित । (७) B खेइ o. m., C लेय । (८) A पतिसाह । (९) C गयो । (१०) T क om. री, C करि । (११) B देइ । (१२) C साह । (१३) C चलायौ । (१४) C adds ॥ अण्ण ॥ (१५) C नववेह । (१६) C दिख्खेसर । (१७) C तुम । (१८) C रषियो । (१९) C reads सबी कौरांन पुरांन ।

जो तक्कौ<sup>(१)</sup> तुम अबै<sup>(२)</sup>  
 (३)तवै तुम कटियो<sup>(४)</sup> प्रांन<sup>(५)</sup> ॥  
 उत्तरो<sup>(६)</sup> अटक तौ<sup>(७)</sup> मै<sup>(८)</sup> अवर  
 मुसलमांन नांही धरो<sup>(९)</sup> ।  
 तुम हम सु प्रीति चलिहै<sup>(१०)</sup> बहुत<sup>(११)</sup>  
 हन<sup>(१२)</sup> अबै<sup>(१३)</sup> औसी करो<sup>(१४)</sup> ॥ ३७ ॥  
 (१५)सु पहु<sup>(१६)</sup> चलयौ सुरतांन  
 दियौ लोहानौ<sup>(१७)</sup> सथ्यै<sup>(१८)</sup> ।  
 (१९)दूत चारि अनुसार  
 काल छुग्यौ सें हथ्यै<sup>(२०)</sup> ॥  
 गयौ बीस म्हेलान<sup>(२१)</sup>  
 अटक उत्तरि इन<sup>(२२)</sup> पारं ।  
 सो<sup>(२३)</sup> वन<sup>(२४)</sup> पथ मैलान<sup>(२५)</sup>  
 सहस संन्हें<sup>(२६)</sup> असवारं<sup>(२७)</sup> ॥

(१) A तक्कौ, B तक्को । (२) C अबै । (३) A T add तौ, B तौ, c. m.  
 (४) A कटियो, C कटियौ । (५) A प्रांन । (६) C उत्तरौ । (७) T तौ ।  
 (८) B T में, C मै । (९) C धरौ । (१०) T चलिहै, C चलहै । (११) A  
 बहुत । (१२) B हन, C होन । (१३) B अबै । (१४) B करो, C करौ ।  
 (१५) C adds ॥ हथ्यै ॥ (१६) C पहु । (१७) A लोहानौ । (१८) A B  
 सथ्यै । (१९) C reads सहस संग असवार । (२०) C छुग्यौ सें हथ्यै । (२१)  
 A नौलान, C मैलान । (२२) C अपारं । (२३) T सो । (२४) T वन ।  
 (२५) T मैलानं c. m. (२६) B C सन्हें । (२७) C असवारं ।

निसुरति सुतन दरिया सुतन

आइ<sup>(१)</sup> कियौ सलांम<sup>(२)</sup> तहां<sup>(३)</sup> ।

आजांनवाह महिमांन किय<sup>(४)</sup>

चल्यौ अप्प गज्जन रहां ॥ ३८ ॥

रय<sup>(५)</sup> सल<sup>(६)</sup> हरी नवट्ट

सहस अठ्ठारह<sup>(७)</sup> सथ्य ।

हेरौ<sup>(८)</sup> करि पतिसाह

पुले<sup>(९)</sup> लगा<sup>(१०)</sup> इन पथ्ये<sup>(११)</sup> ॥

<sup>(१२)</sup> दूत चार<sup>(१३)</sup> अनुसार<sup>(१४)</sup>

कटक देख्यौ<sup>(१५)</sup> असवारह ।

कछ्यौ चरन सब सथ्य

सहस<sup>(१६)</sup> दोइ<sup>(१७)</sup> सेना सारह ॥

तिन वार<sup>(१८)</sup> वज्जि चंबाल बहु

सिलह सज्जि सिरदार सह ।

उत्तरैया कटक छोरिय अटक

नहि हुअ्यौ<sup>(१९)</sup> उगंत<sup>(२०)</sup> पहु ॥ ३९ ॥

(१) C आइ। (२) C सलांम। (३) C तहां। (४) B कियं। (५) C adds ॥ बय्य ॥ (६) C सल। (७) C अठ्ठारह c. m. (८) B T हेरौ, C हेरो। (९) T पुजे। (१०) A C लगा c. m. (११) B T पथ्ये, C पथ्ये। (१२) before this line C repeats: हेरौ करि पतिसाह। पुले लगा इन पथ्ये। (१३) C चारि। (१४) C अनुसार। (१५) C देखौ। (१६) B सह om. स। (१७) C दोय, read dōi. (१८) C वार। (१९) T दूखौ, A B हूखौ, C ऊखौ। (२०) C उगंत।



गाथा ॥

बज्जी पुट्टि<sup>(१)</sup> चंवाल  
हथिय<sup>(२)</sup> नेजं सु उप्परं फहरं ।  
जांनि समुह उहालं  
किय गजनेस<sup>(३)</sup> हुकमयं<sup>(४)</sup> मीरं<sup>(५)</sup> ॥ ४० ॥

कवित्त<sup>(६)</sup> ॥

कह्यौ<sup>(७)</sup> साहि<sup>(८)</sup> लोहान  
कोन<sup>(९)</sup> बज्जा बज्जाए<sup>(१०)</sup> ।  
दौरि दूत तिन वेर  
धनी<sup>(११)</sup> पछिवानह<sup>(१२)</sup> धाए ॥  
कूंच कूंच<sup>(१३)</sup> पर<sup>(१४)</sup> कूंच<sup>(१५)</sup>  
कोन<sup>(९)</sup> पछिवान धनी कहि<sup>(१५)</sup> ।  
तब<sup>(१६)</sup> जान्यौ<sup>(१७)</sup> रय सल्ल  
सेन आजान बरौगा<sup>(१८)</sup> सह ॥  
(१९) पतिसाह चलौं<sup>(१९)</sup> पछि रहौं<sup>(२०)</sup>  
सहस डेठ<sup>(२१)</sup> असवार दिय ।

(१) O पुट्टि, T पुट्टि । (२) O हथिय । (३) T गुजनेस । (४) उकुमयं ।  
(५) O मीर । (६) O reads ॥ कव्यै ॥ (७) O कह्यौ । (८) O साहि । (९) O  
कोन । (१०) O बज्जाए । (११) A धनि o. m. (१२) O बछिवानह । (१३)  
A कूंच कूंच । (१४) O पर । (१५) O कह । (१६) O जव । (१७) O  
जान्यौ । (१८) O परौगा । (१९) O reads पतिसाह चलौं उ पकारहः । (२०)  
A B C चलौ । (२१) A रहौं । (२२) O देव ।



बंधेव<sup>(१)</sup> फौज लोहान<sup>(२)</sup> बर

दुहुन फौज टामंक<sup>(३)</sup> किय ॥ ४१ ॥

(४) अरुन किरन पर संत<sup>(५)</sup>

आइ<sup>(६)</sup> पहुच्यौ<sup>(७)</sup> रय सल्लं ।

बज्जै<sup>(८)</sup> वांन विहंग

जांनि जुट्टा दोइ<sup>(९)</sup> मल्लं ॥

संमाही<sup>(१०)</sup> आजान<sup>(११)</sup>

(१२) तेग मानहु हवि दिड्डिय ।

जांनि सिषर<sup>(१३)</sup> मज्झि<sup>(१४)</sup> बीज

कंधरै सल्लह<sup>(१५)</sup> बुड्डिय ॥

लोहान<sup>(१६)</sup> तनी बज्जै लहरि<sup>(१७)</sup>

कोज<sup>(१८)</sup> हल्ले<sup>(१९)</sup> उत्तरै<sup>(२०)</sup> ।

परनाल रुधिर चल्लै प्रबल

एक घाव एकह<sup>(२१)</sup> मरै<sup>(२२)</sup> ॥ ४२ ॥

दूहा<sup>(२३)</sup> ॥

मुह मुह चमकै<sup>(२४)</sup> दामिनी

(१) T बंधेव । (२) C T लोहान । (३) A टामक c. m., T टांमंक । (४) C adds ॥ किय ॥ (५) C पसरंत । (६) C आय । (७) C पड्यौ । (८) T बज्जे । (९) C दोय, read *dōi* m. o. (१०) C संमाहा । (११) C अजान । (१२) C prefixes गेत गमान । (१३) C सिषरि । (१४) B मज्झि, C मडि । (१५) A B T सल्लह c. m. (१६) C लोहान । (१७) C लंहरि । (१८) B कोज c. m. (१९) A हल्ले, C हल्ले । (२०) C उत्तरै । (२१) C एकह । (२२) C मरे । (२३) C दोहा । (२४) C चमकै ।

लोह बज्यौ लोहांन ।

इक उप्पर इक इक्कतर<sup>(१)</sup>

लुथ्ये<sup>(२)</sup> लुथ्य समांन ॥ ४३ ॥

परैग लुथ्य<sup>(३)</sup> रय सल तहां<sup>(४)</sup>

ढुंढि<sup>(५)</sup> घेत लोहांन ।

सुबर साह<sup>(६)</sup> गोरी निभय<sup>(७)</sup>

गयौ सु गज्जन थांन ॥ ४४ ॥

कवित्त<sup>(८)</sup> ॥

तत्तारिय<sup>(९)</sup> पुरसांन

सुतन गोरी पय लगा<sup>(१०)</sup> ।

न्यांछावरि<sup>(११)</sup> करि घेर<sup>(१२)</sup>

बहुत<sup>(१३)</sup> मनसा भय भग्गा ॥

लष्य एक असवार

मिल्यौ<sup>(१४)</sup> गोरी<sup>(१५)</sup> दल पष्यर ।

लष्य भए दरवेस

ओइ पइ<sup>(१६)</sup> लगो गष्यर ॥

(१) A T इक्कतर o. m. (२) C लुथ्यै । (३) C लोथ । (४) C सल  
तह । (५) T ढुंढि, B ढुंढि । (६) C साहि । (७) C निर्भय । (८) C  
॥ इयै ॥ (९) C ततारि om. य । (१०) C लगा । (११) B न्यांछावरि ।  
(१२) C घेर । (१३) T बहुत, A बहुत o. m. (१४) C मिल्यौ । (१५) C  
गोरी । (१६) C आय पय ।

उच्छाह<sup>(१)</sup> भयौ गज्जनद्वला  
 गयौ मज्झि<sup>(२)</sup> गोरी<sup>(३)</sup> धनिय ।  
 दरवार भीर मीरंन घन  
 मिलित<sup>(४)</sup> आइ<sup>(५)</sup> अप<sup>(६)</sup> अप्पनिय<sup>(७)</sup> ॥ ४५ ॥  
 (८) डेरा दिय लौहान  
 करिय मनुहारि रोज दस<sup>(९)</sup> ।  
 करिय सत्त आजांन<sup>(१०)</sup>  
 तुरिय पंचास अप्प बस ॥  
 इह<sup>(११)</sup> दिनौ<sup>(१२)</sup> लोहान  
 वियौ भेज्यौ नृप<sup>(१३)</sup> राजं ।  
 लादे दोइ<sup>(१४)</sup> हजार  
 सत्त सै तोला साजं ॥  
 इक इक<sup>(१५)</sup> तुरी<sup>(१६)</sup> हथ्यी सु इक  
 सामंतन दीनौ सवै<sup>(१७)</sup> ।  
 मुह<sup>(१८)</sup> करिय<sup>(१९)</sup> कित्ति<sup>(२०)</sup> अन्नैक विधि  
 सुवर खर फेरिय जबै ॥ ४६ ॥

(१) B उच्छाह । (२) C मज्झि । (३) C गौरी । (४) B मिलित । (५) C आइ । (६) T अप्प c. m. (७) C अप्पनिय । (८) C adds ॥ डेरा ॥ (९) C दस । (१०) C आजांतं । (११) C यह । (१२) A दिनौ, C दीनौ । (१३) C नृप । (१४) C दोइ । (१५) C इक । (१६) C तुरिय । (१७) A सवै । (१८) A मुह । (१९) A B करिय c. m. (२०) C om.

(१)सीष दर्द<sup>(२)</sup> लोहानं  
 चलयौ दीली<sup>(३)</sup> पंथानं<sup>(४)</sup> ।  
 संग सहस असवार  
 अण्ण रिधि<sup>(५)</sup> वासब यानं ॥  
 दिक्खीपति सामंत  
 कुली छत्ती सह दण्णै<sup>(६)</sup> ।  
 मिल्यौ बाह आजान<sup>(७)</sup>  
 वत्त सुरतान<sup>(८)</sup> सुदण्णै<sup>(९)</sup> ॥  
 इक राक तुरिय<sup>(१०)</sup> हय्थी<sup>(११)</sup> स इक  
 सामंतन पठण घरै<sup>(१२)</sup> ।  
 सोव्रन<sup>(१३)</sup> रासि रंजक षहर<sup>(१४)</sup>  
 मुक्कलिअै<sup>(१५)</sup> चिचंगपुरै<sup>(१६)</sup> ॥ ४७ ॥  
 (१७)गढ<sup>(१८)</sup> चिचकोट दुरग्ग  
 भट्ट पठयौ परिमानं ।  
 लादे सित्त सुरंग  
 सित्त लै तोल<sup>(१९)</sup> प्रमानं<sup>(२०)</sup> ॥

(१) C adds ॥ वण्णय ॥ (२) T दद c. m. (३) B दिली, C दिक्खी ।  
 (४) C पंथनं । (५) T रिधा, C रिध । (६) C दिण्णै । (७) C अजानं ।  
 (८) C सुरतानु । (९) C सुपिण्णै । (१०) C तुरी । (११) A T हथी c. m.  
 (१२) C घरै । (१३) C सोव्रन । (१४) C षरह । (१५) C मुक्कलियै ।  
 (१६) C चिचंगपुरै, read *chitrāgapurāi*, m. c. (१७) C adds ॥ वण्णय ॥  
 (१८) T गढ । (१९) C तोल । (२०) C here adds ॥ ४८ ॥

दोड़<sup>(१)</sup> हथ्यी मयमत्त<sup>(२)</sup>

सत्त<sup>(३)</sup> है<sup>(४)</sup> वर कुल राकिय ।

छत्र लियौ पतिसाह

जडित<sup>(५)</sup> मनि मानिक साकिय ॥

लौ चंद चल्थौ चीत्तौर गढ

जाड़<sup>(६)</sup> समथ्यौ रावरह ।

बहु दांन दियौ रावर समर

चल्थौ भट्ट अण्णन घरह ॥ ४८ ॥

इति श्री कवि चंद बिरचिते प्रथिराज<sup>(७)</sup> रासा  
के<sup>(८)</sup> घघर नदी मे<sup>(९)</sup> लराड़<sup>(१०)</sup> कहू<sup>(११)</sup> पातिसाह<sup>(१२)</sup>  
ग्रहनं<sup>(१३)</sup> नाम आगनतीसमो<sup>(१४)</sup> प्रस्तावः ॥ २६ ॥

घघर लडाड़ सम्यो समाप्तः<sup>(१५)</sup> ॥ २६ ॥

---

(१) C है; read *dōi*, m. c. (२) C मैमत्त। (३) C सत्य। (४) A है, C हे। (५) C जडित। (६) C जाय। (७) C प्रथीराज। (८) C रायसे। (९) B में, C की। (१०) B C लराई। (११) C कहंहर। (१२) C पातिसाहि। (१३) C ग्रहन। (१४) A आगुणतीसमको, B सत्तवीसमो, C om. (१५) B संपूर्णम्, om. घघर लडाड़ सम्यो ॥

॥ ३० ॥ अथ करनाटो पाच सम्यो लिख्यते<sup>(१)</sup> ॥ ३० ॥

दूहा<sup>(२)</sup> ॥

दूत चरित दिल्ली<sup>(३)</sup> तनै  
 देषि<sup>(४)</sup> गयै<sup>(५)</sup> कनचज्ज ।  
 चढत पंग सम्हौ<sup>(६)</sup> मिल्यौ  
 सुवर वीर कमधज्ज ॥ १ ॥  
 करि षलषट<sup>(७)</sup> सुरतांन सेां<sup>(८)</sup>  
 दल भगौ<sup>(९)</sup> सु विहांन ।  
 अब करनाटो देस<sup>(१०)</sup> पर  
 (११) चढि चलयौ चहुवांन<sup>(१२)</sup> ॥ २ ॥

कवित्त<sup>(१३)</sup> ॥

चळ्यौ सुवर चहुआंन<sup>(१४)</sup>  
 वीर क्रांनाट<sup>(१५)</sup> देस<sup>(१६)</sup> पर<sup>(१७)</sup> ।

(१) C reads ॥ अथ कर्णाटी समय लिख्यते ॥ D अथ क० प० समईयं लिख्यते ॥  
 (२) C दोहा । (३) A B T दिल्ली c. m., C दिल्लीय; D लीय । (४) C  
 देषि । (५) B D गयो । (६) C inserts लियौ between सम्हौ and मिल्यौ ।  
 (७) C षलषट । (८) C सेां, D सै । (९) B T भगौ, A C D भगौ ।  
 (१०) D दे । (११) D चढ । (१२) C चहुआंन ॥ (१३) C ॥ कवित्त ॥  
 (१४) C कर्णाट, D क्रांनाट । (१५) C देस । (१६) D om.

मिलि जइव<sup>(१)</sup> बर सेन

(१) तारि कळौ सु<sup>(२)</sup> तुंग<sup>(३)</sup> नर ॥

धर दषिन दच्छिन<sup>(४)</sup> नरिंद

सवै<sup>(५)</sup> प्रथिराज<sup>(६)</sup> सुगाही<sup>(७)</sup> ।

तिन राजन इक पाच<sup>(८)</sup>

पठय<sup>(९)</sup> नाइक<sup>(१०)</sup> घर थांही<sup>(११)</sup> ॥

बर बीर जुइ कमधज्ज<sup>(१२)</sup> करि

भीर भगी<sup>(१३)</sup> बर बीर अगि<sup>(१४)</sup> ।

तिहि<sup>(१५)</sup> दिनां<sup>(१६)</sup> बीर पज्जून<sup>(१७)</sup> पर

षग<sup>(१८)</sup> मार वोहिथ्य<sup>(१९)</sup> मगि<sup>(२०)</sup> ॥ ३ ॥

दूहा<sup>(२१)</sup> ॥

लैआयै नाइक<sup>(२२)</sup> सय

करनाटी<sup>(२३)</sup> प्रथिराज<sup>(२४)</sup> ।

(२५) जंच तंच एकठ भए

सबै<sup>(२६)</sup> साज संमाज ॥ ४ ॥

(१) A इव om. ज। (२) D तार। (३) D सुं। (४) B T तुरंग; D तुमनर। (५) D दषिन। (६) T सवै, D सबै। (७) C प्रथीराज। (८) B सुगाही, T सुर्गाही। (९) C पच। (१०) D पठय। (११) C नयक। (१२) C यही o. m. (१३) C कमधुज्ज। (१४) B T भगी, D भागी o. m. (१५) C अग, B गति। (१६) C तिहं, B तिन। (१७) C दिना। (१८) B T षज्जून। (१९) B D षग। (२०) D वोहिथ्य। (२१) So D; B C T मग; A मम। (२२) C D दोहा। (२३) C D नयक। (२४) C कर्णाटी। (२५) C D प्रथीराज। (२६) So D; A B C T जच तच। (२७) C reads सब कमधुज्जह साज, D सब कमधजह साज।

कवित्त<sup>(१)</sup> ॥

संबत इकतालीस

दिवस प्रथिराज<sup>(२)</sup> राज<sup>(३)</sup> भर ।

अति सामंत उभार<sup>(४)</sup>

आइ<sup>(५)</sup> अतिभ्रम<sup>(६)</sup> ढिल्ली<sup>(७)</sup> धर ॥

दिय थांन क<sup>(८)</sup> नायक<sup>(९)</sup>

नाम केल्हन<sup>(१०)</sup> गुनदेयं<sup>(११)</sup> ।

अति संगीत सुबिद्य<sup>(१२)</sup>

काला संजुत्त<sup>(१३)</sup> सुनेयं<sup>(१४)</sup> ॥

ता सथ्य<sup>(१५)</sup> चीय<sup>(१६)</sup> रतिरूव<sup>(१७)</sup> तन

वरस<sup>(१८)</sup> चवद चातुर सकल ।

दुवतीस सुलच्छिन<sup>(१९)</sup> मति विमल<sup>(२०)</sup>

अति मति अगनित<sup>(२१)</sup> विद्य<sup>(२२)</sup> बल<sup>(२३)</sup> ॥५॥

छंद वाघा ॥

संभलि वत्त सुयं प्रथिराजं<sup>(२४)</sup> ।

(१) C ॥ कवित्त ॥ (२) C प्रथीराज, D प्रथीराज । (३) T om. (४) C उत्तर । (५) C D आय । (६) C D अतिभ्रम, B T अतिभ्रम, A अतिभ्रम, c. m. (७) C ढिल्ली, D ढिल्ली । (८) B om. (९) B नायक, D नायक । (१०) C कैल्हन, B T D केल्हन । (११) C D गुनदेयं । (१२) D संवद्य । (१३) D संजुत्त । (१४) D सुनेयं । (१५) D सथ्य । (१६) C सथ चिय c. m. (१७) C ०रूप्य, D सूच । (१८) T वरस, A वर om. स । (१९) C सुलच्छिन । (२०) D दिल्विमल । (२१) D अगनित । (२२) A वैद्य, C वुद्य । (२३) D बलि । (२४) C प्रथीराजं, D प्रथराजं ।



अति अंगन विद्या<sup>(१)</sup> बल साजं<sup>(२)</sup> ॥  
 कला सपूरन<sup>(३)</sup> पूरनचंदं ।  
<sup>(४)</sup>पूरन हाटक बरन विवंदं ॥  
 बानी जेम बीन<sup>(५)</sup> कल सारं ।  
 स्वर जनु<sup>(६)</sup> पंचम मझ<sup>(७)</sup> गुंजारं<sup>(८)</sup> ॥  
 नष सिष<sup>(९)</sup> रूप रूप गति उत्तं ।  
 सुभ<sup>(१०)</sup> सामं त<sup>(११)</sup> प्रसंस प्रभुत्तं ॥  
 दरसन ताहि अवर न न<sup>(१२)</sup> दिष्यै ।  
 चासन<sup>(१३)</sup> महल मंझ<sup>(१४)</sup> तन तिष्यै ॥  
 सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि<sup>(१५)</sup> ।  
 जग्यौ कांम नृपति<sup>(१६)</sup> उर<sup>(१७)</sup> अंदरि<sup>(१८)</sup> ॥  
 अति सनमांन सु नाइक<sup>(१९)</sup> दीनौ ।  
 बहु प्रसंसन<sup>(२०)</sup> साधन<sup>(२१)</sup> कीनौ ॥ ई ॥

दूहा<sup>(२२)</sup> ॥

संझ समय अंदर महल

किय सु राज ग्रह धांम ।

(१) D वद्या । (२) A D सांज । (३) D संपूरन । (४) C पूरन हाटक  
 बरन विमंदं, D पू० हा० बरन विमंदं । (५) C बीन, D बान । (६) C जुनु ।  
 (७) C मझ । (८) D गुजारं । (९) C नख सिख । (१०) A शुभ, C शुभ ।  
 (११) A om., B द । (१२) A C om., D त । (१३) C D वासन । (१४)  
 C मंझ । (१५) C D सुंदर । (१६) C D नृपति । (१७) C अति, D om.  
 (१८) C D अंदर । (१९) C D नायक । (२०) C D प्रसंसन । (२१) C  
 साधन, D साधिन । (२२) C D दोहा ॥

अप्य वयडौ<sup>(१)</sup> राज तहां<sup>(२)</sup>

अनंत<sup>(३)</sup> स<sup>(४)</sup> जगित<sup>(५)</sup> कांस ॥ ७ ॥

छंद नराज<sup>(६)</sup> ॥

जयं<sup>(७)</sup> सु अत्ति जगियं<sup>(८)</sup> ।

सु धांस तेज तगियं<sup>(९)</sup> ॥

सजे सुभाल आसनं ।

<sup>(१०)</sup>अमोल रोहि वासनं ॥

सुदीप सांस सोभयं ।

सुगंध गंध आभयं<sup>(११)</sup> ॥

कपूर पूर जं भरं ।

मृगज्ज<sup>(१२)</sup> वास अंमरं ॥

सु सज्जि<sup>(१३)</sup> सिंघ<sup>(१४)</sup> आसनं ।

समोल रोहि वासनं ॥

कनक छत्र दंडयं<sup>(१५)</sup> ।

सुखं<sup>(१६)</sup> सु रंग मंडयं ॥

(१) C वयडौ, D वयिडौ । (२) Read *tahā* m. c., C तह, D तहा ।  
 (३) Read *anāta* m. c., C अनत, T अनंग । (४) C D जि । (५) D  
 जगत् । (६) C D लघुनराज । (७) T जय c. m. (८) D जगय । (९)  
 D तगयं । (१०) D अमोल c. m. (११) C आभयं । (१२) C मृगजं ।  
 (१३) A सिज्जि । (१४) B T संघ, D सिघ । (१५) C D डंडयं । (१६)  
 T सुख c. m.

अवीर जच्छ<sup>(१)</sup> कर्दमं<sup>(२)</sup> ।

सरोहि ग्रेह सर्दमं<sup>(३)</sup> ॥

<sup>(४)</sup>अभूत साषलोमयं ।

अवीर भूर<sup>(५)</sup> ओ मयं ॥

<sup>(६)</sup>अयास धूम धोमरं ।

<sup>(७)</sup>प्रसार वास ओमरं ॥

प्रस्तून<sup>(८)</sup> व्रन्न<sup>(९)</sup> वंनयं<sup>(१०)</sup> ।

सभूषनं सभ्रमयं<sup>(११)</sup> ॥

घनं सु सार संमरं ।

अभूत वास अमरं ॥

धुअं<sup>(१२)</sup> कुसंम केसरं ।

सुरं अभूत जे सुरं ॥

तहां सु राज आसनं ।

सरोहि<sup>(१३)</sup> सिंघ<sup>(१४)</sup> सासनं ॥

सुपाइ<sup>(१५)</sup> अंग रषियं ।

कला जु काम लषियं<sup>(१६)</sup> ॥

(१) B T दछ, A जछ, C जषष, D जष । (२) A कर्दमं c. m., B कर्दमं, C कर्दमं, T कर्दमं, D करदमं । (३) D सरदमं । (४) D अभूति । (५) D भ । (६) D आयास । (७) C om. this line. (८) C प्रस्तून c. m., A B प्रस्तून c. s. ; D प्रस्तून । (९) A T व्रन्न, B व्रन, C व्रन, D व्रन । (१०) A वंनयं c. m., B वंनयं, C D वंनयं, T वंसयं । (११) A सभ्रमयं c. m. (१२) A C धुअं, D धुअ । (१३) D सरोहि । (१४) D संघ । (१५) C D सुपाय । (१६) C लषियं ।

प्रवीन<sup>(१)</sup> भाव पासयं<sup>(२)</sup> ।  
 विचित्र<sup>(३)</sup> चित्र पासयं ॥  
 भवन्ति<sup>(४)</sup> क्रन्ति<sup>(५)</sup> भूषणं ।  
 सुबुद्धियं<sup>(६)</sup> विदूषणं<sup>(७)</sup> ॥  
 प्रसून<sup>(८)</sup> बिद्धि<sup>(९)</sup> वासनं ।  
 अभूत<sup>(१०)</sup> सिद्धि<sup>(११)</sup> आसनं ॥  
 वरष्प<sup>(१२)</sup> षोडसं समं<sup>(१३)</sup> ।  
 अदोस<sup>(१४)</sup> रूपयं रमं<sup>(१५)</sup> ॥  
 कला विग्यान<sup>(१६)</sup> विद्वयं<sup>(१७)</sup> ।  
 सुपास<sup>(१८)</sup> भूप<sup>(१९)</sup> सिद्धयं<sup>(२०)</sup> ॥  
 सिंगार<sup>(२१)</sup> सार सारयं ।  
 अभूषणं सधारयं ॥  
 (२२) ग्रहे वि दून चामरं ।  
 सु बिंझराज<sup>(२३)</sup> सामरं ॥  
 (२४) धरन्त कव्वि पंनयं ।

(१) C प्रवीन । (२) B पायसं । (३) D विचित्र चित्र । (४) C भवन्त, D भवन्त, T भवन्ति । (५) D क्रन्त । (६) D सबुद्धियं । (७) C विदूषणं, T विदूषणं । (८) A प्रसून c. s., D प्रसून । (९) C बिद्धि । (१०) D अभूति । (११) C D सिद्धि । (१२) C वरस्स, D वरस; A B T वरष । (१३) D समं । (१४) C अदोष । (१५) A समं, T रसं । (१६) C विज्ञान, D विग्यानि । (१७) D वद्वियं । (१८) C सुपासि । (१९) D भूषि । (२०) B T सद्धयं, C सद्धियं । (२१) Read *sīgāra*, m. c. ; D संगार । (२२) D reads गुहेव दूत चा० । (२३) D वंझ० । (२४) D reads धरकतवि पन यं ।

सुकंठ थांन संनयं ॥  
 सु घनसार<sup>(१)</sup> पानयं ।  
 सुगंध<sup>(२)</sup> विद्धमानयं<sup>(३)</sup> ॥  
 करे सुदर्पकं<sup>(४)</sup> करं ।  
 सुसष्पि<sup>(५)</sup> अद्ध<sup>(६)</sup> संमरं ॥  
 शृंगार<sup>(७)</sup> ग्रेह<sup>(८)</sup> सोभयं ।  
 अभूत<sup>(९)</sup> दुत्ति ओभयं ॥  
 (१०) ससोभ धामयं सजं ।  
 (११) सुवास वासवं लजं ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

रव्वि<sup>(१२)</sup> धांम अभिरांम  
 राज हरि थांन बद्धौ<sup>(१३)</sup> ।  
 दिपत दीह सुभ लीह<sup>(१४)</sup>  
 तेज उपभर<sup>(१५)</sup> तप<sup>(१६)</sup> जिद्धौ<sup>(१७)</sup> ॥  
 बौलि चंद पुंडीर<sup>(१८)</sup>  
 बौलि जहव रा जामं ।

(१) C घन्य० । (२) C सुगन्धि, D सुगंध । (३) B विद्धिम०, D वद्धिमानयं ।  
 (४) C D सुदर्पकं । (५) A सुसष्पि । (६) C अद्ध, D अठ । (७) Read  
*srīgāra* m. c. (८) C गेह । (९) B अभूति । (१०) D read स० धांम  
 सजलं । (११) C reads सुवास वास चंद्रजं, D सुवास वासवं जलं । (१२) B  
 T रच्चि, D रच्चि । (१३) A B C T बयडौ, D बेयडौ c. r., (१४) C लीघ ।  
 (१५) B उभर, C उभर, D उभर । (१६) C पत्ति, D पत्ति । (१७) C जिघै,  
 D जिघै । (१८) A चांडीस, C D चंडीस ; B पुंडीर, T पुंडीर ।

निडर<sup>(१)</sup> बोलि कमधज्ज<sup>(२)</sup>

अत्ति जा मति<sup>(३)</sup> बल सामं<sup>(४)</sup> ॥

बलिभद्र<sup>(५)</sup> बोलि कूरंभ भर<sup>(६)</sup>

लोहानौ आजानं<sup>(७)</sup> भुअ ।

वैठक<sup>(८)</sup> बैठि आसंन सजि

तामस तप्पै<sup>(९)</sup> तेज धुअ ॥ ६ ॥

(१०) बोल<sup>(११)</sup> ताम नाइक<sup>(१२)</sup>

(१३) सथ्य सथ्यह सब साजं ।

बोलि<sup>(१४)</sup> पाच कर्नाटि<sup>(१५)</sup>

बैठि गानं वर बाजं ॥

नाटक<sup>(१६)</sup> भेव निबंध<sup>(१७)</sup>

बुझि<sup>(१८)</sup> राज<sup>(१९)</sup> न वर वत्तं<sup>(२०)</sup> ।

कवन कला क्रत<sup>(२१)</sup> पाच

कहौ नाइक<sup>(२२)</sup> निज सत्तं ॥

नायक<sup>(२३)</sup> कहै<sup>(२४)</sup> प्रथिराज<sup>(२५)</sup> सुनि<sup>(२६)</sup>

(१) D निडर । (२) C कमधज्ज । (३) D मनि । (४) C सामं, D मांसं ।  
 (५) D बलिभद्र । (६) A नर । (७) C अज्जानं । (८) B बैठकै । (९) C  
 नप्पै । (१०) C adds ॥ कप्पय ॥ (११) बोलि । (१२) C नायक, D नायक ।  
 (१३) A सथ्य सथ्यह सहव साजं । (१४) C बोलिं, D बोल । (१५) C कर्नाटि ।  
 (१६) T नाटक । (१७) C निबंध, D नबंध । (१८) D बुझ । (१९) C  
 राजा । (२०) D बंध । (२१) D क्रत । (२२) C D नायक । (२३) C नायक ।  
 (२४) D कहै । (२५) C प्रथीराज, D प्रथीराजि । (२६) D सुनि ।

एह पाच देषौ<sup>(१)</sup> सु पय ।

इह<sup>(२)</sup> रूप रंग जावन सवय<sup>(३)</sup>

कला मनोहर चिंतिमय<sup>(४)</sup> ॥ १० ॥

छंद पद्धरी<sup>(५)</sup> ॥

उच्चरगौ तांम<sup>(६)</sup> कविचंद बांनि ।

नायक अहे<sup>(७)</sup> मति<sup>(८)</sup> मरम जांनि<sup>(९)</sup> ॥

सो धरौ कला विचार<sup>(१०)</sup> साज ।

निडुरह<sup>(११)</sup> वयड्यौ<sup>(१२)</sup> पास राज<sup>(१३)</sup> ॥

नाटिक<sup>(१४)</sup> विविध<sup>(१५)</sup> बुझै<sup>(१६)</sup> विनांन ।

विचार<sup>(१७)</sup> चार<sup>(१८)</sup> सुर तांन गांन ॥

नाइक<sup>(१९)</sup> जंपि<sup>(२०)</sup> हो चंद भट्ट ।

न्रप पास वयड्यौ<sup>(२१)</sup> को<sup>(२२)</sup> सुभट्ट ॥

उच्चरगौ<sup>(२३)</sup> चंद नाइक<sup>(२४)</sup> सरीस ।

कनवज्ज नाथ जैचंद जीस<sup>(२५)</sup> ॥

ता अनुज<sup>(२६)</sup> वंध वर सिंघदेव ।

---

(१) D दोषौ । (२) C इह । (३) D सुचय । (४) B C चिंतमय, D चंतमय । (५) D पद्धरी ॥ (६) C नांम । (७) C अहे, D अहे । (८) D मत । (९) A B T जांन, c. r. (१०) B T विचार om. र । (११) D निडुरह । (१२) C वयड्यौ । (१३) C राज । (१४) B नाटक, D नाटिक । (१५) C विविधि । (१६) B बुझै । (१७) C D विचार । (१८) B T चार । (१९) C नायक, D नायक । (२०) D om. (२१) C वयड्यौ । (२२) D को । (२३) C उच्चरै । (२४) C नायक । (२५) D ईस । (२६) C अनु om. ज ।

ता सुअन कमध<sup>(१)</sup> निडुरह एह<sup>(२)</sup> ॥  
 नायक<sup>(३)</sup> कहै<sup>(४)</sup> हय<sup>(५)</sup> वत्त सच्च<sup>(६)</sup> ।  
 आवंन<sup>(७)</sup> केम हुअ<sup>(८)</sup> दिस्सि<sup>(९)</sup> तच्च<sup>(१०)</sup> ॥  
 वरदाइ<sup>(११)</sup> कहै<sup>(१२)</sup> नाइक<sup>(१३)</sup> चिंत<sup>(१४)</sup> ।  
 (१५) आवन्न<sup>(१६)</sup> कित<sup>(१७)</sup> कारन्न<sup>(१८)</sup> मंति ॥  
 विजै<sup>(१९)</sup> सिंघ<sup>(२०)</sup> कियौ<sup>(२१)</sup> तहां<sup>(२२)</sup> उइ काज ।  
 (२३) अतितेज तप्प<sup>(२४)</sup> जैचंद राज<sup>(२५)</sup> ॥  
 लघुवेस<sup>(२६)</sup> उभय बंधव सरूप<sup>(२७)</sup> ।  
 अत थांन उभय खेलंत<sup>(२८)</sup> भूप ॥  
 आइयौ<sup>(२९)</sup> महल निडुर समेक ।  
 कहि कुमर राज सड्डो<sup>(३०)</sup> सु एक ॥  
 उच्चरौ<sup>(३१)</sup> तांम निडुरह देव ।  
 कहा कुमर हंम मिछंत सेव ॥  
 जयचंद<sup>(३२)</sup> समुष<sup>(३३)</sup> निरषेव<sup>(३४)</sup> तांम ।

(१) D कमधं । (२) C D एव ॥ (३) B C D नायक । (४) C कहै ।  
 (५) C D यह । (६) A सब c. r. (७) D आवंत । (८) D हूअ । (९) D दल्ली । (१०) D तव । (११) C D वरदाय । (१२) C कहै । (१३) C नायक, D नायक । (१४) C चित्त, D चंतत । (१५) C reads आवन्नतक्र कारन्न मत्त । (१६) A आवन्न, कारन्न, D आवंन, कारंन । (१७) A B कित, C तक्र । (१८) C D जै om. वि । (१९) Read *sīgh*, c. m. (२०) D कीयौ । (२१) Read *tahā*, c. m., C तह । (२२) D reads अति तेजज जैचंद राज । (२३) C तप्यै । (२४) T राजं c. m. (२५) D लंघुं । (२६) T सरूप c. m. (२७) B खेलंत । (२८) D आययो । (२९) C सड्डो, D सुड्डो । (३०) C उच्चरौ । (३१) C जेचंद, D जैचंद । (३२) T समुष । (३३) A निषेव, C निरषेव ।



(१) कलमलिय लगि<sup>(२)</sup> चामट्ट<sup>(३)</sup> धांम ॥

करि सभा सु निडुर आइ<sup>(४)</sup> ग्रेह ।

सुष धांम<sup>(५)</sup> कांम<sup>(६)</sup> विलसंत देह<sup>(७)</sup> ॥ ११ ॥

कवित्त<sup>(८)</sup> ॥

समय एक निडुर क<sup>(९)</sup>-

मंध आषेट संपत्तौ<sup>(१०)</sup> ।

विधि<sup>(११)</sup> कुरंग<sup>(१२)</sup> दुअ तीन<sup>(१३)</sup>

(१४) उभय एकल<sup>(१५)</sup> निज घत्तौ<sup>(१६)</sup> ॥

आइ<sup>(१७)</sup> वग्ग सारंग<sup>(१८)</sup>

सुवन<sup>(१९)</sup> मोमंत<sup>(२०)</sup> प्रधानह ।

करिय गोठि<sup>(२१)</sup> उच्चार<sup>(२२)</sup>

सथ्य संभरे<sup>(२३)</sup> सवानह ॥

ता अग्ग गोठि सारंग सजि<sup>(२४)</sup>

घन<sup>(२५)</sup> पक्कवानं<sup>(२६)</sup> असांन<sup>(२७)</sup> रस ।

---

(१) D read कलमलीय लग वास वासठ धांम ॥ (२) T लग्ग, C लगा ।  
 (३) A चामट्ट, B T चामड्ड, C चामट्ट । (४) C D आय । (५) C घांम ।  
 (६) B transposes कांम घांम । (७) A देव c. r. (८) C ॥ क्वय्यै ॥ (९)  
 A B C D T place the pause after मंध and read कमंध ॥ आषेट etc.  
 (१०) Read *sāpattau*, C सपत्तौ । (११) C वधि, D बंधि । (१२) D करंग ।  
 (१३) C दुअ तीन । (१४) D reads भय एक निज घत्तौ । (१५) C एकं ।  
 (१६) C घत्तौ । (१७) C D आय । (१८) D सारंगि । (१९) B सुवन ।  
 (२०) A सोवंत । (२१) B C गोठ । (२२) C उभार, D उतार । (२३) B  
 समरे । (२४) D सस । (२५) C घन । (२६) B T पक्कवानं c. m. (२७)  
 A B T आसांन c. m.

ग्रिह<sup>(१)</sup> गर वाग आगम<sup>(२)</sup> सकल  
लहयौ निडुर<sup>(३)</sup> भेव<sup>(४)</sup> तस ॥ १२ ॥

छंद मुरिल<sup>(५)</sup> ॥

निडुर तांम गोठि<sup>(६)</sup> लिय अण्यं ।  
तरसे वक<sup>(७)</sup> सारंग सु दण्यं<sup>(८)</sup> ॥  
घन<sup>(९)</sup> पकवांन सरस गति सारं ।  
रच्चे<sup>(१०)</sup> मंस विवह<sup>(११)</sup> विसवारं ॥  
<sup>(१२)</sup> करि क्रीडा सो<sup>(१३)</sup> गोठि अहारे ।  
नपतौ सथ्य सबै<sup>(१४)</sup> विधि<sup>(१५)</sup> भारे ॥  
सुमनह<sup>(१६)</sup> द्राव सुमन<sup>(१७)</sup> सब सोहै<sup>(१८)</sup> ।  
कासमीर चंदन सुररोहै<sup>(१९)</sup> ॥  
आहारे तंमोल सुगंधं<sup>(२०)</sup> ।  
मादक आइ<sup>(२१)</sup> अगि जहां<sup>(२२)</sup> जगं<sup>(२३)</sup> ॥  
सुनी अवन सारंग सुबत्तं ।

(१) C D ग्रह । (२) D अगम c. m. (३) D निडुर । (४) D भेद ।  
(५) C मुरिल; this metre is apparently identical with the well-known चौपाई, in which, e. g., the greater part of Tulsidas' Ramayan is written. (६) C गोठ किय अण्यं । (७) A B T वक्क c. m. (८) D दण्यं । (९) C घन । (१०) D रच । (११) D ठिवहि, C विवह । (१२) D कर । (१३) D om., C सब । (१४) D सबै । (१५) D वध । (१६) C समनह । (१७) D सुमति । (१८) C सोहै । (१९) C रोहै । (२०) D सुरंग, C सुरंस । (२१) C D आय । (२२) C D जह; read *jahā*, m. c. (२३) C जगं, D जंग ।

आयैा आतुर वग्ग तुरत्तं ॥  
 कठिन वाच निडुर सम वाचे<sup>(१)</sup> ।  
 तरस्यौ निडुर तां मत<sup>(२)</sup> राचे<sup>(३)</sup> ॥  
 गयैा अग्र जैचंद सुरावं ।  
 लुट्टी वस्त्र गोठि मनिसावं<sup>(४)</sup> ॥  
 संभलि वचन कुप्पौ रा पंगं ।  
 कलमलि<sup>(५)</sup> कोप रोस सब अंगं ॥  
 निसा<sup>(६)</sup> महल<sup>(७)</sup> निडुर संपत्तौ<sup>(८)</sup> ।  
 फेरे<sup>(९)</sup> मुष जैचंद विरत्तौ<sup>(१०)</sup> ॥  
 न न संग्रह्यौ रस<sup>(११)</sup> वसि<sup>(१२)</sup> सिर<sup>(१३)</sup> नायैा ।  
 निडुर तांम<sup>(१४)</sup> अप्प ग्रह आयैा ॥  
 सजे सु सथ्थ जुगनिपुर<sup>(१५)</sup> आयैा ।  
 अति आदर करि पिथ्थ वधायैा ॥ १३ ॥  
 दूहा<sup>(१६)</sup> ॥  
 सुनि नाइक<sup>(१७)</sup> हरष्यौ सु मन  
 धनि धनि बेंन उचार ।

(१) D वाचै । (२) A तंम त, D तांम त, C तां मन । (३) D राचै ।  
 (४) D मनसावं । (५) D कलमल । (६) D नसा । (७) D महिल । (८)  
 C संपत्तैा । (९) D फेरें । (१०) C विरत्तैा । (११) C राज । (१२) C  
 D om. (१३) D सर । (१४) T सांम । (१५) A B T जुगनिपुर c. m.,  
 D जगिनिपुर । (१६) C D दोहा । (१७) C नायक, D नायक c. m.

लहै सु विद्या<sup>(१)</sup> अर्थ<sup>(२)</sup> गुन

जै जै अर्थ<sup>(२)</sup> उचार ॥ १४ ॥

गाथा ॥

(१) राज नीति गति रूवं<sup>(३)</sup> गुन संपूर<sup>(४)</sup> चीस<sup>(५)</sup> एकागं<sup>(६)</sup>।  
जे रंजे<sup>(७)</sup> रज धानं<sup>(८)</sup> सुनि कविराज सब<sup>(१०)</sup> संपूरं ॥ १५ ॥  
साटक<sup>(११)</sup> ॥

विद्या विनय विवेक<sup>(१२)</sup> मार सयलं विव्वेक विचारयं<sup>(१३)</sup>।  
विचारंस सु तप्य सोष सुमनं सौजन्य<sup>(१४)</sup> सौभाग्यं ॥  
रूचं रूप अनूपयं रसरसं संजोग विप्रभोगयं<sup>(१५)</sup>।  
मांगल्यं<sup>(१६)</sup> सु संपूर<sup>(१७)</sup> सौम्य कलसं<sup>(१८)</sup> जानंत केली  
कला ॥ १६ ॥

मृदु तत्वं<sup>(१९)</sup> मृदु<sup>(२०)</sup> गांनकं च रसना मर्यादयं मंडनं।  
उहायं उहार दाव<sup>(२१)</sup> उछहं<sup>(२२)</sup> एते गुना राजयं ॥

(१) D वद्या। (२) D अरथ। (३) This line does not scan.  
(४) C D रूच। (५) A संपूरं, D संफर। (६) D ची। (७) D एकाग।  
(८) A रजे रंज, C रजे रज c. m. (९) A C धानं, D धानं। (१०) A  
B T सब c. m., C सर्व। (११) C सोस्या?; the *sātaka* metre is  
identical with the well known *śārdūlavikrīḍita*. (१२) D वदेक।  
(१३) C विचारयं। (१४) D om. from सौजन्य to संजोग। (१५) B  
विप्रभोगयं। (१६) D मांगल्य। (१७) C D संपूर c. m.; read *sāpūra*,  
m c. (१८) C D सकलं। (१९) D तवं। (२०) D मृद। (२१) D दव।  
(२२) C उछेयं।

सो यं जानं<sup>(१)</sup> विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं<sup>(२)</sup> ।  
 सो यं नीत<sup>(३)</sup> सनीत<sup>(४)</sup> कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं<sup>(५)</sup> जे<sup>(६)</sup>  
 वरं ॥ १७ ॥

दूहा<sup>(७)</sup> ॥

फुनि<sup>(८)</sup> नाइक<sup>(९)</sup> जंपै सु<sup>(१०)</sup> नमि

अहो चंद<sup>(११)</sup> वरदाइ<sup>(१२)</sup> ।

राग विनोदह चीसषट<sup>(१३)</sup>

(१४) कहौ सुनौ विधि साय ॥ १८ ॥

छंद गीतामालची<sup>(१५)</sup> ॥

दरसन नाद<sup>(१६)</sup> विनोदयं ।

सुर<sup>(१७)</sup> धुनि नृत्य समोदयं<sup>(१८)</sup> ॥

गीताद्य<sup>(१९)</sup> अधि नव वादयं ।

(१) D जानि । (२) C विचारयं । (३) C तीन, D तीत । (४) C सनीत ।  
 (५) C D जयो । (६) A चोवरं । (७) C D दोहा । (८) C पुनि । (९)  
 C D नायक । (१०) D सनिमि । (११) C चन्द्र । (१२) C D वरदाय ।  
 (१३) C तीसषट । (१४) A कहौ सुनो, B कहौ सुनौ । (१५) The base  
 of this metre appears to consist of three feet and a half, viz.  
 गगजजग or a spondee, two amphibrachs, and one long ; — — |  
 उ—उ | उ—उ | — || the initial spondee may be dissolved  
 into an Anapaest (उउ—) or Dactyl (—उउ), and the first  
 amphibrach may be dissolved into a Proceleusmatic (उउउउ).  
 The metre is, I believe, not noticed in Etherington's Hindi  
 Grammar. C D om. मालची । (१६) D नादि । (१७) A reads this  
 line साधुं नृत्य समोदयं ; C सो धुनिनृत्य समोदयं ; D सोधुनिनृत्य समोदयं ।  
 (१८) T समोदयं । (१९) D गीताद्य ।

अभिलाष<sup>(१)</sup> अर्थ<sup>(२)</sup> पदादयं<sup>(३)</sup> ॥

वक्त<sup>(४)</sup> जग्यपवीतयं ।

प्रासंन<sup>(५)</sup> प्रभुत प्रनीतयं ॥

पंडीत<sup>(६)</sup> पालक तल्पयं ।

<sup>(७)</sup>ते पठय<sup>(८)</sup> तर्क विजल्पयं ॥

प्रामांन<sup>(९)</sup> सरन प्रमोदयं<sup>(१०)</sup> ।

<sup>(११)</sup>प्रातापयं च प्रमोदयं ॥

प्रारंभ परिच्छद<sup>(१२)</sup> संग्रहं ।

निग्राह<sup>(१३)</sup> पुष्टित तुष्टिहं ॥

प्रासंस प्रीति स प्रापयं ।

प्रातिग्र<sup>(१४)</sup> या सु प्रतिष्टयं<sup>(१५)</sup> ॥

धीरज्ज धीर<sup>(१६)</sup> जुधं वरं ।

सो रज्ज एव सतं<sup>(१७)</sup> नरं ॥ १६ ॥

दूहा<sup>(१८)</sup> ॥

सुनि नाइक<sup>(१९)</sup> राजंन मति<sup>(२०)</sup>

(१) B अभिलाष; T अनिलाष । (२) D अर्थ । (३) D पदीद । (४) D क्रात, C वकात । (५) D प्रासत्त । (६) C D पंडित । (७) C D om. this line. (८) A पठय । (९) B T प्रासंन, D प्रमान । (१०) D प्रमोदयं, C विमोदयं । (११) C reads प्रताप पंचन योदयं । (१२) B T परिच्छदं o. m. (१३) D ति ग्राहि । (१४) B प्रातिग्र, C प्रातिग्रा । (१५) A गतिष्टयं, D प्रतिष्टयं । (१६) C D धीरजधं । (१७) D सतं । (१८) C D दोहा । (१९) A इक, om. ना; C नायकं, D नायक । (२०) T सति, C संति ।

जंपहि दिल्ली<sup>(१)</sup> नरैस ।

पाच<sup>(२)</sup> प्रगट<sup>(३)</sup> गुन सकल<sup>(४)</sup> विधि<sup>(५)</sup>

(६)विद्या भाव विसैस ॥ २० ॥

प्रथम गांन<sup>(७)</sup> सुर तांन गुन

(८)बादी नेक विनांन ।

पाछे<sup>(९)</sup> नृत्य<sup>(१०)</sup> प्रचार<sup>(११)</sup> भर

प्रगट करहु परिमांन ॥ २१ ॥

छंद मुजंगी ॥

(१२)तबै बोलियं अप्प नाइक अगं<sup>(१३)</sup> ।

मुषं<sup>(१४)</sup> पाच आरोह उचार जगं<sup>(१५)</sup> ॥

धरे आप बीना सुरं साज<sup>(१६)</sup> सारे ।

सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥

धुनिं<sup>(१७)</sup> रूप रागं सुहानं<sup>(१८)</sup> उपाए ।

रचे चार<sup>(१९)</sup> राहं सुभा सुप्भ भाए ॥

गियं<sup>(२०)</sup> गान अप्पं सुरं तंति मानं ।

रचे मंडली राइ<sup>(२१)</sup> आयास थानं ॥

(१) D दिल्ली, C दिल्ली । (२) D पाचं । (३) T प्रट om. ग । (४) C सक om. ल । (५) C विधि । (६) D reads वद्या भव वसेस । (७) D यांन । (८) D reads बाद अनैक वनांन । (९) B D पाछे । (१०) D नृत्य । (११) D प्रचार । (१२) D तबै, T तबे । (१३) D reads तबै अप्पं बोलि नायक अगं; C तबै अप्पं बोलि नायक अगं । (१४) C मुषं । (१५) C जगं । (१६) D reads only सुज for सुरं साज । (१७) C D धुनि c. m. (१८) B उहानं, C सुहानं । (१९) C चार । (२०) D गियां, T नियां । (२१) C D राय ।



मनं सर्व<sup>(१)</sup> मोहे<sup>(२)</sup> अति<sup>(३)</sup> राग रूपं ।  
 तनं लगाए तार आरंग भूपं<sup>(४)</sup> ॥  
 तनं षेद रोमंच<sup>(५)</sup> उच्छाह अंगं ।  
 वयं<sup>(६)</sup> विस्मयं वेपथं<sup>(७)</sup> मोद रंगं ॥  
 दया दीन चित्तं अभिलाष<sup>(८)</sup> जगं<sup>(९)</sup> ।  
 गुनं रूप रागं जिते<sup>(१०)</sup> चित्त लग्नं ॥  
 (११) नघं सिष्य जग्यौ तनं मीनकेतं ।  
 चढी<sup>(१२)</sup> मन वेली चित्तं पत्र हेतं ॥  
 तवै<sup>(१३)</sup> बोलि<sup>(१४)</sup> नाइक<sup>(१५)</sup> राजन तामं<sup>(१६)</sup> ।  
 कहा मोल पाचं कहौ<sup>(१७)</sup> द्रव्य नामं ॥  
 कहै नाम<sup>(१८)</sup> नायक पाचं सरीसं<sup>(१९)</sup> ।  
 कहा<sup>(२०)</sup> मोल पाचं नृपं<sup>(२१)</sup> जाग<sup>(२२)</sup> जीसं ॥  
 मनं सारधं हेम अण्वेव<sup>(२३)</sup> तासं ।  
 ग्रिहं<sup>(२४)</sup> रषियं<sup>(२५)</sup> अण्व<sup>(२६)</sup> पाचं सुभासं ॥

(१) D सर्व । (२) D मोह । (३) D अति । (४) A रूपं । (५) D रोमच । (६) D वियं । (७) D वेपथं । (८) D T अभिलाष । (९) C जगं ।  
 (१०) C D जिते । (११) D reads नघ सिष्य जलज्यौ तनं मी० । (१२) C चढि । (१३) C नवै, D तवै । (१४) D बोल । (१५) C D नायक ।  
 (१६) C नामं । (१७) D कहौ । (१८) B om. (१९) D सरीसं, B सरीरं ।  
 (२०) D कहा । (२१) D निप । (२२) D जागि । (२३) D अण्वे वतीसं ।  
 (२४) C D ग्रहं । (२५) D रषियं, C राषियं । (२६) D अण्व ।



विसर्जे<sup>(१)</sup> महल्लं करे<sup>(२)</sup> अप्प उट्टे<sup>(३)</sup> ।

कला<sup>(४)</sup> कांम छत्थं निसा पाच तुट्टे<sup>(५)</sup> ॥ २२ ॥

दूहा<sup>(६)</sup> ॥

काम कला तुट्टिय<sup>(७)</sup> न्वपति<sup>(८)</sup>

सुग्रह पवारी द्वार ।

तिन<sup>(९)</sup> अवास दासी सघन

(१०) अह्निस रहे<sup>(११)</sup> रषवार ॥ २३ ॥

इति श्रीकवि चंद विरचिते प्रथीराज<sup>(१२)</sup> रासा<sup>(१३)</sup>  
के कर्नाटी<sup>(१४)</sup> पाच वर्ननं<sup>(१५)</sup> नाम तीसमो<sup>(१६)</sup> प्रस्ताव<sup>(१७)</sup>  
समाप्त<sup>(१८)</sup> ॥ ३० ॥

---

(१) C विसर्जे, D विसरजे । (२) B करें । (३) C तुट्टे, D तुट्टे । (४) C काल । (५) C तुट्टे, D तुट्टे । (६) C D दोहा । (७) C तुट्टिय, T तुट्टिय । (८) C वियत । (९) D तन । (१०) A अह्निस, D अह्निसि । (११) Read *rahē*, m. o. ; C D रहि, B T रहै । (१२) B T प्रतिराज । (१३) D रास, C रायसे । (१४) D कर्नाटी । (१५) C वर्णनो, D वरनन । (१६) B आठवीसमो, D om. । (१७) D प्रस्तावा । (१८) B संपूर्ण, D संपूर्ण, T adds इति कर्नाटी पाच समो समाप्तः ॥

॥३१॥ <sup>(१)</sup>अथ पीपा जुड प्रस्ताव लिख्यते<sup>(२)</sup> ॥३१॥



कवित्त ॥

महल<sup>(३)</sup> भयौ न्वप प्रात्त

आइ<sup>(४)</sup> सामंत खर<sup>(५)</sup> भर ।

ठट्ठा<sup>(६)</sup> दिसि<sup>(७)</sup> उत्तरिय<sup>(८)</sup>

राइ<sup>(९)</sup> चामंड<sup>(१०)</sup> बीर वर ॥

बंभन वास जु<sup>(११)</sup> राज

को<sup>(१२)</sup> इक मुक्कलि इन काजं ।

चावहिसि<sup>(१३)</sup> अरि नन्ह

सीम कट्ठै<sup>(१४)</sup> नह आजं ॥

कैमास बेलि मंची तहां

(१) B prefixes श्री हृष्णाय नमः । C omits this Canto and makes the next Canto *Indravatī vivāha* to follow here. (२) D reads अथ मोरबूह पीप परिहार पातिसाह ग्रहन मान भंजनं नाम प्रस्ताव लिख्यते, and places this Canto after that called ससिहता, which is numbered the 25th in the present edition. (३) D महल । (४) D आय । (५) D खर c. m. (६) A ठट्ठा or ढट्ठा?, B ठट्ठा, D ठट्ठा, T ठट्ठा । (७) D दिस । (८) D उत्तरिय or उचरिय? (९) D राय । (१०) D चामंड । (११) D जु । (१२) D कोय om. क; read *kō*, m. c. (१३) B कडै, D कडै; read *kaḍḍhai*, or else *kaḍhai* m. c.

मंच लाज जिहि लाज भर ।  
 सिर नाइ<sup>(१)</sup> आइ बैठे ढिगह<sup>(२)</sup>  
<sup>(३)</sup>मानो इंद्र ढिग<sup>(४)</sup> इंद्र नर ॥ १ ॥

छंद पद्धरी ॥

बैठे सुराज आरंभ गुज्ज<sup>(५)</sup> ।  
 पद्धरी<sup>(६)</sup> छंद वरनेति<sup>(७)</sup> मज्ज<sup>(८)</sup> ॥  
 वुल्लिय<sup>(९)</sup> नरिंद जे मत्त धीर ।  
 सदै सु जुद्ध संग्राम श्रीर ॥  
 दिसि<sup>(१०)</sup> मत्त मत्त उज्जैन<sup>(११)</sup> कांम ।  
 बंचाइ राज कग्गद सु तांम ॥  
 सामंत खर तपि तोन<sup>(१२)</sup> बंधि ।  
 आवर्त्त<sup>(१३)</sup> रोस<sup>(१४)</sup> चलि सेन संधि ॥  
 दिन सुद्ध राज चलित्रै<sup>(१५)</sup> सु आज ।  
 सम बैर<sup>(१६)</sup> बीर बंकान साज ॥  
 जैचंद सेन दुस्सह प्रमांन ।  
 पुरसांन घांन <sup>(१७)</sup>सुलतांन भांन ॥

(१) D नाय आय । (२) B ढिगह, T दिगह । (३) A T मनो o. m. (४) B ठिग । (५) B गुज्ज । (६) D पद्धरी । (७) D वरनेति । (८) B मज्ज । (९) D वुल्लिय । (१०) D दिस । (११) B D T उज्जैन । (१२) D तोन । (१३) A आवर्त्त, D अवरत्त । (१४) A रोस । (१५) D चढियै; T लिखै om. च । (१६) A बैर । (१७) A सुरतांन ।

चालुक बोरगुजर नरेस ।  
 क्कित करै जुड करनी<sup>(१)</sup> विसेस ॥  
 थल वटिय वीर मज्झी<sup>(२)</sup> हुजाब<sup>(३)</sup> ।  
 रष्यैति<sup>(४)</sup> सूर<sup>(५)</sup> तिन मडि आव ॥  
 सब सबर अरो चिहु दिसि नरिंद ।  
 तिन मध्य इंद्र<sup>(६)</sup> प्रथिराज इंद<sup>(७)</sup> ॥  
 सोबरन बीर उज्जेन ठाम ।  
 महि<sup>(८)</sup> महंकाल<sup>(९)</sup> सुभ थांन ताम ॥  
 तिन वरन<sup>(१०)</sup> ठाम देवास तीय ।  
 संग्राम राज मंडन सु बीय ॥  
 बंचौ सुराज कगाद प्रमान ।  
 धर धनुह धार अर्जुन<sup>(११)</sup> समान ॥  
 द्रिग करन धरन धर धरनिपाल ।  
 सामंत सूर<sup>(५)</sup> तिन मध्य लाल ॥  
 देवास धीय देवास व्याह ।  
 मंड्या सुराज संभरि उछाह ॥  
 जैचंद करहु<sup>(१२)</sup> अप्पर<sup>(१३)</sup> निधान ।

(१) B किरनी । (२) A मज्झ । (३) D ऊंजाब । (४) B रष्यति,  
 D रष्येत । (५) D सूर । (६) D इंद । (७) D इंद्र ॥ (८) D महि । (९)  
 T महकाल । (१०) D places ठाम वरन । (११) D अरजुन । (१२) D  
 करऊं । (१३) D ऊपरि ।

कलिकाल वत्त चल्लै प्रमांन ॥  
 सापुरुस<sup>(१)</sup> जीव तवि<sup>(२)</sup> ए प्रकार ।  
<sup>(३)</sup>संभरै एक किती संसार ॥  
 जोरन सु जुग<sup>(४)</sup> इह चलै<sup>(५)</sup> वत्त ।  
 संसार सार गल्हां निरत्त ॥  
 इह कच्च पिंड संची सु वत्त ।  
 जैहै सु<sup>(६)</sup> जाग जागाधि तत्त ॥  
 जैहै<sup>(७)</sup> सु<sup>(६)</sup> भांन सब ग्रह प्रकार ।  
 दिष्टोय<sup>(८)</sup> मांन सो बिंनसि<sup>(९)</sup> सार ॥  
<sup>(१०)</sup>वापी विरष्य सर मढ<sup>(११)</sup> प्रमांन ।  
 मिलिहै सु सर्व<sup>(१२)</sup> म्रग<sup>(१३)</sup> तिस्र<sup>(१४)</sup> जांन ॥  
 छंडो न वीर देवासु<sup>(१५)</sup> सुष्य ।  
 रष्यौ सुमंत गल्हां पुरिष्य ॥ २ ॥

कवित्त ॥

गल्हां काज सुदेव<sup>(१६)</sup>

अस्ति दद्विच दीय<sup>(१७)</sup> वर ।

(१) D सापुरुस, B सापुस तजीव० । (२) D तिवि । (३) D reads  
 संभरै किन्ति एकह संसार । (४) D जग । (५) D चलै सु वत्त । (६) D सु ।  
 (७) D जैह । (८) A D दिष्टिय c. m. (९) D बिंनसि, T घिनसि । (१०)  
 D वापीय वष । (११) B मढ । (१२) D सरब । (१३) D म्रग । (१४) B  
 तिस्र, D विस्र । (१५) D दीवांसु सुष । (१६) D सुदेव । (१७) D दीय ।

गल्हां काज सु रुष

(१) बज्ज किन्नौ सु इन्द्र जुर ॥

गल्हां काज नरिंद

बंस दुरजोधन मांन रषि ।

गल्हां काज सुधात

मांन आवृत्ति भूमि लषि ॥

(२) रषिहै नरनि गल्हां (३) सुवर

गल्हां रषै (४) न्वपति उष ।

(५) जयचंद बंध दल बल सकल

सबर साइ (६) किज्जै सरुष ॥ ३ ॥

दूहा ॥

(७) दूह परतंग्या नरिंद (८) मन

करै बनै प्रथिराज (९) ।

सकल सूर सामंत ज्यौं (१०)

मुहि अग्या सिरताज ॥ ४ ॥

छंद चोटक ॥

इति सामंत (११) सूर (१२) प्रमांन धरं ।

(१) D reads बज्ज कीनौ स इन्द्र जूर । (२) D रषिहैं, T रषिहै, read *rakkhīhai*, m. c. (३) D गिल्हां । (४) D रषें । (५) D जैचंद । (६) D साई । (७) D omits the whole fourth stanza. (८) Read *narīda*, m. c. (९) T प्रथिराज । (१०) Read *jyaū*, m. c. (११) Read *sāmāta*, m. c. (१२) D सूर, c. m.

(१) दरवार बिराजित<sup>(२)</sup> राज भरं ॥  
 चढि चच्चर चंद पुंडीर<sup>(३)</sup> कियं<sup>(४)</sup> ।  
 सोइ<sup>(५)</sup> देह धरै<sup>(६)</sup> फिरि आन दियं<sup>(७)</sup> ॥  
 न्वप लज्ज न्वपत्तिय सारंगयं<sup>(८)</sup> ।  
 सम पुज्जि न<sup>(९)</sup> सामंत ता बरयं ॥  
 (१०) अतताइय अंग<sup>(११)</sup> उतंग भरं ।  
 सिव सेव कियै<sup>(१२)</sup> तन फेरि धरं ॥  
 नर<sup>(१३)</sup> निडुर एक<sup>(१४)</sup> नरिंद समं ।  
 कनवज्ज उपज्जिय<sup>(१५)</sup> जास जमं ॥  
 गहिलौत गरिष्ठ गोइंद<sup>(१६)</sup> बली ।  
 प्रथिराज समान सुदेह कली ॥  
 छिति रष्यन छित्ति पजून भरं ।  
 तिन पुच बली<sup>(१७)</sup> बलिभद्र नरं ॥  
 परमार सलष्य अलष्य गती<sup>(१८)</sup> ।  
 तिन पुज्जै<sup>(१९)</sup> न सामंत<sup>(२०)</sup> स्वर रती<sup>(२१)</sup> ॥

(१) D दसवार । (२) D विराजत । (३) Read *pūḍīra*, m. c. (४) D कीयं c. m. (५) Read *sōi*, m. c.; D सोय । (६) T धरे, D धरें । (७) D दीयं c. m. (८) D सारंगयं; read *sarāṅgayam*, m. c. (९) D न । (१०) B अतता om. इय, D गतताइय । (११) B अंत । (१२) D कीयै । (१३) B T नरि । (१४) D एके । (१५) D उपजीय c. m. (१६) D गौयंद । (१७) A बलिभद्र, D बलसद्रं । (१८) A गति । (१९) Read *pūjjaṁ* m. c.; D पुजैव । (२०) Read *sāmāta*, m. c. (२१) B रति ।

कयमास सुमंचिय<sup>(१)</sup> राज दरं ।  
 अरि अंग उछाह<sup>(२)</sup> न बीर<sup>(३)</sup> बरं ॥  
 अचलेस उतंग नरिंद<sup>(४)</sup> धरं ।  
 रन मज्झ बिराजत पंग भरं ॥  
 (५)चावंड नरिंद सु घग्ग<sup>(६)</sup> बली  
 नरसिंघ सुदंद अरिंद कली ॥  
 बर लंगरि राइ<sup>(७)</sup> उतंग घलं ।  
 (८)बय देहिय जानि सु बाहु बलं ॥  
 इक रंग सुअंग करंत<sup>(९)</sup> रनं ।  
 कर पाइ<sup>(१०)</sup> सु अणय<sup>(११)</sup> हथ्य तनं ॥  
 लरि लोह<sup>(१२)</sup> लुहांनय कित्ति करं ।  
 अरि वाइव<sup>(१३)</sup> घूर<sup>(१४)</sup> ज्यौं<sup>(१५)</sup> पत्त धरं<sup>(१६)</sup> ॥  
 भजि भौह<sup>(१७)</sup> चंदेल<sup>(१८)</sup> सु घेल पंगं<sup>(१९)</sup> ।  
 धर धूसन<sup>(२०)</sup> भुम्मिय जंपि जगं ॥  
 देवराज<sup>(२१)</sup> सु वग्गरि बंध<sup>(२२)</sup> बियं<sup>(२३)</sup> ।  
 जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं<sup>(२४)</sup> ॥

(१) D समंचिय । (२) D उछार । (३) D बार । (४) D नरेंद । (५)  
 Read *chāāvamḍa*, m. c. ; anomalous length for two shorts. (६)  
 D घ, om. ग्ग । (७) D राय । (८) D बव । (९) D करंन । (१०) B पाद,  
 D पाय । (११) D अणिय । (१२) D लोहानीय । (१३) D वायव । (१४)  
 D घुर । (१५) Read *jyaū*, m. c. (१६) D वर । (१७) B T नांह ।  
 (१८) Read *chādelā*, m. c. (१९) D पंगं । (२०) D धूसन । (२१) Read  
*dēvarāja*, m. c. (२२) T बंधि । (२३) D बीयं । (२४) D लीयं ।



उदि<sup>(१)</sup> उदिग बाह पगार बली ।  
 हरि तेज<sup>(२)</sup> ज्यों<sup>(३)</sup> रोर फटंत षली ॥  
 नरनाह सुकंठ का<sup>(४)</sup> कित्ति करौं<sup>(५)</sup> ।  
 भर भीषम<sup>(६)</sup> भारथ सुद्धि<sup>(७)</sup> धरौं<sup>(८)</sup> ॥  
 भय भट्टिय<sup>(९)</sup> भांन जिहांन जपै<sup>(१०)</sup> ।  
 तिहि<sup>(११)</sup> नाम सुनें<sup>(१२)</sup> अरि अंग<sup>(१३)</sup> कपै<sup>(१४)</sup> ॥  
 सुत नाहर नाहर के क्रमयं<sup>(१५)</sup> ।  
 तिन कंकनि<sup>(१६)</sup> बंकि<sup>(१७)</sup> बियं अमयं<sup>(१८)</sup> ॥  
 रज राम गुरं षग भ्रंम बली ।  
 जिन कित्ति<sup>(१९)</sup> दिसा<sup>(२०)</sup> दस<sup>(२१)</sup> वट्ठि<sup>(२२)</sup> चली ॥  
 बडगुज्जर रांम नरिंद समं ।  
 जिन कंदल रुद्धि उठंत<sup>(२३)</sup> भ्रमं<sup>(२४)</sup> ॥  
 कवि चंद हकारि सुअग<sup>(२५)</sup> लियै<sup>(२६)</sup> ।  
 वर भट्टिय<sup>(२७)</sup> भांन मयं कवियै<sup>(२८)</sup> ॥

(१) C B उदि c. m. D उदै, T om. (२) T तज । (३) Read *jyāi* m. c. (४) Read *kā*, m. c. (५) A B करौ । (६) B भीषम । (७) D सुध । (८) D धरौ, B घरौं । (९) D भट्टीय । (१०) D जपै । (११) D तिहा । (१२) T सुनें, D सुनै, B सुने । (१३) B अग । (१४) A T कपै *kāpai*. (१५) T फमयं । (१६) A D कंकन । (१७) A कंक, B बंक, D वंक । (१८) D ह्मयं । (१९) D कित्ती, B कीत्ति । (२०) B दसा । (२१) D दिस । (२२) B बट्टि, D बंढि, T वट्टि । (२३) A उठंत । (२४) D भ्रमं । (२५) D अअग । (२६) D लीयै । (२७) D भट्टीय । (२८) D कवीयै, T कवियां ।

रघुवंसिय<sup>(१)</sup> रांम सु रंग बली ।  
 कन<sup>(२)</sup> कूजि न नांम नरिंद कली ॥  
 बर रांम नरिंद नरिंद समं ।  
 तिहि<sup>(३)</sup> कंदल उट्टि रुधं<sup>(४)</sup> सु जमं ॥  
 जिहि वस्त्र सु सस्त्रय<sup>(५)</sup> अंग<sup>(६)</sup> करं ।  
 घरि<sup>(७)</sup> द्वै भर उट्टि<sup>(८)</sup> ज बूंद भरं ॥  
 भगवत्ति अराधन न्याय करै<sup>(९)</sup> ।  
 रघुवंसिय<sup>(१)</sup> किह्ल नरिंद<sup>(१०)</sup> वरै<sup>(११)</sup> ॥  
 जिन जित्ति<sup>(१२)</sup> जाइ<sup>(१३)</sup> पंजाव<sup>(१४)</sup> धरं ।  
 जिन पंडिय रावर जुइ<sup>(१५)</sup> जित्यौ ।  
 धर मंडव मुंड<sup>(१६)</sup> चका<sup>(१७)</sup> वरत्यौ<sup>(१८)</sup> ॥  
 पावार सलष्य सु पुत्र<sup>(१९)</sup> बली ।  
 न्वप जैतस जैत कि<sup>(२०)</sup> कित्ति<sup>(२१)</sup> कली ॥  
<sup>(२२)</sup>सुचलै बर भाइ<sup>(२३)</sup> दुभाइ<sup>(२४)</sup> भरं<sup>(२५)</sup> ।  
 तिन सीस<sup>(२६)</sup> सु जंगलदेस धरं ॥

(१) D ०वंसीय । (२) D कनक जित्त नांम etc. (३) D तिह । (४) D रुधि । (५) D लय om. स । (६) T अंग । (७) D घरी, T घुरि । (८) D पठि । (९) D करै । (१०) D नरेंद । (११) D बरें । (१२) D जित्तीय । (१३) D जाय । (१४) Read *pājāba*, m. c. (१५) D जूध । (१६) D मुंद । (१७) D चकी । (१८) D चरत्यौ । (१९) D पुत्र । (२०) D om. कि । (२१) D कीति । (२२) D सुचलें । (२३) D भाय । (२४) D सुभाय । (२५) D बरं । (२६) A सी, om. स ।

धनवंत धनू नृप धाव रयं ।  
 जित तित्त नही मनसा वरयं ॥  
 परताप प्रथीपति नाम वरं ।  
 उपज्यौ<sup>(१)</sup> कुल पंडव जेति गुरं ॥  
 तन<sup>(२)</sup> तूंअर<sup>(३)</sup> नेत चिनेत<sup>(४)</sup> वरं ।  
<sup>(५)</sup>परिहार पहार सु नांम धरं ॥  
 सु<sup>(६)</sup> जयौ जय सह<sup>(७)</sup> पुंडीर बली ।  
 जिन कै<sup>(८)</sup> भुज जंगलदेस कली ॥  
 परसंग सु षोचिय<sup>(९)</sup> षग्ग बली ।  
 चमरालिय<sup>(१०)</sup> कित्ति नरंगद<sup>(११)</sup> हली ॥  
 नव कित्ति नरिंद सु अल्लनयं ।  
 भजि भारथ कुं<sup>(१२)</sup> भज<sup>(१३)</sup> किल्लनयं ॥  
 सारंग सुरंगिय<sup>(१४)</sup> कित्ति बली ।  
 वर चालुक चार नक्षत्र<sup>(१५)</sup> हली ॥  
 परि पारथ क्रंन कुवार न्वपं ।  
 तिहि पारथ पूजय जुद्ध<sup>(१६)</sup> जयं ॥

(१) D उपज्यौ । (२) D तनु । (३) D तांअर । (४) D नृतेप । (५)  
 D परिहारि पहारि । (६) B स । (७) D चंद । (८) D कै । (९) D  
 षीचीय । (१०) A चमराजिय, D चमरालीय । (११) D नरेंद । (१२) D  
 कौं । (१३) D भुज, T भजि । (१४) D सुरंगीय । (१५) Read *nakhatra*,  
 m. c. ; D नक्षत्र । (१६) D जुध ।

षग षंडिय छत्रिय छित्त रनं ।  
 सब सामंत<sup>(१)</sup> सूर समोह तनं ॥  
 हहकारि उमै न्वप पास लिए ।  
 समतंमि<sup>(२)</sup> सुमंचिय<sup>(३)</sup> मंच<sup>(४)</sup> विए ॥  
 जित जाध विरोधत राज करै<sup>(५)</sup> ।  
 तिन में मुष भारथ <sup>(६)</sup>नांउ सरै<sup>(७)</sup> ॥  
 कविचंद सु नामय<sup>(८)</sup> जाति क्रमी ।  
 तिन के<sup>(९)</sup> गुन चंपि नरिंद<sup>(१०)</sup> भमी<sup>(११)</sup> ॥  
<sup>(१२)</sup>सिर अंतय आतप छत्र धरगौ<sup>(१३)</sup> ।  
<sup>(१४)</sup>कनकावलि<sup>(१५)</sup> मंडिय मंडि हरगौ ॥  
 कवि कित्ति प्रमोदय<sup>(१६)</sup> राज चली ।  
 प्रथिराज विराजत देह बली ॥  
 वर मंगल बुद्ध<sup>(१७)</sup> गुरुं<sup>(१८)</sup> सुधरं ।  
 सुक सकय वक्रय बुद्धि नरं ॥  
 तिन मांहि विराजत राज नरं ।  
 सु मनें छवि मेरय भान फिरं ॥

(१) Read *sāmāta*, m. c. (२) D संमंतंसि, T समंतमि । (३) D सुमंचिय ।  
 (४) D मंत । (५) D करैं । (६) D नंउ । (७) D सरैं । (८) D नापय ।  
 (९) D कै । (१०) D जंपि । (११) D भमी । (१२) D तिर अंतीय ।  
 (१३) T षरै । (१४) A om. this whole line, exc. the first letter क.  
 (१५) D ०चलि । (१६) D प्रमोदन । (१७) A बुद्धि, D बुध । (१८) A  
 D गुरुं ।

बर सेंगर<sup>(१)</sup> स्वर कल्याण नमं ।  
 जिहि भारथ कौ प्रथिराज समं ॥  
 जयचंद जंघारय<sup>(२)</sup> नाहरयं ।  
 न्वपराज सुरष्यन साह रयं ॥  
 मकवांन महीपति<sup>(३)</sup> मीर<sup>(४)</sup> बली ।  
 प्रथिराज सु जानत जो तिछली ॥  
 कठहेरिया<sup>(५)</sup> सारंग<sup>(६)</sup> स्वर बली ।  
 प्रथि ताहि<sup>(७)</sup> न<sup>(८)</sup> पुज्जत जोति कली ॥  
 जगि जंबुअ राव हमीर बरं ।  
 छितिपत्ति कंगूरह<sup>(९)</sup> स्वर गुरं<sup>(१०)</sup> ॥  
 नररूप नराइन<sup>(११)</sup> राज भरं ।  
 भर भारथ जुगिनि<sup>(१२)</sup> पाच<sup>(१३)</sup> करं ॥  
 गुरराज सु कंहय जंम्म<sup>(१४)</sup> जिसौ ।  
 मग बेद<sup>(१५)</sup> चलंतह ब्रह्म इसौ ॥  
 गुरु<sup>(१६)</sup> ग्यारह सैं<sup>(१७)</sup> सक सैन बरं ।  
 प्रथिराज चढंतह वाज धरं ॥

(१) D सिंगर । (२) Read *jāghārāya*, m. c. (३) D महीपति, c. m.  
 (४) D मार । (५) D कठहेरीय; read *kaṭhaheṛiyā*, m. c. (६) Read  
*sārāya*, m. c. (७) B T साहि । (८) D त । (९) Read *kāgūraha*,  
 m. c.; D कंगूरह, c. m. (१०) B T गुरं, c. r. (११) D नारायण ।  
 (१२) D जूगिनि । (१३) D पच । (१४) D जंम । (१५) B T बेद । (१६)  
 D गुर । (१७) A D सैं ।

चलि सेन मिली करि एक ठयं ।  
 बजि बंब किअंमर<sup>(१)</sup> धुंमरयं ॥  
 झननंकत घग्ग फरो धरयं<sup>(२)</sup> ।  
 भजि डंक ज्यौं डकत भूत भयं<sup>(३)</sup> ॥  
<sup>(४)</sup>गहारात गजिंद सुरिंद<sup>(५)</sup> समं ।  
 जनु छुटि<sup>(६)</sup> जलह विहह<sup>(७)</sup> भ्रमं ॥  
 चलि मल्लन हल्ल ज्यौं<sup>(८)</sup> रोस रसे<sup>(९)</sup> ।  
 जम जूथ मनो दल दंद ग्रसे<sup>(१०)</sup> ॥  
 हथनारि सुधारि के<sup>(११)</sup> कंक घगो ।  
 धरि<sup>(१२)</sup> सिष्ट सुदिष्ट कि इष्ट लगी ॥  
 कमनैत<sup>(१३)</sup> बनैत कि नेत धरं<sup>(१४)</sup> ।  
 मंडि<sup>(१५)</sup> मुष्टि मही<sup>(१६)</sup> जनु रूप करं ॥  
 फहराति<sup>(१७)</sup> सुबैरष<sup>(१८)</sup> वाइ<sup>(१९)</sup> बरं ।  
 सु मनो घन फुट्टिय अगि झरं ॥  
 सब सेन सभा इह व्रन कहै<sup>(२०)</sup> ।  
 वरषा<sup>(२१)</sup> रु वसंत दै<sup>(२२)</sup> छब्बि लहै<sup>(२३)</sup> ॥ ५ ॥

(१) D कियंमर । (२) D धरियं । (३) A नयं । (४) A reads गह राग  
 तजिंद सुनरिंद समं । (५) D छुरिंद । (६) D छुटि । (७) T विहहु ।  
 (८) Read *jyō* ; D जौं । (९) B D रसे, T रसै । (१०) D ग्रसें । (११)  
 Read *kē*, m. c. (१२) D धजि । (१३) T कमनैत ; D कमनेत बनैत  
 किनेत । (१४) T धरें । (१५) Read *māḍi*, m. c. (१६) D महि । (१७)  
 D फहरति । (१८) B D सुबैरष, T सुबैरष । (१९) D वाय । (२०) D  
 कहै । (२१) D वरषावसंत । (२२) Read *dvaī*, m. c. (२३) D लहै ।

दुहा<sup>(१)</sup> ॥

जो बुल्लै<sup>(२)</sup> सामंत सथ  
 तौ<sup>(३)</sup> चल्लै प्रथिराज ।  
 करि उप्पर जैचंद कै  
 अरि बंधों<sup>(४)</sup> सिर ताज ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

सो अग्या सामंत  
 स्वांमि दोनी सु मानि<sup>(५)</sup> लिय ।  
 ज्यों मंचह<sup>(६)</sup> गुर ग्यांन  
 धीय मानंत तंत<sup>(७)</sup> लिय ॥  
 ज्यों सुध्रम<sup>(८)</sup> उबरत्त  
 बीर चळ्यौ<sup>(९)</sup> परिमानं ।  
 ज्यों गुर बच<sup>(१०)</sup> लहु विदुष  
 तत्त सोई<sup>(११)</sup> करि जानं ॥  
 (१२)साध्रंम चिया अग्या न्वपति  
 मानं मोह जानै न अंग<sup>(१३)</sup> ।

---

(१) D दोहरा । (२) D बोलैं । (३) D भौ । (४) B D बंधौ । (५) D मांनीय । (६) T मचड । (७) D तंसनिय । (८) D सुधंम । (९) T चडैगा । (१०) D वरनड । (११) A B सोई, c. m. (१२) A साध्रंम, D साधंम, T साधंम । (१३) Read āga, m. o.



सामंत खूर प्रथिराज सम  
सबल बीर चखेत संग<sup>(१)</sup> ॥ ७ ॥

दुहा ॥

अति आतुर आरंभ<sup>(२)</sup> बल  
(३)गिनी न तिन गति काज ।  
तिन उप्पर जैचंद कौ  
सो सज्जिय प्रथिराज ॥ ८ ॥

छंद चोटक ॥

सोइ<sup>(४)</sup> सज्जिय खूर नरिंद बलं ।  
छिति धारन केां छिति छत्र<sup>(५)</sup> कलं ॥  
मति मंच वरष्य खूर बरं ।  
धर पर्वत<sup>(६)</sup> ज्यों भर कन्ह करं ॥  
आवृत्त अहीर<sup>(७)</sup> करै वलयं ।  
सु रष्यौ गिर एक हरी छलयं<sup>(८)</sup> ॥  
सु करै<sup>(९)</sup> बल बीय आवृत्त भरं ।  
नृपराज सुकंठिय<sup>(१०)</sup> कंठ गुरं ॥  
हरसिंघ<sup>(११)</sup> महाबल बंधु बियौ<sup>(१२)</sup> ।

(१) Read *sāga*, m. c. (२) D आभंग । (३) D गिनि न ति काज ।  
(४) Read *sōi*, m. c. D सोय । (५) A कद्र ? (६) D परबत । (७) D  
आहिर । (८) D तलयं । (९) D करै । (१०) D सुकंठीय । (११) B  
हरसिंह । (१२) D बीयौ ।



बरसिंघ बली अरि छच लियौ<sup>(१)</sup> ॥  
 बर जहव जांम जुबांन नरं ।  
 जिन कंठय<sup>(२)</sup> ढिल्लिय<sup>(३)</sup> राज गुरं<sup>(४)</sup> ॥  
 नरनाह र<sup>(५)</sup> टांक नरिंद नमं ।  
 तिहि कंठ अरी धर<sup>(६)</sup> धंम्म तमं ॥  
<sup>(७)</sup>पंच मुष्य ववार सु पुंज बरं ।  
 मद<sup>(८)</sup> मोष विछुट्टिय काल झरं ॥  
 परपत्त सु पल्लन अल्लनयं ।  
 भुज रषिय भारथ ढिल्लनयं<sup>(९)</sup> ॥  
 बर तूंअर<sup>(१०)</sup> रावति बांन बली ।  
 जिन<sup>(११)</sup> कित्ति कलाधर धंम छली ॥  
 बर बीर<sup>(१२)</sup> कंठी<sup>(१३)</sup> पुरसांन रनं<sup>(१४)</sup> ।  
 हय चीय अहुट्टपती सुभनं ॥  
 कंठीर कलकूत<sup>(१५)</sup> जैत बली ।  
 जिहि ओटत जंगलदेस भली ॥  
 नटप रूप नरिंद<sup>(१६)</sup> ति वाह नयं ।

(१) D लीयौ । (२) A कंठय, B D कंठिय । (३) D ढिल्लिय, A टिढलिय ।  
 (४) A B गुरं । (५) A ठ । (६) B धरि । (७) D पंचमु पवार सु पुंज बरं,  
 T पंचमुष्यववार सु पुंज बरं । (८) D मद । (९) B ढिल्लनयं । (१०) D  
 तौंअर, A तुंअर, T तुअर । (११) D जिनि कीति । (१२) B बार । (१३)  
 Read *kāṭhī*, m. c. ; D कठी, B कढी । (१४) A B T नरं । (१५) A  
 T कलछत, B करछत, D कलकूत । (१६) D रजदं ।

पुरसांन दलं षिति साह नयं ॥  
 जस रत्ति<sup>(१)</sup> सुरत्ति सुरत्त गुरं ।  
 षित की षित कंध<sup>(२)</sup> परै<sup>(३)</sup> न धरं ॥  
 जन एस गुरेस सु बंध बली ।  
 जिहि निडुर उप्पर पष पुली<sup>(४)</sup> ॥  
 परसंग पविच<sup>(५)</sup> पविच छती ।  
 पुरसांन दलं जिन जुड<sup>(६)</sup> मनी<sup>(७)</sup> ॥  
 अबनीस उमाह तुरंग तुरं ।  
 जिहि बंधन<sup>(८)</sup> वास उगाहि<sup>(९)</sup> धरं ॥  
 जिन गुज्जर तापति<sup>(१०)</sup> रत्ति रनं ।  
 कयमासय<sup>(११)</sup> उप्पर कीय घनं ॥  
 महनंग महामुरनेन समं ।  
 तिन राज सुरषिय<sup>(१२)</sup> जित्ति क्रमं ॥  
 वरदावलि<sup>(१३)</sup> चंद नरिंद पढी<sup>(१४)</sup> ।  
 सु मनेां कल जाति सरीर बढी ॥  
 सभ<sup>(१५)</sup> सोहत सित्त रु<sup>(१६)</sup> पंच इकं ।  
 जिन जानत मोहमयं करिकं ॥

(१) D रत्त । (२) D कंध । (३) D परै । (४) D चली । (५) B वविच ।  
 (६) D जूष । (७) B मनी । (८) D बंधन वास, T बंधन वास । (९) D  
 उगाहि । (१०) D तापिति । (११) D कैमासय । (१२) D सुरषिय । (१३)  
 D बिरदावलि । (१४) B पढी, D गढी । (१५) D सुभ । (१६) D रु ।

कविनां मति जित्तिय जांनि तिनं ।  
 तिन की बिरदावलि जंपि फुनं ॥  
 सत में<sup>(१)</sup> षट राजत<sup>(२)</sup> राज समं ।  
 तिन के जुव नाम कहों<sup>(३)</sup> ति क्रमं ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

निडुर सूर नरिंद  
 कंन् चहुआंन सपूरं<sup>(४)</sup> ।  
 जियड<sup>(५)</sup> जैत जैसिंघ<sup>(६)</sup>  
 सलष पावार ति सूरं<sup>(७)</sup> ॥  
 जाम देव जद्व जु-<sup>(८)</sup>  
<sup>(९)</sup>वांन भारथ्य पत्ति सिर ।  
 वर रघुवंसी राम  
 दुग्ग महि<sup>(१०)</sup> कोन तास वर ॥  
 वर बीरय<sup>(११)</sup> रक्त परै<sup>(१२)</sup> सुनिय  
 रुधिर बूंद<sup>(१३)</sup> कंदल परहि ।

(१) A में, T ने । (२) D राजति । (३) D कहो । (४) D संपूरं ; read *sāpūram*. (५) D जायड । (६) A T जैसिंघ । (७) D सूरं । (८) D जूवांन । (९) A B T add वांन to the preceding half-line ; thus जाम देव जद्व जुवांन । भारथ्य पत्ति सिर ॥ This gives an anomalous pause at the 14th instant, instead of at the 11th. On the other hand B reads the two following lines : भारथ्य पत्ति सिर वर । रघुवंसी इक रामं, making it to be a separate distich. (१०) D मनहि । (११) A B T बीर्य । (१२) D पदं । (१३) B D बूंद ।

मधि मधि मुहुरत<sup>(१)</sup> इक्क बरं<sup>(२)</sup>

अरि बरगन रुंधहि भिरहि ॥ १० ॥

सौ<sup>(३)</sup> सामंत प्रमांन

उगि अंकूर बीर रस ।

<sup>(४)</sup>रौद्र भयानक रस्स

अंग<sup>(५)</sup> लग्गे सुभंत तस ॥

राज सत<sup>(६)</sup> म सातुक्क<sup>(७)</sup>

साघ अगौ<sup>(८)</sup> अधिकारिय ।

जथ्य कथ्य आरुहिय

रत्ति ढिल्लोपति धारिय ॥

जंगलू<sup>(९)</sup> देस जंगल न्वपति

जंगल<sup>(१०)</sup> वै वर सूर षट ।

पुरसांन षांन उप्पर चढिय

बर बीरारस बीरपट ॥ ११ ॥

अनल दंग अरि लगि

उगि अगिवान बीर रस ।

सामंता सत भाव<sup>(११)</sup>

पंग उप्पर<sup>(१२)</sup> कीजै कस ॥

(१) A मुहुरत, T मुहुरत । (२) D वेरं । (३) T सौ । (४) D रुधि भयानक पत्त । (५) T अंग । (६) B समत, D तत । (७) A सातुक्क । (८) D अगं । (९) D जंगल । (१०) T जंगले । (११) D भव । (१२) D उपरव कीजै ।

पंच घटी<sup>(१)</sup> सौ कोस  
 राज अग्न<sup>(२)</sup> दिल्ली तह ।  
 साम दान अरु<sup>(३)</sup> भेद  
 दंड निर्णय<sup>(४)</sup> साधौ जह<sup>(५)</sup> ॥  
 मन वच क्रम कह कह कल्यौ  
 अल्प<sup>(६)</sup> न सुर सहय सुघट ।  
 दुजराज संधि<sup>(७)</sup> गुरराज कौ  
 सद्धि महरत चट्टिपट ॥ १२ ॥

छंद चोटक ॥

प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतबिंब<sup>(१०)</sup> नृपं ।  
 ससिराज इकं प्रतिव्यंब थपं<sup>(११)</sup> ॥  
 प्रतिव्यंबह मज्झ इकंत उभै ।  
 चहुआन रु सांमंत<sup>(१२)</sup> स्वर सुभै<sup>(१३)</sup> ॥  
 दिस राकय अर्कय<sup>(१४)</sup> थान बियौ ।  
 तम भंजित तेज सु राज लियौ ॥  
 सोइ<sup>(१५)</sup> लच्छि हयगाय मंत पुली ।

(१) D घटि सों । (२) D अग्नि ; the line does not scan. (३) D अरि । (४) D निरनय । (५) D जिह ; A B T जहं । (६) D अल्पं ।  
 (७) D सिंधि गुरराज । (८) D सिद्धि महरति चट्टि पट ॥ (९) D प्रति प्रति  
 प्रत्य चंदपं नृपं(?) । (१०) B om. (११) A B T पथं, c. r. ; or read नथं  
 for नृप in the preceding line. (१२) Read *sāmānta*, m. c. (१३) D  
 सुभै । (१४) D अरकय । (१५) Read *sōi*, m. c. ; D सोय ।

रवि की किरनावलि तेज डुली ॥  
पर पष्पर स्याह तुरंग रनं ।  
सु मनों घन सोभत मेर तनं ॥  
सु बिचें बिच राजत राज रती ।  
सु मनों प्रतिबिंब कि देव किती ॥ १३ ॥

दूहा ॥

इत्ते मंतन इक्क मुष  
न्रप सेवक अरु इष्ट ।  
एक मंच एकह बुले  
बियौ न जंपै जिष्ट ॥ १४ ॥  
तिते सूर<sup>(१)</sup> तिहि रति बर  
ग्रेह सपत्ते बीर ।  
पंचमि वर वैसाष धुर  
लै जु<sup>(२)</sup> वचन ते धीर ॥ १५ ॥

अरिल्ल ॥

अण्ण अण्ण गय ग्रेह ससूर<sup>(१)</sup> ।  
मरन महरत<sup>(२)</sup> मरन न पूरं ॥  
चढे बीर चावहिसि रंगं<sup>(३)</sup> ।  
मनों षह हलिय मेघ असंगं<sup>(४)</sup> ॥ १६ ॥

(१) D has ũ. (२) D जू। (३) D रंघं। (४) D असिंघं।

दूहा ॥

मेघ पंति बहल विषम

बल दंतिय<sup>(१)</sup> सजि स्त्रर ।

चढि जिहाज पर दिषियै<sup>(२)</sup>

धर नहि परै<sup>(३)</sup> करूर<sup>(४)</sup> ॥ १७ ॥

धरनी धरतिय गुननि<sup>(५)</sup> बर

लिय<sup>(६)</sup> कारन परिमान ।

स्त्रर<sup>(७)</sup> उगै<sup>(८)</sup> सत पत्र ज्यौं

<sup>(८)</sup>ज्यौं भइव बल भान ॥ १८ ॥

छंद चोटक ॥

सु अंबर बीर सु चोटक छंद ।

छिती<sup>(९)</sup> छिति मत्त<sup>(१०)</sup> हयगाय इंद ॥

रनंकिय<sup>(१)</sup> बीर नफोर रवह ।

ढलक्किय<sup>(१)</sup> ढाल सु ढिल्लिय<sup>(११)</sup> भइ ॥

षनक्किय<sup>(१)</sup> संकर अंदुन अंद ।

जग्यौ मनु<sup>(१२)</sup> भारथ बीरय कंद ॥

छिती<sup>(१२)</sup> छिति पूर<sup>(१३)</sup> हयगाय भार ।

---

(१) D दंतय । (२) D दिषियै । (३) D परें । (४) D has ४. (५) D गुननि । (६) D has ६. (७) D उगै । (८) D reads ज्योतजबलदलभान । (९) A छिति, D छित, c. m. (१०) B मति । (११) D ढिलीय । (१२) D मनो *manō*. (१३) A छिति c. m.

दिसौ दिसि दिष्पहि<sup>(१)</sup> ज्यौं जलधार ॥  
 ठरै<sup>(२)</sup> दिगपाल सु अट्टय<sup>(३)</sup> मेर ।  
 भए भयभीत भयानक भेर ॥  
<sup>(४)</sup>सुनै स्तुति छत्रिय<sup>(५)</sup> सह निसांन ।  
 दिसा पुरसांन सु बट्ठय<sup>(६)</sup> पांन ॥  
 मंडे मयमत्त <sup>(७)</sup>गहंमह राज ।  
 उठै<sup>(८)</sup> बर अंकुर मुंछ विराज ॥  
 कहै कविचंद सु उप्पम ताहि ।  
 मनें सुर लगिय<sup>(९)</sup> चंद कलाहि ॥  
 अपे प्रथिराज<sup>(५)</sup> समप्पय वाज ।  
 तिनें दिषि<sup>(९)</sup> पंतिय<sup>(५)</sup> प्रब्बत लाज ॥  
 दुअं दुअ बंधिर के बन जार ।  
 चढे बर छत्रिय सूर झकोर ॥  
 हयहल पंति<sup>(१०)</sup> सुभंतिय ठानि ।  
 मनें बग पंति घनी घटवांनि<sup>(११)</sup> ॥  
 मयं मय रुद्र<sup>(१२)</sup> सुरुद्रय सार ।  
 भयौ जनु अंत प्रलै दुति वार ॥

(१) B दिष्पहि । (२) D ठरं । (३) D मठय । (४) D सुनें अति । (५)  
 D has ६. (६) B बट्टय । (७) B महम्मह, D गहंमग । (८) D उठे । (९)  
 D देषि । (१०) D संजि सु मंतिय । (११) So D; A B T घटवांन c. r. ।  
 (१२) D रुद्र ।



डहडुह<sup>(१)</sup> बज्जय डक्कय मात ।  
 डुलै<sup>(२)</sup> तिन बीर गिरब्बर गात ॥  
 सु<sup>(३)</sup>दिष्पन वांम फुरक्कय नैन ।  
 चळ्यौ जनु बीर परब्बत बेन ॥  
 इसे दोउ<sup>(४)</sup> बीर विराजत रिंघ ।  
 गुफा इक मज्झ<sup>(५)</sup> मनें दुअ सिंघ ॥  
 चले<sup>(६)</sup> ग्रह छंडि ग्रह ग्रह स्वर ।  
 कही कविचंद सु उप्पम पूर<sup>(७)</sup> ॥  
 कहै<sup>(८)</sup> करुना रस कंतहि<sup>(९)</sup> चीर ।  
 उय्यौ तहां<sup>(१०)</sup> जित्त भयानक बीर ॥  
 लिषी<sup>(११)</sup> लिषि चित्र ज्यौं<sup>(१२)</sup> दंपति बेन<sup>(१३)</sup> ।  
 मनें पलटै दिन चाचिग नैन<sup>(१४)</sup> ॥  
 छिपा छिप होत<sup>(१५)</sup> प्रमांन प्रमांन ।  
 किधौं<sup>(१६)</sup> चकई सुप मुक्कय मांन ॥  
 भयौ मन<sup>(१७)</sup> बीरन बीर प्रमांन ।  
 भयौ करुना<sup>(१८)</sup> रस तीय प्रमांन<sup>(१९)</sup> ॥

(१) A B D T डहडह c. m. (२) D डुलै, T डलै । (३) D दप्पिन ।  
 (४) Read *dōu*, m. c., D दोऊ c. m. (५) B मज्ज । (६) D चलै ।  
 (७) D पुर । (८) D कहै । (९) D कंतह । (१०) Read *tahā*, m. c.  
 (११) A लिषि c. m. (१२) Read *jyañ*, m. c. (१३) D वैन, नैन ।  
 (१४) B T होम । (१५) D किधौ । (१६) D reads अर । (१७) D करुना ।  
 (१८) D निघान ।

दुह दिसि चित्त अचित्त अलोल ।  
 मनें दुअ<sup>(१)</sup> पास हलंत हिडोल<sup>(२)</sup> ॥  
 दोज<sup>(३)</sup> मझ<sup>(४)</sup> रष्यय<sup>(५)</sup> खर सनूर<sup>(५)</sup> ।  
 भजै करुना रस काइर<sup>(६)</sup> पूर ॥  
 मिले निप आइ<sup>(७)</sup> सु ठिल्लिय<sup>(८)</sup> थांन ।  
 कहै कविचंद बषांन बषांन ॥ १९ ॥

दूहा ॥

स्वामिधम्म सेां जुइ<sup>(९)</sup> मन  
 ज्यो बांबी दिसि सर्प<sup>(१०)</sup> ।  
 मग विषांन ज्यो अरिन बर  
 जग्गि बिरारस जप्प ॥ २० ॥

कवित्त ॥

जगति जग्य जनु बीर  
 जग्गि चय नेत अग्गि सिव ।  
 कै मचकुंद प्रमांन  
 गुफा वारुन सु दैत्य<sup>(११)</sup> लिव<sup>(१२)</sup> ॥  
 कै जग्या भसमास  
 दैत्य<sup>(११)</sup> भग्गा गोरीसं ।

(१) B दुअ c. m. (२) A B हिडोल । (३) Read *dōū*, m. c. (४) B मझ c. m. (५) D has *ū*. (६) D कायर । (७) D आय । (८) D ठिल्लिय । (९) D जूइ । (१०) D दिस सरप । (११) D दैत । (१२) D लिय ।

इसे खर सामंत

बीर चावहिसि दीसं ॥

दीनी न नृपति किन निरति बर

किहु<sup>(१)</sup> न सुनी जैचंद क्रम ।

वगं उपारि धार बलिय<sup>(२)</sup>

अभिलाषह<sup>(३)</sup> भारथ्य अम<sup>(४)</sup> ॥ २१ ॥

अभिलाषह अम गर्ब<sup>(५)</sup>

भयौ किलकिंचित खर<sup>(६)</sup> ।

ज्यो नल मति दमयंत

सेन सज्जी रन पूरं<sup>(६)</sup> ॥

भवर<sup>(७)</sup> सह सम सुमन<sup>(८)</sup>

प्रेम रस छुट्टिय<sup>(९)</sup> जंगं ।

सुवर राज<sup>(१०)</sup> चहुआन

करन<sup>(११)</sup> उप्पर वर पंगं ॥

माधुरत मधुर बांनी<sup>(१२)</sup> तजी

रजिय<sup>(१३)</sup> खर रंजित सुभर ।

छिति<sup>(१४)</sup> मत्त छित्त छत्रिय<sup>(१५)</sup> छितिग<sup>(१६)</sup>

दिपति दीप दिवलोकाधर ॥ २२ ॥

(१) D किहुं o. m. (२) D बलीय । (३) D अभिलाष om. च । (४) D अम । (५) D सम ग्रव । (६) D पुरं । (७) D नवर । (८) D सुरमन । (९) T छटिय, D छुटिय । (१०) D राजै । (११) A कर । (१२) D मानी । (१३) A रजियप, D रंजिय । (१४) B मत्ति, D मन छिति । (१५) B छत्रिय, D छित्रीय । (१६) D छियिग ।

बंद मोतीदाम ॥

दसं दिसि<sup>(१)</sup> पूरग<sup>(२)</sup> मध्यय<sup>(३)</sup> भार ।

चढ्यौ जनु इंद धनुष्यय<sup>(४)</sup> धार ॥

तुरंगन तुंग हरष्यय ईस ।

षरक्किय<sup>(५)</sup> नारद सारद<sup>(६)</sup> रोस ॥

छहं मित छोहय संकर हथ्य ।

कहै<sup>(७)</sup> कविचंद सु आपम कथ्य ॥

गर गजनेस सु सथ्यय बीर ।

रहै लगि भोर<sup>(८)</sup> तिनै लगि नीर ॥

<sup>(९)</sup>मनें कुत कूंतय बारय पुलि ।

गर मनु<sup>(१०)</sup> आरद संकर भुलि<sup>(११)</sup> ॥

<sup>(१२)</sup>करुनारस केलि क्रमी नह बीर ।

नच्यौ अदबुद्<sup>(१३)</sup> सु रुद्र डकीर ॥

इकं<sup>(१४)</sup> इस रस्स सु संतिय खर ।

दिषे मुष मत्त महामति नूर ॥

(१) D दिस । (२) D पूरग । (३) T मध्यप, D मतय । (४) D धनुष्यय । (५) B करक्किय । (६) D नारद । (७) A कहै । (८) D भोर निने । (९) D reads मनें कूंतय बारय बारय पुलि । (१०) D मनें । (११) A B T भुलि, D भुलि । (१२) Read *karunārasa*, m. c. ; an anomalous proceleusmaticus in the place of the amphibrach. (१३) B अनबुद्, D अदबुद् । (१४) A कं ।

सुलितांन<sup>(१)</sup> रु हिंदुअ बैर<sup>(२)</sup> प्रमांन ।  
 सु आदय<sup>(३)</sup> जुद्ध<sup>(४)</sup> निदांन निदांन ॥  
 दया बर हीन सगप्पन नथ्थि ।  
 उमा क्रत काज प्रजापति दच्छि<sup>(५)</sup> ।  
 तज्ज्यौ<sup>(६)</sup> चिन<sup>(७)</sup> मात उरगिाय लच्छि ॥  
 षिज्जे<sup>(८)</sup> सिर ईस पटक्किय जट्ट ।  
 भयौ जहां<sup>(९)</sup> जन्म सु बीरय भट्ट ॥  
 भिरी<sup>(१०)</sup> भिरि नंदिय<sup>(११)</sup> दंद प्रकार ।  
 पछै<sup>(१२)</sup> दछि<sup>(१३)</sup> दच्छिय<sup>(१४)</sup> दप्पि<sup>(१५)</sup> उचार ॥  
 इतं<sup>(१६)</sup> मिति<sup>(१७)</sup> मंत सु कंतिप<sup>(१८)</sup> राज ।  
 भयौ बर बीर भयानक साज ॥  
 दिसो दिसि<sup>(१९)</sup> पच्छिम हिंदुअ मेछ ।  
 बज्ज्यौ<sup>(२०)</sup> रन तूर रवहय एछ ॥  
 मिली<sup>(२१)</sup> जनु जंगम जोग वरीस ।  
 (२२) दसकंध डुलावत पब्बत<sup>(२३)</sup> रीस ॥

(१) D सुरतांन ; the first foot of this line is defective. (२) D बैर । (३) D आदिय । (४) D reads आंनि । (५) D दिछि । (६) D तज्ज्यौं । (७) D जिन । (८) D षिजे । (९) Read *tahā*, m. c. (१०) A D T भिरि c. m. (११) D नदीय । (१२) D पछें । (१३) A दक्खि । (१४) D देप्पिय । (१५) B दछि । (१६) D इतनिति । (१७) B ममि मंति । (१८) D कंतीप । (१९) D दिस । (२०) A बज्ज्यौं । (२१) A D मिलि c. m. (२२) B दसकंध ; read *dasakādhā*, m. c. ; anomalous prosceleusmatic for amphibrach. (२३) A B D T प्रवत, c. m.

तज्यौ जहां<sup>(१)</sup> मांन लगी पिय कंध ।  
 भयौ रस संत सुमंतिय<sup>(२)</sup> संध ॥  
 सुजाति जरा नृप हकि प्रमांन ।  
 चळ्यौ नित वेर बली चहुआंन ॥ २३ ॥

कवित्त ॥

चाहुआंन बर बलिय  
 भार भारथ रस<sup>(३)</sup> भिनौ ।  
 मधुर<sup>(४)</sup> सुधर<sup>(५)</sup> सिंधु<sup>(६)</sup> रस<sup>(७)</sup>  
 अंग चावहिसि छिनौ<sup>(८)</sup> ॥  
 सुबर सेन सामंत  
 सुबर बल बीर निनारे<sup>(९)</sup> ।  
 मउझ<sup>(१०)</sup> मझह आटत  
 देव जनु जुझ<sup>(११)</sup> हकारे<sup>(१२)</sup> ॥  
 कुसमिस्त<sup>(१३)</sup> जुझ<sup>(१४)</sup> देवह करन  
 रथ<sup>(१५)</sup> सु रथ हय हय ति नर ।  
 सामंत खर पुज्जै<sup>(१६)</sup> नही  
 बर कंदल उडैति<sup>(१७)</sup> धर ॥ २४ ॥

(१) D तहां तजि ; read *jahā*, m. o. (२) D has *ī*. (३) D ख for रस । (४) D has *ū*. (५) D रसि । (६) D बिनौ । (७) D •रें । (८) D repeats मझ । (९) A कुसमस्त । (१०) D रियि । (११) B पूजें, D पूजै । (१२) D उठंत ।

उरग बिंद रवि<sup>(१)</sup> उट्टै<sup>(२)</sup>  
 सीस हक्कै<sup>(३)</sup> धर नचै<sup>(४)</sup> ।  
 देवा सुर संग्राम  
 देव पूजा<sup>(५)</sup> देवंचै ॥  
 इंद्र जुद्ध<sup>(६)</sup> तारक  
 सोइ<sup>(७)</sup> तत्तह अधिकारी<sup>(८)</sup> ।  
 पंच पंच पंडव सु  
 भीम दुर्जोधन<sup>(९)</sup> भारी ॥  
 गज मंत दंत कट्ठै<sup>(१०)</sup> सुअत  
 दैवत जुध<sup>(१०)</sup> सामंत रन ।  
 उदयै<sup>(११)</sup> जुद्ध आवृत्त मिति<sup>(१२)</sup>  
 नहिन मेछ हिंदू<sup>(१३)</sup> छपन<sup>(१४)</sup> ॥ २५ ॥  
 मिले खुर<sup>(१५)</sup> सामंत  
 मंत सज्जिय<sup>(१६)</sup> निडुर बर ।  
 कहां<sup>(१७)</sup> सु प्रांन संग्रहै<sup>(१८)</sup>  
 पंच किहि जाइ<sup>(१९)</sup> मिलै घर ॥

(१) D रचि । (२) उट्टै, D उठि, read *utṭhai*, m. o. (३) D हक्के, नचें । (४) D has *ū*. (५) D has *ū*. (६) D सोय । (७) D इधकारी । (८) D दुरजोधन । (९) B कट्टै, D कट्टै । (१०) D सुध, T जुधा । (११) Read *uddayaū*, m. o.; D उदय । (१२) D मति । (१३) D छपन । (१४) D has *ī*. (१५) Read *kahā* and *samgrahaī*, m. o. (१६) D जाय ।

कोन<sup>(१)</sup> क्रम संग्रहै<sup>(२)</sup>

क्रम को<sup>(३)</sup> करै<sup>(४)</sup> सुदेहं<sup>(५)</sup> ।

कोन<sup>(१)</sup> जीव संग्रहै<sup>(२)</sup>

कोन<sup>(१)</sup> निमवै<sup>(६)</sup> सु<sup>(५)</sup> छेहं ॥

जैचंद आनि<sup>(७)</sup> सुरतांन बर

अधर राहु<sup>(८)</sup> लग्यौ अवर ।

षिन मत्ति दांन विप्र दीय बर

रहसि राह लग्यौ<sup>(९)</sup> सुधर ॥ २६<sup>(१०)</sup> ॥

कहै<sup>(११)</sup> निडर रडौर

<sup>(१२)</sup> सुनहु सामंत प्रकारं ।

कहौ<sup>(१३)</sup> देव को भ्रम<sup>(१४)</sup>

कित्ति संग्रहौ<sup>(१५)</sup> सुसारं ॥

वारि बूंद बुद<sup>(५)</sup> बुद

<sup>(१६)</sup> हय वारी स्रआव<sup>(१७)</sup> इत ।

(१) D कोन । (२) Read *samgrahai*, m. c. (३) D को । (४) D करै; read *karai*, m. c. (५) D has *ū*. (६) Read *nrimmavai*, m. c. (७) D आनि । (८) D राहु । (९) D लग्ये । (१०) D has ॥ २७ ॥, the numbers following regularly in the sequel; the mistake is merely in the numbering, ॥ २६ ॥ being omitted; there is no omission in the text. (११) D कहै । (१२) D reads सुनहु सगति प्रकारं । (१३) D कहौ, को । (१४) D धरम । (१५) Read *samgrahaū*, m. c. (१६) This line does not scan regularly. (१७) D has *ū*.



ज्यां वहल<sup>(१)</sup> वै छांहि

घास अग्री सुमत्ति भृति<sup>(२)</sup> ॥

इत्तनिय<sup>(३)</sup> देह की गत्ति बर<sup>(४)</sup>

तीय वांम चित्तै सुनर ।

मस्सान<sup>(५)</sup> पुरान रु कांम अंत<sup>(६)</sup>

अंत चित्त सहगति<sup>(७)</sup> धर ॥ २७<sup>(८)</sup> ॥

अंत<sup>(९)</sup> मत्ति सो<sup>(१०)</sup> गत्ति

अंत जामत्ति अमत्तिय<sup>(११)</sup> ।

पुब्ब<sup>(१२)</sup> धंम संग्रहै<sup>(१३)</sup>

पुब्ब गत्तिय सोइ<sup>(१४)</sup> गत्तिय ॥

<sup>(१५)</sup>तहां सु अंग कहि कंन्ह

बत्त<sup>(१६)</sup> नीरत्ति<sup>(१७)</sup> सुरत्तिय ।

दैव भाव संग्रहै<sup>(१८)</sup>

काल केवल गुणवत्तिय<sup>(१९)</sup> ॥

संचियै<sup>(२०)</sup> बेलि जं जं बधै

तं तं बुद्धि पुरांन बर ।

(१) D बहल । (२) B भृति, D भति । (३) D इनिय । (४) T घर ।  
 (५) D मसान c. m. (६) Read *āta*, m. c. (७) D सह० । (८) D ॥ २८ ॥  
 (९) D क्षति । (१०) D सोय गति । (११) D अमीतिय । (१२) D पुब्बै ।  
 (१३) D ०है । (१४) D सोय । (१५) Read *tahā*, m. c. (१६) D बर ॥  
 (१७) D निरति । (१८) D गुणवत्तिय । (१९) A ०ये, B ०यै, T संचिये ।

निघात घात पत्तिय सुबर

सुवृत काल निचरि सुनर ॥ २८<sup>(१)</sup> ॥

स्वामि निंद जिन सुनौ<sup>(२)</sup>

स्वामि निंदा न प्रगासौ ।

अह्निसि<sup>(३)</sup> वंछौ<sup>(४)</sup> मरन

भीर<sup>(५)</sup> संकरै<sup>(६)</sup> निवासौ ॥

तब बुल्यौ महनंग

छंडि इह मंच सस्त्र<sup>(७)</sup> गह<sup>(८)</sup> ।

अस्ति काज दड्डीचि<sup>(९)</sup>

दिए सुरपत्त<sup>(१०)</sup> मत्त बहु ॥

सुरपत्ति मत्त<sup>(११)</sup> किनौ<sup>(१२)</sup> सुबर

निबर अंग को अंगमय ।

जैचंद भूमि उच्चैलि<sup>(१३)</sup> कै

चढहु<sup>(१४)</sup> भूमि घर सुर्गमय<sup>(१५)</sup> ॥ २९<sup>(१६)</sup> ॥

गाथा ॥

के के न गया गुर<sup>(१७)</sup> ग्रहं ।

के के न काल संग्रहे हुंतं<sup>(१८)</sup> ॥

(१) D ॥ २८ ॥ (२) Read *sunau*, m. c. (३) D ० निस । (४) D वंछड ।  
 (५) A भार । (६) D ० रै । (७) B सच्छत्र गह । (८) T गेह । (९) A D  
 ० च, B T ० चिं । (१०) D सुरपत्ति मत्ति बहं । (११) D मत्ति । (१२) D  
 किनी । (१३) D उबेलि कै, T उच्चैलि कै । (१४) D चढहं । (१५) D  
 सुरगमय । (१६) D ॥ २० ॥ (१७) B गुर । (१८) D हुंतं ।

मंची जा प्रथिराजं ।

रष्ये जा बीर सो सस्त्रं ॥ ३०<sup>(१)</sup> ॥

साटक<sup>(२)</sup> ॥

जाता<sup>(३)</sup> जा मनसा<sup>(४)</sup> समस्त गुरयं मानस्य सा सुंदरी ।

ता भग्ना मन स्वर काइर बरं कलकिंचि किंचित्<sup>(५)</sup> रसै ॥

अभिलाषं छित्ति<sup>(६)</sup> गर्व तारुन विधे संसार<sup>(७)</sup> सहकारयं ।

बारं जा पारंग दिव्यत<sup>(८)</sup> गुरं दीसंति<sup>(९)</sup> दैवालयं<sup>(१०)</sup> ॥

॥ ३१<sup>(११)</sup> ॥

छंद भुजंगी ॥

प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा ।

तिनै धावतें<sup>(१२)</sup> होइ<sup>(१३)</sup> मारुत्त पंगा ॥

झमै<sup>(१४)</sup> झुम अगौ<sup>(१५)</sup> सुमंती न संधै ।

मनो ब्रह्म बिधि गंठि लै वाइ<sup>(१६)</sup> बंधै ॥

पुजै पंष अंघी मनं षीन धावै ।

तिनं उप्पमा<sup>(१७)</sup> कोन कविचंद लावै<sup>(१८)</sup> ॥

(१) D ॥ ३१ ॥ (२) D छंद चौटक ॥ साटक ॥ (३) A जीता । (४) D मनिसा । (५) D काचित् । (६) D छित्ति । (७) D संसारहाकारयं । (८) D दिव्यभगुरं । (९) B दीसंदि, D दिसंत । (१०) B D T नयं । (११) D here repeats ॥ ३१ ॥; see note to stanza 26. (१२) B नै, T नै । (१३) D होय । (१४) D झमैं । (१५) D अगैं । (१६) D वाय । (१७) D ओपमा । (१८) D लावैं ।

किधों<sup>(१)</sup> कै सपनं चलै चित्तभारी ।  
 किधों<sup>(१)</sup> चकरी हथ्य दीसंत<sup>(२)</sup> तारी ॥  
 किधों<sup>(१)</sup> वाय छुट्टै<sup>(३)</sup> नहीं<sup>(४)</sup> वाइ<sup>(५)</sup> पावै<sup>(६)</sup> ।  
 मगंराज कैसै<sup>(७)</sup> उपमा ति<sup>(८)</sup> लावै ॥  
 अगं पाइ<sup>(९)</sup> दीसं मुषं मे हकारै<sup>(१०)</sup> ।  
 मनों दिव्य वांनी पढै कव्वि भारै<sup>(१०)</sup> ॥  
 धरे पाइ<sup>(११)</sup> बाजी<sup>(१२)</sup> दढं तंनि भारै<sup>(१०)</sup> ।  
 मनों तार सौं<sup>(१३)</sup> तार बज्जै<sup>(१४)</sup> हकारै ॥  
 तिनं दूरि<sup>(१५)</sup> तें अंग आपंम त्रैसै<sup>(१६)</sup> ।  
 मनों तार छुट्टै<sup>(३)</sup> अकासं सु जैसै<sup>(१७)</sup> ॥  
 इसे बाजि<sup>(१७)</sup> सज्जे समप्ये<sup>(१८)</sup> ति राजं ।  
 दिषै<sup>(१९)</sup> स्वर सामंत हथ्ये<sup>(१०)</sup> सु पाजं ॥ ३२ ॥

दूहा ॥

बाज राज नृपराज दिय  
 विलसि विधान विधान ।  
 तिन उप्पम<sup>(२१)</sup> कविचंद कहि  
 का दिज्जै धप<sup>(२२)</sup> वांन<sup>(२३)</sup> ॥ ३३ ॥

(१) T किधों । (२) D आवंत । (३) D छुट्टै । (४) D नरा । (५) D वाय ।  
 (६) D पावै । (७) D कैसै । (८) D सु । (९) D पाबदासै । (१०) D भारै ।  
 (११) D पाय । (१२) D बाजि दढं तंति । (१३) D सु । (१४) D बज्जै ।  
 (१५) D दूरि । (१६) D त्रैसै । (१७) D बाज । (१८) D समये । (१९) D  
 दिषै । (२०) D हथे । (२१) D आपम । (२२) D धम । (२३) A D T वंन ।

## छंद रसावला ॥

धपै<sup>(१)</sup> वांन भारै<sup>(२)</sup> ।  
 हकारे निनारै<sup>(३)</sup> ॥  
 दुरै<sup>(४)</sup> अप्प छाया ।  
 तते अग्गि ताया ॥  
 धवै<sup>(५)</sup> अंठ<sup>(६)</sup> भारी ।  
 सुकोटं निनारी ॥  
<sup>(७)</sup>वरं नैन जैसै<sup>(८)</sup> ।  
 हरी देव जैसै<sup>(९)</sup> ॥  
 महामत्त ग्रीवा ।  
 बिना बाइ<sup>(१०)</sup> दीवा<sup>(११)</sup> ॥  
 उरं पुठ्ठ<sup>(१२)</sup> भारी ।  
<sup>(१३)</sup>सु मासं निनारी ॥  
 तुला जांनि षंभं ।  
 पला<sup>(१४)</sup> जांनि अंभं ॥  
 नषं डंड इड्डं ।  
 मनें डंड सिड्डं ॥  
 द्रुमं बीर डुल्लै<sup>(१५)</sup> ।

(१) D धपे । (२) D ०रे । (३) D धवे । (४) D अयु । (५) D वरनेन ।  
 (६) So B T; A ०चै, D ०चै । (७) D वाय । (८) D दिवा, ०. III.  
 (९) D पूठ । (१०) A D समंसं । (११) D पला । (१२) D मुल्लै ।

(१) कवी कित्ति पुल्लै ॥  
 मनें वाय कोडं ।  
 परी मज्झ हेडं ॥  
 कचोलं तनीरं ।  
 पियै<sup>(२)</sup> बाज जीरं ॥  
 अवत्ते<sup>(३)</sup> निनारे<sup>(४)</sup> ।  
 मनें स्वामि सारे<sup>(५)</sup> ॥  
 इसे राज राजी ।  
 दिए बाज राजी ॥  
 सुडै द्वै रकेबं<sup>(६)</sup> ।  
 चढे<sup>(७)</sup> वीर गेवं<sup>(८)</sup> ॥  
 सुरत्तान पासं ।  
 चढ्यौ बीर भासं ॥ ३४ ॥

दूहा ॥

बिना हेत सगपन बिना  
 इष्टपनां बिन राज ।  
 धनि राज प्रथिराज कै<sup>(९)</sup>  
 षग<sup>(१०)</sup> गोरी किय साज ॥ ३५ ॥

(१) D कवि कित्ति पुल्लै; A repeats it twice. (२) D पीजें । (३) T  
 ने । (४) D ०रें । (५) B सारें, D सारें । (६) D रकेबं । (७) D चढी ।  
 (८) D बेवं । (९) B कौं, D को । (१०) B T षग ।

कवित्त ॥

षल गेरी सुरतांन

जाइ<sup>(१)</sup> रुंध्या रन अगौ<sup>(२)</sup> ।

हय गय<sup>(३)</sup> रथ नर सज्जि

बीर पावस घट जगौ<sup>(२)</sup> ॥

महन रंभ आरंभ

रत्त अरु नोदय सारिय<sup>(४)</sup> ।

चाहुआंन सुरतांन

बीर जै पत्त<sup>(५)</sup> करारिय<sup>(४)</sup> ॥

डमरू डहकि<sup>(६)</sup> जुगनि<sup>(७)</sup> हसें

जिम जिम बंबर धज लसै<sup>(८)</sup> ।

सामंत सूर<sup>(९)</sup> चहुआंन सेां

बीर विंदुरि<sup>(१०)</sup> सस्त्रह कसै<sup>(८)</sup> ॥ ३६ ॥

मेछ मसूरति सत्ति

मत्त कीनै रति<sup>(११)</sup> भारी ।

बीरारस बिडुरिय<sup>(४)</sup>

लोह लग्गी अधिकारी<sup>(१२)</sup> ॥

---

(१) D जाय । (२) D ०गें । (३) B गह । (४) D ०रीय । (५) B पति । (६) D ०की । (७) D जुगनि । (८) D ०सै । (९) D सूर । (१०) D विंदुरि, T बिंदुरि । (११) D रत । (१२) D धपिसारी ।

छित्ति मित्ति छित्ति सोभ

अंषि आबै न अंषि षिन ।

ज्यो भहव वन दिष्ट

चंपि चूवंत मंत घन ॥

रन<sup>(१)</sup> हरषि बरषिय<sup>(२)</sup> मुक्तिय<sup>(३)</sup> जिहि

धप्पि<sup>(४)</sup> लोह को हांक रसि<sup>(५)</sup> ।

चावंड<sup>(६)</sup> राइ<sup>(७)</sup> दाहर तनौ

न्रप अग्या विन अग्र धसि ॥ ३७ ॥

रा चावंड<sup>(८)</sup> जैतसी

लोह आजांनबाह बर ।

रष्ये रन सुरतांन

मत्त<sup>(९)</sup> लगो सु बीर भर ॥

पंच कोस न्रप छंडि

आप<sup>(१०)</sup> रुंध्या सुरतानं ।

वज्र घाट वज्जीय<sup>(११)</sup>

आइ<sup>(१२)</sup> लग्गा सु विहानं ॥

(१) D र । (२) A om., B D T ०षीय । (३) B D T मुक्ति, om. य । (४) D धप्पि । (५) D रिसि । (६) B दावंड । (७) D राय । (८) B जावंड; read *chāvāda*, m. c. (९) D मन । (१०) D अप । (११) A D वज्जीय । (१२) D आय ।



छुट्टा<sup>(१)</sup> कि सिंघ पल<sup>(२)</sup> काज बर  
 उरसि<sup>(३)</sup> लोह लगा लरन<sup>(४)</sup> ।  
 तत्तार घांन पुरसांन पति<sup>(५)</sup>  
 अण्ण मसूरति मरन मन ॥ ३८ ॥

छंद भुजंगी ॥

पुरासान घानं सु तत्तार बीरं ।  
 मनें वज्र<sup>(६)</sup> देषे<sup>(७)</sup> सु वज्रं<sup>(६)</sup> सरीरं ॥  
 महाबाहु वज्री<sup>(६)</sup> कढे<sup>(८)</sup> बज्र<sup>(६)</sup> हथ्ये<sup>(९)</sup> ।  
 लगे<sup>(१०)</sup> अंग अंगं निरथ्ये<sup>(९)</sup> निरथ्यं<sup>(९)</sup> ॥  
 छुलिका सु वानं कमानेन साही ।  
 दूसे सूर<sup>(११)</sup> वेगं पलं लै<sup>(१२)</sup> निबाही ॥  
 उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे ।  
 मनें देषियै<sup>(१३)</sup> बीर रत्ते प्रकारे<sup>(१४)</sup> ॥  
 उरं<sup>(१५)</sup> काल काली<sup>(१६)</sup> जमंदट्ठ कट्ठी ।  
 किधेां दंड<sup>(१७)</sup> जमदट्ठ<sup>(१८)</sup> जम कर विडट्ठी ॥

---

(१) D छुटां । (२) B बल । (३) D उसरि । (४) D नरन । (५) D घां ।  
 (६) D ज for अ । (७) D देषे । (८) B कढे, D कढी । (९) D ०थे ।  
 (१०) T लगे । (११) D सूर । (१२) T ले । (१३) D ०थे । (१४) D ०रें;  
 T B ०रै । (१५) A छं । (१६) D कारी । (१७) B T दड्ड, D दड । (१८)  
 A जमदट्ठ, B D जमदड ।

उरं मत्त मत्तं<sup>(१)</sup> विमत्तं सुमत्ती ।  
 परे<sup>(२)</sup> रंग चंगं छके<sup>(३)</sup> जानि गत्ती ॥  
 दुवं<sup>(४)</sup> हिंदु मेछं तसब्बी ति नष्पी<sup>(५)</sup> ।  
 सरै<sup>(६)</sup> सट्टि हज्जार आवत्त लष्पी ॥  
 तिनं<sup>(७)</sup> हथ्य हथ्यं मुकत्ती प्रमानं ।  
 मनें दैषि देवत्त<sup>(८)</sup> देवाधि थांनं ॥  
 विधं बिद्धिरूपं<sup>(९)</sup> प्रामानंत न्यारे<sup>(१०)</sup> ।  
 भए<sup>(१०)</sup> अंग अंगं सही तथ्य<sup>(११)</sup> सारे<sup>(१२)</sup> ॥  
 नचै<sup>(१३)</sup> कंध बंधं कबंधं<sup>(१४)</sup> दुरंगी ।  
 मनें वीर आवत्त भारथ्य रंगी ॥  
 इतौ जुद्ध<sup>(१५)</sup> करि बीर भए<sup>(१६)</sup> द्वै निनारे ।  
 घुमे<sup>(१७)</sup> सार घुमै<sup>(१८)</sup> मनें मत्तवारे ॥ ३६ ॥  
 दूहा<sup>(१९)</sup> ॥

[(१०) चल्थौ राज सब सेन सजि<sup>(२१)</sup>

दिसि उज्जैनिय रंग ।

(१) D मत्ते । (२) D •रें । (३) T छंके, D बके । (४) D दुचं । (५) T नंषी । (६) D T सरै । (७) A B तिनं, D तिनं । (८) B दैवत्त । (९) D विधं । (१०) A भए । (११) D तंत । (१२) D रारे । (१३) D नचें । (१४) D कबंधं । (१५) D जूध । (१६) Read *bhaē*, m. c. (१७) D घुमें । (१८) D घूमें । (१९) C दूहरा । (२०) D omits this stanza altogether ; it appears to be an interpolation ; for A B repeat the number 40, and T repeats 41 ; see p. 256, note 8. (२१) T सति ।

आइ साहि जंगह<sup>(१)</sup> जुरन  
 लयै<sup>(२)</sup> सहायक पंग ॥ ४० ॥]  
 गही<sup>(३)</sup> गैल देवास की  
 गहन<sup>(४)</sup> उपज्जगै मिच्छ ।  
 नर चिंतन इच्छे<sup>(५)</sup> कछू<sup>(६)</sup>  
 ईसर औरै<sup>(७)</sup> इच्छ ॥ ४०<sup>(८)</sup> ॥

कवित्त ॥

नर करनी कछु और  
 करै करता कछु औरै<sup>(९)</sup> ।  
 (१०) अन चितन<sup>(११)</sup> करै ईस  
 जीय सु नर औरै<sup>(८)</sup> दौरै<sup>(१२)</sup> ॥  
 रचे<sup>(१३)</sup> रचन नर कोरि<sup>(१४)</sup>  
 जोरि<sup>(१५)</sup> जम पाइ बस्त सह ।  
 छिन क मध्य<sup>(१६)</sup> हरि हरै  
 केलि किरतव्य<sup>(१७)</sup> क्रम इह ॥

---

(१) B T जगह । (२) B लहै । (३) D गाह । (४) D गहन । (५) D इच्छय । (६) D कछु । (७) A औरं । (८) T ॥ ४१ ॥ (९) D औरै । (१०) D reads अनै चितन करै ईसे । (११) B चिंतै । (१२) A दौरै, D चौरै । (१३) D रचें । (१४) D कोर । (१५) D जोर । (१६) D मधि । (१७) D करतव्य, B T किरतव्य ।

प्रथिराज<sup>(१)</sup> गमन देवास दिसि  
 व्याह विनोद सु मंडि<sup>(२)</sup> जिय<sup>(३)</sup> ।  
 अन चिंति<sup>(४)</sup> जग्गि<sup>(५)</sup> गज्जन<sup>(६)</sup> बलिय  
 आनि<sup>(७)</sup> उतंग सु कंक किय ॥ ४१ ॥  
 ज्यौं बावन बलि पास  
 आनि अन चिंत्य छलन किय ।  
 उन धर लै<sup>(८)</sup> दीय<sup>(९)</sup> पत्त<sup>(१०)</sup>  
 (९)इन सु रन बंधि छंडिय प्रिय<sup>(१०)</sup> ॥  
 दसें<sup>(११)</sup> दिसा दल उमडि  
 घुमडि घन घोर आइ जनु ।  
 मीर मसंद ससंद<sup>(१२)</sup>  
 बांन बहु बूंद<sup>(१३)</sup> बरषि घन ॥  
 दोउ<sup>(१४)</sup> दीन दंद दनु देव<sup>(१५)</sup> सम  
 भ्रम लगो लगो लरन ।  
 प्रलै<sup>(१६)</sup> काल हाल पिषिय निजरि  
 मनें मिच वृत्तो करन ॥ ४२ ॥

(१) D has ६. (२) D चिंत । (३) D जग । (४) D जन । (५) D  
 आनि । (६) T ले; after it A B D T insert उन । (७) D दीन । (८)  
 D om. (९) D reads इन सुर बांधि छंडि जीय । (१०) A om. (११)  
 D दिसो । (१२) D मसंद । (१३) D बूंद । (१४) D दोऊ, read *dōu*,  
 m. c. (१५) B सेव । (१६) Read *pralāṭ*, m. c.

## छंद रसावला ॥

कोह लग्गो<sup>(१)</sup> षलं ।  
 सार उड्डै<sup>(२)</sup> पलं ॥  
 अंत तुट्टै<sup>(३)</sup> रुलं ।  
 पग्ग वेली तुलं ॥  
 नैन<sup>(४)</sup> रत्ते<sup>(५)</sup> झलं ।  
 जुट्टि जालै<sup>(६)</sup> षलं ॥  
 मिट्टि मोहै<sup>(७)</sup> मलं ।  
 कोह कै<sup>(८)</sup> केवलं ॥  
 रुंड नचै<sup>(९)</sup> दलं ।  
 मुंड बक्कै<sup>(१०)</sup> बलं ॥  
 गिड्ढि सिद्धी<sup>(११)</sup> कलं ।  
 बज्जि कोलाहलं ॥  
 छिछं उड्डै<sup>(१२)</sup> ललं ।  
 जांनि तिंटू<sup>(१३)</sup> झलं ॥  
 हय्य तुट्टै नलं ।  
 वृष्ण साषा ढलं ॥  
<sup>(१४)</sup>सार उड्डै झलं ।

(१) D reads final *ē*, for *e*. (२) D नेज । (३) D मोहं । (४) D के ।  
 (५) D has final *ai*, for *ai*. (६) D सिध । (७) A तिंद ? D तिड्ड ।  
 (८) T om. this line.

पंष पंषी बलं ॥  
 ईस आसा बरं ।  
 माल सोमै गरं<sup>(१)</sup> ॥  
 रुद्धि<sup>(२)</sup> बुंदै<sup>(३)</sup> झरं ।  
 जांनि नमं<sup>(४)</sup> परं ॥  
 चंडि पचं परं<sup>(५)</sup> ।  
 मंति<sup>(६)</sup> डकं डरं ॥  
 भूत नचै<sup>(७)</sup> परं ।  
 उपभयं चिकरं ॥  
<sup>(८)</sup>बक्कि मैरुं<sup>(९)</sup> हरं ।  
 कंषि स्पारं नरं<sup>(१०)</sup> ॥  
 खर बट्ठै<sup>(११)</sup> बरं ।  
 झार झारै<sup>(१२)</sup> हरं ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

सार मंत मत्ते<sup>(१३)</sup> सुभट  
 षग ठिल्लै<sup>(१४)</sup> गज ठट्ट<sup>(१५)</sup> ।

(१) A गलं । (२) D रुद्धं । (३) B बुंदै । (४) D नमं । (५) D भरं,  
 T परं । (६) B मंति । (७) B T नचै, D तचै । (८) D reads बक मैरौ  
 कर । (९) A मैरुं, D मैरौ । (१०) A रनं । (११) A B बट्टै, D बट्टे ।  
 (१२) A झारै, D सारै । (१३) D मंते । (१४) D ठिल्लै । (१५) A ठट्ट,  
 D वट ।

स्वामि धम्म<sup>(१)</sup> सहे<sup>(२)</sup> रनह

मुकति<sup>(३)</sup> सु झारै<sup>(४)</sup> वट्ट ॥ ४४ ॥

कवित्त ॥

कोह छोह रस पांन

बरि मत्ते<sup>(५)</sup> चावहिसि ।

बलि उत्तंग सजि जंग

अंग जनु पंग कप्पि जिसि<sup>(६)</sup> ॥

हय दल<sup>(७)</sup> बल उच्छार<sup>(८)</sup>

कट्ठि<sup>(९)</sup> गजदंतन डारै<sup>(१०)</sup> ।

जनु माली महि मध्य

कट्ठि<sup>(९)</sup> मूला<sup>(११)</sup> करि<sup>(१२)</sup> धारै ॥

भय सीत<sup>(१३)</sup> भीत काइर<sup>(१४)</sup> कपहि<sup>(१५)</sup>

वहत स्वर<sup>(१६)</sup> सामंत रिन<sup>(१७)</sup> ।

कलि<sup>(१८)</sup> कहर कंक बक्कहि<sup>(१९)</sup> बिहसि<sup>(२०)</sup>

गहन गोम मत्तौ<sup>(२१)</sup> महन ॥ ४५ ॥

(१) D धंम । (२) D सधे । (३) D मुगति । (४) B धारै, D भारै ।  
 (५) D मंते । (६) D जिस । (७) D गय । (८) D उच्चारि । (९) B कट्ठि,  
 D कटि । (१०) D डारै । (११) D मूरा । (१२) D कर । (१३) D  
 places भीत सीत । (१४) D कायर । (१५) A D कंपहि । (१६) D स्वर ।  
 (१७) D रन । (१८) D किल । (१९) D बंकहि । (२०) D बहसि । (२१)  
 D मत्तौ ।

छंद भुजंगी ॥

परी भीर<sup>(१)</sup> मेछं तसब्बी तनष्यं ।  
 कले कंक बक<sup>(२)</sup> हीन जीवं सु लष्यं ॥  
 बलं<sup>(३)</sup> कन्ह गोइंद<sup>(४)</sup> को का प्रमानं ।  
 मनें देषियै<sup>(५)</sup> देवयं दुंद थानं<sup>(६)</sup> ॥  
 बढे बीर रूपं प्रमानं निनारे ।  
 अरी अग<sup>(७)</sup> चेतन चितं धरारे ॥  
 नचै<sup>(८)</sup> कंध बंध असंधं धरंगी ।  
 मनें बीर भारथ्य आवृत्त रंगी ॥  
 लग्यौ लंगरी लोह लंगा<sup>(९)</sup> प्रमानं ।  
 षगें षेत षंज्यौ पुरासांन षानं ॥  
 उडै आतत्ताई<sup>(१०)</sup> हयं पाइ तेजं ।  
 दलं दिषिये<sup>(११)</sup> पेट पष्ये करेजं ॥  
 हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं ।  
 गयं उडि गेनं सु षोपरि पुरज्जं ॥  
 इतौ<sup>(१२)</sup> जुइ<sup>(१३)</sup> करि बीर<sup>(१४)</sup> भए<sup>(१५)</sup> है निनारे<sup>(१६)</sup> ।  
 घुमे<sup>(१७)</sup> सार घुम्मे<sup>(१८)</sup> मनें मत्तवारे<sup>(१९)</sup> ॥ ४६ ॥

(१) A भीर । (२) A कहीन, D बकंन, for बक हीन । (३) T पलं ? (४) D गोइंद । (५) D ०यै । (६) D पानं । (७) D अंग । (८) B नचे, T नचै । (९) A लंगां । (१०) D अत्ताई । (११) B ०यै । (१२) D इतो । (१३) D जूष । (१४) D वार । (१५) Read *bhaē*, m. c. D भय । (१६) D ०रै । (१७) A B T घुम्मे c. m. ; D घुमै । (१८) D घुमै । (१९) B T ०वारै c. r.



दूहा ॥

रत्त मत्तवारि सुभट<sup>(१)</sup>  
 बिधि<sup>(२)</sup> बिनांन उन मांन ।  
 तह न सुष्प दुष्पं निजरि  
 मोह कोह रस पांन ॥ ४७ ॥

कवित्त ॥

मोह कोह रस पांन  
 बीर<sup>(३)</sup> मत्ते चावहिसि ।  
 तबल तुंग बजि जंग  
 बीर लगो सु बीर कसि ॥  
 जा<sup>(४)</sup> दिष्पै<sup>(५)</sup> सुरतान<sup>(६)</sup>  
 नैन बडवानल धारी<sup>(७)</sup> ।  
 प्रलय करन कर बांन  
 प्रलय इन षग हकारी<sup>(८)</sup> ॥  
 सुभि लोह मोह अरुनय तनह  
 अति उदार<sup>(९)</sup> चिन्हय रनह ।  
 प्रथिराज राज<sup>(१०)</sup> राजिंद गुर  
 गहन गज्जि लोनै<sup>(१०)</sup> पनह ॥ ४८ ॥

(१) A सुभट? (२) D विधि। (३) D विर। (४) D जां। (५) D दिषै।  
 (६) A B T रतानं, om. सु। (७) D वरीय। (८) D उदारि। (९) B om.  
 (१०) A om. ली।

साहन बाहन बर<sup>(१)</sup> विरद  
 साह गोरी<sup>(२)</sup> सयन<sup>(३)</sup> सम ।  
 हय गय दल बिच्छुरहि  
 रोस उच्छरहि बीर<sup>(४)</sup> भ्रम ॥  
 बजहि षग आवृत्त  
 जूथ उडुहि असमानं ।  
 मनहु<sup>(५)</sup> सिंघ<sup>(६)</sup> गुर गज्ज<sup>(७)</sup>  
 हक्कि कारिय सिर भानं ॥  
 दल जेअर बिहसि साहाब<sup>(८)</sup> भर  
 भर भर भिरि असि बर बजिय<sup>(९)</sup> ।  
 जाने<sup>(१०)</sup> कि मेंघ मत्ते दिसा  
 निसा<sup>(११)</sup> नप्भ बिज्जुल<sup>(१२)</sup> लसिय ॥ ४६ ॥

छंद चोटक ॥

इति तोटक छंद प्रमान धरं ।  
 सुनि नाग कला तिहि कित्ति गुरं ॥  
 भिरि<sup>(१३)</sup> भारथ पारथ से उचरें ।  
 मय मंत कला कलि से बिडुरे ॥

(१) D om. (२) A B D T गोरीय c. m. (३) D सयन । (४) D विर भ्रम । (५) D ०डं । (६) A om. घ । (७) D राजं । (८) D ०बि । (९) D जीय । (१०) D जानि । (११) D निमां । (१२) A वज्जुल, D विजल । (१३) D भिर ।

रन नंकय<sup>(१)</sup> नागय बीर<sup>(२)</sup> सुरं ।  
 मनें<sup>(३)</sup> बीर<sup>(४)</sup> जगावत बीर उरं ॥  
 छिति छत्र दुहाइय<sup>(५)</sup> छत्र धरं ।  
 सु मनें बर बाहबि<sup>(६)</sup> वज्र झरं<sup>(७)</sup> ॥  
 छिति सोहत ओन अपुब्ब रनं ।  
 मनें<sup>(८)</sup> भारथ पूर चली सुमनं ॥  
 दोउ<sup>(९)</sup> दीन विराजत<sup>(१०)</sup> दीन उभै<sup>(१०)</sup> ।  
 रंग<sup>(११)</sup> रत्त रंगै<sup>(१२)</sup> छिति छत्र सुभै<sup>(१०)</sup> ॥  
 सु मनें मधु माधव रीति<sup>(१३)</sup> उलै ।  
 सु जनो कृतकं करबीर फुलै<sup>(१४)</sup> ॥  
 इक अंग विमंगन<sup>(१५)</sup> हथ्य चरै<sup>(१४)</sup> ।  
 सु मनें कल वीर कला दुसरै<sup>(१४)</sup> ॥  
 मिति मत्त अट्ट नघाडू<sup>(१६)</sup> घटं ।  
 सु नचै जनु पारथ वीर भटं<sup>(१७)</sup> ॥ ५० ॥

कवित्त ॥

वर कि<sup>(१८)</sup> बीर भट<sup>(१९)</sup> सु भट

(१) D नंकिय । (२) D बार । (३) Read *manō*, m. c. (४) D विर ।  
 (५) D ०ईय । (६) D ०बिं । (७) B धरं । (८) Read *dōū*, m. c., D  
 दोऊ । (९) D ०ति । (१०) D ०भें । (११) Read *rāga*, m. c. (१२)  
 Read *rāgai*, m. c. ; B D रंगे । (१३) A रिति, B राति, D रिती । (१४)  
 D has final *ai*. (१५) B विमंगन हथ, D विमंग विहथ । (१६) D नघाया ।  
 (१७) A भटं । (१८) D क । (१९) D भर ।

अंमि हकै<sup>(१)</sup> चावहिसि ।

इक इक आवृत्त

बीर वरषंत मंत असि ॥

नचि नारद किलकंत

जगि जुगिनि<sup>(२)</sup> हकारहि<sup>(३)</sup> ।

सार तार वेताल<sup>(४)</sup>

नचि रन बीर डकारहि ॥

अंमरिय<sup>(५)</sup> रहसि दल<sup>(६)</sup> दुअ बिहसि

करसि<sup>(७)</sup> बीर लग्गे<sup>(८)</sup> सुबर ।

चहुआंन आंन<sup>(९)</sup> सुरतांन दल

करहि केलि समरस अडर<sup>(१०)</sup> ॥ ५१ ॥

नच<sup>(११)</sup> बाजी नव हथ्य

रथ्य नवनवति<sup>(१२)</sup> सुम्र<sup>(१३)</sup> भर ।

(१४)इन बज्जै असि वर प्रमांन

(१५)सार बज्जै प्रहार धर<sup>(१६)</sup> ॥

केक अंत जम कंत

(१) D has final *ai*. (२) A जगनि, D जुगिन । (३) A B T हका-  
रिहि । (४) D वेतार । (५) D ०रीय । (६) D दिल । (७) D करस ।  
(८) D लग्गे । (९) A om. (१०) D अंडर । (११) D नव । (१२) A  
om. नव, D नवचति । (१३) D सुम्र, c. m. (१४) Redt. line ; 14  
for 11 instants. (१५) D om. this line and the following one.  
(१६) A घ, om. र ।

कट्ठि<sup>(१)</sup> जमदाढ निनारी ।  
 मनें कट्ठि<sup>(१)</sup> जमदट्ठ<sup>(२)</sup>  
 हथ्य सामंत सुभारी ॥  
 चालुक्क चंपि चच्चर कियै  
 सार धार सम उत्तरगौ ।  
 इह करी कोइ<sup>(३)</sup> करिहै न कोइ<sup>(४)</sup>  
 करौ<sup>(५)</sup> सु कौ गुन बिस्तरगौ<sup>(६)</sup> ॥ ५२ ॥

दूहा ॥

जंमति जमकिय<sup>(७)</sup> जंम सम  
 जम<sup>(८)</sup> प्रमांन दोउ<sup>(९)</sup> सेन ।  
 मिले बीर उत्तर दिसा<sup>(१०)</sup>  
 आवृत्त हति न नैन ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

अइ कोस नृप अगग  
 सूर<sup>(११)</sup> रोपै<sup>(१२)</sup> पग गट्ठै<sup>(१३)</sup> ।  
 ज्यो<sup>(१४)</sup> सह मह<sup>(१५)</sup> गजराज  
 छंडि पट्टे बल चट्ठै<sup>(१६)</sup> ॥

(१) D कठि । (२) B ०ड, D ढ । (३) D सोइ । (४) B कोहै ; read *kōh*, m. o. (५) D करो । (६) B T बिस्तरै । (७) D जंम० । (८) A जंम । (९) D दोऊ ; read *dōū*, m. o. (१०) A ०दिसा । (११) D सूर । (१२) B D रोपे । (१३) B ०ट्टै, D ०ढे । (१४) Redt. line ; 14 for 11 instants. (१५) D सह ।

लज्ज बंध संकरिय

बीर अंकुरिय दिष्ट<sup>(१)</sup> रन ।

(२) सार धार बज्जी कपाट

घात<sup>(३)</sup> निघघात<sup>(४)</sup> घुमत रन<sup>(५)</sup> ॥

कलमलिय कंक इम मिच्छ सह

जनु लुअ<sup>(६)</sup> लग्गत<sup>(७)</sup> जेठ महि ।

जहव सुजांम घरि<sup>(८)</sup> इक्कलो<sup>(९)</sup>

जनु<sup>(१०)</sup> बडवानल चंद कहि ॥ ५४ ॥

गाथा ॥

दिष्से मुष्पय<sup>(११)</sup> मछरं

अर<sup>(१२)</sup> जदुबंसंन्नाम<sup>(१३)</sup> अरवनायं ।

अच्छरि बर कर इच्छं

(१४) भ्रमत फरंत<sup>(१५)</sup> गैन मग्गायं<sup>(१६)</sup> ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥

मेार ब्यूह रचि राज

सज्जि सब सेन सुद्ध<sup>(१७)</sup> करि ।

(१) A दिष्ट । (२) Redt. line; 14 for 11 instances. (३) A घाट ।  
(४) D निरघात । (५) D om. र । (६) D लूअ । (७) T जग्गत । (८)  
D घरी । (९) A एकलो, D इक्कलौ । (१०) D जन । (११) A मिष्प । (१२)  
B अर । (१३) B T वंसन्नाम, D वंसंनम । (१४) D reads भ्रमत फरंत  
गेन मग्गायं । (१५) Read *pharāta*, m. c. (१६) B T मग्गाइं । (१७)  
D जुध ।

चंच पीप परिहार

कन्ह गोइंद<sup>(१)</sup> नयन सरि ॥

कंठ चंद पुंडीर

पाव जुग जैत सलष सजि ।

निडुर भर बलिभद्र

पंघ बजि बाय तेज<sup>(२)</sup> गति ॥

सम पुंछ और<sup>(३)</sup> सम पुंछ<sup>(४)</sup> मन

बरन<sup>(५)</sup> बरन छवि सिलह<sup>(६)</sup> तन ।

रन रोहि रछ्यौ प्रथिराज महि

गिलन अप्प सुरतांन रिन ॥ ५६ ॥

गाथा<sup>(७)</sup> ॥

<sup>(८)</sup>मुच्छो<sup>(९)</sup> जंबर मछरं तंवटे अछरी अंगं ।

सोयं<sup>(१०)</sup> साध प्रमांनं सा<sup>(११)</sup> पूजी छर सामंतं ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥

करबल षांन ततार

षांन न्याजी<sup>(१२)</sup> षां गोरी ।

हरबल अप्प<sup>(१३)</sup> नरिंद<sup>(१४)</sup>

(१) D गौयंद । (२) D reads तेस गजि । (३) B और । (४) D पुठ ।  
 (५) D बर । (६) D सेलह । (७) T adds दूहा । (८) This line does  
 not scan. (९) A D मुच्छि, B मुच्छी । (१०) D सोय । (११) D छ  
 पूरजी । (१२) D त्याजी । (१३) D पीप । (१४) A तरिंद ।

साहि बंधी<sup>(१)</sup> बिय जेरी ॥

मेर व्यूह चहुआन

सार धारह संधारै<sup>(२)</sup> ।

गिलन अण्य सुरतांन

बोल वडा उचारै<sup>(३)</sup> ॥

<sup>(४)</sup>कृत अकृत सीस धारन भिरवि<sup>(५)</sup>

जै जै जै चारन<sup>(६)</sup> सु धुअ ।

सुरतांन सूर आवृत्त वर

धनि सुबर सामंत भुअ ॥ ५८ ॥

तन तरफत धर<sup>(७)</sup> मिच्छ

कला छवि जांनि नटकै<sup>(८)</sup> ।

मंत<sup>(९)</sup> दंत आरुहै<sup>(१०)</sup>

दंत सेां दंत कटकै<sup>(११)</sup> ॥

समर अमर करि<sup>(१२)</sup> बहि<sup>(१३)</sup>

भये<sup>(१४)</sup> बिस्मत पलहारिय<sup>(१५)</sup> ।

जहां<sup>(१६)</sup> तहां चंद पुंडोर

चंद ज्यौं रैन<sup>(१७)</sup> उजारिय<sup>(१५)</sup> ॥

(१) D बंधीय, om. बि। (२) D साधारै। (३) D उचारै। (४) D कृत अकृत। (५) D om. भि। (६) D चीरन। (७) A मन। (८) D ०कै। (९) D मंत। (१०) D ०है। (११) D ०कै। (१२) D om. (१३) A B T बहि, D वंदि। (१४) B D भये। (१५) D ०रीय। (१६) Redt. line, 14 for 11 instants; or read *jahā tahā chanda pūḍōra*, m. c. (१७) D रैन, B रैन, T रैन।



तन ग्रेह नेह<sup>(१)</sup> मन अंत सम  
 भ्रम छंदौ दल दलि सुभर ।  
 संभरिय स्वर<sup>(२)</sup> सुरतांन<sup>(३)</sup> दल  
 महन रंभ मच्चौ सुभर ॥ ५६ ॥

छंद हनूफाल<sup>(४)</sup> ॥

<sup>(५)</sup>इति हनूफालय छंद ।  
 कल विकल<sup>(६)</sup> कल कृत<sup>(७)</sup> चंद ॥  
 भय निसा उदित प्रमांन ।  
 चहुआंन सेन सु थांन ॥  
 कर हय्य बय्यन थाक ।  
 मनें<sup>(८)</sup> मंडि बंधि चिराक<sup>(९)</sup> ॥ ६० ॥

कवित्त ॥

करि चिराक<sup>(१०)</sup> छह सहस  
 सेन उपभै<sup>(११)</sup> चावदिसि<sup>(१२)</sup> ।  
 रत्तिवाह सम जुड  
 बीर धावंत बीररस ॥  
 तेज<sup>(१३)</sup> चिराक<sup>(९)</sup> रु<sup>(१४)</sup> सस्त्र

---

(१) D नेह । (२) D स्वर । (३) D स्वर० । (४) D ०फालय । [(५) D om. this line. (६) B विकल । (७) B कृत, D कृत । (८) Read *manō*, m. c. (९) D विराक । (१०) D विर, om. रक । (११) B उभे । (१२) D ०दिस । (१३) A तिज । (१४) D repeats रु ।

रत्त द्रिग तेज प्रमांनं ।  
 (१)सार धार निरधार  
 वेद छेदन गुन जांनं ॥  
 सारूक करक्के<sup>(१)</sup> रंक पल<sup>(१)</sup>  
 निसा जुद्ध<sup>(४)</sup> किन्नौ न किहि ।  
 सामंत सूर इम<sup>(५)</sup> उच्चरै<sup>(६)</sup>  
 सुबर बीर भारथ्य नहि<sup>(७)</sup> ॥ ६१ ॥  
 अद्ध होत बर रत्ति  
 साहि गोरी ग्रह रुंध्यौ ।  
 तोंवर बर पाहार  
 कित्ति सा सिंधुह<sup>(८)</sup> संध्यौ ॥  
 (९)सेत<sup>(१०)</sup> बंध बंध्यौ ति<sup>(११)</sup> रांम  
 सूर<sup>(१२)</sup> बंध्यौ रिन<sup>(१३)</sup> पाजं ।  
 जै जै जै उच्चारं<sup>(१४)</sup>  
 धनि सामंत सुलाजं ॥  
 सुरतांन सेन<sup>(१५)</sup> भग्गा सुभर  
 तीन<sup>(१६)</sup> बांन पुंजां<sup>(१७)</sup> नगय ।

(१) D om. this line and the following one. (२) D ०कै । (३) D पत । (४) A अद्धि । (५) D इम । (६) D उच्चरिहि । (७) A B D T नह, c. r. (८) D reads सिंधुआ बंध्यौ । (९) Redt. line ; 14 for 11 instants. (१०) D सेन । (११) D सु । (१२) D सूर । (१३) D रन । (१४) D उच्चारं । (१५) D reads बंध्यौ भग्गा । (१६) D तिन । (१७) D पुंजा ।

गज घंटन घंटन<sup>(१)</sup> मत्त सुनि  
 सुनि जंपै<sup>(२)</sup> वर हय ति हय ॥ ६२ ॥  
 देत हेत मध्यांन  
<sup>(३)</sup>पीप ने पन मन मंड्यौ ।  
 प्रबल पांनि परचंड  
 साहि गोरी गहि बंध्यौ<sup>(४)</sup> ॥  
 सेत बंधि<sup>(५)</sup> ज्यौं रांम  
 चंद सुरभांन<sup>(६)</sup> स्वर<sup>(७)</sup> सधि ।  
 येां लिन्नौ परिहार<sup>(८)</sup>  
 बालि दसकंध कंध मधि<sup>(९)</sup> ॥  
 रन छंडि हंडि धर मिच्छ हुअ  
 लाजवंत केफिरि<sup>(१०)</sup> मरिय<sup>(११)</sup> ।  
 जय जय सु जपै<sup>(१२)</sup> मुष धर अमर  
 सुकवि चंद कवितह धरिय ॥ ६३ ॥  
 छंद भुजंगी ॥  
 परगौ राव तिन बेर षीची प्रसंगं ।  
 जिनें षंडियं षित्त<sup>(१३)</sup> षल षग्ग अंगं ॥

(१) D om. (२) B जपै c. m. (३) D reads पीप ने पर न परैग्रा ।  
 (४) B बंध्यौ c. m. (५) D बंध । (६) A adds स्वर भांन । (७) D स्वर  
 (८) D ०हारि । (९) D reads कंधमधि, om. ष । (१०) D कफिर । (११)  
 D मरीय । (१२) A D जंपे । (१३) D षिलि ।

परगौ राव पज्जून पुत्रं<sup>(१)</sup> ति रांनं<sup>(२)</sup> ।  
 गयं सुगलोगं<sup>(३)</sup> करे<sup>(४)</sup> देव गांनं ॥  
 धुक्यौ<sup>(५)</sup> धार धकै<sup>(६)</sup> अजंमेर रायं<sup>(७)</sup> ।  
 दुअं सेन जंपी मुषं किन्ति चायं ॥  
 बधं जांमदेवं बधेां बीर भांनं ।  
 लरी अच्छरी मज्झ बीरं बरानं ॥  
 परगौ घाड<sup>(८)</sup> घेतं अतत्ताड<sup>(९)</sup> तातं<sup>(१०)</sup> ।  
 मनेां देषियै<sup>(११)</sup> भूमि<sup>(१२)</sup> कंदर्प<sup>(१३)</sup> गातं ॥  
 परगौ सेन हुज्जाब<sup>(१४)</sup> गोरी सबंधं ।  
 हयं अड्ड भग्गे सु उड्डे कमंधं ॥  
 परे ताहि दीनै<sup>(१५)</sup> परे साहि<sup>(१६)</sup> भारे ।  
 दिषे थांन थांनं मिछं<sup>(१७)</sup> प्रात तारे ॥ ६४ ॥

दूहा<sup>(१८)</sup> ॥

इन परंत<sup>(१९)</sup> सुरतांन गहि<sup>(२०)</sup>

ग्रह निग्रह घट<sup>(२१)</sup> बीर ।

(१) D reads पीचि । (२) T राजं । (३) A सर्ग०, B ०लोकं, D सरग० ।  
 (४) B करै, D करें । (५) D धुकौ । (६) A T राई । (७) D घाय ।  
 (८) D ०त्ताय । (९) D तापं । (१०) D ०यें । (११) D भूमि । (१२)  
 D कंदर्प । (१३) D जंजाब । (१४) A दीनै, D दिनें । (१५) D साह ।  
 (१६) A मेळं, D मिळे । (१७) D दुहरा । (१८) D परत । (१९) D गहि ।  
 (२०) D पट ।

तिन जस जंपत<sup>(१)</sup> का<sup>(२)</sup> कबी  
जिन<sup>(३)</sup> करि जज्जर श्रीर ॥ ६५ ॥

कवित्त ॥

बिन<sup>(४)</sup> जज्जर पंजर परान  
साहि<sup>(५)</sup> गोरी गहि बंध्यौ ।  
बिन<sup>(६)</sup> सेवा बिन दान  
पांन षष्ठाह षल<sup>(७)</sup> संध्यौ ॥  
फिरि ग्रह पत्तौ राज  
लूटि<sup>(८)</sup> चतुरंग बिभूतिय<sup>(९)</sup> ।  
ढोला तेरह तीस  
मडि<sup>(९)</sup> साहाब<sup>(१०)</sup> सुभक्तिय ॥  
ग्रह गयौ लियै सुरतांन संग<sup>(११)</sup>  
जै जै जै जस लख्यौ ।  
जयचंद कना<sup>(१२)</sup> इत चिंति जिय<sup>(१३)</sup>  
मांन प्रसंसन सिद्धयौ<sup>(१४)</sup> ॥ ६६ ॥  
<sup>(१५)</sup>मान भंजि सुरतांन  
मांन भंज्यौ सुरतांन ।

---

(१) A जंपति । (२) D reads चंद कवि । (३) D जिनि । (४) Redt. line; 14 for 11 instants. (५) D साहि । (६) D विना । (७) A षगल । (८) D has ४ । (९) D सधि । (१०) D साहब । (११) A adds सम । (१२) D ककना । (१३) D जाति । (१४) B ०यौ । (१५) B om. this line.

उन उप्पर नन कियै

हुतै<sup>(१)</sup> बर बैर निदानं ॥

पंग लज्ज उच्चरै<sup>(२)</sup>

सुनै मंची<sup>(३)</sup> अधिकारिय<sup>(४)</sup> ।

करिय घेत चहुआन

इंद पहुपंथह<sup>(५)</sup> वारिय<sup>(६)</sup> ॥

मुह मुच्छ सुच्छ<sup>(७)</sup> सोमेस सुअ<sup>(८)</sup>

धुअ समांन संभरि धनिय<sup>(९)</sup> ।

पडरै दोह जस चट्ढई

धर पडर<sup>(१०)</sup> करि अप्पनिय ॥ ६७ ॥

दूहा ॥

धन्य<sup>(११)</sup> राज अवसांन मन<sup>(१२)</sup>

रन<sup>(१३)</sup> संध्यौ सुरतांन ।

लच्छि<sup>(१४)</sup> लई चतुरंग जित्ति

बर बज्जे<sup>(१५)</sup> नोसांन<sup>(१६)</sup> ॥ ६८ ॥

कवित्त ॥

छत्र मुजीक<sup>(१७)</sup> निसांन

(१) D ऊँतै। (२) D उच्चरै। (३) B मंची। (४) D नरीय। (५) D पङ्क०। (६) D पवारीय। (७) D सुअ। (८) D अह। (९) D धनीय। (१०) B पडरै। (११) D धन्या। (१२) T नन। (१३) B संध्यौ, c. m. (१४) D लच्छि। (१५) D बज्जे। (१६) D नि०, c. m. (१७) A मुजीक, D मजीक।

जीति लीने सुरतांनं ।  
 गौ धर ढिल्लिय<sup>(१)</sup> ईस  
 बज्जि निरघात निसांनं ॥  
 दिसा दिसा जय कित्ति  
 जित्ति गावै<sup>(२)</sup> प्रथिरार्ज ।  
 बाल वृद्ध भर<sup>(३)</sup> जुवन<sup>(४)</sup>  
 जंग जंपै<sup>(५)</sup> धनि लाजं ॥  
 साध्रंम धारि छची<sup>(६)</sup> नृपति  
 दिपति दीप भुअलोक पति ।  
 पुजै न कोइ<sup>(७)</sup> सुरतांन कों<sup>(८)</sup>  
<sup>(९)</sup>सुष अयंन पारथ्य गति ॥ ६६ ॥

दूहा ॥

हालाहल<sup>(१०)</sup> बित्ते सुभर<sup>(११)</sup>  
 कोलाहल अरि गांन ।  
 सुबर राज<sup>(१२)</sup> प्रथिराज कौ<sup>(१३)</sup>  
 तपय बीर<sup>(१४)</sup> बहु<sup>(१५)</sup> जान ॥ ७० ॥

---

(१) D ढिल्ली । (२) B गावे, D गांव । (३) D भरि । (४) D जू० ।  
 (५) D जीप । (६) D छत्ति । (७) D कैय । (८) D कौ । (९) D roads  
 सुमस यन । (१०) D हालाहल । (११) D सुबर । (१२) D राज । (१३)  
 D कौ । (१४) D बरि । (१५) D बड़ ।

कवित्त ॥

छंडि दियौ सुरतांन

सुजस पहु पीप<sup>(१)</sup> मंडि सिर ।

जित्ति जंग राजांन

इच्छि पूजा इच्छी<sup>(२)</sup> थिर ॥

मूमिय<sup>(३)</sup> मिलि<sup>(४)</sup> इक आइ

इक बंधे बसि किज्जिय<sup>(५)</sup> ।

इक अप्प पहराइ<sup>(६)</sup>

मांन भंजि रु मन दिज्जिय ॥

आवै अपार<sup>(७)</sup> लच्छी<sup>(८)</sup> सहज

षट् बरन सुष्पह गवन ।

चहुआंन सूर<sup>(९)</sup> संभरि धनी

तपै<sup>(१०)</sup> तेज सोमह सु<sup>(११)</sup> अन ॥ ७१ ॥

इति श्रीकवि चंद विरचिते प्रथिराज रासा<sup>(१२)</sup> के  
मोरव्यूह पीपा<sup>(१३)</sup> पातिसाह ग्रहनं<sup>(१४)</sup> नाम एकतो-  
समे<sup>(१५)</sup> प्रस्तावः<sup>(१६)</sup> ॥ ३१ ॥ पीपाजुह<sup>(१७)</sup> सम्यो समाप्तः ॥

(१) D भीय । (२) D इच्छि । (३) B मुम्मिय, D भुमिय । (४) D places  
इक मिलि । (५) D तिजिय । (६) D ०राय । (७) D न पार । (८) D  
लच्छि । (९) D सूर । (१०) D तपै । (११) D reads सूर्य वर । (१२) D  
रासि । (१३) D adds परिहार । (१४) D adds मांन भंजनं । (१५) B  
गुनतीसमे, D om. (१६) D adds संपुरणं । श्रीकल्याणम् अस्तु । संवत् १८७९  
ना वरषे धितिय । आसो वदि असावास्या तिथौ । वार बूधे ॥ श्रीपल्लादनपुर मध्ये  
लघुंके । लषावितं मेहल साहब । लषितं मुनि ऋषि विजयेन ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा ।  
तादृशं लिपितं मया । यदि सुधम् असुधं वा । मम दोषो न दियते ॥ जलात् रथ  
थलात् रथे । रथे सिथलबंधनात् । मूर्षहले न दातव्यं । एवं वदंति पुस्तिका ॥ (१७)  
D om. this clause.



॥३२॥<sup>(१)</sup>अथ इद्रावती व्याह नाम प्रस्ताव लिख्यते॥३२॥

दूहा ॥

कितेक दिवस बिते न्वपति  
सारंगी पुर साज ।  
धर मालव मंड्यौ न्वपति  
आषेटक प्रथिराज ॥ १ ॥

कवित्त ॥

चौ अग्गानी सड्ढि<sup>(१)</sup>  
खर सामंत सु सथ्थं ।  
मालव धर प्रथिराज  
सज्जि आषेटक तथ्थं ॥  
बर उज्जेनी राव  
जीति पावार सु भीमं ।  
बल संमर जो गट्ठ<sup>(२)</sup>  
गाहि चहुआन जु सीमं ॥  
सगपन सु जीति संभरि धनिय  
ग्रहन जोग सम वर न्वपति ।

संभाग समर सुनयौ समर  
समर बीर मंडन दिपति ॥ २ ॥

दृष्टा ॥

सुबर बीर चिंतै न्वपति  
बर बरनी दुति काज ।  
बर इंद्रावति सुंदरी  
बरन तकै प्रथिराज्ज ॥ ३ ॥

कवित्त ॥

इंद्र सुंदरी नाम  
बीय इंद्रावति सोहै ।  
वर समुंद पावार  
धरि ग अति सम संग लोभै ॥  
मनमथ मथन नरिंद  
हाइ करि भाइह गाढी ।  
(१) रुअत अंग अंकुरित  
तुंग दोऊ करि काढी(२) ॥  
ज्यो छित्त कांम जंपै(३) परति  
अति सुदेह निमल झलकि ।

---

(१) B reads अरज रंग अंग अंकुरित or (भु० ?) (२) B गाढी । (३)  
A जंपै ।

सुंकुच सुकांम कर कलिय तिहि  
पेरिपु देषि आयौ ललकि ॥ ४ ॥

दूषा ॥

श्रीफल दुज बर इथ्य करि  
दिन<sup>(१)</sup> गयी चहुआन ।  
दिन पंचमि बर भोम दिन  
लगन करे परमान ॥ ५ ॥  
दुज पुच्छै<sup>(२)</sup> आतुर नृपति  
किहि वय किह उनहार ।  
किहि लच्छिन मति कोन बुधि  
कहि किहि<sup>(३)</sup> सुमति बिचार ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥

वय लच्छन अरु रूप गुन  
कहत न वनै सुवांम ।  
सारद मुष उच्चारती  
अरु साषि भरै<sup>(४)</sup> जो कांम ॥  
अरु<sup>(५)</sup> साषि भरै जो कांम  
कहै सारद मुष अप्पन ।

---

(१) A दिन । (२) B पूजै । (३) B किंहि । (४) Read *bharai jō*,  
m. c. (५) B T om.

तौ<sup>(१)</sup> साधि चित न न भरै  
 कहिय<sup>(२)</sup> दिष्यै सु अण्णन ॥  
 बलि सरूप सज्जी मदन  
 सुभ सागर गुर मेव ।  
 सो सज्जिय भज्जिय दिवह  
 तकि प्रथिराज ब लेव ॥ ७ ॥

दूहा ॥

बाल सुनत प्रथिराज गुन  
 दुरि दुरि श्रवन सुहित ।  
 जिम जिम दुज वर उच्चरत  
 तन मन तिम तिम रत्त ॥ ८ ॥

छंद हनुफाल ॥

सुनि प्रथम बालिय रूप ।  
 वर बाल लच्छिन रूप<sup>(१)</sup> ॥  
 अहि संधि<sup>(४)</sup> सैसव याल ।  
 अजु अरक राका हाल ॥  
 सैसव सु खर समांन ।  
 वय चंद चढन प्रमांन ॥  
 सैसब्ब जावन एल ।

(१) Read *tau* m. c. (२) B कहियै । (३) B नूप । (४) A सधि ।

ज्यो पंथ<sup>(१)</sup> पंथी मेल ॥  
 परि भोह<sup>(२)</sup> भवर प्रमान ।  
 वै बुद्धि अछुरि आन ॥  
 द्रिग स्याम सेत सुभाग ।  
 सावक मग छुटि<sup>(३)</sup> वाग ॥  
 बिय<sup>(४)</sup> द्रिगन आपम कोड<sup>(५)</sup> ।  
 सिस भंग घंजन होड ॥  
 बर बरन नासिक राज ।  
 मनि जाति दीपक लाज ॥  
 गति सिषा<sup>(६)</sup> पतंग नसाव ।  
 आपम दे कवि आव ॥  
 नासिक दीपन साल ।  
 झप<sup>(७)</sup> दैत<sup>(८)</sup> घंजन बाल ॥  
 बिय बाल जावन सेव ।  
 ज्यो दंपती हथ लेव ॥  
 बै संधि संधिअ चिंद ।  
 ज्यो मत्त जुरहि गुविंद ॥  
 तुछ रोम राज विसाल ।  
 मनें<sup>(९)</sup> अगि उगिाय बाल ॥

(१) B पथ । (२) T भोह । (३) B छुटि । (४) B बय । (५) T कोड ।  
 (६) Read *sikhā*, m. c. (७) Read *jhāp*, m. c. (८) B देत । (९)  
 Read *manō* m. c.

कुच तुच्छ तुच्छ समूर ।  
 मनें<sup>(१)</sup> कांम फल अंकूर ॥  
 बय रूप आपम एह ।  
 जा जनक नृप<sup>(२)</sup> कर देह ॥  
 बर छिन्न थकत तेह ।  
 मनें कांम द्रप्पन देह ॥  
 वै संधि कवि बर बंधि ।  
 ज्यौं वृद्ध बाल विबंध<sup>(३)</sup> ॥  
 वै संधि संधि प्रमांन ।  
 ज्यौं<sup>(४)</sup> स्वर ग्रहन प्रमांन ॥  
 वै राह ससि गिलि स्वर ।  
 चव ग्रह<sup>(५)</sup> मत्त करूर ॥  
 बर बाल वै संधि एह ।  
 सिकार कांम करेह ॥  
 लज करे लज लजि छंडि ।  
 चितरंक दीन समंडि ॥  
 कहां<sup>(६)</sup> लगि कहें बरनाइ ।  
 तो जंम अंत सु जाइ<sup>(७)</sup> ॥

(१) Read *manō* m. c. (२) B नृप । (३) B विबंधं, T विबंधे ।  
 (४) B ज्यौं । (५) T ग्रहन । (६) Read *kahā*, m. c.; T कहा । (७) B  
 जाई c. m.

फल ह्यथ लिय परवान ।  
तप तूंग तो चहुआन ॥ ९ ॥

कवित्त ॥

बर उज्जेनी राव  
रंग बज्जे नोसानं ।  
इंद्रावति सुंदरी<sup>(१)</sup>  
बीर दीनी चहुआनं ॥  
राज मंडि आषेट  
समर कगार वर धाइय ।  
बरगुज्जर वै राव  
चंपि चित्तोरें<sup>(२)</sup> आइय ॥  
उत्तरे बीर प्रव्वत गुहा  
धर पद्धर मेलानं किय ।  
जागिंद राव जग ह्यथ बर  
गढ उत्तरि कर पान लिय ॥ १० ॥

दूहा ॥

छंडि बीर आषेट बर  
गौ मेलानं नरिंद ।

---

(१) Read *sundariya*, m. c. (२) T चित्तोरें ।

छंडि स्वर सिंगार रस  
मंडि वीर वर नंद ॥ ११ ॥

कवित्त ॥

मतो मंडि चहुआन  
सबै सामंत बुलाइय ।  
दै घंडो पज्जून  
बीर उज्जेन चलाइय ॥  
सथ्य कन्ह चहुआन  
सथ्य बडगुज्जर रामं ।  
सथ्य चंद पुंडीर  
सथ्य दीनौ नृप हामं ॥  
आवृत्त अतताइ सु वर  
रा पज्जून सु मुकलिय ।  
मुकल्यौ गोर निडुर सुवर  
(१)मुकलि जैसिंघ(१) पषलिय ॥ १२ ॥

दूहा ॥

मुकलयौ कवि चंद सथ  
निप मुकलि गुर राम ।



मुक्कल्यौ कैमास संग<sup>(१)</sup>

दाहिम्मौ<sup>(२)</sup> वर तांम ॥ १३ ॥

सब सामंत सु संग लै

लै चलयौ चहुआन ।

वरनि चिन्ह उर सल्लई

कहिग्ग<sup>(३)</sup> कविय बषांन ॥ १४ ॥

छंद चोटक ॥

प्रथिराज चळ्यौ सिर छत्र उपं ।

ससि कोटि रवी ज्यो<sup>(४)</sup> नछिच तपं ॥

गज राज विराजत पंति घनं ।

घन घोरि घटा जिम गर्जि मनं ॥

हय पष्पर बष्पर तेज तुनं ।

किननकहि<sup>(५)</sup> धक्कहि सेस धुनं ॥

सहनाइ नफेरिय भेरि नदं ।

घुरबांन निसांनन मेघ भदं ॥

घन टोप सु आप अनेक सरं ।

मनुं भइव बीज उपंम धरं ॥

फिर बान कमांन न तान करं ।

(१) Read *sāg*, m. c. (२) T ०म्मा । (३) A B T कहिग्ग, c. m.  
(४) Read *jyō*, m. c. (५) B किननंकहि, T किननंकहि ।

हथनारि<sup>(१)</sup> हवाइ<sup>(२)</sup> कुहक वरं ॥  
 सुजयं प्रथिराज सु सारथयं ।  
 दुतियं कहि भारथ पारथयं ॥ १५ ॥

छंद मोतीदांम ॥

चळ्यौ न्वप बीर अनंदिय चंद ।  
 सु मुत्तिय<sup>(३)</sup> दाम पयं पद<sup>(४)</sup> छंद ॥  
 दए न्वप कग्गद भुत्त सु इष्ट ।  
 मिले सब आइ सजंग नरिष्ट ॥  
 उडो घुर धूरि<sup>(५)</sup> अछादिय भांन ।  
 दिसा धरि<sup>(६)</sup> अठ्ठन सुज्जय<sup>(७)</sup> सांन ॥  
 बजे घन सह निसान सुहह ।  
 लजे तिन सह समुहय रह ॥  
 सुदे सतपच्च कमोदन घेरु<sup>(८)</sup> ।  
 करे चतुरंगय संकिय मेरु ॥  
 (९)ट्रिगपाल पयाल पुरं सरसी ।  
 तिन कै वर कन्ह परे धुरसी ॥

(१) A हथनारि । (२) A T हवाई, B अवार्द । (३) A मुय, om. ति ।  
 (४) A पय । (५) B घुरि । (६) T धुरि । (७) B सुज्जय । (८) B घेरु ।  
 (९) Here the metre changes to the *trotaka* (see stanza 15);  
 though the change is not indicated in any of the MSS.

जुअ नंदिय<sup>(१)</sup> चंद निसाचरयो ।  
 किल कंपहि तुंड ज संबरयो ॥  
 बिफुरै बर स्वर चिह्नं दिसयो ।  
 डरपै<sup>(२)</sup> सुरपति उरं बसियो ॥  
 फन फूंक फनंपति को बिसरी ।  
 धरकें पय बज्जि पुरं<sup>(३)</sup> दुसरी ॥  
 जुर हेरु कि चंपिध जान धजं ।  
 तिन सो बर पंषिय<sup>(४)</sup> ते उरझं ॥  
 बर बज्जि तंदूर<sup>(५)</sup> तहां तबलं ।  
 निसु नैन नवीनय बंस बलं<sup>(६)</sup> ॥  
 जु धरै बर गौर उछं गहरं ।  
 सु कहै बर कंति न कंपि डरं ॥  
 जु बजावत डोरु अडक सुरं ।  
 रननंकहि जाग जुगाधि हरं ॥  
 सजियं चतुरंग प्रथीपति यो ।  
 दुतियं कथि भारथ पारथ यो ॥ १६ ॥

दूहा ॥

सजी सेन प्रथिराज बर  
 बीर बरन चहुआन ।

(१) B नंदिय, T नरिंय । (२) B उपरै । (३) T पुरं । (४) T पंषिय ।  
 (५) Read *tādūra*, m. c. (६) A बयं ।

बरद सौर संभय मिल्यौ  
चिचंगी परधान ॥ १७ ॥

उत रावर संम्हौ मिल्यौ  
चिचंगी परधान ।

कहौ समर रावर कहां  
पुच्छि कुसल चहुआन ॥ १८ ॥

कुंडलीया ॥

मिलत राज प्रथिराज बर  
समर कुसल पुछि तीर ।

कहां सेन<sup>(१)</sup> चालुक्क को<sup>(२)</sup>  
कहां समरंगी बीर ॥

<sup>(३)</sup>कहां समरंगी बीर  
दियौ उत्तर परधान ।

क रहे <sup>(४)</sup>रां चिचंग  
राज आहुट्ट प्रमान ॥

गुज्जर वै गुरि<sup>(५)</sup> जंग<sup>(६)</sup>  
हक्क उत्तर पड्डर चलि ।

गठई तें दस कोस  
समर उपमौ समरं मिलि ॥ १९ ॥

---

(१) A सेत । (२) B को । (३) A om. this line. (४) T र ।  
(५) B पुरि । (६) A जंग, B T जंग ।

कथित ॥

कहै चिचंगिय मंचि  
 चंपि आयै चालुकह ।  
 तुम नन दीनौ<sup>(१)</sup> भेद  
 आइ मंडौ बर चुकहि<sup>(२)</sup> ॥  
 चिचंगी चतुरंग  
 आइ अडो कर हेरां ।  
 जुइ रुइ चालुक  
 हुए केज दिन भेरां ॥  
 हम दैन षबर तुम मुकलिय  
 कहौ<sup>(३)</sup> कही मुष मुष रुष ।  
 प्रथिराज राज अगौ विवरि  
 कही बत्त परधानं मुष ॥ २० ॥  
 नप बुज्झै चालुक  
 सेन कित्तक परसांनं ।  
 आइ ग्रह्यौ चिचंग  
 निरत दीनी न न आनं ॥  
 खर सुबर आवृत्त  
 रीति रष्यो बिधि जानं ।

---

(१) A दीनो । (२) A B T चुकचि । (३) B कचो ।

इन अगौ चालुक

वेर किती भगानं ॥

(१) जोगिंद राव जीयन (२) बलिय

कलिय काल कप्पन विरद ।

समरंग बीर सम सिंघ बल

चंपि लैन चालुक दुरद ॥ २१ ॥

चौपाई ॥

(३) करि अगौ लीनौ परधानं ।

आतुर ही चह्यौ चहुआनं ॥

दै गठ दच्छिन (४) नछिन आनं ।

समर सजन संमुह उठि धानं ॥ २२ ॥

कवित्त ॥

(५) पावस रन अगौ प्रवाह

अपभ छाया छिति छाड्य ।

(६) बर छिची छिति (७) पुर प्रमान

अपभ बहर उठि (८) झाड्य ॥

आलस नीदय घीज

सत्त राजस गहि तामस ।

(१) B गोविंद । (२) B जीयन । (३) B करि । (४) B तछिन । (५)  
Redt. line; 14 for 11 instants. (६) B पूर । (७) B भांड्य ।

धर दुह रन बुढनह  
 करै उद्दिम रन हामस ॥  
 शृंगार रंभ ग्रेहं वसह  
 औ कुलटा सुकबीय हुअ ।  
 कारन किति औ काल मिसि  
 द्रवै <sup>(१)</sup>इंद दुर स्वरहं सुलव ॥ २३ ॥  
 ज्यों गुनाव गारडू  
 सेन चालुक मिसि साही ।  
 बिषम जैर फूंकयौ  
 सु फन ब्रह्मंड नवाही ॥  
 जीभ घग्ग जजझारि  
 सेन सज्जे चतुरंगी ।  
 बांन मंच मंचैन<sup>(२)</sup>  
 रसन कुंन आवय अगगी ॥  
 मन धीर बीर तामस तमसि  
 निधि<sup>(३)</sup> चले मन मध्य दिसि ।  
 भोरा <sup>(४)</sup>भुवंग भंजन भिरन  
 पुब्ब दर्द चिंतह सुबसि ॥ २४ ॥

---

(१) B T इंद । (२) T मंचेन । (३) B निसि । (४) T नुवंग ।

थह संभरि चहुआंन  
 बीर पारधि षरि आइय<sup>(१)</sup> ।  
 दुहु<sup>(२)</sup> निसांन बजि समुह  
 भूमि पुर कंभि हलाइय ॥  
 बीर सिंघ आहुठ  
 बीर चालुक मुष साहिय ।  
 पुच्छ मगा चहुआंन  
 दुहुन बर बीर समाहिय ॥  
 उत्तरिय मनो सामुह तहि  
 उदित<sup>(३)</sup> दीह मंगल अरक ।  
 जागिंद जेम जागिंद कसि  
 अष्ट कुली बंछै मुरक<sup>(४)</sup> ॥ २५ ॥

दूहा ॥

चालुकां चहुआंन दल  
 भई सनाह सनाह ।  
 दोऊ सेन<sup>(५)</sup> कवि चंद कहि  
 बरनि बीर गुन चाह<sup>(६)</sup> ॥ २६ ॥

छंद मोतीदांम ॥

सजी बर सेन सु चालुक राइ ।

---

(१) T आइय । (२) A T दुजं । (३) A उदित । (४) A मुरक ।  
 (५) T के विवंद । (६) A चाह ।



परे वर बीर निसांनन घाड़ ॥  
 भए दल सोर चिह्नं दिसि बक्क ।  
 मनें मरुपुत्त हकारहि<sup>(१)</sup> हक्क ॥  
 अछादि अरुन्न न सूझत भल्ल ।  
 करे किधो<sup>(२)</sup> सोर कपी वर गल्ह ॥  
 गहब्बर बैन उच्चारत श्रीन ।  
 इहै जुध कार प्रकारय द्रोण ॥  
 धरे गज आगम नीम अउड्ड ।  
 छुटे वर पाइक फूलय रुद्ध ॥  
 सुसील अपूल बन्यो<sup>(३)</sup> हथवांन ।  
 बिचे गुथि मोति कुहक्क अचांन ॥  
 दुह्मं<sup>(४)</sup> बिच जगमगं<sup>(५)</sup> नगपंति<sup>(६)</sup> ।  
 परी तहां पट्टन राइ मपंत ॥  
 जु भाल अंकूर सु सुंदर बिंद ।  
 धरी हथनारि छतीसय चंद ॥  
 कसुंभिल डोरि सु पछिम संधि ।  
 तिठौ<sup>(७)</sup> हरबंध नरिंद सुबंध ॥  
 लरं मधि ब्रम्ह सु चालुक राव ।

(१) A हकारहि c. m. (२) A B किधो, T किधो, read *kidhō*, m. c.  
 (३) B बन्यो । (४) T दुह्मं । (५) B T नगमगं । (६) T नगपति ।  
 ७) A तिठौ c. m.

दिसं बुलि भट्टिय दल्लिन काव ॥  
 दिसि वांम जवाहर मेरअ राव ।  
 रच्यौ अरगंध नरिंद नचाव ॥  
 रंग स्यांम सनेत कसे घन रूप ।  
 तिन में वरछीन सुरंग अनूप ॥  
 पसरी वर क्रंन<sup>(१)</sup> सनाहनं तीर ।  
 (१)अचवै उत कालिय<sup>(२)</sup> के रुचि घीर ॥  
 सजी चतुरंगन बग बनाइ ।  
 चढे अरि कै उर चालुक राइ ॥ २७ ॥

दोहा ॥

चालुकां चिचंग पति  
 मिले दिष्टि दुअ दौरि ।  
 मनें पुव्व पछिम हुतें  
 उडि डंबर डलसौर ॥ २८ ॥  
 इत चण्यौ चिचंग पति  
 उत चुहांन प्रथिराव<sup>(४)</sup> ।  
 आइ राज उप्पर करन  
 बज्जि निसांनन घाव ॥ २९ ॥

---

(१) A छन । (२) A reads अचवै उत काय के रुचि घीर । (३) B T कालीय c. m. (४) A प्रथिराइ ।

कुंडलिया ॥

ढाल ढलकि दुअ सेन बर  
 गज पंती<sup>(१)</sup> हलि जुथ्य ।  
 मनें मल्ल आसुर<sup>(२)</sup> दोउ  
 तारी दै दै हथ्य ॥  
 तारी दै दै हथ्य  
 रांम अवनी अन पिष्ये ।  
 दुहुन दिष्ट अंकुरिय  
 पाज बंधन बल दिष्यै ॥  
 चंपि सेन चालुक  
 बीर भ्रम सों बर मिल्ले ।  
 चाहुवांन बर सेन  
 ठुरी<sup>(३)</sup> पछिम दिसि ठल्लै ॥ ३० ॥

कवित्त ॥

सब सामंत रु समर  
 बीर दच्छिन दिसि हंडिय ।  
 चाहुवांन हुस्सेन  
 गज्ज व्यूहं रचि गड्डिय ॥  
 एक दंत हुस्सेन<sup>(४)</sup>  
 दंत दच्छिनह ततारी ।

---

(१) T पती । (२) A आसुर । (३) A ठुरि । (४) T ऊसेन ।

सुंड गरुअ गोयंद<sup>(१)</sup>

राज कुंभ स्थल<sup>(२)</sup> भारी ॥

दिसि वांम सवै आकार गज

गमन<sup>(३)</sup> सीह मेरी सुबर ।

वडूनय अंग आहुट्टपति

महन रंभ मच्चौ सुभर ॥ ३१ ॥

छंद पड्वरी ॥

घन घाड घाड अघ्याड खूर ।

सिंधू औ राग बज्जै करूर ॥

हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क ।

मुह मार मार बज्जै बरक्क<sup>(४)</sup> ॥

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस ।

षप्पर उपट्टि<sup>(५)</sup> घुंटे घुरीस ॥

नाचंत नह नारह तुंब ।

अच्छरी अच्छ नद जांनि लुंब ॥

गिडिनी सिद्ध वेताल फाल ।

षेचर षयाल कूदै कराल ॥

ओनित्त जांनि सरिता प्रवाह ।

(१) B गोइंद । (२) A थल, B सथल । (३) A महन । (४) T बक्क,  
om. र । (५) A उप्पट्टि घुंटे घुरीस ।

कडकांत रुंड मुंडह सुवाह ॥  
 चमकांत दंत मथ्यै कृपांन ।  
 मांनो कि ऊक लग्यौ गिरांन ॥  
 पति चित्रकोट चहुआंन सेन ।  
 चालुक चूर कीनौ सुरेन ॥ ३२ ॥

दूहा ॥

चालुकां परि खर रन  
 सहस एक मुर सत्त ।  
 चूक चिंत चूकौ चितन  
 औ अचिज्ज विधि बत्त ॥ ३३ ॥  
 पंच पहर<sup>(१)</sup> बित्यौ समर  
 दिन अथवंत प्रमांन ।  
 उभै सत्त रावर सुभर  
 प्रथीराज सत आंन ॥ ३४ ॥  
 निस बर घटी ति सत्त रहि  
 सेष जांम पल तीन ।  
 भिरि भोरा रावर समर  
 रत्तिवाह सो दीन ॥ ३५ ॥  
 नदी<sup>(२)</sup> उत्तरि चालुक<sup>(३)</sup> बर  
 चंपि सुभर प्रथिराज ।

(१) B पडर । (२) T नदि । (३) A B T चालुक c. m.

सुभर भीम उषर परे

मनेां कुलींगन<sup>(१)</sup> बाज ॥ ३६ ॥

छंद भुजंगी ॥

परे धाड चहुआन चालुक मुष्पं ।

मनेां मोष मदमच जुट्टे कुरष्पं ॥

बजे कुंत<sup>(२)</sup> कुंतं समं सेल साही ।

परी सार टोपं बजी तंच घाई<sup>(३)</sup> ॥

झरै सार अगो<sup>(४)</sup> दझै<sup>(५)</sup> टोप दज्जं ।

मनेां तंच नेतं प्रलै अगि सज्जं ॥

फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही ।

धसी भारती कासमीरं ति सोही ॥

दिए नाग मुष्पं गजे तंत वानं ।

ठनकंत<sup>(६)</sup> घंटं फटै पीत वानं ॥

बजे बज्ज घाई उकत्ती ति चिन्हं ।

बकौ जांनि भट्टं प्रसस्ती इहन्हं ॥

गहै<sup>(७)</sup> दंत सूरं चहै कुंभ तंती ।

फिरै जोगिनी जोग उच्चारवती ॥

लगी हथ्य गोरी गई अंग भेदी ।

मनेां राह सूरं बंटे माहि छेदी ॥

(१) A कुलींगन, B कुलींगन, for कुलींगन । (२) A कुज । (३) A काई । (४) A अगि । (५) A दज्जै c. m. (६) A ठनकन । (७) A सहे ।

रुधी धार मंती सुमंती उछारै ।  
 उतकंठ भेली जु रंभा विचारै ॥  
 परै घुमि स्वरं महारोस भीनं ।  
 मनो वारुनी मह प्रथंम पीनं ॥

दूहा ॥

औसरि भर पिच्छे परे  
 समर तिरच्छौ आइ ।  
 मानहु पल हुत्ते सनी  
 भइ वीभच्छ निधाइ ॥ ३६ ॥

छंद चीभंगी ॥

तिय बिय अरि मंतं<sup>(१)</sup> बहुबलवंतं  
 ग्यारह जंतं अतिरंगी ।  
<sup>(२)</sup>चीभंगी छंद कहि कविचंदं  
 पढत फनिदं<sup>(३)</sup> बर रंगी ॥  
 विय हुअ नयनालं बजि रन ताल  
 असिवर झालं रन रंगी ।  
 सामत<sup>(४)</sup> भर स्वरं दिठ करूरं

(१) T संतं । (२) A B T read चिभंगी छंद कहि कविचंदं, but this is short by two instants. The usual spelling of the name of the metre is चिभंगी; but in the heading it is spelled चीभंगी, and so, clearly, it must be spelt here to suit the requirements of the metre. (३) A फनिदं c. m. (४) A B T सामंत c. m.

मिलि अरिपूरं अनभंगी ॥  
 मनु भान पयानं चढि बर वानं  
 मिलि वय्थ्यानं<sup>(१)</sup> असि झारं ।  
 ओडन कर डारं बेन करारं  
 तामस भारं तन तारं ॥  
 जुट जुटिय जुडं जेवति वडं  
 अरिनि<sup>(२)</sup> अरुडं अरि बकं ।  
 उर धरि चालुकं खरज हकं  
 मुर आतकं धक धकं ॥  
 दल बल पर ओटं सीस बिघोटं  
 रन रस वोटं परि उडं ।  
 दंतं उषारं कंधय मारं  
 अरि उत्तारं धत छडं ॥  
 जोगिन किलकारी हसि हित तारी  
 दै दै भारी हिलकारी ।  
 अरि तन तन कालं परि बेहालं  
 चालुक झालं बर सारी<sup>(३)</sup> ॥ ३६ ॥  
 कवित्त ॥  
 बीर बीर आरव्व  
 चढिय बीरं तन<sup>(४)</sup> हक्के ।

(१) A मिलिंथ्यानं । (२) A अरनि । (३) A सीरी । (४) B त, om. न ।



चावहिसि बिडुरे

मोह माया न कसके ॥

एक दिनां आ हुरे

आदि जुद्धं षिति लग्गे ।

कै छुट्टे मद मोष

जानि बीर न द्रग जग्गे ॥

घन घाड़ निघाड़ अघाड़ घन

सत सुभाड़ विब्भाड़ परि ।

कविचंद बीर इम उच्चरे

प्रथम जुद्ध आदीत<sup>(१)</sup> टरि ॥ ४० ॥

दूहा ॥

संझ सपट्टिय बीर भर

परि ग सुभर दस राइ ।

तिय षवास परि गह न्वपति

सिर घुम्मै घट घाड़ ॥ ४१ ॥

कवित्त ॥

परगौ समर षावास

जिन सम<sup>(२)</sup> जित्यौ चालुकिय ।

---

(१) A आदित । (२) A समर; A reads जिन समर जित्यौ चालुकिय, which will not scan: if समर is to be retained, the line must be spelt जिन समर जित्यौ चालुकिय, but this would not rhyme so well with the following hemistich.

(१) परि भट्टी महनंग

छच नष्यौ अरि सक्किय<sup>(१)</sup> ॥

(२) परगौ गोर केहरी जिन

रेह अजमेरी लगिय ।

परि ग बीर पामार<sup>(४)</sup>

धार धारह तन भगिय ॥

रघुवंस पंच पंचौ मिलै

बर पंचानन और कवि ।

चिचंग राव रावर लरत

टरय दीह अथवंत रवि<sup>(५)</sup> ॥ ४२ ॥

घरी अड दिन रह्यौ

चलि ग हुस्सेन घांन भ्रम ।

चालुकां दिसि चलयौ

मोह छंड्यौ जु क्रमं क्रम ॥

असि प्रहार चढि धार

मन न मोरगौ तन तोरगौ ।

अस्त बस्त बज्जी क-

पाट दडीच ज्यों जौरगौ ॥

(१) A om. this hemistich. (२) B T सक्किय c. m. (३) redt. line ; 14 for 11 instants. (४) B मापार । (५) A रवि ।

बर रंभ बरन उतकंठती  
 स्वर ह्रर उतकंठ मिलि ।  
 ढिल्ली ब ढोल जीरन जुगं<sup>(१)</sup>  
 गल्ह बीर जुग जुगा चलि ॥ ४३ ॥

दूहा ॥

निसि<sup>(२)</sup> दिन घटिय तिसत्त बर  
 दल चहुआन न चीन्ह ।  
 भिरि भोरा रावर रिनह  
 रत्तिवाह सो दीन ॥ ४४ ॥  
 भिरि भगौ<sup>(३)</sup> सुत भुअंग कौ  
 गरुड समर गुर राज ।  
 फिरि पछौ पुंछी पटक्कि<sup>(४)</sup>  
 विन सु गरब तजि लाज ॥ ४५ ॥

कवित्त ॥

षेत जीति चिचंग  
 हथ्य चढ्यौ चहुआनं ।  
 के झोरी भर सुभर  
 लीन अप्पह पर आनं ॥  
 केक किए पर लोक

(१) A B T जुगं c. m. (२) B निस । (३) T भगौ c. m. (४) B पटकि ।

मुक्ति लब्धी<sup>(१)</sup> जुग जानं ।  
 पंच तत्त मिलि पंच  
 सार धारह लग्गानं ॥  
 चहुआन समर इकत्तनि सह  
 तहां उतरि सेना<sup>(२)</sup> सुभर ।  
 चालुक्क भीम पट्टन<sup>(३)</sup> गयौ  
 करी चंद कित्तिअ अमर ॥ ४६ ॥

चौपाई ॥

अमर कित्ति कविचंद सु अष्पी  
 जां<sup>(४)</sup> लगि ससि खरज<sup>(५)</sup> नभ सष्पी ।  
 इह काया माया जिन रष्पी  
 अंत काल सोई जम भष्पी ॥ ४७ ॥

दूहा ॥

निसि सुपनंतर राज पै<sup>(६)</sup>  
 कित्ति आइ कर जेअर ।  
 नौ तन अति उज्जल तनह  
 नीद न्वपति मन चोर ॥ ४८ ॥  
 जपि<sup>(७)</sup> जगाइ सोमेस सुअ

(१) T A spell लप्भी, B लब्भी, as usual. (२) T सेन, c. m. (३) B पट्टन । (४) T जा । (५) T खरज्ज, c. m. (६) A B पै । (७) A B T जपि c. m.

सदन<sup>(१)</sup> भीम चहुआन ।  
 दित्त<sup>(२)</sup> रूप छची प्रकृति  
 दरसन छची पान ॥ ४९ ॥  
 कोटि लछन सुंदरि सहज  
 भय सुंदरि तन<sup>(३)</sup> प्रेम ।  
 स्वर सुभर डरपै रनह  
 तौ सुधीर कहि केम ॥ ५० ॥  
 कवित्त ॥

(४) तो कित्ती चहुआन  
 हो<sup>(५)</sup> निदरि संसारह चलो<sup>(६)</sup> ।  
 हो<sup>(५)</sup> तीन लोक में फिरें  
 देव मानव<sup>(७)</sup> उर सलो<sup>(८)</sup> ॥  
 हुँ थान थान त्रिगपाल  
 फिरिव चावहिसि रुंधो<sup>(९)</sup> ।

(१) A मदन । (२) B दैत्य, T देत । (३) B T तन । (४) The metre of this stanza is in considerable confusion. In the first place, होँ in the second and third line must be read ऊँ; next, ऊँ in the fifth, seventh and ninth lines must probably be omitted, and चहुआन in the eleventh line is probably to be read चहान; for otherwise these lines have one syllable in excess; lastly, even admitting these emendations, all the above mentioned lines are redundant, having 14 instants, instead of 11. (५) Read hō, = hu, as in the following lines, m. c. (६) A चलो। (७) A मान, om. व । (८) T रुंधो ।

हुँ तन विसाल उज्जल सुरंग  
 चरन दुज्जन सिर घुंदां ॥  
 हुँ सार अडर डोंरु कहन  
 हुँ जोग प्रमानह उतरी ।  
 चहुआन सुनौ सोमेस तन<sup>(१)</sup>  
 हुँ भूत भविष्यत विस्तरी ॥ ५१ ॥

दूहा ॥

तो किती चहुआन हो  
 तीनों लोक प्रसिद्ध ।  
 धीरज धीरं तन धरै  
<sup>(१)</sup>द्रवै भूमि नव निड ॥ ५२ ॥  
 हों सुदेव सुंदरि सहज  
 तुअ गुन गुंथित देह ।  
 पुब्ब प्रेम अति आतुरह  
 लग्यौ प्रेमल नेह ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

जु कछू<sup>(१)</sup> लिष्यो लिलाट  
 सुष्य अरु दुःष समंतह ।

(१) A दुम । (२) A B T prefix तौ, which is superfluous, *m. c.* ;  
 see dúhá 2, on p. 40. (३) T कछु ।

धन विद्या सुंदरी

अंग आधार अनंतह ॥

कल्प कोटि टरि जांहि

मिटै न न घटै प्रमानह ।

जतन जेअर जौ करै

(१)रंच न<sup>(२)</sup> न मिटै बिना नह ॥

सुपनंत राज आचिज्ज दिषि

बुज्झि चंद गुरराम तरु ।

बरनी बिचिच राजन बरहि

कही सत्ति सत्ती सु अरु ॥ ५४ ॥

दूहा ॥

इह सुपनंतर चिंतितह<sup>(१)</sup>

कहि सुदेव जिम कीम ।

रत्तिवाह बर नरिंद सेां

दीनौ भेरा भीम ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥

चौकी जैत पवार

सलष नंदन रचि गड्ढौ ।

---

(१) A B T prefix तौ, which is superfluous, *m. c.* ; see dúhá 2, on p. 40. (२) A om. (३) T चिंतितह, B चितह ।

ता सत्यह<sup>(१)</sup> चामंड  
भीम भट्टी रचि ठट्टौ ॥  
महन सीह बर लरन  
मार मारन रन चौकी ।  
उठी दिष्ट अरि भोज  
प्रात पिज्जिय<sup>(२)</sup> बर सौकी ॥  
हजार पंच अरि ठारि कै  
भोरा अरि उप्पर परिय ।  
जाने कि पुराने दंग में  
अग्नि तिनंका अरि परिय<sup>(३)</sup> ॥ ५६ ॥  
छंद रसावला ॥  
अत्ति अच्छी रनं  
तेग कट्टी घनं ।  
रत्ति अड्डी मनं  
बीज क्रुड्डी घनं ॥  
बीर रस्सं तनं  
सार भंजै घनं ।  
हक्क मच्ची रनं  
बाह बाहं तनं ॥

(१) A B T spell सय्यह, as usual. (२) B पिज्जिय । (३) A reads  
करिय for भरि परिय ।



रुंड मुंडं घनं  
 ईस इच्छै चुनं ।  
 षग्ग भग्गं तनं  
 प्राह्गं गंजनं ॥  
 संभ<sup>(१)</sup> रुद्धी मनं  
 तार चौसट्ठिनं ।  
 भूत प्रेतं तनं  
 भष्ष दीनौ घनं ॥  
 जानि सीलं रुधी  
 कब्बि त्रैपम सुधी ।  
 मंन भारथ जलं  
 भेदि<sup>(२)</sup> उप्पर चलं<sup>(३)</sup> ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥

दै अरि पच्छौ जैत  
 परगौ पांवार<sup>(४)</sup> रूप घन ।  
 परगौ किल्ह चालुक्क  
<sup>(५)</sup>संधि चालुक्कह जूरन ॥

(१) B T मभ c. m. (२) A भिदि । (३) In the three last lines two shorts (◡ ◡), take the place of one long (—). (४) A reads distinctly, and B doubtfully, पांवार । (५) A B T prefix जिदि, which the metre shows to be superfluous, and which is probably an interpolation. Its addition is unnecessary, though it renders the sense clearer.

परगौ बीर बगारी  
 भयौ अगगर चहुआन ।  
 परि मेरी जै सिंघ  
 रिंघ रषी पिजवानं ॥  
 हल मल्यौ सबै प्रथिराज दल  
 दलमलि दल चालुक गयौ ।  
 तिय सीत अगि अंधार पष  
 चंद तुच्छ उदित भयौ ॥ ५८ ॥

दूहा ॥

चालुकां<sup>(१)</sup> चहुआन दल  
 लुथि<sup>(२)</sup> स देठ हजार ।  
 सब घाइल होडें परिय  
 तब मुरि मेर पहार ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥

जंगी सिर चहुआन  
 लुथि<sup>(२)</sup> हुंढन उप्पारिय ।  
 षेत तिरच्छौ मुक्कि  
 पिझिय लग्गौ अरि भारिय ॥  
 यों आतुर लग्गयौ

(१) A चालुकां, c. m. (२) A B T, as usual, spell लुथिय ।

जान<sup>(१)</sup> चालुक न पायौ ।  
 कन् बैन संभलिय<sup>(२)</sup>  
 फेरि बर भीम धसायौ ॥  
 उच्चरिय पानि बर मह भिरि  
 संग लोह<sup>(३)</sup> हकारि दुहुँ ।  
 गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुँ  
 परि पारस भारत्य कहुँ ॥ ६० ॥  
 बर प्रभाव बन होत  
 होड<sup>(४)</sup> चौहान<sup>(५)</sup> सु लगिय ।  
 लरत स्वर दिन मान  
 सिरह चालुक घत घगिय ॥  
 षह घरि बज्जि निसान  
 रत्ति आई सुभिरत्तां ।  
 लोह किरन पसरंत<sup>(६)</sup>  
 स्वर विरुझत वगरत्तां ॥  
 बर स्वर दिषि काइर बिडुरि  
 ठठुकि<sup>(७)</sup> स्वर सामंत रिन ।  
 दिषनह स्वर इन काम बर  
 चढि दिषन गयौ स्वर तन ॥ ६१ ॥

(१) T जाना । (२) T संभरि लिय । (३) A लो, om. च । (४) B च ।  
 (५) B चऊहान । (६) T परंत । (७) A B perhaps टठुकि ।

छंद भुजंगी ॥

भिरे<sup>(१)</sup> स्वर चालुक चहुआन<sup>(२)</sup> गत्तं ।  
 लरंते परंते उठे<sup>(३)</sup> स्वर तत्तं<sup>(४)</sup> ॥  
 दिवं दच्छिनं<sup>(५)</sup> भीम भिरि<sup>(६)</sup> चिचकोटं ।  
 परे मार ओटे चहुआन<sup>(६)</sup> जोटं ॥  
 किये स्वर कोटं न हल्ले हल्लाए<sup>(७)</sup> ।  
 अमी<sup>(८)</sup> सेन दूनूं रहे हत्य<sup>(९)</sup> पाए ॥  
 रसं वीर आयौ चळ्यौ मोह<sup>(१०)</sup> प्रानं ।  
 जिनै छत्रवंसं धरी<sup>(११)</sup> ध्यान मानं ॥  
 भज्यौ चित्तबाहं<sup>(१२)</sup> लजे स्वर दिष्पं<sup>(१३)</sup> ।  
 तहां चंद कब्बी सु आपम पिष्पं<sup>(१४)</sup> ॥  
 पियं चास पिष्पं<sup>(१५)</sup> सषी पास लग्गी ।  
 मनो बाल बंधू परै पाइ अग्गी ॥

(१) So D; A B T भरे । (२) Two shorts (◡ ◡) for one long (—), as often. (३) A B T उठे, c. m. (४) A तते, D रते; D reads this line लरंते उठते परें रत रते । (५) D दक्खनं । (६) A T चहुआन, D चहुवान, which is the usual spelling, but with which the line is short by one instant; the lengthening in the spelling of B was evidently made to suit the metre. A reads चहुआन जो जोटं । (७) D repeats the preceding four lines, varying at the same time the spelling, thus: लरंते उठते परें रत रते ॥ दिवं दक्खिनं भीम भिरि चचकोटं । परें मार उठे चहुआन जोटें ॥ कीए स्वर कोटं न हल्ले हरे । (८) D समी । (९) A B T हत्यं, as usual. (१०) D माह । (११) D धीर धरं । (१२) D चितं चाहं । (१३) B स्वरपं, om. दि । (१४) D औपम सपिष्पं । (१५) D प्रीय वस चितं ।

असव्वार अैसें सनाहंत कटुं ।  
 मनो बीय सौकी पियं<sup>(१)</sup> भाग वटुं<sup>(२)</sup> ॥  
 उडै काइरं हक्क हरि<sup>(३)</sup> जीव चासं ।  
 उपंमा करूरं फुटै नैन पासं ॥  
 मनो पुत्तली<sup>(४)</sup> कंठ गढि<sup>(५)</sup> चित्र लाही ।  
<sup>(६)</sup>करं जानि<sup>(७)</sup> लग्गी टकं टग चाही<sup>(८)</sup> ॥  
 फुटै<sup>(९)</sup> फेफरं पेट<sup>(१०)</sup> तारंग झुल्लै ।  
 मनो नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥  
 दिह<sup>(११)</sup> नाग मुष्ठी<sup>(१२)</sup> गजं हड्ड<sup>(१३)</sup> घग्गी<sup>(१४)</sup> ।  
 षिचं तेज आयौ वरं<sup>(१५)</sup> जंत लग्गी ॥  
 उपंमा न पाई<sup>(१६)</sup> उपंमा न बंची<sup>(१७)</sup> ।  
 मनो इंद्र<sup>(१८)</sup> हथ्यं<sup>(१९)</sup> करं राम षंची ॥  
 गजं<sup>(२०)</sup> फारि फटुं करं एक कोरं ।  
 जकै सिंधु<sup>(२१)</sup> भारं जुरै जानु<sup>(२२)</sup> जैरं ॥  
 पयं जार<sup>(२३)</sup> अैसे प्रतंगं चलायौ ।

(१) D बीचं । (२) B पिडुं । (३) Two shorts ( ) for one long (—), as often. (४) D पूतली । (५) D गहे । (६) A करं । (७) A B T जानी, c. m. (८) D reads करं जीव लग्गी टगं टगवाही । (९) D फटें । (१०) D फट । (११) A T दीए, D दीरे, c. m. (१२) B मुष्णं । (१३) A T apparently हड्ड । (१४) D reads गज हेम पगी । (१५) A चरं । D वरंत, om. जं । (१६) D उपाई for न पाई । (१७) So D ; A B T वची, c. m. (१८) B इंद । (१९) A B T हथ्यं, as usual. (२०) D करि । (२१) D सिंधु । (२२) D जंन । (२३) D जार ।

भगदंत<sup>(१)</sup> छब्बं<sup>(२)</sup> तहां सूर पायौ ॥  
 गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै ।  
 उपमा तिनं<sup>(३)</sup> कीन आपम चारै<sup>(४)</sup> ॥  
 (५) हकै सीस नीचं<sup>(६)</sup> धरं<sup>(७)</sup> उंच<sup>(८)</sup> धायौ ।  
 मनें भंगुरी<sup>(९)</sup> रूप नृपती दिषायौ ॥  
 समं पाज<sup>(१०)</sup> घट्टै कितं साम काजं ।  
 तिते उत्तरे<sup>(११)</sup> सूर चढि कित्ति पाजं ॥  
 वडै<sup>(१२)</sup> सूर सिद्धं सिधं कोन जागी ।  
 म्रिगं पल्ल की भंती<sup>(१३)</sup> ज्यों पाल<sup>(१४)</sup> आगी ॥६२॥

कवित्त ॥

चढत दीह बिप्पहर<sup>(१५)</sup>  
 परिग हज्जार<sup>(१६)</sup> पंच लुथि ।  
 बान बचन गिरि<sup>(१७)</sup> नरिंद  
 झारि उचारि देव धपि<sup>(१८)</sup> ॥  
 षट छह बर<sup>(१९)</sup> हज्जार  
 रुक्मि मज्जे चहुआनं ।

(१) B T भगदंत, D भगदंत । (२) D छबी । (३) D तन । (४) A आपमआचारै । (५) B कहै । (६) D नचै । (७) A धरं; B T धरै; both धर or घड़ and धर or घड mean *body, trunk*. (८) D चंड । (९) D भगि । (१०) D पेज । (११) D कितेउ फरे । (१२) D उडै । (१३) D भाति । (१४) D पेल । (१५) D बेपहर । (१६) D परग हज्जारि । (१७) D गरि । (१८) D reads झार उचारि देव धुथि । (१९) A छहवर, c. m.

असव्वार त्रैसें सनाहंत कटुं ।  
 मनो बीय सौकी पियं<sup>(१)</sup> भाग वटुं<sup>(२)</sup> ॥  
 उडै काइरं हक्क हरि<sup>(३)</sup> जीव चासं ।  
 उपमा करूरं फुटै नैन पासं ॥  
 मनो पुत्तली<sup>(४)</sup> कंठ गढि<sup>(५)</sup> चित्र लाही ।  
<sup>(६)</sup>करं जानि<sup>(७)</sup> लग्गी टकं टग चाही<sup>(८)</sup> ॥  
 फुटै<sup>(९)</sup> फेफरं पेट<sup>(१०)</sup> तारंग झुल्लै ।  
 मनो नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥  
 दिह<sup>(११)</sup> नाग मुष्पी<sup>(१२)</sup> गजं हड्ड<sup>(१३)</sup> घग्गी<sup>(१४)</sup> ।  
 षिचं तेज आयौ वरं<sup>(१५)</sup> जंत लग्गी ॥  
 उपमा न पार्इ<sup>(१६)</sup> उपमा न बंची<sup>(१७)</sup> ।  
 मनो इंद्र<sup>(१८)</sup> हत्थं<sup>(१९)</sup> करं राम घंची ॥  
 गजं<sup>(२०)</sup> फारि फटुं करं एक कोरं ।  
 जकै सिंधु<sup>(२१)</sup> भारं जुरै जानु<sup>(२२)</sup> जैरं ॥  
 पयं जैर<sup>(२३)</sup> त्रैसे प्रतंगं चलायौ ।

(१) D बीचं । (२) B पिडुं । (३) Two shorts ( ) for one long (—), as often. (४) D पूतली । (५) D गहे । (६) A करं । (७) A B T जानी, c. m. (८) D reads करं जीव लग्गी टगं टगवाची । (९) D फटै । (१०) D फट । (११) A T दीह, D दीहे, c. m. (१२) B मुष्पं । (१३) A T apparently हड्ड । (१४) D reads गज हेम पग्गी । (१५) A चरं । D वरंत, om. जं । (१६) D उपार्इ for न पार्इ । (१७) So D ; A B T वची, c. m. (१८) B इंद । (१९) A B T हत्थं, as usual. (२०) D करि । (२१) D सिंधु । (२२) D जंन । (२३) D जार ।



भगदंत<sup>(१)</sup> छब्ब<sup>(२)</sup> तहां सूर पायै ॥  
 गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै ।  
 उपमा तिन<sup>(३)</sup> कीन आपम चारै<sup>(४)</sup> ॥  
 (५) हकै सीस नीचं<sup>(६)</sup> धरं<sup>(७)</sup> उंच<sup>(८)</sup> धायै ।  
 मनें भंगुरी<sup>(९)</sup> रूप न्वपती दिषायै ॥  
 समं पाज<sup>(१०)</sup> घट्टै कितं साम काजं ।  
 तिते उत्तरे<sup>(११)</sup> सूर चढि कित्ति पाजं ॥  
 वडै<sup>(१२)</sup> सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी ।  
 म्रिगं पल्ल की भंती<sup>(१३)</sup> ज्यों घाल<sup>(१४)</sup> आगी ॥६२॥

कवित्त ॥

चढत दीह बिप्पहर<sup>(१५)</sup>  
 परिग हज्जार<sup>(१६)</sup> पंच लुथि ।  
 बान बचन गिरि<sup>(१७)</sup> नरिंद  
 झारि उचारि देव धपि<sup>(१८)</sup> ॥  
 षट छह बर<sup>(१९)</sup> हज्जार  
 रुक्मि मज्जे चहुआनं ।

(१) B T भगदंत, D भगदंत । (२) D छबी । (३) D तन । (४) A आपमचाारै । (५) B कडै । (६) D नचै । (७) A घरं; B T धरै; both घर or घड़ and घर or घड़ mean *body, trunk*. (८) D चंड । (९) D भगि । (१०) D पेज । (११) D बितेउ फरे । (१२) D उडे । (१३) D भाति । (१४) D पेल । (१५) D बेपहर । (१६) D परग हज्जारि । (१७) D गरि । (१८) D reads झार उचार देव धुथि । (१९) A छहवर, c. m.



बर कटुन<sup>(१)</sup> चालुक  
 मत्ति<sup>(२)</sup> कीनी परिमानं ॥  
 सह सेन बीर आहुट्टि तह<sup>(३)</sup>  
 तौ पट्टन वै<sup>(४)</sup> कट्टयौ ।  
 उच्चरौ<sup>(५)</sup> बंभ भट्टी बिहर  
 धार धार अपु चट्टयौ ॥ ६३ ॥  
 तब रां निंगर राव  
 झुज्झ धर रावर मंडिय ।  
 रुक्कि सेन चहुआन  
 षग्ग मग्गह तन<sup>(६)</sup> षंडिय ॥  
 परि गाहिय सब सत्थ  
 गयौ चालुक बज्जाइय ।  
 षभर षेह षग<sup>(७)</sup> मिलिय  
 निरति प्रथिराज न पाइय ॥  
 बीरंग बीर बज्जर बिहर<sup>(८)</sup>  
 भिरत<sup>(९)</sup> बज्जिनिय बिप्पहर<sup>(१०)</sup> ।  
 बज्जरत बीय बंभन<sup>(११)</sup> परत

(१) B कटुन, D कटन । (२) D मत्ति । (३) A त, om. ह । (४) B वै,  
 D पट्टनावै । (५) Read *uchcharyā*, m. c. (६) D reads तब सु रानि  
 निग राव भुभ धर सवर मंडीय । (७) D तिच । (८) D षह । (९) D  
 बज्ज वहरि । (१०) D भिरत । (११) D बपहरि । (१२) D बभन ।

गयौ भीम तन वर<sup>(१)</sup> कुसर ॥ ६४<sup>(२)</sup> ॥

दूहा ॥

तीस सहस बर तीस अग

गत<sup>(३)</sup> चालुक रन मंडि ।

तिन मे<sup>(४)</sup> कोइ न ग्रह गयौ

सार धार तन षंडि ॥ ६५ ॥

<sup>(५)</sup>बावसू कोइ न भयौ

धनि चालुकी सेन ।

सामि काज तन तुंग सौ<sup>(६)</sup>

चिन करि जान्यौ जेन<sup>(७)</sup> ॥ ६६ ॥

कवित्त ॥

षेत ढुंढि चहुआन<sup>(८)</sup>

समर उप्पारि समर सें ।

निठ पायौ चामंड<sup>(९)</sup>

मिले सब मंस रुधिर में ॥

है गै बर<sup>(१०)</sup> विब्भूत<sup>(११)</sup>

रंक<sup>(१२)</sup> लुट्टी चालुकी ।

(१) D चन । (२) B has ६८ by mistake. (३) D आगते for अग गत ।  
(४) D ता मै, B में । (५) D reads बावस के य न न भयौ । (६) D reads  
सामि काज तन ज्योस तुंग । (७) D तेन, A जेस । (८) So D ; A B T  
चाहुआन, c. m. (९) D reads निज रि दीढ चामंड । (१०) D चर ।  
(११) D विभूति, A T *vipbhūta*, B *vibhbhūta*, as usual. (१२) D रकि ।

किन हय हथिय लुटि<sup>(१)</sup>

गयौ पति प्रबत मुक्की<sup>(२)</sup> ॥

दिन अट्ट राज<sup>(३)</sup> चीतोर<sup>(४)</sup> रहि

बहुत भगति राजन करी ।

जोगिनी<sup>(५)</sup> न्वपति जुगिनिपुरह

जस बेली उर<sup>(६)</sup> बर धरी ॥ ६७ ॥

दूहा ॥

ढिल्लीन्यप ढिल्ली गयौ

बज्जि न्विघात सुदं<sup>(७)</sup> ।

जिम जिम जस ग्रह राज करि<sup>(८)</sup>

तिम तिम<sup>(९)</sup> रचित<sup>(१०)</sup> कविंद<sup>(११)</sup> ॥ ६८ ॥

जस धवलौ मन उज्जलौ

निबी पहुंमि न होइ<sup>(१२)</sup> ।

भूत भविच्छत वृत्तमन

चिचन हार न कोई ॥ ६९ ॥

षंडौ सुनि पठयौ सुन्वप<sup>(१३)</sup>

बजि नीसांनन<sup>(१४)</sup> घाइ<sup>(१५)</sup> ।

(१) D reads किने ही हथी लुटि । (२) D लुकी । (३) D दन अठि राव ।  
 (४) A चीतौर, D चितौर । (५) Read *joginia*, m. c. (६) D उरे ।  
 (७) D विघात सुर दं । (८) D किर । (९) D तिम । (१०) B T सिचित ।  
 (११) D कविंद । (१२) D reads ते बीर पहमनि होई । भुति भवपीत  
 (भवपीत ?) वृत्तमन । (१३) D सु बर । (१४) D नसानन । (१५) A घाव ।

बर इद्रावति सुंदरी

बिय बर करि परनाइ<sup>(१)</sup> ॥ ७० ॥

(१) इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासा के  
करहे रो<sup>(२)</sup> रावर समर सी राजा प्रथिराज विजय  
नाम बत्तीसमो प्रस्तावः ॥ ३२ ॥<sup>(४)</sup>

*Note.*

I did not discover till towards the end of this *prastáva*, that it does occur in MS. D. The fact is, that MS. D contains the *prastávas* in an order very different from that in MSS. A B C T, and, as it now appears, sometimes under different names. Thus the present *prastáva* follows immediately after the *karanáñi pátra prastáva*, which is the 30th in the present edition ; and it is called *karahe dā juddha* ; the full title, at the commencement of the *prastáva*, being : *atha karahe dā rával Samar Sí Prathírāj Bhúlá-bhímanga su kṛite vyákháta likhyate*. In the Index of the MS., the title is given thus : *karahe dā rával Samar Sí Prithírāj Bholábhím judham*. There can be no doubt, that MS. D gives the correct name of this *prastáva* ; and that the name *Indrávatí vyáha* is the proper name of the following *prastáva* (the 33rd), with the contents of which it agrees. Accordingly the name on p. 278 should be corrected ; also on pp. 289 and 290, करहे should be read as *one word* (in *Kuṇḍaliyá* 19, l. 7, and *Kavitta* 20, l. 6).

The various lections of MS. D have been introduced in full, from the 62nd stanza. But as the recension of the Epic in

(१) Here D adds two lines करहे जा रावर समर सी भीम जुध संपुरण ।  
(२) D reads इति श्री कविचंद विरचित करहे डा रावर समर सी भीम जुध  
संपूर्ण । (३) B रां, T रा, D डा । (४) T here adds ; इति इन्द्रावती  
सम्यो समाप्तः । B has संपूर्ण ।

MS. D differs more considerably, than any of the other four MSS. A B C T, I will here add the most important of its variations, from the beginning of the canto.

Dúhá 1, line 1, कतिक दि० बीते द० ॥ Kavitta 2, l. 5, बरे उगेसी रावं । l. 8, गाढ । Kavitta 4, l. 2, साहै । l. 3, यावार । l. 4, संमग । l. 6, भाय सु । l. 7, रूप तरंग भंकरितं । l. 9, ज्यो चति का० चपौ ० त । l. 11, 12, सुकिच कांस करि लीय तिहि । रुप देष आयौ ललकि ॥ Dúhá 5, l. 2, दै । l. 3, किन पं० चर । 6, l. 4, सुमुति वचार । Kuṇḍaliyá 7, l. 1, वेग लगवै लखिन अ रूप गुन । l. 5, omitted ; l. 10, सु भर सागर गुरु मेव । Dúhá 8, l. 1, गन । l. 2, दुरि दुरि । Chhanda Hanúphól 9, l. 2, नूप । l. 4, अयु । l. 6, चढत । l. 9, भोहि । l. 10, बुक्ति । l. 11, स्यामि खेज । l. 13, कोडि । i. 14, सस, होडि । l. 17, ग० सषा पनग बसाव । l. 20, रूप देत । l. 23, चैव । after l. 23, the following line is inserted : कच उपमा कविचंद । l. 30, 31, are transferred after line 39 ; l. 31, किन । l. 34, लाव । l. 35, om. one संधि ; समान । l. 40, करेर । l. 42, वतरंक । l. 44, जो । Kavitta 10, l. 8, चीतौरै । l. 10, पर । l. 12, कपीन । Dúhá 11, l. 4, संडि, मदं । Kavitta 12, l. 2, बुदार्दय । l. 3, पजूल । l. 4, उलेन । l. 12, सकल । Dúhá 14, l. 2, जलौ । Chhanda Troṭaka 15, l. 2, छत्र for नखिच । l. 3, ग० र० विराज विराजित पंकि घ० । l. 4, गर्जि गनं । l. 5, नमं for तुनं । l. 6, धनं । l. 8, नदं । l. 10, नहोप सु ओप । l. 11, 12 are omitted. Chhanda Motídáma 16, l. 2, पय for पद । l. 3, दिष्ट, भति । l. 4, मरष्ट । l. 5, धूमि अक्काह दिय । l. 6, भांन । l. 8, तन । l. 9, मुदे । l. 13, ० चरयं, and so in the following lines ; l. 15, दिस्तीयं । l. 20, पंतिषमं । l. 21, जिन for बजि । l. 24, वंकर for वर । l. 25, मोर, सरं । l. 27, 28, यं । Dúhá 17, l. 3, संन्हे । Kuṇḍaliyá 19, l. 2, बांनि for तीर । l. 4, बीन, but बीर in line 5 ; l. 8, रुज । l. 9, गुरु जंम । l. 10, विलि । Kavitta 20, l. 4, चूकह । l. 9, कम । l. 10, क० क० मष बहा । Kavitta 21, l. 7, अन । l. 8, कितीय । l. 9, जोगंद राज जपि न बलिय । l. 10, कप्यान । l. 11, संघ वर । l. 12, हूरद । Chaupái 22, l. 3, तखिन । l. 4, जन, om. स । Kavitta 23, l. 2, चायौ । l. 4, बदल उगि । l. 5, नीद बषीय जि । l. 7, दुखनह । l. 8, हासम । l. 11, निस । l. 12, om. दुर and reads लवस । Kavitta 24, l. 4, कन बृहमंड लवाही । l. 7, मनेन । l. 11, भरिन । l. 12, सुविस । Kavitta 25, l. 5, बीय । Chhanda Motídáma 27, l. 7, गोन । l. 11, सुसीस । l. 12, गुपि । l. 13, दु० वि० नगन गनपति । l. 14, परीति तहां । l. 15, सुदरय बंद । l. 17, सुषमं । l. 20,

वलिन । 1. 21, दि० वां० जवाहहर मेरअयरा । 1. 22, अरधंग, नचय । 1. 23, रन । 1. 24, चडिय । Dúhá 28, 1. 2, दुष्ट । 29, 1. 1, बचं । Kuṇḍaliyá 30, 1. 3, आसूद दोय । 1. 6, अब बीषान । 1. 7, दुष्ट । 1. 11, ह्रसेन । 1. 12, दुरिय । Kavitta 31, 1. 4, गह । 1. 6, दिंत दपिन त० । 1. 7, मूड । 1. 8, कुंभाथल । 1. 10, मदन । 1. 11, आडपडि । Chhanda Paddharí 32, 1. 1, आय अघा सूर । 1. 4, बुलें । 1. 5, मौ । 1. 6, पषरि । 1. 7, मद । 1. 12, कडकूत बड मुडिह सु० । 1. 15, चत्रिकोडि । Dúhá 33, 1. 3, चति for चिंत । 1. 4, पात for बत । 34, 1. 3, समर । 35, 1. 4, सतरह । Chhanda Bhujangí 37, 1. 1, मंष । 1. 3, कंभ कुंत, रौल । 1. 4, टोरं । 1. 6, सक । 1. 7, सासं । 1. 8, काममीरं । 1. 9, लानं । 1. 11, वकदी विधि । 1. 12, कन्हं । 1. 13, गहें दंस सूरंदगे भ तंती । Dúhá 39, 1. 3, षडष । Chhanda Trībhangí 39, 1. 2 and 3 are omitted; 1. 8, असपूरं । 1. 13, जोषम । 1. 16, पावकं । 1. 18, उठंगर । 1. 19, उपारं । 1. 20, ततार, बठं । 1. 21, वचा हित रारी । 1. 23, चेहालं । Kavitta 40, 1. 1, जीय बीय । 1. 3, जे वाहन अमि डरे । 1. 4, मोह मोय ज(?) क० । 1. 5, 6, एक दिना एक बोल । हरन अनजुदं धि० ल० । 1. 8, जातिडी तुम दीग जगे । 1. 9, घन घाय थाय घादन घाद् घन । 1. 10, सठ । 1. 11, वार हस । Dúhá 41 is omitted. Kavitta 42, 1. 5, om. जिन । 1. 7, बह । Kavitta 43, 1. 1, prefixes दोहा, though the metre is *Kavitta*; 1. 5, पहारि । 1. 6 repeats मेरौ for तरौ । 1. 7 and 8 are omitted; 1. 9, उर कडती । 1. 11, दोल जीन जुगं । 1. 12, गरु गरु बीर जुग च० । Dúhá 44, 1. 1, तिस om. त । 1. 2, ददं । 1. 3, नरंदि (नरिंद?) । Dúhá 45 is omitted. Kavitta 46, 1. 3, भोरा । 1. 4, अपन । 1. 5, केदभकीए । 1. 10, सेना । 1. 12, कीती । Dúhá 48, 1. 3, बे तन, तमह । 1. 4, नद । 49, 1. 1, जग्गीय । 1. 3, दैत, प्रक्रीति । 1. 4, तबही for बही । 50, 1. 2, तिन । Kavitta 51, 1. 2, om. चेां and reads चलोां and so in the following lines सलोां, बंधोां । 1. 3, ह्र, फिर । 1. 6, फिरवि । 1. 8, वरन, सरि । 1. 12, भविहृत । Dúhá 52, 1. 1, ड । 1. 4, तो द्र० भेअय नवै निर । 53, 1. 3, पुत, आदरह । 1. 4, प्रेम मल । Kavitta 54, 1. 1, कुह । 1. 3, धिन बदी । 1. 4, अधौरं । 1. 8, prefixes वो । 1. 10, तस । 1. 11, वरिह । 1. 12, कहें सु सति मतांस अस । Dúhá 55, 1. 2, ०स देव । 1. 4, सोरी । Kavitta 56, 1. 3, ता सथ चामंड राय । 1. 5, prefixes ता सथ । 1. 8, प्रापति बीजे बीय सोकी । 1. 12, अगनि नगा । Chhanda Rasávalá 57, 1. 3, रत बीमनं । 1. 4, बीय कुंधी घनं । 1. 10, मनं । 1. 11, भनं । 1. 18, is repeated twice, in various spellings, कंवी उप सुधी and कंवि ओप सुधी । 1. 19, मंत भाट था । Kavitta 58, 1. 2, रुपपन । 1. 4, om. जिहि, and reads सिधि । 1. 9, सेन for सबै । 1. 10, मल्ल, om. दल; सु गयो । 1. 11, तिस for सीत । Kavitta 60, 1. 1, बाण; 1. 2, दुठण । 1. 5, ओ for दो । 1. 7, कैव for कन्ह । 1. 12 पारिथ । Kavitta 61, is omitted.



॥३३॥ अथ इंद्रावती व्याह<sup>(१)</sup> ॥३३॥



(१) कवित्त ॥

कहै भीम सुनि भट्ट  
स्वर बंध्यौ सुरही<sup>(२)</sup> हित<sup>(३)</sup> ।  
दीनां सेां<sup>(४)</sup> प्रति प्रीति  
सामि<sup>(५)</sup> करिहै<sup>(६)</sup> जु सामि मित<sup>(७)</sup> ॥

(१) In MS. D this *Prastāva* is followed by the *Kannavaja-judha* and preceded by the *Sasivrittā Prastāvas* which in the present edition are numbered the 50th and 20th respectively.

(२) MS. D prefixes the following verses,

दूहा ।

फिर्यौ राज सुमान दिसि

रचि वरनीय षग व्याह ।

कर्यौ विदा परजून भर

तुमह उजेनीय जाऊ ॥ १ ॥

जैत राम पजुन चंद

उजेनी सांपत्त ।

षग व्याह भीमग सुति

भ्यौ भीमंग चिरति ॥ २ ॥

but it recommences the numbering of the verses with the *Kavitta* of the text. (१) A सरही, D सुरहि। (२) A B T मत। (३) D दिनां

सु। (४) A C साम। (५) D कहै जू। (६) A B T मति, C गत।

(१) रत्त अरत विष होइ  
 अमृत रत जुरत<sup>(२)</sup> उपज्जै ।  
 ग्राव<sup>(३)</sup> ग्राव सेां प्रीति  
 सांर सेां सार सपज्जै<sup>(४)</sup> ॥  
 कांठ सेां कांठ बर बंधियै  
 नारि नरन सेां बाहियै ।  
 इह<sup>(५)</sup> काज राज कविचंद सुनि  
 त्यौ बरनी बर चाहियै<sup>(६)</sup> ॥ १ ॥  
 (७) सुनि भीमंग<sup>(८)</sup> पवार<sup>(९)</sup>  
 चढे प्रथिराज प्रपत्ते<sup>(१०)</sup> ।  
 समर दिसा<sup>(११)</sup> चालुक  
 सजे<sup>(१२)</sup> चतुरंग सपत्ते ॥  
 धन्नि<sup>(१३)</sup> मगन<sup>(१४)</sup> तन<sup>(१५)</sup> आनि  
 कित्ति<sup>(१६)</sup> चहुआन सुनिज्जै ।  
 साम दान<sup>(१७)</sup> अरु भेद  
 दंड सुंदरि ग्रह<sup>(१८)</sup> लिज्जै ॥

(१) D reads अमृत रस विष होत; so also C, only that it has रत  
 for रस । (२) C D सुरत । (३) C ग्रांम । (४) D सपजय, C सवज्जै ।  
 (५) D यह । (६) D बाहियै । (७) C pref. ह्यैय । (८) A भीमंद, B T  
 भीमंज । (९) D पसार । (१०) C प्रपत्ते । (११) D समरि दिसां । (१२)  
 D सज्जौ । (१३) C D धन । (१४) D मंगण, T सरान । (१५) C मय ।  
 (१६) D कीते । (१७) C दीन । (१८) D गहि ।



॥३३॥ अथ इंद्रावती व्याह<sup>(१)</sup> ॥३३॥



(१) कवित्त ॥

कहै भीम सुनि भट्ट  
स्वर बंध्यौ सुरही<sup>(२)</sup> हित<sup>(३)</sup> ।  
दीनां सेां<sup>(४)</sup> प्रति प्रीति  
सामि<sup>(५)</sup> करिहै<sup>(६)</sup> जु सामि मित<sup>(७)</sup> ॥

(१) In MS. D this *Prastāva* is followed by the *Kannavaja-judha* and preceded by the *Sasivrittā Prastāvas* which in the present edition are numbered the 50th and 26th respectively.

(२) MS. D prefixes the following verses,

दूहा ।

फिर्यौ राज सुमान दिशि

रचि वरनीय षग व्याह ।

कर्यौ विदा परजून भर

तुमह उजेनीय जाऊ ॥ १ ॥

जैत राम पजुन चंद

उजेनी सांपत्त ।

षग व्याह भीमग सुति

भ्यौ भीमंग चिरति ॥ २ ॥

but it recommences the numbering of the verses with the *Kavitta* of the text. (२) A सरही, D सुरहि। (३) A B T तत। (४) D दिनां सु। (५) A C साम। (६) D कहै जू। (७) A B T मति, C गत।

(१) रत्त अरत विष होइ  
 अमृत रत जुरत<sup>(२)</sup> उपज्जै ।  
 ग्राव<sup>(३)</sup> ग्राव सेां प्रीति  
 सांर सेां सार सपज्जै<sup>(४)</sup> ॥  
 कंठ सेां कंठ बर बंधियै  
 नारि नरन सेां बाहियै ।  
 इह<sup>(५)</sup> काज राज कविचंद सुनि  
 त्यौ बरनी बर चाहियै<sup>(६)</sup> ॥ १ ॥  
 (७) सुनि भीमंग<sup>(८)</sup> पवार<sup>(९)</sup>  
 चढे प्रथिराज प्रपत्ते<sup>(१०)</sup> ।  
 समर दिसा<sup>(११)</sup> चालुक  
 सजे<sup>(१२)</sup> चतुरंग सपत्ते ॥  
 धन्नि<sup>(१३)</sup> मगन<sup>(१४)</sup> तन<sup>(१५)</sup> आनि  
 कित्ति<sup>(१६)</sup> चहुआन सुनिज्जै ।  
 साम दान<sup>(१७)</sup> अरु भेद  
 दंड सुंदरि ग्रह<sup>(१८)</sup> लिज्जै ॥

(१) D reads अमृत रस विष होत; so also C, only that it has रत  
 for रस । (२) C D सुरत । (३) C ग्राम । (४) D सपज्जय, C सवज्जै ।  
 (५) D यह । (६) D बाहियै । (७) C pref. बय्यै । (८) A भीमंद, B T  
 भीमंज । (९) D पवार । (१०) C प्रपत्ते । (११) D समरि दिसां । (१२)  
 D सज्जै । (१३) C D धन । (१४) D मंगण, T सरान । (१५) C भय ।  
 (१६) D कीते । (१७) C दीन । (१८) D गहि ।

(१) मो मत सुनौ परज्जा इतौ  
 न्वप बर महि कलहत्त भय ।  
 गुर गुरह<sup>(२)</sup> सब्ब सामंत ए  
 लज्ज बंधि तुव<sup>(३)</sup> हत्थ<sup>(४)</sup> दिय ॥ २ ॥  
 (५) कहै जोइ<sup>(६)</sup> बरदाइ  
 मंत कविचंद सुआमन<sup>(७)</sup> ।  
 (८) मन वासौ मनज<sup>(९)</sup> मिलंत  
 जीय तक्कै कठ सामन ॥  
 जौ वासुर मुर<sup>(१०)</sup> पंच  
 (११) मडि आयौ चहुआनं ।  
 तौ भाविक जिह<sup>(१२)</sup> लेष  
 (१३) तिही छैहै परिमानं ॥  
 भावी विगत्ति भंजी<sup>(१४)</sup> गढन  
 (१५) दइय दुसंकह जानि गति ।  
 लिषि बाल सीस दुष सुष्प<sup>(१६)</sup> दुहुं  
 (१७) सत्य होइ परिमान मति ॥ ३ ॥

(१) C सामंत । (२) D गुरह । (३) D तुव, C reads तुम अहत्थ दय ।  
 (४) A B C T हत्थ, as usual. (५) C pref. कप्यय । (६) D जोयइ । (७)  
 D सुआमनि । (८) D reads मान वसु मनजं मिलत । (९) C मन, om. ज ।  
 (१०) C गुरह, D मूर । (११) C reads पगा मंडे, D पंग मंडे । (१२) D  
 जिह । (१३) D reads तौहि छैहै परमानं । (१४) C D संजन । (१५)  
 D दर्द ; A दइ, om. यः । (१६) A T दुष, D सुष । (१७) D सति होई ।

दूहा ॥

सुनि इंद्रावति सुंदरी  
 धरनि सरन सिर लाइ ।  
 कै धरनी फट्टै कुहर  
 (१) पावक में जरि जाइ ॥ ४ ॥  
 इन भव नृप सोमेस सुअ  
 जुध बंधन सुरतांन ।  
 कै जलधि बूडवि(२) मरौं(३)  
 अवर न वंछौं(४) प्रान ॥ ५ ॥

(५) कवित ॥

सषी कहै सुनि(६) बत्त  
 सुतौ दानव कुल कहियै(७) ।  
 अवर जाति अनेक  
 राइ गुन(८) पर नह लहियै(९) ॥  
 करै(१०) कोन(१०) परसंग  
 पाइ म्रगमद(११) घनसारं ।  
 कोन करै(१२) कुष्टीन(१२)

(१) D pref. कै । (२) D बुडिव । (३) C मरौ, D मरं, A B T मरै ।  
 (४) C वंछौ, D वंछु; but A B T वंछौं । (५) C कपय । (६) D छनौ ।  
 (७) D कहियै; लहियै । (८) D गुर । (९) A B करै । (१०) D को,  
 om, न । (११) D म्रगम । (१२) B करै । (१३) D कुष्टान ।

संग लहि कामवतारं ॥

तो पित्त<sup>(१)</sup> अवर वर<sup>(२)</sup> जो दियै

तौ न न<sup>(३)</sup> जंपै अलिय बच ।

राचियै<sup>(४)</sup> अप्प राचै तिनह

अन रचै<sup>(५)</sup> रचै<sup>(६)</sup> न सुच<sup>(७)</sup> ॥ ६ ॥

दूहा ॥

तुम दासी दासी सुमति

मो मति<sup>(८)</sup> न्प पुत्रीय ।

बालि बेंन चुकै न नर<sup>(९)</sup>

जो बर मुकै<sup>(१०)</sup> जीय<sup>(१०)</sup> ॥ ७ ॥

कहै भीम कविचंद कहि<sup>(११)</sup>

स्वामि काम तुम अड्ड ।

सेन<sup>(१२)</sup> सगप्पन रीत<sup>(१२)</sup> नह

तुम दानव<sup>(१३)</sup> कुल चड्ड<sup>(१४)</sup> ॥ ८ ॥

(१६) कवित ॥

हे<sup>(१७)</sup> सु भीम मालव नरिंद<sup>(१८)</sup>

मोहि धर घर बर अच्छिय<sup>(१९)</sup> ।

(१) D पीत । (२) C वरन । (३) D तन for न न । (४) C रचियै, D राचीयै । (५) D रचै रचै । (६) C सच । (७) D पति । (८) D तर । (९) D मुकै । (१०) A जीउ, B जीव । (११) C D सुनि । (१२) C D सैन । (१३) D रीति । (१४) C दानवड्ड । (१५) D चंड । (१६) C बप्पय । (१७) D ऊं । (१८) D reads माल पंग रिंद । (१९) D अच्छी, C अच्छे ।

सवा लाघ मो ग्राम

ठाम संपजै बहु लखिय<sup>(१)</sup> ॥

बिधि विधान निंमान

कोन मेटै इह बत्तिय<sup>(२)</sup> ।

होनिहार<sup>(३)</sup> होइहै<sup>(४)</sup>

पुरुष<sup>(५)</sup> जंपै गति मत्तिय<sup>(६)</sup> ॥

तुम कहै नाम वरदाइ बर

ए गुरराज बंदै चरन ।

ओखी<sup>(७)</sup> सुवत<sup>(८)</sup> कडौ कथन

एह सगप्पन विधि बर न ॥ ८ ॥

दूहा ॥

अहो भीम सत्तह सुमति<sup>(९)</sup>

तुम मति मान प्रमान ।

औसर तकि<sup>(१०)</sup> कीजै जुरन<sup>(११)</sup>

औसर लहिजै दान ॥ १० ॥

(१२) कवित ॥

कहै भीम पज्जून<sup>(१२)</sup>

(१) D लखी; B T लखिल । (२) C गत्तिय, D बत्तीय । (३) D जंन० ।  
 (४) C होइ रहै । (५) B पुरुष । (६) D मंतीय । (७) T ओखी, D ओखी ।  
 (८) C सवत्त, D सवत । (९) So C; D सत्यहि सुमति; A B T read सत्त  
 मति, which does not suit the metre, being short by two syllables.  
 (१०) T तिकि । (११) D जगत । (१२) C छप्पन । (१३) D प्रजून ।

सुनौ पामर<sup>(१)</sup> मति हीनां<sup>(२)</sup> ।  
 अमत कियौ तुम मंत  
 वरन वरनी षगु लीनां<sup>(३)</sup> ॥  
 तुम सहाब बल बंधि<sup>(४)</sup>  
 गर्व<sup>(५)</sup> सिर उप्पर लीनां ।  
 गिनौ<sup>(६)</sup> और तिल मत्त  
<sup>(७)</sup>कह्यौ न सुनौ तुम क्रन्ना ॥  
 छत्रीन<sup>(८)</sup> बंस छत्तीस<sup>(९)</sup> कुल  
 सम<sup>(१०)</sup> समान गिनियै<sup>(११)</sup> अवर ।  
 घर जाहु<sup>(१२)</sup> राज मुक्कौ वरन  
 कर न व्याह<sup>(१३)</sup> उच्छाह नर ॥ ११ ॥  
<sup>(१४)</sup>जैत राव<sup>(१५)</sup> जम<sup>(१६)</sup> जैत  
 नैन लल्लै<sup>(१७)</sup> करि बोलै<sup>(१८)</sup> ।  
<sup>(१९)</sup>अहौ भीम करि नीम  
 बत पहली तुम भोलै ॥  
 बल<sup>(२०)</sup> बलिष्ट केहरी

(१) C पमरि, D कूरम । (२) D मिति हिनां । (३) C D दीनां । (४)  
 D लि संधि for व० ब० । (५) D गरव । (६) D गिनै । (७) D reads  
 कथन सुनौ नह क्रानां; C similarly क० सुणौ न० कीनां । (८) D छत्रीस ।  
 (९) D छत्रीन । (१०) C सव । (११) D गिनीयै । (१२) C जीड ।  
 (१३) D व्याहन । (१४) C pref. कप्यय । (१५) C राव । (१६) D जस ।  
 (१७) D लजै । (१८) D बलाइ । (१९) D omits this hemistich,  
*ahom* up to *bholai*. (२०) C चल ।

स्यार क्यों मुष वर<sup>(१)</sup> घसै ।  
 लोक भाष बुज्झीन  
 न्योत<sup>(२)</sup> बैरी को मिलै ॥  
 हम कज्ज लज्ज सांई<sup>(३)</sup> धरम  
 क्यों कट्टियै<sup>(४)</sup> मुष वत्तरिय<sup>(५)</sup> ।  
 सुविहान मरन<sup>(६)</sup> थप्पै वरन<sup>(७)</sup>  
 आज तुम्हारी रत्तरिय<sup>(५)</sup> ॥ १२ ॥  
 दूहा ॥  
 तब कहि भीम नरिंद सुनि  
 अहो सु गुर<sup>(८)</sup> दुज राम ।  
 अमत मत मंडौ मरन  
 इह<sup>(९)</sup> सु कोन<sup>(१०)</sup> भ्रम काम ॥ १३ ॥  
 (११) कवित ॥  
 चिया काज<sup>(११)</sup> सुनि भीम  
 मिल्यो सुग्रीव राम जब ।  
 कही<sup>(१२)</sup> वत्त पय लमि  
 नाथ मो बालि<sup>(१३)</sup> हत्यौ ग्रब ॥

(१) C भर । (२) C न्यैति ; D reads वन्यैति बैरी कै मिलै । (३) C D सांई । (४) A B C T कट्टिय C. m. D कटे । (५) D वत्तरीय, रत्तरीय । (६) C D वरन । (७) C D मरन । (८) B सु गुर, D गुर । (९) C इहि । (१०) D कुंन । (११) वत्तय । (१२) D वीया काजि । (१३) D कहि, C कहि । (१४) D बाले ।



हरि नारी तारिका<sup>(१)</sup>

मास षट जुद्ध<sup>(२)</sup> सु<sup>(३)</sup> मंडौ ।

अस्ति बस्थ<sup>(४)</sup> करि सिथल

मृतक<sup>(५)</sup> सम बरि<sup>(६)</sup> करि छंडौ ॥

तुम देव सेव सरनौ<sup>(७)</sup> ग्रहिय<sup>(८)</sup>

अब सहाय तुम सारयौ ।

बंधियौ<sup>(९)</sup> सात तारह सुजिय

बलिय<sup>(१०)</sup> बान इक मारयौ ॥ १४ ॥

दूहा

तुम बंभन बंभन<sup>(११)</sup> सुमति

पढि पुस्तक कहि<sup>(१२)</sup> सुस्त ।

दो<sup>(१३)</sup> घर मंगल मंडियै

इह घर जानी वस्त ॥ १५ ॥

अहो चंद दंद न करहु<sup>(१४)</sup>

तुम कुल दंद सुभाव ।

जैत राव मिलि राम गुरु

लै काने<sup>(१५)</sup> समझाव ॥ १६ ॥

(१) A का, om. तारि । (२) D जुद्ध । (३) C D स । (४) C अस्त वस्त, D अस्त वस्त । (५) D मृतक । (६) So D ; A T बर, B बैर, C वरकरि । (७) So C D ; A B T रसनौ । (८) D ग्रहौ, T ग्रहियै । (९) So T ; D विधियौ ; A B C बंधियै । (१०) C बालिय, D बलि, om. य । (११) D बंभ बंभन । (१२) D कहौ । (१३) D दुष । (१४) D रऊ, om. क । (१५) D कानै ।

कवित्त<sup>(१)</sup> ॥

कहै चंद सुनि दंद

चीय कज<sup>(२)</sup> रावन षंड्यौ ।

बैरोचन<sup>(३)</sup> नृप नंद

मारि अप्पन<sup>(४)</sup> भ्रम<sup>(५)</sup> भंड्यौ ॥

कंस कन्ह सिसुपाल<sup>(६)</sup>

कज्ज रुकमनि<sup>(७)</sup> जुध मंड्यौ ।

ता बंधव रुकमना<sup>(८)</sup>

बंधि मुंडवि सिर छंड्यौ ॥

सुर असुर नाग नर<sup>(९)</sup> पंषि पसु

<sup>(१०)</sup>जीव जंत चिय कज<sup>(११)</sup> भिरै ।

रे भीम सीम चहुआन की

ता<sup>(१२)</sup> वरनी<sup>(१३)</sup> को<sup>(१४)</sup> वर वरै ॥ १७ ॥

दूहा ॥

भीम पुच्छि<sup>(१५)</sup> परधान वर<sup>(१६)</sup>

(१) C here and everywhere has कवित्त for कवित्त । (२) D कजि, C कज (३) D विरो वैन । (४) D अप्पन । (५) C भ्रम । (६) C D सिसुपाल । (७) D रुकमनि, om. व । (८) So C; A B T रुकमान; D reads रुक बंधव रुकम जा । (९) D नर । (१०) D reads जी० जंत चि० कजि भिरै । (११) C कज्ज, D कजि । (१२) D तां, C om. (१३) C वरनी से for ता व० । (१४) D को । (१५) C पुच्छि, T पूछि । (१६) C भड, D सु ।

कहै सु किजै काम ।  
 जुझ जुरै<sup>(१)</sup> चहुआन सौ<sup>(२)</sup>  
 ज्यों इल रष्यै नाम ॥ १८ ॥

कवित्त ॥

इह सुनाम अवनाम<sup>(३)</sup>  
 जेन नामह घर जाइय ।  
 इहै नंही घर जाग  
 अगनि दीपक दिष्याइय<sup>(४)</sup> ॥  
 पच्छै<sup>(५)</sup> ही भजियै<sup>(६)</sup>  
 होइ दुजनां हसार्इ<sup>(७)</sup> ।  
 इंद्रावति सुंदरी<sup>(८)</sup>  
 (९) देहु चहुआन प्रथार्इ<sup>(१०)</sup> ॥  
 सुनि भीम राज तत्तौ<sup>(११)</sup> तमकि<sup>(१२)</sup>  
 गई बत्त<sup>(१३)</sup> बुझी सु तुम ।  
 हकारि<sup>(१४)</sup> जैत गुरु राम कवि<sup>(१५)</sup>  
 षष्ठा व्याह न न करै हम ॥ १९ ॥

(१) D जुध जुरै । (२) D सु, c. m. (३) So C; D अनाम; B सुनाम (= शुन्य?), A T संग्राम । (४) D दीषादय । (५) D पीछे । (६) D भजीये । (७) C reads होइ जइ न हसार्इय, D होय दुजन हसार्इय । (८) D सुंदरीष (for ०रिय) । (९) D reads देह चहुआन पीषादय । (१०) C प्रथार्इय, D पीषादय । (११) D नत्तौ । (१२) C नमकि । (१३) C वत्त, D वसत । (१४) C हकारि । (१५) C D कवि ।

दूहा ॥

उठि चले सामंत सब

करन दंद मति<sup>(१)</sup> ठाम ।

(१)बरनी बिन पच्छै<sup>(१)</sup> फिरै

(४)नृपति न मानै<sup>(५)</sup> मांम ॥ २० ॥

कवित्त ॥

फिरि जानी पांवार

राम रघुवंस<sup>(६)</sup> बिचारी ।

(७)जीवन जो उब्बरै<sup>(८)</sup>

तौ मरन केवल संचारी ॥

महंकाल बर तित्य<sup>(९)</sup>

तित्य धारा उड्यारी ।

स्वामि<sup>(१०)</sup> भ्रम<sup>(११)</sup> तिय तित्य

मुकति संसे<sup>(१२)</sup> न बिचारी ॥

पावार<sup>(१३)</sup> सुबल<sup>(१४)</sup> मालव नृपति

बर समुंद<sup>(१५)</sup> जिम भारयौ ।

बर नीति कित्ति सुर बर असुर

(१) A म, om. ति; B में, T सं। (२) A B T pref. जो। (३) So C, D पच्छै; A B T पछि। (४) D T pref. तौ। (५) So D, B C T मने, A संजो। (६) D रघुवंशी। (७) D om. the two lines from जीवन to संचारी। (८) C उबरै(?)। (९) A B T तिश्य, as usual. (१०) D स्वामि। (११) C घर्मे। (१२) A संजो। (१३) D पवार। (१४) C सुवर, D सवर। (१५) D समुद्र।

मुगति<sup>(१)</sup> मथन संभारयौ ॥ २१ ॥

(१)मतौ मंडि सब<sup>(२)</sup> सत्थ

मंत को चित्त<sup>(४)</sup> विचारिय<sup>(५)</sup> ।

बर पटुन<sup>(६)</sup> दजिझयै<sup>(७)</sup>

धेन लैहैं हक्कारिय<sup>(५)</sup> ॥

बर बाहर पालिहै

स्वामि<sup>(८)</sup> पिझिहै<sup>(९)</sup> पावारिय<sup>(१०)</sup> ।

बर आतुर धाड़है<sup>(११)</sup>

अप्प<sup>(१२)</sup> संहौ हक्कारिय ॥

धर दहै कोस अधकोस बर

फिरि चावहिसि रुंधहीं<sup>(१३)</sup> ।

करतार हत्य केतिय<sup>(१४)</sup> कला

जिहि<sup>(१५)</sup> दुज्जन फिरि<sup>(१६)</sup> बंधहीं ॥ २२ ॥

दूहा ॥

पंच कोस मेलान<sup>(१७)</sup> करि<sup>(१८)</sup>

लिय न्वप पटुन धेन ।

(१) C मुगति, D मूगति । (२) C pref. सत्थ । (३) So C D; B समरथ, A T समसथ । (४) So D; A B T विन । (५) D विचारीय, हक्कारीय । (६) D पटण । (७) B T दम्भियै, as usual. (८) D रचाम । (९) A पिझिहै, B T पिझिहै c. m.; C has पंडिहै । (१०) D पवारिय, A पावारीय, B T पावारय, C पावारी । (११) D धाडहौ । (१२) D आप । (१३) D रुंधिंहि । (१४) C D केती । (१५) A B T तिहि । (१६) D फिरि । (१७) D मेलान । (१८) A कहि; D दिया (=“ by means of ”).

(१) कूक कहर बज्जिय<sup>(२)</sup> बिषम  
 (३) चढिय<sup>(४)</sup> भीम नृप सेन ॥ २३ ॥  
 उंच<sup>(५)</sup> क्रान अनमिष नयन  
 प्रफुलित<sup>(६)</sup> पुच्छ सिरेन<sup>(७)</sup> ।  
 रंग रंग गौ निजरि लषि  
 प्रज्जलि भीम उरेन ॥ २४ ॥

कवित्त ॥

ओसरि सब<sup>(८)</sup> सामंत  
 धेन लुट्टिय पट्टन वै ।  
 वर मंडल उज्जेन  
 धाक बज्जिय वट्टन<sup>(९)</sup> वै ॥  
 ग्राम धाम<sup>(१०)</sup> प्रज्ज रहि<sup>(११)</sup>  
 खर मानव वर बज्जै ।  
 सामंता रो धाक  
 धार<sup>(१२)</sup> मुक्किय बिधि भज्जै ॥

(१) C reads कूह डक ० वज्जी वि० । (२) C वज्जी, D वजी । (३) D reads चढौ सेन नृप भीम । (४) C D चढौ । (५) D उच । (६) D प्रफुलित । (७) D सुरेन ; both *sirena* and *urena* are Prākṛit inflectional forms ; instr. sing. of *sira* "head" and *ura* "heart." (८, So C D ; but A B T बस ; *osari*, Pr. *osaria*, conj. part. of the root *apasri* ; but *osari bas* would mean *avasara-vas'ât*. (९) D वट्टन (१०) So C D ; A B T ग्राम । (११) D प्रज्जरेहि । (१२) C धाक ।

संभरिय<sup>(१)</sup> बीर बाहर अवन  
 बाहर रह<sup>(२)</sup> बाहर चढिय<sup>(३)</sup> ।  
 चतुरंग सज्जि पावार बर  
<sup>(४)</sup>मगन हंकि मगपति बढिय ॥ २५ ॥  
<sup>(५)</sup>हय गय रथ चतुरंग  
 सज्जि साइक पाइक<sup>(६)</sup> भर ।  
 आइ मिले मुष मेल<sup>(७)</sup>  
 दुहुन कढिय असि बर बर ॥  
<sup>(८)</sup>मिले लोह सामंत  
 धुंम धुमर<sup>(९)</sup> हर लुक्किय<sup>(१०)</sup> ।  
 परगौ घोर अंधियार  
 बिछुरि निसि<sup>(११)</sup> भ्रम चक चकिय ॥  
 को गिनै अप्प पर<sup>(१२)</sup> को गिनै  
 लोह छोह<sup>(१३)</sup> छके<sup>(१४)</sup> बरन ।  
 सामंत सूर जैतह बलिय<sup>(१५)</sup>  
 कहत<sup>(१६)</sup> चंद जुगति लरन<sup>(१७)</sup> ॥ २६ ॥

(१) D संभरी । (२) So C D; but A B T चर । (३) B T चढिय ।  
 (४) D pref. कु । (५) C pref. कपय । (६) A B T साइक पाइक c. m.,  
 C सायक पायक; but D सै इक पायल । (७) D मेलि । (८) D reads तेम  
 मार सिर फार; C has again a different reading, but very corrupt,  
 हयद्वन्द्वियरुषेत । (९) C धुमे, D भूम । (१०) So C; D लुक्किय; but A B  
 T लुहिय । (११) C बिछुरि निस, D विछुरि निस । (१२) C बर; B र om.  
 प । (१३) D लोह । (१४) B T छके, D बके । (१५) D जलीय । (१६)  
 D कर्त । (१७) C जगत सु लनर ।

(१)वर (२)सिप्रा नदि(३) तट्टि(४)

धाद्र सामंत जु(५) रुक्मिय ।

रोकि मुष्य रघुवंस

धेन पज्जून सु हक्किय ॥

दुतिय बीर बर टिके(६)

भीम भारथ जिम(७) लग्गिय ।

सूर बिनां प्रथिराज

धकें जुरि घग्गान(८) घग्गिय ॥

(९)मुकि धेन(१०) गंठि बंधिय मिलवि

औसरि(११) घग कट्टिय लरन ।

झरि सार तिनंगा(१२) तुट्टि बर

(१३)तिंदू(१४) झर लग्यौ झरन ॥ २७ ॥

छंद मोतीदाम ॥

(१५)तुरंगम आउ लह्क गुरु(१६) ठाउ ।

कला ससि संधि जगंनय पाउ ॥

पियं(१७) पिय छंद सुमेतिय दाम ।

(१) C pref. वप्य । (२) So B T, A सिप्रां, C D सिप्रा । (३) C सुं for नदि । (४) So D, A B C T तट्ट । (५) C D सु । (६) D टेक । (७) C जिथ । (८) C घग्गानि । (९) D reads मुंकी सु धेन बंधीय मिलवि । (१०) C धन । (११) A B C T औसर । (१२) A तुरंगा । (१३) A B D T pref. मनुं, c. m. (१४) D तिरेंदू । (१५) D reads तुं आह लं मुर उठाउ । (१६) B T गुरु । (१७) So B ; A C D T पयं ।



कच्चौ धुर<sup>(१)</sup> नाग सुपिंगल<sup>(२)</sup> नाम ॥  
 मिले जुध जैत रु<sup>(३)</sup> भीम नरिंद ।  
 मच्चौ जुध जानि वृता सुगइंद ॥  
 षगे<sup>(४)</sup> षग मग<sup>(५)</sup> परे धर<sup>(६)</sup> मुंड ।  
 परे भर बत्य मरोरत झुंड ॥  
 कटक्किहि हडुहि गूद<sup>(७)</sup> करक्क ।  
 विळुट्टकि<sup>(८)</sup> तुट्टहि<sup>(९)</sup> लुंब लरक्क ॥  
 भभक्कत बक्कत घाइल छक्क ।  
 उरज्झत अंत सु पाइन<sup>(१०)</sup> तक्क ॥  
 करंक्<sup>(११)</sup> सकेस<sup>(१२)</sup> मनें नट<sup>(१३)</sup> भंग ।  
 नचे सब सारद नारद<sup>(१४)</sup> संग ॥  
 रनच्चिय<sup>(१५)</sup> बेसि<sup>(१६)</sup> उलत्थ पलत्थ ।  
 परे धर लुत्थि उनें उन जत्थ ॥  
 करे कर आवध दंड छतीस<sup>(१७)</sup> ।  
 तकै छल सांइय<sup>(१८)</sup> भ्रंम<sup>(१९)</sup> मतीस ॥

(१) C धुर; T धर । (२) D सुपीगल । (३) D तु । (४) B D षगे ।  
 (५) D चीग । (६) D धर । (७) C हडु र गूद, D हडु र मूड । (८) C  
 विळुट्टिक, D विळुट्टिकि । (९) D तुट्टिहि । (१०) C D पायल । (११) C  
 करक्क । (१२) D मेकेस । (१३) A भट । (१४) D transposes नारद  
 सारद । (१५) D रिण बीय; C very corrupt गण विट्ठ or विष्ट(?) ।  
 (१६) A बस; B C T बेस, D वैसि । (१७) D छवीस । (१८) D साइस ।  
 (१९) C D धुम ।

नचै भर घप्पर चौसठि नारि<sup>(१)</sup> ।  
 इसै जुद्ध रुद्ध<sup>(२)</sup> अनुद्ध अपारि<sup>(३)</sup> ॥  
 गण<sup>(४)</sup> भगि<sup>(५)</sup> सेन सु<sup>(६)</sup> ग्राम सियार<sup>(७)</sup> ।  
 भिदै रवि मंडल खर सुबार ॥ २८ ॥

दूहा ॥

आदि खर पावार<sup>(८)</sup> बर  
 भीम मरन<sup>(९)</sup> तिन जान ।  
 हमसि हमसि संग्हौ<sup>(१०)</sup> भिरै  
 घग पन मोषन पान ॥ २९ ॥

छंद पद्धरी ॥

<sup>(११)</sup>अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध खर ।  
 बर<sup>(१२)</sup> भिरत भंति दीसै करूर ॥  
 झलमली संगि फुटि<sup>(१३)</sup> परहि<sup>(१४)</sup> तुच्छ ।  
 उपमा सु<sup>(१५)</sup> चंद जंपै सुअच्छ ॥  
 बदल<sup>(१६)</sup> सुमाहि दीसै प्रमान ।  
 मनि करगौ<sup>(१७)</sup> पंचमो भाग भान ॥

---

(१) A B T नार । (२) A om. रुद्ध । (३) A B T अपार । (४) C गण । (५) D भगि । (६) T स । (७) D सियार । (८) D पवार c. m. (९) D मरनि । (१०) D संग्है । (११) C D om. the first 14 lines from अनिवद्ध to चलाइ । (१२) B T बरि । (१३) B फुटि । (१४) A पक्ष, T परहि । (१५) B T om. (१६) A B T बदल, c. m. (१७) So A; but B T मनें निकरगौ, which does not scan.

बर सांगि फोरि<sup>(१)</sup> सिप्पर प्रमान ।  
 छरि गहत<sup>(२)</sup> चंद सोभा समान ॥  
 मानौ कि राह ससि ग्रहै धाड़ ।  
 पैठयै सरन वहलन जाड़ ॥  
 किरबान बंकि बड्डै बिसाल ।  
 मनुं ससिअ डोर कटि<sup>(३)</sup> चक्र लाल ॥  
 सिप्पर सुमंत करि तुट भमाड़ ।  
 मानहु कि चक्र हरि धरि चलाड़ ॥  
 दुहु सेन तीर छुट्टे<sup>(४)</sup> समूह ।  
 मनु<sup>(५)</sup> किड्ड<sup>(६)</sup> पंति पंषिय<sup>(७)</sup> सजूह<sup>(८)</sup> ॥  
 कडि<sup>(९)</sup> इसी तेग धाड़य<sup>(१०)</sup> पहार<sup>(११)</sup> ।  
 (१२) मनुं अम्म इंद्र सज्ज्यौ संभारि ॥  
 विरचै<sup>(१३)</sup> जु खर बाहै विहत्य ।  
 दिषि दूर चडि मनमत्य रत्य ॥  
 भरहरै सव्व पाइल सुभार<sup>(१४)</sup> ।  
 रिन<sup>(१५)</sup> रूप राज<sup>(१६)</sup> दिसि खर पार ॥

(१) A फोरि, T कैरि । (२) A महत । (३) A कडि । (४) C छटे ।  
 (५) A B C D T मनें, c. m. (६) D कीध । (७) C D पंषी । (८) C D  
 समूह । (९) D कडि । (१०) C धारा प्रचार । (११) D reads कड इतंग  
 धार प्रचार । (१२) C reads मानौ कि इ० स० संभार, D reads मानुं कि  
 इ० सभ्यौ संभार । (१३) C विचै; D विचवै । (१४) A सुभाट । (१५) A  
 निर । (१६) B T खपराज, A खरपरज ।

गुरहरी भेरि<sup>(१)</sup> बर भार सार ।  
 बज्जे सु तबल आकास तार<sup>(२)</sup> ॥  
 झक झक उझक बहल दिषीव ।  
 आपंम चंद तिन कहत हीव ॥  
 कट<sup>(३)</sup> हित्त सूर जो धाड़<sup>(४)</sup> मुक्कि ।  
 कहुंत बाल ज्यों बाल रुक्कि ॥  
<sup>(५)</sup>इह सार सुद्ध<sup>(६)</sup> मिट्टिय डरेन ।  
 जानियै चीय वयसंधि तेन ॥  
 परि सहस सत्त दोउ<sup>(७)</sup> सैन बीर ।  
 रवि गयौ<sup>(८)</sup> सिंधु तीरह सुनीर<sup>(९)</sup> ॥ ३० ॥

कवित्त ॥

संझ हेत बहि<sup>(१०)</sup> सार  
 मार करि<sup>(११)</sup> तुट्टि<sup>(१२)</sup> सनह रिज<sup>(१३)</sup> ।  
 सो आपम कविचंद  
 भंग छुट्टे<sup>(१४)</sup> कि बाल पिज<sup>(१५)</sup> ॥  
 टोप आप<sup>(१६)</sup> उत्तरै  
 परै बिपरीत बिराजै ।

(१) C भरहरी भीर । (२) D वार । (३) B कटे, C कट । (४) D धय ।  
 (५) D reads इह रमि सुद्धं मियटीय डरेन । (६) C सुद्धि । (७) C दोऊ  
 c. m.; read *dvau*, m. c. (८) D गयै । (९) C D सुनीर । (१०) D  
 बहिं । (११) C D कहि । (१२) D नूटि । (१३) A B T रिझ । (१४) C  
 बंटे, D बटे । (१५) A B T पिझि । (१६) D ओट ।

मनों सुभाजन भोम<sup>(१)</sup>

हत्य जोगिनि रुधि<sup>(२)</sup> काजै ॥

यो भिरगौ<sup>(३)</sup> सेन समवर<sup>(४)</sup> सुबर

न न<sup>(५)</sup> हारगौ जित्यौ न कोइ ।

दोउ<sup>(६)</sup> सेन बीच सरिता नदी<sup>(७)</sup>

निस कट्टी<sup>(८)</sup> बर बीर होइ<sup>(९)</sup> ॥ ३१ ॥

<sup>(१०)</sup> होत प्रात सामंत

पान व्यूहं जुध रच्चिय ।

भोती भर सामंत

पान कूरंभ रा सच्चिय ॥

बर हिरन्य<sup>(११)</sup> उत्थट्ट<sup>(१२)</sup>

पंति मंडी गुरराजै ।

लाजरूप कविचंद

मडि कन इक दुति साजै ॥

नालीव रूप लीनो वरन

राम सुबर रघुवंस भिरि ।

(१) C भोमि । (२) D रुध । (३) A B T भरौ । (४) D समर । (५) B मनों for न न । (६) C दोइ, D दोय; read *dvau*, m. c. (७) D reads विची सरितावली । (८) A B T कट्टी । (९) Read *hvai* m. c. (१०) C pref. व्यूह । D omits the stanzas 32—34, from होत प्रात etc. up to इतौ करी । (११) C हिरन । (१२) B C उत्थट्ट ।

कोदनि<sup>(१)</sup> सुरंग पंती करिय

बीय सहस पुंडीर परि ॥ ३२ ॥

छंद मालती ।

तिय पंच गुरु सत सत्ति चामर

बीय तीय पयोहरे ।

मालती छंद सु चंद जंपय<sup>(२)</sup>

नाग षग मिलि चित्त हरे ॥

नव<sup>(३)</sup> सूर सलि ललि अरिन अल मिलि<sup>(४)</sup>

लोह झिल मिलिनि<sup>(५)</sup> करे ।

बर सूर तल छुटि<sup>(६)</sup> लजन नट्टय

बीर सबदन<sup>(७)</sup> बर भरे ॥

मिलि सार सार पहार बजि घट

उघटि नट जिम तानयौ ।

झलमलत<sup>(८)</sup> तेक सकति बंकिय

ओपमा कवि मानयौ ॥

मनो बिट्ट<sup>(९)</sup> जिम बेहार ग्रहपति

कुलट<sup>(१०)</sup> तन तिय लोकियं ।

---

(१) C जोजनि । (२) C जंपि चंदय । (३) C सब । (४) C अरित  
अमिलि । (५) C मिलिनि । (६) A छुटि, c. m. (७) C सब दल । (८) C  
झलमल, om. त । (९) C वटप (for बिटप) । (१०) C कुटल ।

धन स्वर धार अधार<sup>(१)</sup> जन तिन  
 धार धार जनेकियं<sup>(२)</sup> ॥  
 चिहुदिसा चाहं स्वर बह बह  
 जूट चस्त्रं निद्वयं ।  
 मनें रास मंडल गोप कन्हं  
 दंप<sup>(३)</sup> दंपति बंधियं ॥  
 बर अरि र सेन विडार चिहु दिसि  
 करषि<sup>(४)</sup> काइर<sup>(५)</sup> भज्जियं ।  
 बर बीर धार पावार<sup>(६)</sup> सेना परे  
 सोम अलुज्जयं ॥ ३३ ॥

कवित्त ।

दिन पल्लव्यौ पावार  
 सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ।  
 चावहिसि<sup>(७)</sup> सामंत  
 भीम बंध्यौ<sup>(८)</sup> सुरंग नर ॥  
 तन सट्टै<sup>(९)</sup> अरि सट्टै<sup>(१०)</sup>  
 बंधि लीनौ उज्जेनी ।

(१) C आधार c. m. (२) T जनेकियं । (३) C पदं । (४) B करिष ।  
 (५) C कायर भज्जियं । (६) A T पवार । (७) C चाउदिस । (८) C विडै, B T बीटै । (९) C त्रिय सट्टै । (१०) A सट्ट ।

बल छुग्यौ संग्रह्यौ<sup>(१)</sup>  
 दर्ई बर भंभर नैनी ॥  
 कविचंद छंडायौ बीच परि  
 बाल सुबर सुंदर बरी ।  
 धनि<sup>(२)</sup> स्वर बीर सामंत है  
 सुबर जुद्ध इत्तौ करी ॥ ३४ ॥

दूहा ॥

भीम भयानक<sup>(३)</sup> भै ग्रह्यौ<sup>(४)</sup>  
 सरन राम कविराज ।  
 बर इंद्रावति सुंदरी  
<sup>(५)</sup>में दीनी प्रथिराज ॥ ३५ ॥  
 जो मति पच्छै<sup>(६)</sup> उप्पज्जै  
 सो मति<sup>(७)</sup> पहिलें<sup>(८)</sup> होइ ।  
<sup>(९)</sup>काज न बिनसै अप्पनौ  
 दुज्जन<sup>(१०)</sup> हसे<sup>(११)</sup> न<sup>(१२)</sup> कोइ ॥ ३६ ॥  
 आदर करि आने सुग्रह  
 भगति जुगति<sup>(१३)</sup> बहु<sup>(१४)</sup> कीन ।

(१) संग्रह्यौ । (२) C धन, B धनि । (३) D भयन कै । (४) C ग्रह्यौ ।  
 (५) C reads आनी प्रथीरजि, D में दिनि प्रथीराज । (६) A पक्षों । (७) C  
 मन । (८) C ० लै, D ली । (९) D reads तौ का० न बिनसै क्रनौ । (१०)  
 A दुर्जन । (११) A हस, C हसै, D हसैं । (१२) C om. न । (१३) C  
 भति जुगति । (१४) D बहु ।



जे भर घाडल उप्परै<sup>(१)</sup>  
 तेत<sup>(२)</sup> जिवाड<sup>(३)</sup> सुदीन ॥ ३७ ॥  
 षग विवाह भीमंग रुचि<sup>(४)</sup>  
 बाजे बज्जन लगि<sup>(५)</sup> ।  
 मंगल मिलि अलि गावही<sup>(६)</sup>  
 गौष गौष<sup>(७)</sup> निस<sup>(८)</sup> जगि<sup>(९)</sup> ॥ ३८ ॥

छंद भुजंगी ॥

रची बेदिका<sup>(१०)</sup> बंस सोब्रन<sup>(११)</sup> सोहै ।  
 जरे हेम में<sup>(१२)</sup> कुंभ देषत<sup>(१३)</sup> मोहै ॥  
 लगी बेद विप्रांन सेां गान झाई ।  
 रचे कुंड मंडप से षन<sup>(१४)</sup> साई ॥  
 हसें<sup>(१५)</sup> तर्क वितर्क<sup>(१६)</sup> हासं सु रासं<sup>(१७)</sup> ।  
 घसें<sup>(१५)</sup> कुंकमं लाल गुल्लाल वासं<sup>(१७)</sup> ॥  
 उडै<sup>(१८)</sup> बीर गोधूरकं वास रेनं<sup>(१९)</sup> ।  
 करै<sup>(१८)</sup> भेरि भुंकार<sup>(२०)</sup> गर्जत गेनं ॥

(१) C बायल उपादे । (२) A B T जतन, C ते । (३) C D जिवाय ।  
 (४) C D रुचि । (५) C लगि, जगि । (६) D गावहिं । (७) C D गोष गोष,  
*gaukh* (Sansk. गवाक्ष) । (८) C निसि । (९) A जिगि, B जागि, D  
 जगि । (१०) C वेदुजा । (११) D सोबन (Skr. सुवर्ण) । (१२) C में, D में ।  
 (१३) So A; B C T देषत c. m.; D देष । (१४) D षन (Prák. खाणू or  
 खणू, Skr. स्थाणु) । (१५) C D हसें, घसें । (१६) D चक विचक । (१७) D  
 रासै, बासै । (१८) A C T उडै, करै । (१९) D गोधूरकं दास रेंनु । (२०)  
 D भुंकार ।

चवै<sup>(१)</sup> छंद बंदी न नं पार जानं ।  
करे<sup>(२)</sup> दान हेमं सु विद्या विनानं<sup>(३)</sup> ॥  
भई प्रीति जेतं<sup>(४)</sup> सुरा कव्वि रानं ।  
तिनं लेषियं<sup>(५)</sup> कग्गदं चाहुअनं ॥ ३६ ॥

दूहा ॥

लिषि कग्गद चहुअन दिसि<sup>(६)</sup>  
दिय पुची भीमानि ।  
इंद्र घरनि सम सुंदरी  
कलह कुसल<sup>(७)</sup> बर बानि ॥ ४० ॥

छंद नराज<sup>(८)</sup> ॥

करौ सुहानं<sup>(९)</sup> कामिनी<sup>(१०)</sup> ।  
दिपंत<sup>(११)</sup> मेघ दामिनी<sup>(१०)</sup> ॥  
सिंगार षोडसं करे ।  
सुहस्त दर्पनं<sup>(१२)</sup> धरे<sup>(१३)</sup> ॥

(१) D तवै । (२) D करै । (३) D विनीतं । (४) A T जेतं, C D जैतं ।  
(५) D लेषियां । (६) C दिस, D दल । (७) D कुसल । (८) D नराज,  
the name is commonly spelt नराच or नाराच. This metre is  
properly called *pramāṇikā* (also *uagasvarūpiṇī* or *matallikā*);  
it consists of three feet in the pāda of 8 syllables; viz., an amphi-  
brach (ॐ—ॐ), cretic (—ॐ—), and jambus (ॐ—). *Nārācha* is  
properly the name of the double *pramāṇikā* (or *pañchachāmara*)  
of 16 syllables to the pāda. (९) D संनानि । (१०) D कामनी, द.मनी ।  
(११) B C दियंत । (१२) C D द्रप्यनं । (१३) D धरं ।

वसंन<sup>(१)</sup> वासि वासनं<sup>(२)</sup> ।  
 तिलक भाल भासनं ॥  
 दु नैन त्रैन<sup>(३)</sup> अंजय ।  
 चलं चलंत षंजय ॥  
 सुहंत<sup>(४)</sup> ओन<sup>(५)</sup> कुंडलं ।  
 ससी रवी कि<sup>(६)</sup> मंडलं ॥  
 सुमुत्ति<sup>(७)</sup> नास सोभई ।  
 दसंन<sup>(८)</sup> दुत्ति लोभई ॥  
 अनेक जाति<sup>(९)</sup> जालितं<sup>(१०)</sup> ।  
 (११) धरंत<sup>(१२)</sup> पुष्प<sup>(१३)</sup> मालितं<sup>(१४)</sup> ॥  
 अंकार हार नौपुरं<sup>(१५)</sup> ।  
 घमंकि<sup>(१६)</sup> घुंघरं घुरं ॥  
 विलेपि लेप<sup>(१७)</sup> चंदनं ।  
 कसी सु<sup>(१८)</sup> कंचुकी घनं ॥  
 सु छुद्र<sup>(१९)</sup> घंठि घंटिका ।  
 तमोल<sup>(२०)</sup> आप अंटिका ॥

(१) D वसंत, C वसन्य । (२) D वासिनं । (३) A B T नैन त्रैन । (४) D सोहंत । (५) D ओन । (६) D क । (७) D सुमुत्ति । (८) A C दिसंन । (९) D नाति । (१०) C D जालिनं, मालिनं । (११) B om. this line. (१२) D धरंत । (१३) C पुष्प । (१४) C नूपुरं, D नौपुरं । (१५) D घुंघरु घरं । (१६) A लेपि । (१७) A स । (१८) B छुद्रि, D पद्र । (१९) A तमोल c. m.; C तबेल, D तबोल ।

कनक नगा कंकनं ।  
जरे जराद्र<sup>(१)</sup> अंकनं ॥  
विसाल बानि चातुरी ।  
दिषंन<sup>(२)</sup> रंभ आतुरी ॥  
अनेक दुत्ति<sup>(३)</sup> अंग की ।  
कहत जीभ भंग की ॥  
सहस्र रूप सारदं ।  
सरं<sup>(४)</sup> न रूप नारदं ॥ ४१ ॥

दूहा ॥

करि शृंगार अलि अलिन संग<sup>(५)</sup>  
रिम झिम<sup>(६)</sup> झुंडन<sup>(७)</sup> मंझ ।  
बसन रंग नव<sup>(८)</sup> रंग<sup>(५)</sup> रंगे  
(९)जानु कि फुल्लिय संझ ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥

करगहि घमा ममा चहुआनं ।  
जान कि<sup>(१०)</sup> देव विवाह विनानं ॥  
मन गंठे गंठिय<sup>(११)</sup> प्रिय जानं ।  
(१२)बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥ ४३ ॥

(१) C D जराव । (२) C D दिपंन । (३) D दुदि । (४) C D रसं ।  
(५) C सग रग ; both anusvāras in this line must be read as anunāsikas, m. c. (६) C D झमं । (७) C झुझन, D झुझन । (८) D व, om. न । (९) D जानि क । (१०) C D om. (११) C गंठिय । (१२) D makes this the second line of the stanza (thus 1, 3, 4, 2).

दूहा ॥

सत हत्यो हय<sup>(१)</sup> सहस बिय

साकति साजि अनूप ।

हय लेवौ<sup>(२)</sup> चहुआन कौ<sup>(३)</sup>

दियौ भीम बर भूप ॥ ४४ ॥

नग जरित<sup>(४)</sup> चौडाल<sup>(५)</sup> सैं

मुर सत दासिय सत्य ।

दै पहुचाइय<sup>(६)</sup> सुंदरी

(७) कही बनै बर गत्य ॥ ४५ ॥

मातपित<sup>(८)</sup> परठिय सुमति<sup>(९)</sup>

बिधि विवेक बिनयान<sup>(१०)</sup> ।

(११) पतिवृत<sup>(१२)</sup> सेवा मुष धरम

इहै तत्त मति ठान<sup>(१३)</sup> ॥ ४६ ॥

पति लुप्यै<sup>(१४)</sup> लुप्यै<sup>(१५)</sup> जनम

पति बंचै<sup>(१६)</sup> बंचाइ ।

इहै<sup>(१७)</sup> सीष हम मन<sup>(१८)</sup> धरौ

(१) D है । (२) C लेवो, D लेवै । (३) D कुं । (४) D जरति । (५) C चौडेल, D चौडोल । (६) C पङ्चार्दय, D पहुचार्दय । (७) D reads क० बनै बर कथ । (८) Conjectural; A ०पत्त, B D T ०पुत्त, C ०पत । (९) D सुनि । (१०) C ०पान, D ०याने, B T ०यानं । (११) C om. the two last lines of this dúhá. (१२) D पतिवृते । (१३) D मिति ठानि । (१४) D लुप्यै । (१५) D बिपै । (१६) D बंचइ । (१७) C D यहै । (१८) D मनि ।

ज्यौं सुहाग सच वाइ ॥ ४७ ॥

बंदिन दान<sup>(१)</sup> प्रवाह दिय

लिय सुंदरि जुध जोति ।

दुहु<sup>(२)</sup> जस न्निमल<sup>(३)</sup> छंद गुन<sup>(४)</sup>

पढन कविन इह रीति ॥ ४८ ॥

कवित्त ॥

धनि सामंत समथ<sup>(५)</sup>

जेन न्वप बिन<sup>(६)</sup> जुध जित्तिय<sup>(७)</sup> ।

धनि सामंत समथ

जेन जस किड्ड<sup>(८)</sup> विदित्तिय<sup>(९)</sup> ॥

(१०) धनि सामंत समथ<sup>(११)</sup>

(१२) जेन बरनी बर संध्यौ ।

धनि सामंत समथ<sup>(१३)</sup>

जेन भीमंग बर<sup>(१४)</sup> बंध्यौ ॥

सामंत धनि<sup>(१५)</sup> जिन<sup>(१६)</sup> कित्ति बर

ढिल्ली दिसि<sup>(१७)</sup> पायान<sup>(१८)</sup> करि<sup>(१९)</sup> ।

(१) D दाम । (२) A दुहं, D दुह । (३) A न्निमल, B T न्निमल । (४) D गुन । (५) B D सथ । (६) D बिन । (७) C जित्त्यौ, D जीतौ । (८) D कीड । (९) C विदित्त्यै, D वदीतौ । (१०) C D commence the stanza with the following four lines; moreover D reverses the order of the two halves of these four lines. (११) D तमथ । (१२) D reads सामं भ्रमह जिन संध्यौ । (१३) D सुमथ । (१४) D रीन । (१५) D धनि । (१६) B जन । (१७) D दिलि देस । (१८) D पायन । (१९) A किय, T किर ।

वैसाष मास अष्टमि सितह<sup>(१)</sup>

कित्ति संचरिय<sup>(२)</sup> देस परि<sup>(३)</sup> ॥ ४६ ॥

<sup>(४)</sup>दिल्लिय<sup>(५)</sup> पति सिनगार<sup>(६)</sup>

हट्ट पट्टन की सोभा ।

गौष गौष जारीन<sup>(७)</sup>

दिष्पि चिय नर सुर<sup>(८)</sup> लोभा<sup>(९)</sup> ॥

भूं गलफेरि<sup>(१०)</sup> नफेरि

नह नीसान<sup>(११)</sup> म्दंगा ।

नाना करत संगीत

ताल सेां<sup>(१२)</sup> ताल उपंगा<sup>(१३)</sup> ॥

गाजंत नब्भ गज्जिय गुहिर

न्वप<sup>(१४)</sup> प्रवेस सुंदरि करिय ।

सामंत जैत पय लगि<sup>(१५)</sup> प्रथ<sup>(१६)</sup>

<sup>(१७)</sup>प्रथक<sup>(१८)</sup> प्रथक परसंस करिय ॥ ५० ॥

<sup>(१९)</sup>चार<sup>(२०)</sup> अग च्यालीस<sup>(२१)</sup>

मत्त<sup>(२२)</sup> अण्ये गजराजिय ।

(१) B सिथह, D सुतिह । (२) B संचिय । (३) A B T पर । (४) C pref. ङ्गय । (५) D दिली । (६) B सिंगार, C सिनगारि, D सीनगारि । (७) A जारिन । (८) C D सुर नर । (९) D सोसा । (१०) C D ०मेरि । (११) नीसान । (१२) D सु । (१३) D उपंगा । (१४) C वप, D वप ; A चप । (१५) D लगै । (१६) C om. ; D प्रथ । (१७) D reads प्रथम प्रियक प० कीय ; here *Prathama* is a corruption of *Prithivirāj*. (१८) C om. (१९) pref. ङ्गय । (२०) C चारि । (२१) C चालीस, D चालिस । (२२) D मंत ।



सौ<sup>(१)</sup> तुरंग तिय अग्न<sup>(२)</sup>  
 बीस चव<sup>(३)</sup> अपि<sup>(४)</sup> सु पाजिय<sup>(५)</sup> ॥  
 इक अमोल<sup>(६)</sup> सुंदरो  
 सत्त तिय<sup>(७)</sup> दासिन<sup>(८)</sup> बीटिय<sup>(९)</sup> ।  
 सवै सत्य सामंत  
 रेह भर करिय अमीटिय<sup>(१०)</sup> ॥  
 (११)सामंत करी प्रथिराज विन<sup>(१२)</sup>  
 करै<sup>(१३)</sup> न को रवि<sup>(१४)</sup> चक्र तर<sup>(१५)</sup> ।  
 सुंदरि सहित्त अरि जीति<sup>(१६)</sup> कै  
 गण<sup>(१७)</sup> वीर अष्टमि सु घर ॥ ५१ ॥

दूहा ॥

वर अष्टमि उज्जल पषह  
 तिथि अष्टमि रवि भीर<sup>(१८)</sup> ।  
 अष्ट कोस दिल्लीय तें  
 चिय मुक्किग<sup>(१९)</sup> तिन वीर<sup>(२०)</sup> ॥ ५२ ॥

(१) D सु। (२) D अंग। (३) C om. (४) D अप। (५) C वाजिय।  
 (६) D अमोलु। (७) C त्रिय। (८) Conjectural; A B T दासित, C  
 दासत, D दासति। (९) So A; B T बीटिय, C बिंटिय, D बींढीय।  
 (१०) A अमीटिय, B अमिंटिय, C अमिडिय, D अमीटीय। (११) D reads  
 इह सारं करि etc (१२) C विनु। (१३) C करौ। (१४) D reads  
 कौरव, "the kauravas." (१५) D तरि। (१६) C जीन। (१७) C गवे।  
 (१८) T वीर, A B वार। (१९) A B T मुंकि। (२०) A B वार।



गय सुंदरि संहौ न्वपति  
 गवन करन चहुआन ।  
 लोहानौ संहौ मिल्यौ  
 दै कागद चहुआन<sup>(१)</sup> ॥ ५३ ॥

कवित्त ॥

में षगगाही<sup>(२)</sup> सेन  
 दंड पलथ्यौ सु बिहानं ।  
 अपुठौ<sup>(३)</sup> भर चतुरंग  
 सजे दस गुनौ प्रमानं ॥  
 बर कमान पुरसान  
 रोहि रंगे रा गष्वर ।  
 हबस हेल<sup>(४)</sup> पंधार  
 सज्जि घल्ली फिर पष्वर ॥  
 पंजाब देस पंचौ<sup>(५)</sup> नदी  
 बर मंगै मंगी सुबर ।  
 चहुआन राह में मनि गिली<sup>(६)</sup>  
 मतें मेछ<sup>(७)</sup> कट्टन उगर ॥ ५४ ॥

---

(१) C सुरतान । (२) A T read षगगाही, B षगगाही, D षगंगादी, C जषगगाही । (३) A अपुठौ, D अपुठै । (४) D हेरल । (५) D पंचु । (६) B T मगिली, C D निगिली, for मनि गिली । (७) D मेछै ।

दूहा ॥

मुनिय साहि गेरो सुबर  
 बर भरयौ चहुआन ।  
 लै सुंदरि पच्छौ फिरगौ  
 बर बज्जे नीसान ॥ ५५ ॥  
 दिस<sup>(१)</sup> दखिन<sup>(२)</sup> तखिन<sup>(३)</sup> महल<sup>(४)</sup>  
 सुंदरि समुद<sup>(५)</sup> समप्पि ।  
 सकस<sup>(६)</sup> सत्त दासी अनुप<sup>(७)</sup>  
 नृप इंद्रावति अप्पि ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥

अगर कपूरति महल  
 सार घनसार<sup>(८)</sup> सु<sup>(९)</sup> रम्मिय<sup>(१०)</sup> ।  
 धूप दीप सुगंध<sup>(११)</sup>  
 दीप दस<sup>(१२)</sup> दिसि वृत्त नम्मिय ॥  
 सेज<sup>(१३)</sup> सुरंग तिरंग  
 हेम नग जरे जरानं<sup>(१४)</sup> ।  
 दिए भीम भूपाल

(१) A दिसि । (२) A दिखिन, C D दखिन । (३) C D तखिन ।  
 (४) D महल । (५) D समुंद । (६) सकस = Arabic شخص . (७) B  
 अनूप, D दासीयनुर । (८) D घनसार । (९) A T सुं । (१०) D रंगिय ।  
 (११) This quarter-line is short by one instant. (१२) C D दिस ।  
 (१३) D सेजे । (१४) C जरामं ।

भोग साजं सु सबानं<sup>(१)</sup> ॥  
 नृप देषि अचंभम मानि मन  
 मुष आतुर देषन महल ।  
 आनिय सुसेज चिय अलिन मिल<sup>(२)</sup>  
 अलि गुंजत उप्पर चहिल<sup>(३)</sup> ॥ ५७ ॥

दूहा ॥

हंस गवन हंसह सरन  
<sup>(४)</sup>गनि गति मति सारह ।  
 रूप देषि भूल्यौ नृपति  
<sup>(५)</sup>रचिय बिरंचि बिहद ॥ ५८ ॥

कवित्त ॥

रस बिलास उप्पज्यौ  
 सषी रस हास<sup>(६)</sup> सुरत्तिय ।  
 ठाम ठाम चढि हरम<sup>(७)</sup>  
 सह कह<sup>(८)</sup> कहत<sup>(९)</sup> हसत्तिय<sup>(१०)</sup> ॥  
 सुरति<sup>(११)</sup> प्रथम संभोग  
 हंह हंहं मुष<sup>(१२)</sup> रट्टिय ।

(१) C सुबानं । (२) C मिलि, D रलि । (३) D चहल । (४) D reads  
 गति सुमति सारह । (५) D रवीय विरेचि । (६) A B T हार । (७) D  
 हरम = Arabic حرم . (८) C सह, D om. (९) D कहंत । (१०) A B  
 C T हसतिय । (११) D सुरति । (१२) C D मुह ।

(१)नां नां नां परि न्वल<sup>(२)</sup>  
 प्रीति संपति रत घट्टिय ॥  
 शृंगार हास्य<sup>(३)</sup> करुणा सुरुद्र  
 (४)बीर भयानक विभल रस ।  
 अद्भुत<sup>(५)</sup> संत<sup>(६)</sup> उपज्यौ सहज  
 सेज रमत<sup>(७)</sup> दंपति सरस ॥ ५९ ॥

दूहा ॥

सुकी सरस<sup>(८)</sup> सुक उच्चरिग<sup>(९)</sup>  
 गंध्रव<sup>(१०)</sup> गति सेां गान<sup>(११)</sup> ।  
 इह अपुब्ब गति संभरिय  
 कहि चरित्त<sup>(१२)</sup> चहुआन ॥ ६० ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिरज रासा के<sup>(१३)</sup>  
 इंद्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमो<sup>(१४)</sup>  
 प्रस्ताव संपूर्णः<sup>(१५)</sup> ॥

॥ ३३ ॥ <sup>(१६)</sup>इंद्रावति विवाह सम्यो संपूर्ण ॥ ३३ ॥

(१) A D om. this half-line (from नां to घट्टिय); C reads सुष सामय  
 अनुरूप सु भग सोदिय मन जट्टिय । (२) B वंमल । (३) B हार. D हास ।  
 (४) So C; D बीर भयानक विभल रस; but A B T बीर भयान विभाळ  
 रस । (५) A C D अद्भूत, c. m. (६) D संति । (७) A रमत, D रमंत ।  
 (८) C D सरस । (९) D उचरी । (१०) C गंध्रव । (११) So D; A B T  
 ग्यान; C reads संज्ञान (for सेां गान) । (१२) D चिरत । (१३) C रायसे,  
 D रास के । (१४) B अगतीसमो, T बतीसमो, C om. On this difference  
 in numbering the Cantos see the Introduction. (१५) A om., B  
 संपूर्ण । (१६) So T; A B C D om.

॥३४॥ अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ<sup>(१)</sup> लिख्यते ॥३४॥



कवित्त ॥

किहि<sup>(१)</sup> भेषत प्रथिराज  
किहित<sup>(२)</sup> भेषत चिहुपासं<sup>(४)</sup> ।  
किहि भेषत दिस बिदिस  
कहौ मनया<sup>(५)</sup> उल्हासं<sup>(६)</sup> ॥  
किहि<sup>(७)</sup> उमाह उच्छाह  
कोन ओपम<sup>(८)</sup> द्रग राजै<sup>(९)</sup> ।  
(१०)सो उत्तर कविचंद  
देवगुर राज विराजै<sup>(११)</sup> ॥  
सजि मान बीर चतुरंगिनी  
कमल गहन सुरतान<sup>(१२)</sup> बर ।  
(१३)नव रस विलास जस रस सकल  
तपै तुंग चहुआन बर ॥ १ ॥

---

(१) C om. । (२) A B T कहि, D कहे । (३) D केहत । (४) C चहुंपासं । (५) D मनया । (६) B उल्हासं, D उल्हासं । (७) D कहौ । (८) D उपम । (९) D राजें । (१०) C omits this half-line, from सो to विराजै । (११) D विराजें । (१२) D सुरतान । (१३) D omits this half-line, from नव to बर ।

नीतराव पित्रीय<sup>(१)</sup>

भेद लै<sup>(२)</sup> ग्रह चहुआनं ।

ठिल्ली<sup>(३)</sup> कौ ग्रह<sup>(४)</sup> भेद<sup>(५)</sup>

लिथ्यौ कगद सुरतानं ॥

बरष<sup>(६)</sup> उभै<sup>(७)</sup> षट मास

फेरि सु बिहान पलान्यौ ।

षट्<sup>(८)</sup> बन प्रथिराज

बहुरि आपेटक जान्यौ ॥

सामंत स्वर सथह न कौ

बर बराह बर पिल्लइय<sup>(९)</sup> ।

दैवान जोध चहुआन बर<sup>(१०)</sup>

भिरि दुजन बर ठिल्लइय<sup>(११)</sup> ॥ २ ॥

सत चीता दादस ति अग

स्वान अच्छे<sup>(१२)</sup> सुरंग दस<sup>(१३)</sup> ।

बीय अग<sup>(१४)</sup> च्यालीस

(१) D षत्रीय । (२) D लें । (३) D दल्ली । (४) C D वर । (५) C भेदि । (६) C D वर “year”; compare the Sindhi बर्ष, and Panjabi and Kashmiri बर्ही । (७) D उभें । (८) D बट् । (९) D पलइय and below ठलइय । (१०) C D भर । (११) T ठिल्लइय, D ठलइय । (१२) D अच्छे । (१३) C दह । (१४) D चंग ।

(१) सीह बर गोस कहंदह<sup>(२)</sup> ॥

सत्तसत्त मग अच्छ<sup>(३)</sup>

सत्तदह अग ति पाजी ।

आषेटक प्रथिराज

बीर औपम अति<sup>(४)</sup> राजी ॥

(५) उप्पर ति राय षटू ति बर

मिलि<sup>(६)</sup> बसीठ गोरी सुबर ।

मंगे हुसेन साहाबदी

पंच देस बंटन<sup>(७)</sup> सुधर ॥ ३ ॥

मुक्कि<sup>(८)</sup> राज आषेट

खर सामंत बुलाइय<sup>(९)</sup> ।

सुबर साह गोरीस<sup>(१०)</sup>

आनि उप्पर षरि<sup>(११)</sup> आइय<sup>(१२)</sup> ॥

मंगे धर पंजाब

षान हुस्सेन सुमंगे ।

इष्ट भ्रत अवसान

(१) सीह गोस, commonly called सियाहगोस, as kind of panther.  
 (२) The Saurasenī Prākṛit, and modern Sindhī, and Panjābī form of the participle present. (३) D अच्छ । (४) D inserts चा after अति । (५) So B T; A उप्पर ति य षटू; C D उप रत्त राय षटू ति बर ।  
 (६) D मली । (७) A बंटन । (८) D मुंक । (९) C बुलारे, D बोलारे ।  
 (१०) A गोरीस । (११) D षरे । (१२) C आरे, D आर ।

दीए<sup>(१)</sup> कगद लिषि<sup>(२)</sup> अगै ॥  
 संमुहे<sup>(३)</sup> स्वर सामंत वर<sup>(४)</sup>  
 दै<sup>(५)</sup> मिलान<sup>(६)</sup> संहौ घरिय<sup>(७)</sup> ।  
 चालंत जेम लागत<sup>(८)</sup> दिवस  
 झुकि लग्यौ गोरी गुरिय<sup>(९)</sup> ॥ ४ ॥

दूहा ॥

वेगि स्वर सामंत सह  
 मिले जाइ चहुआन ।  
 सिंधु बिहथ्यें दूत मिलि  
 गोरी वै सुरतान<sup>(१०)</sup> ॥ ५ ॥  
 अनंगपाल तीरथ्य गय  
 बंध बढिग<sup>(११)</sup> सुरतान ।  
 बैर बीर ठिल्लिय तिनह<sup>(१२)</sup>  
 वर मंगै चहुआन ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

वर बसीठ उच्चरै  
 साहि जानौ पहिलो<sup>(१३)</sup> नां ।

(१) D दीयें; the metre would require to read either दिर or दीय । (२) D लिषि । (३) D ०हे । (४) C D सव । (५) D दें, C दिय । (६) D भीलानो संहमो । (७) C घरिय । (८) C D लगन, which is the Panjābī form of the 3d plur. pres. (९) D गुरिय । (१०) D झुलतान । (११) So A; D गढिग, C गडिक, B T बडिग । (१२) A B T तनह । (१३) C पहलुं, D पहिलू ।



अप्पौ पहु हुस्सेन  
 साहि<sup>(१)</sup> जानौ<sup>(२)</sup> दस गुंनां ॥  
 कंक बंक करते न-  
 रिंद<sup>(३)</sup> कबहु<sup>(४)</sup> क घर<sup>(५)</sup> छिजै ।  
 भिर गोरी तिन<sup>(६)</sup> भरह  
 रहटु घटी<sup>(७)</sup> घट भजै ॥  
 दुप्पर<sup>(८)</sup> छांह दीसै फिरत<sup>(९)</sup>  
 भावी गति दिष्पी किनह<sup>(१०)</sup> ।  
 मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर  
 करहु एक बुझी सुनह<sup>(११)</sup> ॥ ७ ॥  
 अरे<sup>(१२)</sup> ढीठ वसीठ<sup>(१३)</sup>  
 कोन<sup>(१४)</sup> हारगौ को<sup>(१५)</sup> जित्यौ ।  
 बिन<sup>(१६)</sup> बित्तग<sup>(१७)</sup> बित्तयौ  
 कोन बित्तग<sup>(१८)</sup> अब बित्यौ ॥  
 पंच तत्त<sup>(१९)</sup> पुत्तरी  
 पंच हथ्यन कर नचै<sup>(२०)</sup> ।

(१) D साद । (२) D जादौ, present participle, for जातौ । (३) D नरेंद । (४) D कबहुं । (५) D घर । (६) D ते नीर । (७) A घरी, B घट । (८) So C ; D दूपहर ; but A B T दुप्परह । (९) D फरत । (१०) C कनह । (११) A सुनह । (१२) Read *āre*, m. c. ; C, in order to preserve the metre, reads अरे ढीठ वरसीठ । (१३) D वसीठ । (१४) D reads कुंन in both places. (१५) A C D किन । (१६) D om. बित्तग बित्तयौ कोन बित्तग । (१७) C बित्तग । (१८) D तत्त । (१९) B T नचै, D नचें ।

अजै बिजै गुन<sup>(१)</sup> बंधि  
 चित्त तामस रस रचै ॥  
 बंछै जु सुष्य फल राजगति  
 वह करतार सुन न करै ।  
 उच्चरे कित्ति<sup>(२)</sup> छल ना रहै<sup>(३)</sup>  
 तब<sup>(४)</sup> लग्गै गलबल परै ॥ ८ ॥

दूहा ॥

कै कोसां ठिल्ली धरा  
 कै कोसां गज्जान ।  
 षंडा सेां बर<sup>(५)</sup> बंधिया  
 चहुवानां पुरसान<sup>(६)</sup> ॥ ९ ॥  
 में रष्यौ हुस्सेन बर  
 बर बंध्यौ सुरतान ।  
<sup>(७)</sup>उट्टाएव वसीठ बर  
 बर बज्जै नीसान ॥ १० ॥

---

(१) D गुण । (२) C फित्ति । (३) D रहें । (४) C inserts च after तब । (५) C करि । (६) C सुरतान, D शूरतान । (७) So C ; A B D T read उट्टाए वसीठ बर, which is short by one instant ; उट्टाएव is the old form of the past participle, equal to Prākṛit उट्टाविच्य, Skr. उत्थापितकः ।

छंद मोदक<sup>(१)</sup> ॥

दस मत्त पयो लहु<sup>(२)</sup> पंच गुरं<sup>(३)</sup> ।

षगपन हरे बिषपत्त बरं<sup>(४)</sup> ॥

बर सुद्ध प्रयान हुलास छवी ।

कहि मोदक छंद प्रमान कवी ॥

जु सजी चतुरंगन दान दियं ।

कवि दोउअ<sup>(५)</sup> सेन उपम्म कियं ॥

सुत<sup>(६)</sup> षंजन ज्यों बुध<sup>(७)</sup> गत्ति पढी ।

सति<sup>(८)</sup> सीतल बाल प्रमान बढी ॥

बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं ।

तिनकी छवि पावस<sup>(९)</sup> सज्जि घनं ॥

सु बजे बर बीर निसान बजं ।

सु मनें घन पावस<sup>(९)</sup> सज्जि गजं ॥

(१०) बजावत<sup>(११)</sup> बीर जंजीरन स्वर ।

(१) The correct name of this metre which consists of four anapaests (◡◡—) is *Totaka*. There is, however, a metre consisting of five anapaests (i. e., of 10 short and 5 long syllables), which is called *Manoharāṇa*, a synonym of *Modaka* or “joyful”. Now considering that the *Totaka* measure is but the *Manoharāṇa* measure curtailed, and that the present stanza recounts the joyful march of the Chahuván, the poet has chosen to call the metre by the name of *Modaka*. (२) C घर । (३) D गुरु । (४) D हरे । (५) C दोऊ । (६) D सुत । (७) B T बुद्ध, c. m. (८) D संत । (९) D पास, om. व । (१०) This and the following line are in a different measure, the *Motidāma*, of four amphibrachs (◡—◡). (११) D बजावती ।

कपे सुर बीर पयालन पूर ॥  
 उडि रेन चिह्नं दिसि बिथ्युरियं ।  
 मुदरी द्रग अट्ट<sup>(१)</sup> ति<sup>(२)</sup> धुंधरियं ॥  
 तिह ठौर<sup>(३)</sup> रसं अप<sup>(४)</sup> बंधव से<sup>(५)</sup> ।  
 तिन कै सुष बाल<sup>(६)</sup> भुअंग ग्रसें ॥  
 बर जगत नैन सुमेन मुचै<sup>(७)</sup> ।  
 (८)तहां<sup>(८)</sup> कूरन से नर आइ नचै ॥  
 अम सूर तिनं अभिलाष रिनं ।  
 बर ग्रब्ब बलं बर बस्सु<sup>(१०)</sup> तनं<sup>(११)</sup> ॥  
 कल किंचित संकर सूर दिपं ।  
 बर बीर म्रजाद न लाज लुपं<sup>(१२)</sup> ॥  
 सहनाइय<sup>(१३)</sup> सिंधुअ अहरियं ।  
 तिन ठौर भयानक संचरियं ॥  
 बर पंच सु दीह ससी चढियं ।  
 बर बीर अवाज<sup>(१४)</sup> दिसं बढियं ॥ ११ ॥

(१) C अट्ट । (२) So C; D ती, A T त, B mo. (३) A तिहठौर, C तिहठौर, D तहठौर । (४) D reads असत्य for रसं अप; C reads ससी for रसं । (५) A से, C सै । (६) D बालु । (७) D रचै । (८) D reads तहां कच सनाहनि आय नचै; D reads तीहां कूरन सनह आय नचै । (९) So all MSS., but read *tahā*, m. c. (१०) A बसु, C वंसु, D वंसी । (११) D नं नं । (१२) D लीपं । (१३) C सहनायन, D सहनाय जू । (१४) अवाज = Persian آواز .

गाथा ॥

तं बीरं जल गंभीरं  
 आवत यो<sup>(१)</sup> उप्पट्टी सेनं ।  
 गोरी दिसि चहुआनं  
 चहुवानं गोरियं<sup>(२)</sup> साहि<sup>(३)</sup> ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥

इह<sup>(४)</sup> सु राज आतुर धरिय<sup>(५)</sup>  
 सुरतानह प्रथिराज ।  
 भूमि<sup>(६)</sup> भार कछु छंटयौ<sup>(७)</sup>  
 सो उत्तारन काज<sup>(८)</sup> ॥  
<sup>(९)</sup> सो उत्तारन काज  
 परे आतुर दोउ दीनह ।  
 तिन अर वस चर परे  
 को इन<sup>(१०)</sup> छंडै<sup>(११)</sup> मति हीनह<sup>(१२)</sup> ॥  
 अप्प न<sup>(१३)</sup> सुसिंघ बहुरे सुहर<sup>(१४)</sup>  
 चकई चक<sup>(१५)</sup> मुकै नही<sup>(१६)</sup> ।

---

(१) D डं । (२) MSS गोरीयं. c. m. (३) A साहियं । (४) C इम,  
 D इम । (५) C D धरिय । (६) D भोमी । (७) C वट्टयौ, D वंयौ om. ड ।  
 (८) D पार । (९) D omits this half-line, form सो to काज । (१०)  
 A इम । (११) B T छंडै । (१२) D हीन, om. च । (१३) C reads अन-  
 पन । (१४) C D सुरह । (१५) D चुक । (१६) D मुकै नहें ।

अप्य न सुहृथ्य भर वर<sup>(१)</sup> परै<sup>(२)</sup>  
दया न किज्जै मन इहो ॥ १३ ॥

दूहा ॥

चढत सिंध<sup>(३)</sup> सुरतान पुल<sup>(४)</sup>  
दूत सपत्ते आइ ।  
चर चरित्त चहुआन दल  
कहै साह सेां जाइ ॥ १४ ॥

कवित्त ॥

नहि न इंद्र प्रथिराज  
सोम नंदन सिवरं दिसि ।  
वर इंद्रह दीसै न  
महल मंड्यौ सु दुह्न निसि ॥  
जबही हम संचरे  
काल तबही दिसि<sup>(५)</sup> पासं ।  
परत बाह लष्यंत<sup>(६)</sup>  
दिष्ट देव न सुष वासं ॥  
(७)लच्छी न चीय बस बीर रस  
दह दिसि भिरि दानव मिलिय ।

---

(१) D reads भर परै for वर परै । (२) A पे for परै । (३) D सेंध ।  
(४) C दल । (५) D दीषी । (६) D लषन । (७) C reads ल० न ची० वसि  
बीर रसि; D has ल० न दीष वसी बीर रसि ।

मेलान कोस पर पंचकौ  
गौरी वै सन्हौ चलिय ॥ १५ ॥

दूहा ॥

(१) दूह अवाज चहुवान दल  
बंठि<sup>(२)</sup> सेन सु विहान ।  
काइर भर सह उच्चरै  
कहि बंधन सुरतान ॥ १६ ॥

कवित्त ॥

हाइ हाइ<sup>(३)</sup> कहि साहि  
चरनि<sup>(४)</sup> बरज्यौ सुविहानं ।  
झुज्झ रहै कौ जाइ<sup>(५)</sup>  
जु<sup>(६)</sup> कच्छु पतौ चहुआनं ॥  
बरन मेछ बर<sup>(७)</sup> हिंदु  
सुनत रन पन करि हेरिय<sup>(८)</sup> ।  
जय जानी अनचंप  
पंच चतुरंग सु भेरिय ॥  
भुअ बीररूप गोरी सुबर  
मुक्कि<sup>(९)</sup> भयानक नट्ट जिम<sup>(१०)</sup> ।

---

(१) D omits this *dúhá*. (२) C वंठि । (३) D हाय हाय । (४) C  
वरनि । (५) D जीय । (६) D जो । (७) D बीर । (८) A B T हेरी,  
c. r. (९) D मुंक । (१०) C किम ।



पलटयौ भेष देषत सयन

बर बज्जे नीसान तिम ॥ १७ ॥

चंद्रायना<sup>(१)</sup> ॥

बर बज्जिग नीसान दिसान पयान हुअ<sup>(२)</sup> ।

उड्डि उड्डंगिय रेन<sup>(३)</sup> सुमेरनि भान भय ॥

गेरौ वै भयौ राह रयनह रमि गई<sup>(४)</sup> ।

गज असवारन खर निव्रत सु लगई<sup>(५)</sup> ॥ १८ ॥

छंद गीतामालवी<sup>(६)</sup> ॥

(१) This metre also occurs in the 28th Canto (*Anangapāla*), 33d stanza; it consists of 21 instants to the line, with a pause after the 11th instant. It is divisible into  $6 \times 3 + iambus$  or *tribrachys*, and begins with a long, or two short syllables; it does not seem to be otherwise known; but possibly it is the same as the *Plavangamā* metre (see Colebrooke's Essays, Vol. II. p. 140, No. 34), which is said to be divisible into  $6 \times 3 + iambus$ , beginning with a long syllable. (२) D ह्य। (३) A रेन, C D रेनि। (४) C गई, D गइ। (५) C लगई, D लगइ। (६) A B T •मालवी, C •मालवी, D •माल। The metre of this stanza is a mixture of the *Gītā* and the *Mālavī* measures. Both have the same number of instants (*mātrās*) in the half-line, viz., 28; but in the former, which is a syllabic measure (*vṛitta chhanda*), they must be contained within a limited number of syllables, viz., 20; while in the latter, which is measured by the number of instants (*mātrā chhanda*), there is no such condition. The 20 syllables of the *Gītā* are distributed in 7 feet, viz., 1 *anapaest*, 2 *amphibrachs*, 1 *dactyl*, 1 *cretic*, 1 *anapaest*, 1 *iambus* (— — — | — — — | — — — | — — — | — — — | — — — | — — — | — — —). The 28 instants of the *Mālavī* are distributed in two portions of 16 and 12, which between them must contain 7 or 5 "double-instants" (or long syllables). Now, seeing that a rule, or rather license, of old Hindī prosody permits the substitution of 2 short



## गुर पंच सत्त ति<sup>(१)</sup> चामरे कवि

for one long syllable (see my paper in the Indian Antiquary, Vol. III, p. 107), it follows that the application of this rule at once turns a *Gítá* into a *Málaví* verse, provided that either seven or five of the eight long syllables of the former are preserved intact. This is what the Bard explains in the opening verse of the stanza; but he does not seem to have been understood by the copyists of his Epic; hence their variations and false readings *málatí* or *málachí*, for *málaví*. There are several *Málatí* measures, but they are all syllabic, and out of place in this connection. *Málachí* is not the name of any metre, so far as I know; it is clearly a mere lapse of the pen for *málaví*. As a matter of fact, it is only the last verse of the present stanza, the half-lines of which are in the *Gítá* measure. In all the rest, the *Gítá* is turned into the *Málaví*, by changing either one or three of its eight long syllables into the corresponding number (2 or 6) of short ones. The former is the general case; for among the remaining 9 verses of the stanza, there are 7 with 7 long syllables, and only one (the 4th) with 5. For the purpose of scanning it should be remembered that sometimes *o* must be read short (*mano* in half-lines 11, 12), at other times a diphthong is a mere *compendium scripturae* for two short vowels (*dhávai*, *so*, *dísai* in half-lines 8, 10, 13, for *dhávaï*, *saü*, *dísai*). Similarly in half-line 12 *bar-khata* must be read for *barakhata*, and in half-line 14 probably *girvara* for *giravara*. The 5th half-line, as the MSS. give it, does not scan; it is probably corrupt. The same metre occurs in the 27th Canto (*Revátata Prastáva*), 50th stanza, where, however, it is called *Danḍamálí*. In the footnote, it has been wrongly identified with the *Harigítá* or *Mahisharí* which it very closely resembles. The same metre also occurs in the 30th Canto (*Karṇāṭí pátra*), 19th stanza, under the same name *Gítámálaví* (MSS. *gítámálachí*), and with the same very curious modification traces of which are seen in the 1st verse of our present stanza, as read by the MSS. C and D. The half-lines of 28 instants, namely, are broken up into two halves of 14 instants each, and these resultant halves are made to rhyme with

(१) C सत्ति नौ ।

(१) जौ गन वग ति संधयौ ।  
 सब पाइ पिंगल<sup>(१)</sup> सावरे<sup>(२)</sup> लहु<sup>(३)</sup>  
 बरन अछिर<sup>(४)</sup> बंधयौ<sup>(५)</sup> ॥  
 लुगि गीत मालवि<sup>(६)</sup> छंद चंदय<sup>(७)</sup>  
 दवरि साहित<sup>(८)</sup> गोरियं ।  
 गज मद्द नद्दय<sup>(१०)</sup> छिरह<sup>(११)</sup> भद्दय  
 अन नि<sup>(९)</sup> दिन दिन जौरयं ॥  
 घन चढ्यौ<sup>(१२)</sup> गिरि जनु चले दिस दिस<sup>(१३)</sup>  
 बीय बग<sup>(१४)</sup> उरब्वरे<sup>(१५)</sup> ।  
 (१०) तिन देषि मन गति होत पंगुर<sup>(१६)</sup>  
 दान<sup>(१७)</sup> छुट्टि पटे भरे ॥

one another. Again the metre occurs in the 33rd Canto (*Indrāvatī*), 33rd stanza, in its proper form, but under the wrong name *mālatī*.

(१) D reads जौ मन । (२) D पेंगल । (३) C सांवरे, D सावरें । (४) C वड । (५) D अछर । (६) C D, misled by the apparent rhyme of चामरे, सावरे, transpose the various portions of the first verse, reading it thus :

गुण पंच सत्त ति चामरे ।  
 सब पाइ पिंगल सावरे ॥  
 कवि जौ गन वग ति संधयौ ।  
 लहु बरन अछिर बंधयौ ॥

(७) All MSS. मालति । (८) C चंदय, D बंदनायह । (९) B C D साहत, T सहित । (१०) T om. नद्द । (११) C विरह, D वीरह । (१२) C आननि, D अनन । (१३) D चढ्यौ । (१४) D om. one दिस । (१५) D बीग, after which बीय is repeated. (१६) D उरब्वरे । (१७) C reads दिन दोष वन गति होत, D दिन देषी मन गत होत । (१८) A पंगुर, (१९) D reads छुट्ट रे भट भरे, C B पडे ।

गजदंत कंतिय झलकि उज्जल  
 (१) पिषि पंतन<sup>(२)</sup> राइयं ।  
 रवि किरनि बहल पसरि<sup>(३)</sup> धावै  
 वाय पंकति साजियं<sup>(४)</sup> ॥  
 गज करत<sup>(५)</sup> दंत सुमंत ऊरध  
 चंद उप्पम मंडिकै<sup>(६)</sup> ।  
 मनो बग पंतिय वार उडुन<sup>(७)</sup>  
 मोह दिसि सो छंडिकै<sup>(८)</sup> ॥  
 धर<sup>(९)</sup> मत्त दंतिय सेन बंधिय  
 इब्भ<sup>(१०)</sup> छवि<sup>(१०)</sup> कवितामयं<sup>(११)</sup> ।  
 मनो मेघ बरषत विज्ज<sup>(१२)</sup> कोंधत<sup>(१३)</sup>  
 अब्भ बुठि<sup>(१४)</sup> गिरि स्यामयं<sup>(१५)</sup> ॥  
 गति नाग गिरवर गात दीसै<sup>(१६)</sup>  
 कूट कज्जल उज्जले<sup>(१७)</sup> ।  
 धर चलत गिरवर बरुन बारुन  
 स्याम बहल हल्लि<sup>(१८)</sup> चले<sup>(१९)</sup> ॥

(१) C reads पिषियं यन, D पंवी प्रथ राइयं । (२) B पंतन । (३) B सपरि । (४) A B T सज्जयं, D साजयं । (५) C भरत । (६) D मंडिके, B छंडिके । (७) C उडमन गोह, D उडवन गोह । (८) A घर । (९) A इब्भ, A T इप्भ, as usual. (१०) D थवी (कवी?) । (११) A दता, B T इता; read *kavitā-m-ayam*. (१२) वजि । (१३) D कुंडत । (१४) C अबुठि, T बुठि । (१५) D सामयं । (१६) D दीसे । (१७) D उज्जले । (१८) D om. (१९) C घले, D चले ।

झटकंत सुंड दिपंत पाइक  
 बनि समथ पसु<sup>(१)</sup> पुज्जवै<sup>(२)</sup> ।  
 (१)अति सेन सा परि कोन पुज्जै  
 (४)जोग जुगति सु लज्जवै<sup>(५)</sup> ॥  
 चय लष्प मीर ति साह गोरिय  
 भार झुज्ज अलुज्जवै ।  
 पुरसान षान अरक आरब  
 सज्जि सेन अबंझवै<sup>(६)</sup> ॥ १६ ॥  
 छंद भ्रमरावली<sup>(७)</sup> ॥  
 (८)सजे बर साह तुरंगम तुंग ।

(१) C पुच्छ । (२) A C ०वै, D वें । (३) B omits from अति सेन up to अलुज्जवै । (४) C reads जौन सुगति । (५) T पुज्जवै । (६) C सबंभवे, D अबंभवे । (७) This is the same curious metre as in the 26th Canto, 22nd stanza. What is commonly known as the *bhramarāvalī* is a syllabic measure, consisting of 5 *anapaests*. The *bramarāvalī* of Chand's Epic, on the contrary, consists of an alternation of two distinct syllabic measures, each consisting only of 4 feet; *viz.*, either 4 *anapaests* or 4 *amphibrachs*. The first is properly called *Troṭaka* or *Toṭaka*; the other, *Motídāma*. In our stanza, the first 4 lines are in the *Motídāma* measure, all the rest are in the *Troṭaka*. In the 22nd stanza of the 26th Canto, the first 28 lines are *Troṭakas*, the next 12 lines are *Motídāmas*, the next 2 lines are again *Troṭakas*, and the last 4 lines are again *Motídāmas*. Both the *Motídāma* and the *Troṭaka* are well-known to Chand, and often employed by him separately; thus *Motídāma* in Canto 27, 63; 32, 27; 33, 28; 31, 23 *et passim*; *Troṭaka* in Canto 28, 68; 29, 15; 31, 5, 9, 19 *et passim*. (८) C सने, D सजे ।

लजै<sup>(१)</sup> कवि चंद उपम कुरंग ॥  
 सितं सित चौर गुरै गजगाइ ।  
 तिनं उपमा बरनी न न जाइ<sup>(२)</sup> ॥  
 जु सजे हय गोरिय साहि घरे ।  
 तिन देषि<sup>(३)</sup> रवी रथ के बिसरे ॥  
 दिषि सेन तिनं उपमा सु करो ।  
 सु मनो नदि पूर छिली<sup>(४)</sup> दुसरी ॥  
 कहि<sup>(५)</sup> चंद कविंद इदं कवितं ।  
 गुरुबं<sup>(६)</sup> कपि षं मनकै चढतं<sup>(७)</sup> ॥  
 बजि बाज<sup>(८)</sup> कुहू धर सह<sup>(९)</sup> घुरं ।  
 सु मनो कठ<sup>(१०)</sup> तार बजंत तुरं ॥  
 गजगाह गुरं सित<sup>(११)</sup> सोभ घगे ।  
 मनो सोत के<sup>(१२)</sup> जरन<sup>(१३)</sup> भान उगे ॥  
 नभ के<sup>(१४)</sup> तिमरं<sup>(१५)</sup> जित<sup>(१६)</sup> के समरं<sup>(१७)</sup> ।  
 मनु<sup>(१८)</sup> उट्टि किरनं<sup>(१९)</sup> सु<sup>(२०)</sup> पाल<sup>(२१)</sup> परं ॥  
 बिय आपम चंद बनी बनि कै ।

(१) D लजें । (२) D जाइ । (३) B देष, D देषत । (४) C छिली ।  
 (५) D कवी । (६) C D गुरुवं । (७) C चढितं, D चढतं । (८) B बाजि,  
 T बज्जि । (९) C शब्द । (१०) B कठ । (११) D सोन घमें । (१२) C  
 कै, D के । (१३) D जरन, c. m. (१४) C तिमिरं । (१५) B जिन, C  
 जिति, D जीत । (१६) B सिमरं । (१७) B C D मनो । (१८) C करनं ।  
 (१९) B पु । (२०) D माल ।

सुध सै<sup>(१)</sup> मनु गंग तरंगनि कै<sup>(२)</sup> ॥  
 जग हृथ्य बने हयके सिरयं ।  
 (१) गलि प्रब्वत हेम द्रुमं बरयं ॥  
 बर पष्यर सोभ करै तनयं ।  
 मनु अर्क अरक<sup>(३)</sup> बिचै घनयं ॥  
 तिनकी हरवाय फुलिंग<sup>(४)</sup> सजै ।  
 सु कहै कवि चंद कुरंग लजै ॥  
 बहुरै न न आसन जी डरयं ।  
 मन मत्त मनो<sup>(५)</sup> बहुरे बरयं<sup>(६)</sup> ॥  
 मन गति तिहां इत<sup>(७)</sup> अत्ति पढी ।  
 हय नष्यत राग न सास कढी ॥  
 बिय बाय अरक न बंध चढै ।  
 कवि चंद पवन न बाद बढै ॥  
 सु उडै न न धावत धूरि पुरं ।  
 गति मान सुसील<sup>(८)</sup> बिसाल उरं ॥  
 पय मंझत<sup>(९)</sup> अश्वत आतुरयं ।  
 बिरचे नच पातुर आतुरयं<sup>(१०)</sup> ॥

(१) B D T सैं । (२) A reads मनु रंगतरंगनि कनि कै । (३) D omits this and the following lines. (४) B अर्क । (५) D फुलेंग ।  
 (६) D मांनुं । (७) C D वनयं । (८) C D यत । (९) D मानससौल ।  
 (१०) C मंझित, D मंझत । (११) C transposes आतुर पातुरयं ।



दुहु<sup>(१)</sup> पार<sup>(२)</sup> अपार अवड घरी ।  
 मनु गावहि इंदनि<sup>(३)</sup> बंध धरी ॥  
 हय अपिय भतन<sup>(४)</sup> साहि बरं ।  
 जु गहौ<sup>(५)</sup> चहुआन पयाल पुरं<sup>(६)</sup> ॥ २० ॥

दूहा ॥

सबें सेन गोरी सुबर  
 चढिग घान जमसोज ।  
 प्रात सेन चतुरंग सजि  
 उडि घान नवरोज ॥ २१ ॥

चौपाई<sup>(७)</sup> ॥

ढलमिलि ढाल चिहुदिसि बनाई<sup>(८)</sup> ।  
 डंमरि<sup>(९)</sup> उडि आकाश<sup>(१०)</sup> छाई<sup>(११)</sup> ॥  
 चरन अचरन<sup>(१२)</sup> गोरीस साई<sup>(१३)</sup> ।  
 सेन चुआन<sup>(१४)</sup> हय्यें बनाई<sup>(१५)</sup> ॥ २२ ॥

(१) D दोहं । (२) C D read अपार आवड घरी । (३) So D; C इंदनि, A B T इंदुन । (४) C आतन । (५) C वहै, D वहे । (६) B परं । (७) The *chaupái* of this stanza, and of the 24th stanza, as given in all MSS, does not scan, having 17 instants instead of 16. (८) All MSS ढलमिली c. m. (९) C वनाइ, D वनावी । (१०) All MSS डंमरी c. m. (११) C आकास, D आकासें । (१२) D छाइ । (१३) All MSS आचरन; á to be read short, m. c. (१४) C साइ, D साईं । (१५) All MSS चहुआन, c. m. (१६) D वनाइ ।

दूहा ॥

समरस उप्पर समर किय

चावहिसि अरुनगा ।

मुष गोरौ चहुआन भिरि<sup>(१)</sup>

(२) ज्यों<sup>(३)</sup> रावन लगि अगा ॥ २३ ॥

चौपाई ॥

(४) समझौ<sup>(५)</sup> रन चहुआन सपडिय<sup>(६)</sup> ।

बज्जिग वाय (७) सुजिझ न न दिाडिय ॥

धुंधर अब्भ बहर<sup>(८)</sup> निसि भहौ<sup>(९)</sup> ।

सुजिझ न अंघि कन्न<sup>(१०)</sup> सुनि नहौ<sup>(११)</sup> ॥ २४ ॥

कवित्त ॥

अड्ड अड्ड<sup>(१२)</sup> जोगिनिय

सुक्र सन्हौ<sup>(१३)</sup> सुरितानं ।

दिसाखल दिसि वाम<sup>(१४)</sup>

बैर कह्हा<sup>(१५)</sup> चहुआनं ॥

सिंघ<sup>(१६)</sup> वाम भैरवी

(१) D भर । (२) C omits this line. (३) D जूं । (४) C omits this line, except सपडिय । (५) D समयौ । (६) So C; B T सपड्यौ, D सपड्यौ, A सपड्यौ, c. m. (७) C reads सुभिल नदि उडिय; D शुभिनं नंद उड्यौ । (८) C बहल । (९) D reads धुंधर अब्भ बरनि भद । (१०) C क्रंन । (११) D नंदं, T नहौं । (१२) C अड्ड । (१३) D समौ । (१४) A वानं । (१५) D कन्या । (१६) D संघ ।



गहक<sup>(१)</sup> बाली गोरी दिसि ।  
 गुर पंचम रवि नवां<sup>(२)</sup>  
 राह ग्यारमो सुरंग ससि ॥  
 ईसान मध्य<sup>(३)</sup> देवी पहकि<sup>(४)</sup>  
 गह कमज्झ<sup>(५)</sup> घूघू बहक ।  
 आकाश मझि गज्यौ गयन  
 परी बूंद<sup>(६)</sup> बेवं गहक ॥ २५ ॥

दूहा ॥

ज्यौं<sup>(७)</sup> जगदीसह कान दै  
 तकसीर<sup>(८)</sup> न<sup>(९)</sup> किहु<sup>(१०)</sup> कीन ।  
 मिलि उत्तर पछिम हुतें  
 भिरन भरन दोउ दीन ॥ २६ ॥

छंद भुजंगी ॥

परे धाड़ दोइ<sup>(११)</sup> दीन हीनं न जुडें ।  
 मुषं<sup>(१२)</sup> मार मारं तिनं मान सडें ॥  
 परी आवधं होड बज्जै निसानं ।  
 बजे हक खरं दमामे न जानं ॥

(१) C गहिक, D गहकी । (२) D नवौ । (३) C मझि । (४) D पहिक ।  
 (५) C कमम । (६) C कंद । (७) C reads जगदीस सु कान दै, D जगदीस र  
 कान दै । (८) तकसीर = Arabic تقصير (९) A नि । (१०) C कडं, D  
 नहं । (११) C दो om. इ; doi must be read dui, or with short o;  
 and the two shorts of doi stand for one long. (१२) D मषे ।

बढै आवधं<sup>(१)</sup> हथ्य सामंत खरं ।  
 घुरै वे निसानं बजै जैत पूरं<sup>(२)</sup> ॥  
 कटे<sup>(३)</sup> वे सनाहं<sup>(४)</sup> झनके उनंगी ।  
 मनो आवधं हथ्य बज्जै चिनंगी<sup>(५)</sup> ॥  
 परै पीलवानं मदं सरक<sup>(६)</sup> दंती ।  
 ढली ढाल ढालं ढलकं तुरंती ॥  
 फुरै हथ्य जनं मुरकी उरकी ।  
 मुरै धार धारं सुधारं<sup>(७)</sup> मुरकी ॥  
 तुटै सिप्परं<sup>(८)</sup> कोर फूलै समंती ।  
 ग्रस्यौ राह खरं छुटै नब्भ हुंती ॥  
 परै सार तीरं छनकंत बज्जै ।  
<sup>(९)</sup>सदं तीतरं जेम सेां पंछि<sup>(१०)</sup> गज्जै ॥  
 बढै सोर<sup>(११)</sup> गोरीय छेदै<sup>(१२)</sup> सभानं ।  
 भगै<sup>(१३)</sup> पंछिनी<sup>(१४)</sup> पंति<sup>(१५)</sup> पावै न जानं ॥  
 तुटै सीस जुज्झै कमंधं त नचै ।  
 चलै रुद्धि धारं चिह्नं पास गच्छै ॥  
 धरा भारती<sup>(१६)</sup> गंग पारथ्य आई<sup>(१७)</sup> ।

(१) D आवधे । (२) C खरं, D शूरं । (३) D कटे । (४) D सनाहं ।  
 (५) C चिनंगी । (६) C मर्क, D मरक । (७) D सुधीरं । (८) D सीरपरं ।  
 (९) A om. this line. (१०) C D पंष । (११) C खर । (१२) A छेदै,  
 D छेदै । (१३) D भगै । (१४) D पंछिनी । (१५) D पांती । (१६) D  
 भारथी । (१७) B D आई c. m.

मनो उपट्टि<sup>(१)</sup> सेां सिंध को<sup>(२)</sup> मिलन<sup>(३)</sup> धाई<sup>(४)</sup> ॥

फुटी<sup>(५)</sup> वारि धारं चली<sup>(६)</sup> ईस सीसं ।

लगे धार धारं रजं रज्ज कीसं ॥

मनो तप्त<sup>(७)</sup> लोही परे बूंद पानी ।

हुंढी<sup>(८)</sup> लुथ्थि<sup>(९)</sup> पावै न नहो वहानी<sup>(१०)</sup> ॥

मनं<sup>(११)</sup> मोद लै सो समुद्राह कीनी ।

(१२) उठे ऊर्ध्व सीसं उपमा समूलं ॥

मनों पावकं प्रलय<sup>(१३)</sup> किधों ओन लल्लं ।

दोज<sup>(१४)</sup> दीन धार मनं<sup>(१५)</sup> कोपि रीसं ॥

तिनं क्रोध करि धार<sup>(१६)</sup> आकास सीसं ।

परें लुथ्थि<sup>(१७)</sup> लुथ्थी अलुथ्थी जबै वै<sup>(१८)</sup> ॥

इसौ जुझ देष्यौ न दानव देवै<sup>(१९)</sup> ॥ २७ ॥

कवित्त ॥

चतिय पहर<sup>(२०)</sup> पर पहर<sup>(२१)</sup>

बीर घरियार ठनंकिय ।

(१) D उपट्टें । (२) D कू । (३) C मिलन । (४) D धाई । (५) A फुटी । (६) D चली । (७) C D तप्त । (८) C हुंढी, D दुल्ले । (९) D लोथ । (१०) D वीहानी । (११) D मानं । (१२) D reads उठ अर्ध । (१३) C प्रलयं, D प्रलयं, both c. m.; read *pralaya* as — ॐ, and *kidhō* as ॐ ॐ for — । (१४) Real *doū* with short o. (१५) C मनै । (१६) C धारि । (१७) C लोथि, D लोथ । (१८) A जबै वै, B जबै वै, C D जबै वै, T जबै वै । (१९) C D देवं । (२०) C प्रहर । (२१) D पहर ।

गोरी वै<sup>(१)</sup> सो हय्य  
 चंपि चहुआन सु तक्किय<sup>(२)</sup> ॥  
 घरिय इक्क बनि सेन  
 स्वर सामंत परषिय<sup>(३)</sup> ।  
 धरि आडनं करि बग्ग  
 बैर सु बिहान<sup>(४)</sup> घरकिय ॥  
 करबार<sup>(५)</sup> धारि सिप्पर<sup>(६)</sup> करह  
 एक होइ उप्पर परै<sup>(७)</sup> ।  
 दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह  
 उसरि सेन सम्हौ भिरै<sup>(८)</sup> ॥ २८ ॥  
 षिझि नंष्यौ है<sup>(९)</sup> नरिंद  
 भूमि धुज्जिय<sup>(१०)</sup> घुर तारं ।  
 मनो बहर गरजंत<sup>(११)</sup>  
 सह पर सह पहारं<sup>(१२)</sup> ॥  
 उड्डिय नाल चमंकि  
 (१३)मंझ धुंधर छबि लगिाय ।

(१) D वै । (२) D हंकीय । (३) D परीषद । (४) C विहीन । (५)  
 C करवारि, D तरवार । (६) C सिप्पर, D सौपर । (७) So after C D  
 which have एक होय उप्पर परै ; A reads एक होइ सिप्पर परै, but B T  
 read एक होइ सि उप्पर परै । (८) D समो भरे । (९) C छु for है ; D हैं ।  
 (१०) C D धूजिय । (११) C D गज्जेत । (१२) D पहार । (१३) D reads  
 मच्छं धुरं धर यवी लगौय, A मंझ धुंधरय विलगिाय ।

रवि आपम कवि चंद  
 चंद मावस घन उगिाय ॥  
 अरि सेन भग्नि दिसि बिडुरिय  
 परे<sup>(१)</sup> मध्य सेना घनिय<sup>(२)</sup> ।  
 धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ  
 इह<sup>(३)</sup> अरि तें तिन बर गनिय ॥ २६ ॥  
 इत्त घान मारुफ  
 फिरत उसमान घान ढहि ।  
 इन दुज्जन हय नंघि  
 वाग आजानबाह गहि ॥  
 इते दीह अथ्यम्यौ  
 स्वर बर सिंधु<sup>(४)</sup> सपन्नौ<sup>(५)</sup> ।  
 मुकत<sup>(६)</sup> तट्ट<sup>(७)</sup> मिलि स्वर  
 स्याम<sup>(८)</sup> रन अण्य अपन्नौ<sup>(९)</sup> ॥  
 सांषला स्वर सारंग ढहि  
 जुरि जुवान पंचा इनौ ।  
 केहरी गौर अजमेर पति  
 परगौ झुजिझ रन भाइनौ<sup>(१०)</sup> ॥ ३० ॥

(१) B परी । (२) C घनिय । (३) C इहि, D एह । (४) D सेंध ।  
 (५) A C सपन्नौ । (६) D मुंकत । (७) D तटि । (८) D स्याम । (९) C  
 अपन्नौ । (१०) C भायनौ ।

दूहा ॥

निसि घट्टिय फट्टिय<sup>(१)</sup> तिमिर<sup>(२)</sup>

दिसि रत्ती धवलाइ ।

<sup>(१)</sup>सैसव में जुव्वन कछू

तुच्छ तुच्छ<sup>(३)</sup> दरसाइ ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥

जाम निसा पाछली

सेन सज्जिय दोउ<sup>(४)</sup> बीरं ।

सामंतां चहुआन

आनि गोरी कछि मीरं ॥

भान पयान न भयौ<sup>(५)</sup>

करे द्रिग रत्तह चड्डिय ।

ता पहिलै<sup>(६)</sup> पायान

जाध रन असुरन<sup>(७)</sup> कड्डिय ॥

अदि हार बीर गोरी सुबर

चाहुआन दिन सु दिन घन ।

करतार हथ्य किन्ती<sup>(८)</sup> कला

लरन मरन तकसीर न न ॥ ३२ ॥

---

(१) D कट्टिय । (२) D तौमर; B T ति तिमर । (३) C reads सैस मे जुध ज कछ । (४) C तुच्छ *bis*. (५) B D दोऊ, read short o. (६) D भण्यौ । (७) D पेहले । (८) D अशुरनह । (९) D कैती ।

छंद भुजंग<sup>(१)</sup> प्रयात<sup>(२)</sup> ॥

परगौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी<sup>(३)</sup> ।

चपी<sup>(४)</sup> राज सेना क्रमं पंच भाजी ॥

तहां बाहुरगौ<sup>(५)</sup> बीर बीरं नरिंदं ।

लग्यौ धार धारं सची<sup>(६)</sup> कित्ति चंदं ॥

अनी एकमेकं<sup>(७)</sup> घरी अड्ड पच्छी<sup>(८)</sup> ।

फटी सेन गोरी मुरी<sup>(९)</sup> सो तिरच्छी ॥

दोज<sup>(१०)</sup> दीन बाहै दोज<sup>(१०)</sup> हथ्य लोहं ।

परगौ जानि वाराह पारडि रोहं ॥

कटे कंध बंधं कमंधं निनारे ।

मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे ॥

न नं अश्व<sup>(११)</sup> चलै चलै हथ्य रोजं ।

न नं चित्त चलै<sup>(१२)</sup> रवी रत्य दोजं ॥

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं<sup>(१३)</sup> ।

तिनंकी उपमा कवी चंद गाहं ॥

ग्रहं पत्ति अगैं रहै ज्यौं कुलटं ।

चिनं वृत्ति चलै अगै स्वामि घटं ॥

(१) A C भुजंगी, D भूयंगी । (२) C D om. (३) D माझी । (४) C घपि, D चपि or घपि ? । (५) C बाहुल्यौ । (६) So D T; A संची, B सचं, C सिची । (७) Read *eka m-ekam*. (८) C अची । (९) D reads सोइ अची । (१०) Read *doú* with short *o*. (११) D अश्व । (१२) D om. from रवी up to अगै in the last line of this page. (१३) C • राहं ।

बरं कज्ज माला ग्रही<sup>(१)</sup> रंभ सत्यं ।  
 चढै धार धारं भिदै<sup>(२)</sup> रब्बि रत्यं ॥  
 रही<sup>(३)</sup> रंभ रंभी टगं टग्ग आई ।  
 मनो पुत्तली कट्टकर<sup>(४)</sup> सी लगार्इ ॥  
 हहंकार बीरं हहंकार पाई ।  
 मनो पातुरं चातुरं सो<sup>(५)</sup> दिषार्इ ॥  
 दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं<sup>(६)</sup> ।  
 मनो डिंभरू<sup>(७)</sup> जानि हड्डु डेलं ॥  
 तजे आवधं सब्ब इक्क<sup>(८)</sup> तेग साहं ।  
 करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं ॥  
 जबै बिडुरी<sup>(९)</sup> सेन गोरी नरिंदं ।  
 दिषै थान थानं मनो प्रात चंदं ॥  
 परे षान चौसठि दुहु<sup>(१०)</sup> बाहु<sup>(११)</sup> राई ।  
 दुहुं मुक्कती<sup>(१०)</sup> रास<sup>(११)</sup> कवि<sup>(१२)</sup> कित्ति<sup>(१२)</sup> गार्इ<sup>(१३)</sup>  
 ॥ ३३ ॥

दूहा ॥

परत साहि गोरी सुधर  
 है गै भूमि<sup>(१४)</sup> भयान ।

(१) D रही । (२) D भिदि । (३) D रेही । (४) Two shorts for one long. (५) D सै । (६) B डेलं, D डेलं । (७) B T डिंभरू, D डीमरू । (८) A बिडुरी । (९) C D बाह । (१०) C मुक्कली । (११) This is the word from which Chand's Epic, the *Prithirāj Rāsau* or *Rās* takes its name. (१२) C D transpose कित्ति कवि । (१३) B गार्ही । (१४) D भौस ।



रन रुंध्यौ सुरतान कैां

परी बींठि चहुआन ॥ ३४ ॥

छंद भुजंगी<sup>(१)</sup> ॥

परी बींठ गोरी मुरे मीर षानं ।

तबैं साहि गोरी गह्यो<sup>(२)</sup> कोपि बानं ॥

न को कंध कड्डै<sup>(३)</sup> चह्लवान तिनं<sup>(४)</sup> ।

परगौ धाड़<sup>(५)</sup> पावार भर<sup>(६)</sup> सलष<sup>(६)</sup> दिनं<sup>(४)</sup> ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ ।

तहां<sup>(७)</sup> मीर मारुफ अगगैं गुरायौ ॥

घरी अड्ड झुझ्यौ करी छच धारं ।

बहै सब्ब सामंत विचि<sup>(६)</sup> तैान धारं ॥

तुटै आवधं सब्ब<sup>(६)</sup> अरिहत्य लाजी ।

<sup>(८)</sup>तबै आइ सीसं<sup>(९)</sup> गुरं गुरज<sup>(६)</sup> बाजी ॥

गजं<sup>(१०)</sup> गहन<sup>(६)</sup> प्राहार निट्टे ठहायौ ।

तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ ॥ ३५ ॥

कवित्त<sup>(११)</sup> ॥

<sup>(१२)</sup>गहि गोरी सु विहान

हत्य अप्पौ चहुआनं ।

(१) D भुजंगी; C omits this stanza. (२) D ग्रह्यौ । (३) A कड्डै ।

(४) D तीनं, दीनं । (५) D धाव । (६) Two shorts for one long.

(७) D तिहां । (८) D reads तबै आइ सीसं गुरं जंत बाजी । (९) A सीसं ।

(१०) A गुजं । (११) C omits the two first lines of this stanza.

(१२) D reads ग० गो० पमार ।

चामर छत्त रषत्त<sup>(१)</sup>  
 तषत लुट्टे सुरतानं ॥  
 गोरी वै<sup>(२)</sup> हुस्सेन  
 बीर षुट्टे<sup>(३)</sup> आहुट्टिय ।  
 मानतुंग<sup>(४)</sup> चहुवान  
 साहि मुष के बल षुट्टिय<sup>(५)</sup> ॥  
 मध्यान भान प्रथिराज तप  
 बर समूह दिन दिन चढै<sup>(६)</sup> ।  
 जस जेतिमंत संभरि धनिय  
 चंद बीज जिम बर बढै ॥ ३६ ॥

इति श्री कवि चंद बिरचिते प्रथिराज रासा के<sup>(७)</sup>  
 राजा<sup>(८)</sup> आखेटक मध्ये गोरी<sup>(९)</sup> पातसाह<sup>(८)</sup> आग-  
 मन<sup>(८)</sup> जैतराइ<sup>(९)</sup> पातिसाहि बंधन<sup>(१०)</sup> नाम चौती-  
 समो<sup>(११)</sup> प्रस्ताव समाप्तः<sup>(१२)</sup> ॥ ३४ ॥

(१) D रषंत । (२) C inserts च after वै । (३) C D तुट्टे । (४) B मांगतुंग । (५) A षुट्टिय । (६) C D बढै । (७) B रासके, C रायसे, D रासे; after it A inserts गुल चंद वरदाई क्रत, B चंद बिरदाइ क्रत । (८) C D om. (९) C D जैतराव । (१०) C D ग्रहन । (११) B बतीसमो, T वेतिसमो, C D om. (१२) A C om; B adds संपूर्णम् ।

॥३५॥ अथ<sup>(१)</sup> कांगुरा जुड प्रस्ताव लिख्यते ॥३५॥



कवित्त ॥

कितक<sup>(२)</sup> दिवसनि समात<sup>(३)</sup>

आइ जालंधर रानी ।

कहै राज सेां<sup>(४)</sup> वचन

हँ सु कांगुर द्रुग जानी ॥

तो तुट्टी<sup>(५)</sup> कर पान

लेह में वाचा दषिय ।

भोट<sup>(६)</sup> भान धुर जीति

पल्ल पच्छै फिरि अषिय ॥

हम्मीर भोर अगैं करै

दल भज्जै<sup>(७)</sup> मति सत्ति<sup>(८)</sup> करि ।

बरनी सुलच्छ<sup>(९)</sup> लच्छी सहज

परनि<sup>(१०)</sup> राज आवहु<sup>(११)</sup> सुघर ॥ १ ॥

---

(१) D reads अथा राजा कांगुरे पांनी ग्रहण कथा लख्यते, and the Index of D has राजा कांगुरे प्रांनी ग्रहन हमीर बेन परणणं समैयो । C reads अथ कांगुरा राय जड प्रस्ताव । (२) D केतेक । (३) Or divide दिवस निस मात । (४) C खं । (५) D T तुट्टी । (६) D भोट । (७) C D भग्गे । (८) C सत्ति । (९) C सुलच्छि लच्छी । (१०) D पनी । (११) D आवहु ।

दूहा ॥

चलिय<sup>(१)</sup> राज कंगुर दिसा<sup>(२)</sup>  
 दियौ भोट<sup>(३)</sup> फुरमान<sup>(४)</sup> ।  
 कै आवै हम सेव पय<sup>(५)</sup>  
 कै जितौं<sup>(६)</sup> नृप भान ॥ २ ॥

कवित्त ॥

तब सुनि भान नरिंद  
<sup>(७)</sup>सबद<sup>(८)</sup> उब्भार<sup>(९)</sup> अतुर बर ।  
 रे जंगली<sup>(१०)</sup> जुवान  
 मोहि पुज्जै<sup>(११)</sup> अप्पन बर ॥  
 जौ षजूआ<sup>(१२)</sup> अतितेज<sup>(१३)</sup>  
 तोइ का<sup>(१४)</sup> दिनयर<sup>(१५)</sup> लोपै ।  
 जोइ चना अतिसूर<sup>(१६)</sup>  
 तोइ का भाठी कोपै ॥  
 हुं नीति जानि अंनित<sup>(१७)</sup> न करि  
 तूं लोभी आतुर अतुर ।  
 इन बात तोहि<sup>(१८)</sup> आगै अवनि  
 आई फुनि<sup>(१९)</sup> जैहै सुतुर ॥ ३ ॥

(१) D लिलयं । (२) C om. (३) C D भाट । (४) Persian فرمان  
 "mandate." (५) C पय । (६) D जीतौ । (७) D reads सब उभारी यतुर  
 बर । (८) B सबर । (९) C उब्भार । (१०) D लंगली । (११) D पूज्ये ।  
 (१२) C षदुआ, D षजुआ, Skr. खद्योत "firefly." (१३) D यतितेज ।  
 (१४) D कांइ । (१५) A prākṛit form for दिनकर । (१६) B om.  
 (१७) D अनीत । (१८) D मोह । (१९) C पनि ।

दूहा ॥

सुनि रु<sup>(१)</sup> दूत पच्छौ फिरगौ  
कही राज सेां बत्त ।  
तमकि तेन लीनो न्वपति  
मनो सुजोधन पत्थ ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

चढिग<sup>(२)</sup> राज प्रथिराज  
सत्थ सामंत सूर भर ।  
है गै<sup>(३)</sup> रथ चतुरंग  
गेरि जंबूर नारि सर ॥  
क्लूंच क्लूंच अरि भान  
आइ अड्डो<sup>(४)</sup> षग बज्यौ ।  
जनु कि मेघ में वीज  
तमकि तातौ हाइ रज्यौ<sup>(५)</sup> ॥  
आवृत्त झरत झरत परत  
<sup>(६)</sup>ओन धार धर पैर चलि ।  
इत उत्त<sup>(७)</sup> सूर देषै<sup>(८)</sup> लरत  
घरी पंच रवि रथनि<sup>(९)</sup> हलि ॥ ५ ॥

---

(१) So D; A B C T रु, c. m. (२) D चढी गज । (३) C D हय  
गय । (४) D आड्डो । (५) C बज्यौ । (६) D reads औत धार धरय हर  
चल । (७) C उत्तर । (८) C D देलै । (९) C D रथन ।

दूहा ॥

भिरत भान अतिछोह करि<sup>(१)</sup>  
जन जन<sup>(२)</sup> मुष मुष जानि ।  
<sup>(३)</sup>घोर बिछुट्टी दामिनी  
सब चकचौंधिय<sup>(४)</sup> आनि ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

षग बाहिय भिरि भान  
अरिन अडर धर किनौ ।  
जय जय<sup>(५)</sup> मुष उच्चार  
सीस उम्मापति लिनौ ॥  
रिज्झ<sup>(६)</sup> रु लिग उत्तमंग  
अमिय विष जंग सु ढरयौ ।  
ठंडौ मंडिअ संध<sup>(७)</sup>  
नहि भौ अंग जु परयौ ॥  
वीभच्छ भयानक भय उमा  
रुद्र रुद्र सुष हास हुअ<sup>(८)</sup> ।  
सिंगार बीर अच्छर बरन  
नव रस सुनहि नरिंद दुअ<sup>(९)</sup> ॥ ७ ॥

(१) C om. (२) D जीन जीन (probably for जिन जिन) । (३) A B D T prefix मनु which exceeds the metre, but is to be understood ; C, to suit the metre, reads मनु रि बिछुट्टी दामिनी । (४) C चकचौंधी, D चकचूंधी । (५) C जै जै । (६) C रौमि । (७) C संधि, D सेंध । (८) D हय, दूय ; A T read दुअ ।

दूहा ॥

सम<sup>(१)</sup> भिलाष गंधर्व हुअ  
 नारद तुंवर<sup>(२)</sup> गान ।  
 संकर कलकिंचित भयौ  
 चाहुआन प्रामान<sup>(३)</sup> ॥ ८ ॥

कवित्त ॥

जीति समर भिरि भान  
 परी अरि मगा अरिष्टह ।  
 रन मुक्कि न ग्रह गइय<sup>(४)</sup>  
 वरत<sup>(५)</sup> अच्छरि न न<sup>(६)</sup> दिड्डह<sup>(७)</sup> ॥  
 कहुं न<sup>(८)</sup> मंस कहु अंस  
 हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ।  
 ब्रह्मथान<sup>(९)</sup> सिवथान  
 थान देषीय न जम जह ॥  
 दीयौ<sup>(१०)</sup> न अगनि रवि भेद ननि<sup>(११)</sup>  
 तत्व जाति जोतिह मिल्यौ ।  
 इह देष<sup>(१२)</sup> चरित प्रथिराज नें  
 कवित एह जुग जुग चलयौ ॥ ९ ॥

(१) T सम । (२) A तुमर, B D तुंवर, T तुंमर । (३) C D अप्रामान ।  
 (४) A C T गर्इय c. m. (५) D वरन । (६) T ननि । (७) C दिड्डय ।  
 (८) So D; A B C T त । (९) D ब्रह्म० । (१०) A B T दीयौ, c. m.  
 (११) C D नन । (१२) So D; A B C T दोष ।

इह<sup>(१)</sup> परंत चहुआन<sup>(२)</sup>  
 मोष लभ्यौ सु रथं रवि ।  
 दिन पूरन पुनि भयौ  
<sup>(३)</sup>मिटै झंकुरत भान छवि ॥  
<sup>(४)</sup>दिन पूरन पुनि भयौ  
 हरह भग्नी उत्कंठं ।  
 भग्नि मनोरथ रंभ  
 ब्रह्म भग्नी चित गंठं ॥  
<sup>(५)</sup>झल हलत नीर काइर मुषन  
 प्रलय सुभर रन<sup>(६)</sup> रत्त रह<sup>(७)</sup> ।  
 दिनपति पतं न सह तप्प तन  
 भान भान <sup>(८)</sup>भेदं न तह ॥ १० ॥  
 तब कांगुर पाह्लन<sup>(९)</sup>

(१) D रह । (२) D चहुआन । (३) D omits this line. (४) This is the reading of C and D; but A B T read :

दिन पूरन पुनि भयौ  
 हरह भग्नी उत्कंठ  
 भग्नि मनोरथ रंभती  
 चतुरानन भग्नि चेत  
 ठारि रथ मग्ग सुग्गती ॥  
 भल हलत, etc.

Here one line is too much, and the whole does not easily scan. In meaning, the two versions do not much differ. (५) C झलहत, D झहत । (६) A B T नभ । (७) C जह । (८) A B T भेदंत नह । (९) D पाह्लन ।



चित्त चिंता उष्यन्ती ।  
 सुनि भोटी भर<sup>(१)</sup> मरन  
 सरन कोइ सुदि न मन्नी ॥  
 निसि अंतर करि ध्यान  
 मात कांगुर आराधी ।  
 सो आई<sup>(२)</sup> न्वप सुपन<sup>(३)</sup>  
 कहै सुनि बात अगाधी ॥  
 मो भति अनेक जानै न कौ  
 मो सेवा को परिलहै ।  
 भावी बिगति हो<sup>(४)</sup> प्रकृति<sup>(५)</sup> हैं  
 तो प्रधान झूठह<sup>(६)</sup> कहै ॥ ११ ॥  
 चौपाई ॥  
 वचनह मात कहो<sup>(७)</sup> समझाइय ।  
 निसि पलभ्रमित<sup>(८)</sup> गमत वरु आइय ॥  
 भोटी न्वप कन्हा<sup>(१०)</sup> पै आइय ।  
 (११) काली कन्हा<sup>(१०)</sup> कि हंकि जगाइय ॥ १२ ॥  
 तब कन्हा<sup>(१०)</sup> परधान बुलाइय ।

(१) D भर मम नर । (२) C आये, D आइ । (३) B रूपन, T सुन ।  
 (४) C ऊं, D हं । (५) C प्रकृति । (६) C झूठह । (७) A B T वचन,  
 om. ह, c. m. (८) D inserts समझी after कहो । (९) C D गमन वर ।  
 (१०) D कन्या । (११) D omits this and the following two lines,  
 up to *sunāiyya*.

मात<sup>(१)</sup> वचन की जुगति सुनाइय ॥  
दिल्लीपति दल लै चढि आइय ।  
करौ सुमति जिहि होइ भलाइय ॥ १३ ॥

अरिस्त ॥

(१) का चिंता सुविहानं ।  
कन्ह<sup>(२)</sup> होइ जा कै परधानं ॥  
स्वामि वचन किनौ<sup>(३)</sup> परमानं ।  
लरि भजौ दुज्जन चहुआनं ॥ १४ ॥

कवित्त ॥

सो सुपनंतर राज  
रैन दिठौ<sup>(४)</sup> सु कछौ रचि ।  
बर बंसी ससिपाल  
पल्ल आयौ सुसेन सचि<sup>(५)</sup> ॥  
लष्य एक असवार  
लष्य दह<sup>(६)</sup> पाइल<sup>(७)</sup> भारी ।  
अप्य सेन उपरें  
जुगं जुग गहि उचारी ॥

---

(१) C मौत । (२) This line is short by four instants, in all MSS. (३) D कन्य; C add र after it. (४) C कीठे । (५) D दीनै ।  
(६) So C; D श्रुचि, A B T संचि, the same as सचि । (७) B दल ।  
(८) D पालय ।

घरि<sup>(१)</sup> अड<sup>(२)</sup> अड अप सेन मुरि  
पच्छ<sup>(३)</sup> उररि दुज्जन परिय ।

चढि गयौ बीर परबत गुहा  
सामंतां कुंडल फिरिय ॥ १५ ॥

बर रघुवंस प्रधान  
राज मंडौ विचारिय ।

बोलि बीर हम्मीर  
भेद जानै धर सारिय ॥

बाट घाट बन जूह  
<sup>(४)</sup>धरा पडर नद घाटं ।

तुम अळ<sup>(५)</sup> जान<sup>(६)</sup> त्रिंमान<sup>(७)</sup>  
कोन पडर बन<sup>(८)</sup> बाटं ॥

अगवान<sup>(९)</sup> देहु नारेन बर  
<sup>(१०)</sup>कळुक मंत जंपौ सु तुम ।

जालंधराज जंबूधनी  
स्वामि<sup>(११)</sup> ध्रंम<sup>(१२)</sup> मंडहि न<sup>(१३)</sup> हम ॥ १६ ॥

सुनि हाहुलि हंमीर  
हत्य जेरै न्वप अगौ ।

(१) All MSS. घरी, c. m. (२) A C om, (३) C पछ। (४) D reads धरा पंच धर नद घाटं। (५) D सब। (६) C जानि। (७) D चप मान। (८) C D बर। (९) D अंगवाळं। (१०) C D prefix कळ, c. m. (११) D सामं। (१२) C धूम। (१३) So C D; T त हम, A नमह, B तह।

सकल भूमि<sup>(१)</sup> कौ भेद  
 राज जानै ए भगौ ॥  
 अति सु बिकट बन जूह  
 चढै संग्राम न होई ।  
 अश्वपाय गजपाद  
 चढन किहि ठौर<sup>(२)</sup> न कोई ॥  
 बन बिकट<sup>(३)</sup> जूह परबत गुहा  
 बर बेहर बंकम बिषम ।  
 दारुन<sup>(४)</sup> भयानक अतिसरल  
 बर प्रस्तर जल<sup>(५)</sup> नहि सुषम ॥ १७ ॥

छंद भुजंगी<sup>(६)</sup> ॥  
 बनं जा बिषमं विषं बाज कंटं<sup>(७)</sup> ।  
 घनं व्याध्र आघात ता नह<sup>(८)</sup> घंटं ॥  
 षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं<sup>(९)</sup> ।  
 जिनै वास आसं लगे पंक मौरं ॥  
 घनं पामरं<sup>(१०)</sup> जाति बंधै धनक्की ।  
 गिरं देषतें गत्ति भाजै<sup>(११)</sup> मनक्की ॥

(१) D भौम । (२) A B T spell डौर, compounding it with किहि ।  
 (३) D चीक । (४) B दारुनक । (५) A B T transpose नहि जल ।  
 (६) D भौयंगी । (७) T टंक । (८) C वहं । (९) D फौरं । (१०) C  
 पामरं । (११) D भजें ।

झरै झरनि<sup>(१)</sup> झारं सु आघात सोरं ।  
 जिनें<sup>(२)</sup> सह या सह<sup>(३)</sup> ता अंग मोरं ॥  
 हयं<sup>(४)</sup> तज्जि राजं चलै हत्य डोरं ।  
 इकं इक पच्छै बियं जंन जोरं ॥  
 बजै सह सहं परच्छंद उट्टै<sup>(५)</sup> ।  
 सुनै क्रंन सोरं सु धीरज्ज छुट्टै ॥  
 इकं होइ राजं पथं सत्त<sup>(६)</sup> रूंधै<sup>(७)</sup> ।  
 दियै हत्य तारी तिनं कोन बूंधै<sup>(८)</sup> ॥  
 तबै मुकले राज नारेन बीरं ।  
 ननं षग्ग मग्गं सधै इक तीरं ॥  
 न्वपं काम नाही प्रथानं प्रवानं ।  
 दोज सेन रघुवंस<sup>(९)</sup> (१) अरि<sup>(९)</sup> सेन भानं ॥ १८ ॥

दूहा ॥

मानि मंत चहुआन कौ  
 मुकलि<sup>(१०)</sup> दीय<sup>(११)</sup> दोइ<sup>(१२)</sup> बीर ।  
 ताजी तुंग समप्पियै  
 षां हुसेन दिय भीर ॥ १९ ॥

(१) Two shorts for one long. (२) C जिसे, D जीते। (३) D reads सदत्त अनंग मैरं। (४) C हयं। (५) C उट्टें। (६) D श्रुय। (७) C रूदै। (८) Conjectural, from root बुध "know," modern Hindī बूझै or बूझै; A B D T बंधै, C बदै। (९) C अति। (१०) D मोकल। (११) C D दियो। (१२) D दोज।

कवित्त ॥

तब लगि पान सुपान

हृत्थ नारेन मंडि लिय ।

(१) नमि चरननि कर<sup>(२)</sup> वाहि<sup>(३)</sup>

रोस आरोहि अंघि बिय ॥

ताजो तुंग सुअत्थि

जे न रुक्के बर बिय<sup>(४)</sup> करि ।

नीतिराव कुटवार<sup>(५)</sup>

संग दीनौ नरिंद बरि<sup>(६)</sup> ॥

बारंग बीर बज्जर बहिर

निधि निसान बज्जे सुभर ।

नेपुरह<sup>(७)</sup> अप्प बरनी बरा

जस<sup>(८)</sup> मुकट्ट<sup>(९)</sup> प्रथिराज बर ॥ २० ॥

बर भरियं बर अप्प

लियौ फुरमान नरिंद ।

लाज राज<sup>(१०)</sup> बिंटयौ<sup>(११)</sup>

जानि पारस बिच चंदं ॥

श्रीयकाज श्रीराम

(१) D prefixes न । (२) C करि । (३) D वांछ । (४) A B D T  
बौध c. m. (५) D कोटवार । (६) C D बर । (७) B D नेपुरह । (८)  
C D prefix सु । (९) D मुगट । (१०) D राल । (११) D बेंडौच ।

सु छल हनमंतह तैसै<sup>(१)</sup> ।

स्वामि काज सामंत

बियौ धर मंझब जैसै<sup>(२)</sup> ॥

जसतिलक हत्य चहुआन केां

दुज्जन दल जित्तन<sup>(३)</sup> चलयौ ।

रविवार सुरंग सु सत्तमै

गुन प्रमान जंबुअ<sup>(४)</sup> पुल्यौ ॥ २१ ॥

छंद पद्धरी ॥

नारेन जबुगढ<sup>(५)</sup> चळ्यौ काज ।

बोल<sup>(६)</sup> हित वाम कौदह<sup>(७)</sup> ति ताज ॥

दाहिनें मग्ग संमुह फुनिंद ।

नोरूप<sup>(८)</sup> बोल बोल हित हह ॥

हंकरै सिंह<sup>(९)</sup> कौदह ति वाम ।

उत्तरै देवि<sup>(१०)</sup> दाहिन सु ताम ॥

(१) A B D तेसैं, T तसैं । (२) A T जैसैं, C जसैं, D जेसइं । (३) B जितनै । (४) D जंबूय, C जंबु, om. च । (५) C D बीर गढ । (६) C बोलि । (७) A C कौद, B कौर; A C always spell कौद; B has कौर once, and कौद twice; D has कौद twice and कौद once; T has कौद, कौद and कौद, each once; the word evidently means "side"; compare the Panjābī कौदा "arm," "shoulder," and the Hindī कौर "edge," "border." (८) A नोरूप, C नरूप । (९) D सीह । (१०) D देव, C दार ।

दिसि वाम कोद घूघू टहक ।  
 फुनि करै अंग<sup>(१)</sup> केकी पहक ॥  
 उत्तरै डार<sup>(२)</sup> वाराह रथ<sup>(३)</sup> ।  
 डह करै सांड<sup>(४)</sup> दिसि वाम तथ ॥  
 बंदर<sup>(५)</sup> विरूर दाहिनै सह ।  
 सुनियै<sup>(६)</sup> न<sup>(७)</sup> कंन नंदनी<sup>(८)</sup> नह ॥  
 कुरलंत वाम<sup>(९)</sup> सारस समूह ।  
 मुकड़<sup>(१०)</sup> न गिद्धि पच्छै अजूह<sup>(११)</sup> ॥  
 कुरलें त कग चित्त हतहीन ।  
 हंसीय वाम आनंद कीन ॥  
 (१२) हां कहत हल्ल करि गड्ड मथ ।  
 चहुआन पित्त रिज्जेव तथ ॥  
 हां हल्ल राव दीनौ बिरह ।  
 आनंद बज्जि नीसान नह ॥ २२ ॥

दूहा ॥

(१३) हां कहतैं ठील न करिय  
 हल्ल करिय अरि मथ ।

(१) A अंग । (२) C D दार । (३) C D सथ । (४) D सांमि । (५) D वनर । (६) B omits this line, D reads सुनियै न कननीसाननह ।  
 (७) C न न । (८) A नंदनी । (९) C भाम । (१०) D मुंके । (११) अजूह = जूह ॥ (१२) C D omit the remainder of this stanza. (१३) C D omit the 23d dūhá.



तायें बिरद<sup>(१)</sup> हमीर को  
 हाहुलि राव सु कथ ॥ २३ ॥  
 चढि चले बंदे सुकन<sup>(२)</sup>  
 भागह जे प्रथिराज ।  
 बर प्रबत बैदेस सधि  
 बीर बजी रन बाज ॥ २४ ॥

छंद पद्वरी ॥

आएस<sup>(३)</sup> लीन जुगिन<sup>(४)</sup> नरेस ।  
 सजि सिलह सुभर मंडी सुभेस ॥  
 सिंगिनी सुत्य गौ गंठि थाल ।  
 अरि अंग षतंग भै पानि काल<sup>(५)</sup> ॥  
 नेजा सुरंग बंबरि बिपान ।  
 अट्टार टंक षंचै कमान ॥  
 धज<sup>(६)</sup> सुरंग रत्त गजराज हालि ।  
 जाने कि भूमि<sup>(७)</sup> बहल ति चालि ॥  
 अति इत्त दहकि<sup>(८)</sup> धर धरकि, ि ख  
 चतुरंग सेन<sup>(९)</sup> चिहुं पास चलि ॥

---

(१) Sanskrit विरद । (२) C सगुन, D शगुन; Skr. शकुन । (३) Sanskrit आदेश । (४) D जोगुनी । (५) So C D; A पानि खाल, B T पानि खाल । (६) C धज । (७) C वजंनि, D भोम । (८) A दहकि, om. द । (९) C D सु, instead of धरकि । (१०) D सेन ।

चासंत तीर सब तुंग मानि ।  
 गढ मुंकि गढु ओ छंडि थान ॥  
 आवाज बज्जि दस दिसा मानि ।  
 भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥  
 बल्लभ सुबाल गय बाल मुक्कि ।  
 रो रत्य नारि चकि नय सुचक्कि ॥  
 फट्टे<sup>(१)</sup> दुक्कल नग नगन चड्ढि ।  
 मंगलिक जानि वन्नौर कड्ढि ॥  
<sup>(२)</sup>फुटिअं सु वास रसगत<sup>(३)</sup> दिषाहि ।  
 नौ<sup>(४)</sup> ग्रह सुहेमगिरि मल्ल गाहि ॥  
 नषै ति हार कहुं बाल नारि ।  
 तिन की उपंम बरनी सुभार ॥  
 तुटुंत<sup>(५)</sup> मुति पगपगन मान ।  
<sup>(६)</sup>नषंत तीय पिय<sup>(७)</sup> कों निसान ॥  
 के दुरत धाड चित्त चिचसाल ।  
 ते<sup>(८)</sup> जानहि<sup>(९)</sup> सुचित पुतलिय बाल ॥  
 ता मध्य<sup>(९)</sup> जाड रहै षंचि सास ।

(१) A सफट्टे, C पट्टे, D फट्टे, B T फेट्टे । (२) C धुलियं, D फुलिय । (३)  
 C D रंगत । (४) C D prefix मानौ, c. m. (५) D टूटंती मुत्ति । (६) C  
 D om. (७) A B T om. (८) A जानिहि । (९) D मधि ।

मानहु कि रचि चिचह बिलास ॥  
 सुरसुकी दीन भद्र बाल वाम ।  
 अगौ सुबाल दीसहि सुताम ॥  
 कविचंद सु औपम एक बार ।  
 (१) उत्तख्यौ राह रूपह सवार ॥  
 चिचह ति साल रषी ति बाल ।  
 नह परहि बंदि ते तिहित काल ॥  
 दज्जवै नांहि<sup>(२)</sup> मंदिर ति रिज्जि ।  
 चक्षै न पाइ मानं उलज्जि<sup>(३)</sup> ॥  
 देषंत सु मनगति भई पंग ।  
 (४) रुद्धई काम रति कोटि रंग ॥  
 नद्धई उगति<sup>(५)</sup> तिन देषि बाल ।  
 मानो कि रास मझै गुपाल<sup>(६)</sup> ॥ २५ ॥

दूहा ॥

बंस दुजन घर गाहि फिरि ।  
 तब लगि दुज ति संपन ॥  
 एकलै रघवंस नैं ।  
 लै गढ सबर प्रपन ॥ २६ ॥

(१) C D prefix मानौ । (२) B T वांहि । (३) C D अलुज्ज । (४) D  
 prefixes मानौ, c. m. (५) D गती, om. ड । (६) D गोपाल ।

कवित्त ॥

सबै स्वर सामंत  
 पल्ह बंध्यौ गढ लिन्नौ ।  
 थप्पौ राम नरिंद  
 हत्य फुरमान सु लिन्नौ<sup>(१)</sup> ॥  
 तुम रहियौ इन<sup>(२)</sup> थान  
 जाइ<sup>(३)</sup> कांगुर संपत्तौ ।  
 मिल्यौ<sup>(४)</sup> जाइ प्रथिराज  
 राज सम्हौ प्रापत्तौ ॥  
<sup>(५)</sup>आनंद फते<sup>(६)</sup> तप तुज्झ बल  
<sup>(७)</sup>धन समूह आइय सुधर ।  
 सुबभर सुघाइ तेरह परे  
 बिय<sup>(८)</sup> दाहिम्म नरिंद बर ॥ २७ ॥  
 सबै भूमि अरि गाहि<sup>(९)</sup>  
 आन<sup>(१०)</sup> फेरी चहुआनं ।  
 पख्यौ भान रघुवंस  
 बीर बंचे फुरमानं ॥  
 माह्लनवास<sup>(११)</sup> नरिंद

(१) C दिन्नौ । (२) C इहि, D इह । (३) A B D T prefix ङ, which exceeds the metre and is to be understood. (४) A B T मिले ।  
 (५) C reads आ० सामते सयतु बल । (६) D फटे । (७) D prefixes अर ।  
 (८) B बिन । (९) C गाह । (१०) C आनि । (११) C माह्लनवास ।

राज रष्यौ तिन थानं ।

बर बंध्या अरि साहि

धून कळ्यौ परवानं ॥

बर बरनि बीर प्रथिराज बर

बर रघुवंस बुलाइयौ ।

दिन देव दसमि बर भूमि बर

त दिन सुरंगह<sup>(१)</sup> पाइयौ ॥ २८ ॥

दूहा ॥

परिनि<sup>(१)</sup> बीर प्रथिराज बर ।

बर सुंदरी सुलच्छ ॥

देवव्याह दुज्जन दवन ।

दिन पड्यरौ<sup>(१)</sup> सु अच्छ ॥ २९ ॥

कवित्त ॥

दक्षिनवृत्त<sup>(४)</sup> सुनाभि

तुंग नासा गज गमनी ।

(५)(१)सासनि गंध रुषं<sup>(७)</sup> जु चारु

कुटिल केसं रति रमनी<sup>(८)</sup> ॥

(१)बर जंघन मृदु पयु<sup>(९)</sup> सुरंग

(१) A B C T सुरंगन । (२) A D परनि । (३) C पथोर, D पघोर ।  
(४) D देवत । (५) D omits this portion, up to रमनी । (६) This is a  
redundant line, with 14 instead of 11 instants. (७) Persian रु  
rukḥ. (८) A B D T रंजी । (९) A B T पय, C om., Skr. पयु ।

कुरंग<sup>(१)</sup> लज्जे छविहीन<sup>(२)</sup> ।  
 इह आपम कवि चंद  
 हत्य करतार<sup>(३)</sup> स कीन<sup>(४)</sup> ॥  
 बर बरनि बीर प्रथिराज बर  
<sup>(५)</sup>घन निसान बज्जै सुवर ।  
 जंबूव राव<sup>(६)</sup> हंमीर नें  
 भ्रम काज दीनौ जु<sup>(७)</sup> कर ॥ ३० ॥  
 बर बरनी<sup>(८)</sup> दै हत्य  
 गुंठ अप्पे जु एक सौ ।  
 चौंर मृगंमद<sup>(९)</sup> मधुर  
 चंम<sup>(१०)</sup> सुं<sup>(१०)</sup> सत्त दीन सौ<sup>(११)</sup> ॥  
 अट्ट सुरंग गजराज  
 बाज ताजी<sup>(१२)</sup> सौ<sup>(१२)</sup> दासी ।  
 बर लच्छी<sup>(१३)</sup> चतुरंग  
 चंद दिषिय<sup>(१४)</sup> सो भासी ॥  
 ढिल्ली व नाथ ढिल्ली दिसा

(१) A C om. (२) C हीनी, कीनी । (३) D कीरतार । (४) D prefixes  
 चार । (५) D राह । (६) C D सु । (७) B T बरनौ । (८) B मृदंमद,  
 C मिगंमद । (९) C D चरम । (१०) D सह । (११) C T सौं । (१२)  
 So C; A B D T पाजी; Ar. تاجي; बाज may mean "horse", or it  
 may be the Arabic بعض "some." (१३) D लच्छिय । (१४) C D  
 पिषिय ।

अरिन जीति बर परनि कै<sup>(१)</sup> ।

(२)संजीव काम बेलिय सु ढिग  
बर नीसान बरनि कै ॥ ३१ ॥

दूहा ॥

आयौ न्वप ढिल्लीपुरह  
बर बज्जे निरघोष<sup>(३)</sup> ।

डोला पंच नरिंद संग  
(४)मद्धि सुंदरि अदोष ॥ ३२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासा<sup>(५)</sup> के<sup>(६)</sup>  
कांगुरा<sup>(७)</sup> विजै<sup>(८)</sup> नाम पैतीसमो<sup>(९)</sup> प्रस्ताव<sup>(१०)</sup>  
समाप्तः<sup>(११)</sup> ॥ ३५ ॥

(१२)इति कांगुरा जुध सम्यो समाप्तः ॥



(१) C परनिवौ । (२) C om. the last portion, up to बरनि कै ।  
(३) A B T वघोष c. m. (४) D मधु । (५) B D रास, C रायसे । (६)  
C D insert राजा पानौ ग्रहन after रासा के । (७) C D insert राव  
after कांगुरा । (८) C D insert करन after विजै । (९) B तेतीसमो, T  
चौतीसमो; C D om. (१०) C D om. (११) A संपूरन, B संपूर्णम् ।  
(१२) A B D omit the last sentence.

